अमरीकी संगीतकारों की जीवन कहानियाँ

लेखक

केथेराइन लिटिल बेकलेस

अनुवादक

कृष्ण गोपाल एम० ए०, एल एल बी०, डी० पी० ए०

प्रकाशक

प्रेमी जासूस कार्यालय,

१२४, चक, इलाहाबाद—२

विषय-सूची

	पृष्ठ
प्रस्तावना	१–३
सयुक्त राज्य अमरीका मे सगीत	
मूल निवासियो का सगीत	१–४
योरुप से प्रथम गोरो द्वारा लाया गया धार्मिक सगीत	४–१५
हमारे प्रथम अमरीकी सगीतकार	१५–१६
हमारे राष्ट्रीय गीतो का प्रकाशन	१६–२२
सयुक्त राज्य अमरीका मे सगीत की वृद्धि	
अमरीकी हिम (गीत)	२२–२९
अफ्रीका से आये लोगो ने नीग्रो के धार्मिक गीतो की रचना की	२९–३२
मनोविनोद करने वाला सगीत मिन्स्ट्रल शो	३३–३८
स्टीफेन फॉस्टर, १८२६—१८६४	३९–६३
जान फिलिप सूजा, १८५४—१९३२	६४–९३
विक्टर हरबर्ट, १८५९—१९२४	९४–११३
एडवर्ड मेकडोवेल, १८६१—१९०८	११४–१३५
एथेलबर्ट नेविन, १८६२—१९०१	१३६–१५१
अन्तराल (इण्टर ल्यूड) । लोकप्रिय सगीत मे बदलने वाले फैशन	१५२–१५७
विलियम सी० हैण्डी, १८७३—१९५८	१५८–१७८
चार्ल्स आइव्स १८७४—१९५४	१७९–१८५
चार्ल्स ग्रिफ्स, १८८४—१९२०	१८६–१९०
जेरोम कर्न, १८८५—१९४५	१९१–१९८
जार्ज गर्शविन १८९८—१९३७	१९९–२०२

इर्विंग बर्लिन, १८८८— २२३–२४१
रॉय हेरिस, १८९८— २४२–२४९
एरन कोपलैण्ड, १९००— २५०–२५५
अन्य संगीतकार :
जॉन एल्डन कारपेण्टर, १८७६—१९५१ २५६–२५८
डीम्स टेलर, १८८५— २५९–२६०
वाल्टर पिस्टन, १८९४— २६१–२६२
रिचर्ड रोजर्स, १९०२— २६२–२६३
सेम्युल बारबर, १९१०— २६४–२६५
विलियम श्युमैन, १९१०— २६५–२६६
प्रतिनिधि रिकर्ड २६७–२६८
संदर्भ ग्रन्थ—सूची २६८–२७२

प्रस्तावना

इस पुस्तक मे सगीतकारो के चुनाव की समस्या हुई है। कुछ ऐसे भी लोग हैं जिनकी यह राय है कि यदि कोई सगीतकार सयुक्त राज्य अमरीका मे न पैदा हुआ हो तो उसे इस गेलरी मे सम्मिलित ही न किया जाय। फिर भी विक्टर हर्बर्ट और इर्विग बर्लिन ऐसे दो सगीतकार है जिनमे से एक आइर-लैण्ड और दूसरा रूस मे पैदा हुआ लेकिन उनके बारे मे यह कहना संभव नही है कि वे अमरीकी के अलावा कुछ और भी हे। अत यही सर्वोत्तम समझा गया कि ऑस्कर थॉम्पसन ने इण्टरनेशनल साइक्लोपीडिया ऑफ म्यूजिक एण्ड म्यूजीशियन्स मे अमरीकी सगीतकार की जो परिभाषा की है, उसे ही स्वीकार कर लिया जाय। मिस्टर थॉम्पसन का विचार है, अमरीकी सगीत वह सगीत है जिसे अमरीकियो ने लिखा हो, चाहे वे वहाँ के मूल निवासी हो या जिन्होने अमरीकी नागरिकता अपना ली हो। उत्तरी अमरीका के इण्डियनो (मूल निवासियो) का सगीत, अमरीका के नीग्रो का सगीत, उन अमरीकियो का सगीत जिन्होने विदेश मे अध्ययन किया हो और जो योरुप की किसी-न-किसी परम्परा से बधे हुये है, अधुनातम कजरवेटिवो का सगीत और अतिवादी विचारधारा के लोगो का सभी प्रकार का सगीत, "हिली ब्लीज" का सगीत तथा 'टिन पैन एली' का सगीत अमरीकी संगीत है। अमरीकी सगीत मे ऐसा सभी सगीत सम्मिलित कर लिया जाता है जो जाति-विषयक, भौगोलिक, सामाजिक और ऐतिहासिक रूप से अमरीका का है।"

दक्षिण अथवा केन्द्रीय अमरीका के देश के नागरिक अपने को दक्षिणी अमरीकी अथवा केन्द्रीय भागो के अमरीकी कह सकते है जबकि सयुक्तराज्य अमरीका के नागरिक स्वय सयुक्त राज्य अमरीकी नही कह सकते है। सयुक्त राज्य अमरीका के नागरिक कहे जाने का अपना शानदार तरीका है कि वहाँ नागरिक को केवल अमरीकी कहा जाता है और यह विचार सभी जगह

माना जाता है। सभी कुछ विचार करके यही सबसे अच्छा मार्ग लगा है कि इस पुस्तक मे केवल सयुक्त राज्य अमरीका का सगीत और सगीतज्ञो पर विचार किया जाय।

बहुत पहिले कई सगीतकारो ने अमरीका के सगीत मे बहुमूल्य योगदान दिया जिसे इस पुस्तक मे सम्मिलित कर सकना भी सभव नही है। यह प्रसन्नता की बात है कि आज अनेक सगीतकार अपनी सगीत-रचनाओ मे लगे हुये है। वे सगीत की मौलिक रचनाए ही नही करते बल्कि अमरीकी रचनाओ को जनना तक पहुँचाने का प्रयत्न करते है। यह सभव नही है कि उन सभी के बारे मे लिखा जाय, मैने उन सभी के लिये सगीतकारो के सबध मे पुस्तको की सूची सम्मिलित कर ली है जो यह जानना चाहते है कि हमारे अन्य सगीतकार कौन-कौन है और उन्होने क्या कर लिया है या वे इस समय क्या कर रहे है ? प्रत्येक सगीतकार की सभी रचनाओ का उल्लेख नही हो सका है क्योकि उनकी कृतियो की पूरी सूची अन्यत्र उपलब्ध है।

मैं हृदय से उन सभी का आभारी हूँ जिन्होने मुझे इस पुस्तक के लिखने मे सहायता की है, विशेपकर मिसेज एडवर्ड मेकडोवल, मिस्टर जॉन एल्डन कारपेटर, मिसेज रॉय हेरिस, मिस्टर एरन कोपलैंड, मिस्टर जेरोम कर्न, मिस्टर ओटो हर्वेश, मिस्टर इरा जर्शविन, मिस्टर इर्विग वर्लिन, मिस्टर और मिसेज लाऊ पेली, मिस्टर डब्लू० सी० हेण्डी, मिस्टर अर्नेस ओवरहोल्जर, मिस्टर फिलिप कर्वी, मिस मेरियन वाउयर, मिस मारग्यूराइट ग्रिफ्स, मिस्टर रिचार्ड कुरियर, न्यूयार्क स्थित हार्वर्ड क्लब के पुस्तकाध्यक्ष, कोर्नेल यूनिवर्सिटी के पुस्तकालय के पुस्तकाध्यक्ष और सगीत-शास्त्र के प्रोफेसर डाक्टर ओटो किनकेलडे, सगीत की पुस्तकाध्यक्षा मिस डोरोथी लाउटन, न्यूयार्क पब्लिक लाइब्रेरी के सरकुलेशन डिपार्टमेण्ट की मिस मेरी ली डेनियल्स, वार्शिगटन डी० सी० की लाइब्रेरी ऑफ काग्रेस का स्टाफ, येल म्यूजिक स्कूल लाइब्रेरी की मिसेज फिलिप बिशप, येल विश्वविद्यालय के सगीत विभाग के चेयरमैन प्रोफेसर

ब्रूस साइमड्स, पिट्सवर्ग के कार्नेगी पुस्तकालय के पुस्तकाध्यक्ष, हैरिसबर्ग स्थित पेनिनस्लेवेनिया स्टेट लाइब्रेरी और हेरिस वर्ग पब्लिक लाइब्रेरी के पुस्तकाध्यक्ष।

मिस्टर एबे नाइल्स ने 'हेण्डी' पर लिखे गये अध्याय और लोकप्रिय संगीत मे बदलते हुये फैशन वाले अध्याय को दोहराने की कृपा की है। स्मिथ सोनियन इन्स्टीट्यूशन अमेरिकन मानव-प्रकृति-विज्ञान का ब्यूरो है, वहाँ की कोरेबोरेटर मिज़ फेसिन डेन्समोर ने रैडमेन पर लिखे गये पृष्ठो को देखने की कृपा की है। मिस्टर एडवर्ड ने पहिले ही चार्ल्स ग्रिफस और उनके संगीत के सम्बन्ध मे अपनी आगामी पुस्तक के लिये कई वर्षो से अध्ययन कर रखा था। उन्होने भी बडी सहृदयता से समय और तत्सम्बन्धी सूचनाएँ दी। मैं मेक्मिलन कम्पनी का भी आभारी हूँ कि उन्होने गैली फार्म मे डब्लू० सी० हेण्डी की आत्मकथा दी फादर ऑफ दी ब्लूज के पढने की मुझे अनुमति दी।

ग्रेट हिल
मई, १९४१

के० एल० बी०

मैं अमरीकी-गायन सुनता हूँ।

मैं विविध प्रकार के केरल्स सुनता हूँ।

मेकेनिक्स के गीत . ....

प्रत्येक के गीत सुनता हूँ।

बढ़ई

राज

मल्लाह . ..

मोची .....

लकड़हारे और किसान के गीत ...

माँ की मधुर लोरियाँ......

प्रत्येक से उनका अपना गीत सुनता हूँ . .

उनसे किसी अन्य का गीत नहीं बल्कि

उन्हीं के सशक्त और मधुर गीत।

उन्हीं के उन्मुक्त कण्ठ से गाते सुनता हूँ।

वाल्ट ह्विट मैन।

संयुक्त राज्य अमरीका में संगीत

मूल निवासियों का संगीत

हरी-शान्त घाटी मे
सरिता के सुहाने किनारे रहता था गायक वहाँ,
नाम था नवेदाहृ ।
चरागाह-खेतो से घिरा था वह गॉव,
सुदूर पार फैला था जगल......
ऐसे में रहता था गायक वह—
ट्वेसेन्था की घाटी मे
हरी-शान्त घाटी में ।

—लॉग फेलो
दि साँग ऑफ हियावाथा

इस बारे मे कल्पना ही की जा सकती है कि गोरो के आने से पूर्व उत्तरी अमेरिका कैसा था । फिर भी हम सचमुच उस युग के शानदार जगलो, लहराते और हरे-भरे घास के मैदानो तथा निर्मल जल के नालो से भरपूर विशाल भूमि का अपने मानसिक पटल पर सजीव चित्र अकित कर सकते है । उस समय वहाँ चिमनियाँ, स्मोक स्टैक और कारखाने न थे और न कभी पहियो के चलने की आवाज़ सुनाई पडती थी । नालो पर बाँध ऊद-विलाव (बीवर) द्वारा ही बनाए जाते थे । नदी-नालो के किनारे ऊँचे और पुराने पेडो मे यत्र-तत्र वहाँ के मूल निवासियो (रेड मैन) के शिविर थे । समस्त महाद्वीप मे जानवर, पक्षी और इण्डियन ही रहते थे । वह मूल निवासियो, रेड मैन, के लिये सचमुच अदन का बाग रहा होगा । और अदन के बाग के समान ही उसका सदैव के लिये बना रहना सभव नही था ।

इण्डियनो के अनेकानेक विभिन्न प्रकार के कबीले थे फिर भी वहाँ स्थान की कमी न थी। वे प्राकृतिक जीवो की भाँति निर्द्वन्द्व और स्वच्छन्द विचरण करते थे। वे असभ्य होने के कारण सभ्य पुरुषो की महत्वाकाक्षाओ से रहित थे अत उनके सगीत मे कलात्मकता न थी। उनके सगीत को उपयोगी-सगीत कह सकते हैं। प्राकृतिक ढग पर विकसित मनुष्य होने के नाते चूंकि वे सगीत से प्यार करते थे इसलिए उनके जीवन मे प्रत्येक अवसर पर काम आने योग्य सगीत उनके पास था।

मानव-जाति का विकास और वच्चे का वढकर मनुष्य वनना—इन दोनो मे वहुत अन्तर नही है। वच्चे का सवसे पहिला कार्य, जिसमे सगीत का कोई तत्व पाया जाता है, झुनझुने से खेलना है अथवा उसे धरती पर इस प्रकार पटकना है जैसे आप ढोल (ड्रम) धपधपाते है, और यही से रिद्म (लय) का प्रारभ हो जाता है। प्रत्येक वस्तु मे रिद्म है—जैसे दिल की धडकन मे, चलते समय दाये-वाये पाँवो के पडने मे, रात-दिन के वदलने और ऋतुओ के निरतर आवर्तन मे। इसलिये रिद्म ही वह प्रथम स्थिति है जिसे व्यक्ति महसूस कर सकता है और अन्य व्यक्तियो को प्रेषित करने की इच्छा कर सकता है। इण्डियन झुनझुनो और ढोलो को रिद्म उत्पन्न करने के लिये प्रयोग करते थे। वे अपने सगीत मे वाँसुरियो और सीटियो का प्रयोग भी करते थे तथा अपने गीतो को वहुत महत्ता देते थे।

सगीत प्रत्येक इण्डियन के जीवन का एक अग था या हम यह भी कह सकते हैं कि वह उसके उस विचार का, जिसके लिये वह उसे (सगीत) प्रयुक्त करना चाहता था, एक भाग था, जिसे वह यो ही नही प्रकट कर सकता था। उसके लिये गीत गाना अथवा नृत्त करना अनिवार्य न था जैसे यदि वर्ष की फसल-कटाई का समय नही होता था तो वह फसल-कटाई के गीत नही गाता था। न ही वह विना मतलव के प्रेम-गीत गाने लगता था। इण्डियनो को जादू मे विश्वास था और वे अपने प्रेम-गीत हृदय जीतने के लिये उपयोग करते थे। वे सगीत को स्वास्थ्यप्रद भी मानते थे। चिकित्सको के अपने विशेष गीत थे जिन्हे वे रोगी के उपचार के लिये सुनाते थे। खेल-

कूद मे गाये जाने वाले गीतो से विजय का आह्वान किया जाता था। वे ऐसे गीतो और नृत्यो का आयोजन करते थे जिनकी विशेष उत्सवो मे आवश्यकता होती थी जैसे किसी शिकार की तैयारी के लिए अथवा युद्ध के लिए प्रस्थान करते समय। माताए बच्चो को लोरियाँ सुनाती थी। लोगो को स्वप्नो मे जादुई शक्ति के गीतो का भान होता था। कभी-कभी मोहक और स्वास्थ्य-प्रद गीत उन इण्डियनो को सिखाए जाते थे जो इस विशेषाधिकार को प्राप्त करने की कीमत दे सकते थे। जब कोई इण्डियन सुदूर यात्रा और अन्य कबीलो से मुलाकात करके लौटता था तब उससे पहिला प्रश्न यही किया जाता था कि "क्या तुमने नए गीत सीखे है ?"

संगीतकारो की जीवन-कहानियो के पढने से यह लगता है कि व्यक्ति बचपन मे जो स्वर और सगीत सुनते हैं, उनसे उनकी भावी रचनाओ के प्रकार और गुणवत्ता पर अधिक प्रभाव पडता है। दूसरे शब्दो मे यह भी कहा जा सकता है कि वह जो कुछ ग्रहण करता है, उसी का अधिक प्रभाव उसकी अभिव्यक्ति मे परिलक्षित होता है। इण्डियनो ने जगल का शोर, पक्षियो का कलरव और जानवरो की चीख-पुकार सुनी। प्रकृति ने उनके प्रारंभिक सगीत को प्रभावित किया हो अथवा न किया हो फिर भी उनके सगीत मे असस्कृत रूप और अशिष्टता की गध व्याप्त थी। कोई भी लेखक जिसने इण्डियनो के म्यूजिक का अध्ययन किया है, यह महसूस नही करता कि प्राकृतिक ध्वनियो ने उनके गीतो के रूप प्रभावित किये है। गोरो की सगीत-रचना के नियमो के अनुकूल बनाने के लिये उनकी मेलोडीज (सगीत-ध्वनियो) मे जो अनधिकृत हस्तक्षेप किया गया उनसे उनके रूप मे वह बात नही रही जो पहिले थी। कुछ अमरीकी सगीत-

सियो के बारे मे लिखना जितना सरल था उतना उनके सगीत को किसी सगीत-शाला (कॅस्र्टहॉल) मे स्वर-बद्ध करना आसान न था।

योरुप से प्रथम गोरो द्वारा लाया गया धार्मिक सगीत

प्रेज गॉड फ्रोम हूम ऑल ब्लेसिंग्ज फ्लो

साम ट्यून से सकलित—(ओल्ड हण्ड्रेडथ)

इण्डियन जब एक ओर भैंसो के झुण्ड के पीछे इधर-उधर फिरा करते थे तो दूसरी ओर उस समय इस दशा से कही भिन्न समुद्र पार गोरो के जीवन की अपनी कहानी थी। सभ्यता के विकास की कहानी स्वय एक के बाद एक असतोष की झलक प्रस्तुत करती है। आखिरकार एक ऐसा दिन आया जब स्वतत्रता की खोज मे गोरो का एक दल न्यू इग्लैण्ड के समुद्री तट पर आ पहुँचा। वे व्यक्ति अपने देश मे स्वतत्रता न पा सकने के कारण असतुष्ट थे।

उनका मैफ्लोर नामक छोटा जहाज उस निर्जन खाडी मे उस स्थान तक पहुँचा जहाँ समुद्री तट तक जगल थे। उन्होने लगभग तीन महीने समुद्र मे काट दिये और उसके बाद आखिरकार वे एक बडे पत्थर पर होकर धरती पर पहुँचे। उस समय उन्होने कितना अधिक आनद महसूस किया होगा! वह पत्थर प्लीमथ, मेसाच्युसेट्स मे अभी तक सुरक्षित है।

परन्तु इतना नीरव और पीछे तक सुदूर फैले रहस्यमय घने जगल वाला यह विचित्र स्थान क्या था? जल-समुद्री तट से हिलोर खा रहा था और यदा-कदा जगल के वृक्षो मे सरसराहट होती थी—केवल ये स्वर ही सुनाई देने थे। उन जगलो मे क्या था?

उन्हे अपनी इस नई धरती के बारे मे कुछ ज्ञात न था। ऐसी कौन-सी चीज थी जिससे कि उन्होने अपने इग्लैंड के सुन्दर घर छोड दिये, वे हालैण्ड गये और अन्त मे वे अज्ञात महासागर पार करके ऐसे स्थान पर आ पहुँचे जहाँ उन्हें कठिनाइयो और भय का सामना करना पडा।

उनके अपने विचार थे और यही उनकी कठिनाई थी। हमारे विचार ही हमे कुछ करने के लिए विवश करते है। पिलग्रिमो (प्यूरिटन सम्प्रदाय के लोग) के धार्मिक कर्मकाण्ड के बारे मे अपने विचार थे जिनके कारण वे अपनी मातृभूमि 'चर्च ऑफ इग्लैंड' से धीरे-धीरे अलग होते गये। केवल इग्लैण्ड मे ही धार्मिक उथल-पुथल नही हो रही थी बल्कि सारे योरुप मे यही दशा थी। इस धार्मिक उथल-पुथल के पीछे जो राजनीतिक और सामाजिक विचारधारा काम कर रही थी उससे ये प्यूरिटन लोग असहमत थे और इसका प्रभाव तत्कालीन सगीत पर भी पडा। ऐसी बाते सदा ही सगीत को प्रभावित करती है। चूँकि हम इस उथल-पुथल के साथ सगीत का सबध तत्कालीन धार्मिक पक्ष के अन्तर्गत ही देख सकते है इसलिये हम अपनी दृष्टि धार्मिक पक्ष के विवेचन तक सीमित रखेगे और अन्य पक्षो के अध्ययन के लिये उन वर्षो का इतिहास पढना आवश्यक है जबकि जेम्स प्रथम इग्लैण्ड का शासक था और महाद्वीप मे थर्टी इयर्स वॉर (तीस वर्षीय युद्ध) चल रही थी। वह सकटपूर्ण काल था। फ्रास के प्रोटेस्टेट ईसाइयो मे धार्मिक बेचैनी थी। प्रोटेस्टैण्ट धर्म का जीवित रहना कठिन हो गया था।

जब प्यूरिटन ऐसे देश की बजर भूमि पर आ गये जहाँ उनसे कोई यह कहने वाला न था कि परमात्मा की पूजा किस प्रकार की जाय, उन्होने आखिरकार वह स्वतत्रता प्राप्त कर ली जिसे वे चाहते थे। लेकिन विशेषकर पहली बार इसे निभाना कठिन काम था क्योकि वे अग्रणी निवासी थे, और सबसे पहिले रहने का अर्थ यह है कि जब तक उस रहन-सहन के लिये कोई काम न किया जाय तब तक कुछ भी प्राप्त नही किया जा सकता। उन्हें 'नए सिरे से' ही जीवन का प्रारभ करना था।

उन्हे अपने सोने के लिये केबिन बनाने से पूर्व वृक्षो को काटना था, लट्ठे चीरने थे और जगह साफ करनी थी। उन्हे रोटी प्राप्त करने के लिये सबसे पहिले भूमि ठीक करनी थी। रोटी का प्रश्न तभी हल हो सकता था जब वे पेडो, जडो और पत्थरो को उखाडकर खेत की सफाई कर लेते। इसके बाद उन खेतो को जोतना था और उनमे गेहूँ बोना था। गेहूँ को उगना था, उसे

पकना था और उसे काटना भी था। गेहूँ को गहाना और उसाना था और फिर आटा पीसना था। जब यह सभी कार्य पूरा हो जाता तब वह अग्रणी व्यक्ति यह सोच सकता था कि उसे रोटी मिल सकती है। यह समझना सरल है कि उस अग्रणी व्यक्ति को ऐसी दशा मे सगीत-रचना के लिये अवसर न था। इसके अतिरिक्त उन्हे यह भी भय बना रहता था कि जगलो मे से कोई न कोई आ जायगा तो वे उससे बचने के लिये एकत्र हो जाते थे।

वे इण्डियन थे। उन लोगो का रग लाल मिश्रित बादामी (रेडिश ब्राउन) था, वे जानवरो की खाल और फर पहिने हुये थे तथा शोभा के लिए पक्षियो के पर लगाये हुये थे। कुछ इण्डियन मित्र-भाव रखने लगे थे लेकिन उनमे से कोई भी अग्रेजी नही बोल पाता था। कुछ ऐसे भी इण्डियन थे जो द्वेषभाव रखते थे अतएव उन्होने गोरो का रहना कठिन कर दिया था। फिर भी इण्डियनो को कौन दोषी ठहरा सकता है ? वे इन पीत वर्ण आगन्तुको से भयभीत थे जो अथाह महासागर पार कर ऐसी बडी नौका से आये थे जिसे उन्होंने पहिले कभी न देखा था। इण्डियनो का यह सोचना स्वाभाविक था कि वहाँ के वृक्ष और जानवर उन्ही के अपने वृक्ष और जानवर है। इन अजनबी पीत वर्ण व्यक्तियो के आ जाने से उन्हे यह महसूस हुआ कि उनके अधिकार क्षेत्र पर अतिक्रमण हो गया है।

कुछ लेखको का यह विचार है कि प्यूरिटन सगीत प्रेमी न थे और उन्होने सगीत की ओर ध्यान नही दिया लेकिन इस तथ्य की पुष्टि के लिये अभिलेख नही मिलते और इस बारे मे कोई भी व्यक्ति प्रामाणिक रूप से कुछ नही कह सकता तथा किसी के लिये ऐसा कहना भी अप्रिय है। इस बात की अधिक सभावना है कि उन्हे सगीत उस समय तक प्रिय था जब तक कि वह उनके धार्मिक विचारो के अनुकूल रहता था। जहाँ तक सगीत को केवल मनो-रजन के लिये ही उपयोग मे लाने की बात है, उसके लिये गोरो के पास फालतू समय न था चाहे उनकी उस सगीत के प्रति कितनी ही रुचि क्यों न रही हो। उनका सारा दिन भूमि को ठीक बनाने के कठोर कार्य मे व्यतीत होता था और सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि उन्हे इस बात के लिये

भी सतर्क रहना पडता था कि कही इण्डियनो का ध्यान उनके सगीत की ओर आकर्षित न हो जाय। वे इस स्थिति से बचना चाहते थे। यदि आप किसी विशाल जगल मे अकेले हो और लोगो की वस्तियो से भी बहुत दूर हो फिर आप मौन रहना पसन्द करेगे चाहे आपको सगीत कितना ही प्रिय क्यो न हो, आप अपने चारो ओर की आवाजे ही सुनेगे तथा आप इस बात से वचेगे कि आपकी आवाज विचित्र और अज्ञात जीवो के कान मे न पड सके।

फिर भी एक समय निश्चित था जब प्यूरिटन गाते थे और कुछ आदमी इण्डियनो से उनकी रक्षा के लिये पहरा दिया करते थे। यह वह समय था जव वे गिरजाघर जाया करते थे। वे अपने गायन को बहुत पसन्द करते थे अतएव वे अपने पुराने देश से साल्टर (भजन-सग्रह) साथ ले आये थे। वे अपने चर्च-म्यूजिक (गिरजाघर के सगीत) के लिये अधिक नियमित थे और उन्होंने निश्चय ही चर्च ऑफ इग्लैण्ड के सुन्दर सगीत से अपने को बिल्कुल अलग कर लिया था। उन्होने आराधना-सगीत मे क्वायर सिंगिग (गाने-बजाने वालो के समूह-गान) को एक अग के रूप मे स्वीकृति नही दी। उनकी दृष्टि मे ऐसा सगीत केवल रगमच से सबधित था अतएव वे उसको मनोरजक सगीत के नाम से पुकारते थे और वे यह मानते थे कि इस सगीत का गिरजाघर मे कोई स्थान नही हे। उनके दृष्टिकोण से गिरजाघर मे केवल वही सगीत अपनाया जा सकता था जो सब मिलाकर स्वरमेल से गा सके। उन्होने सोचा कि चर्च सर्विस (गिरजाघर के आराधना-सगीत) मे सोलो (एकक सगीत) ट्रेण्ड क्वायर (प्रशिक्षित नाचने-गाने-बजाने वाली मण्डली) और प्रशिक्षित वाद्य-वादको के सगीत-कार्यो जैसे नाटकीय कार्यो के लिये कोई स्थान नही था। वे यह मानते थे कि गिरजाघर मे गायन उनकी ऐसी सर्विस थी जिसमे सभी को भाग लेना चाहिये था इसलिये सगीत इतना सरल होना चाहिए था कि प्रत्येक व्यक्ति उसे प्रयोग मे ला सके। ऐसे सगीत का तात्पर्य यह था कि एक ही स्वरारोह या ताल पर ध्वनित होने की स्थिति मे गायन चलता रहे। इसके कारण बाद मे सगीत की कठिनाइयाँ उठी जिनका उन्हे पूर्वाभास न हो सका। जहाँ तक हम कह सकते है, साम सिंगिग (भक्ति-गान) ही एक

मात्र ऐसा सगीत था जिसे न्यू इग्लैड मे लगभग सौ वर्षों से अपनाया गया था।

प्यूरिटन सम्प्रदायी (पिलग्रिम) उन साम्स (धर्मगीतो) को ऐसे छन्दवद्ध कर लेते थे कि वे सब मिलकर सरलता से गा सकते थे। उनके इस अज्ञात ससार मे आने से कुछ वर्प पूर्व ही उनकी सगीत की पुस्तक हालैण्ड मे छपी थी।

पिलग्रिम-ट्यून की ओल्ड हण्ड्रेडथ नामक पुस्तक ही उन साम्स (धर्म-गीतो) की वह प्रथम पुस्तक है जिसमे ऐसी ट्यूने है जिन्हे आज भी हम जानते हैं और गाते है। इस पुस्तक का यह नाम इसलिये दिया गया कि उन्होने सौवे साम के मीटर के क्रम के अनुसार उसे रखा था। अव इस पुस्तक को स्तुति के लिये (डाक्सोलाजी के लिये) प्रयोग मे लाते है। यदि आप उन साम्स को स्वय गाये तो आपको ऐसा लगेगा कि इनमे रिद्म नही है। यह मोडल साम ट्यून है। इसका अर्थ यह है कि यह वहुत पुराना सगीत था जिसे पिलग्रिमो ने अपनाया था और जिसका उद्‌भव मध्यकालीन युग के प्लेन चेण्टे (स्पष्ट राग) से हुआ था। उस समय केवल यही सगीत था जिसे लिपिवद्ध किया गया था (जिससे आज हम उसका अध्ययन कर सकते है) और गिरजाघर मे लोग इस सगीत का उपयोग करते थे। प्रारभ मे पादरियो का यह विश्वास था कि रिद्म का गिरजाघर मे कोई स्थान नही है। उनके लिए रिद्म सासारिक थी और उनकी मूल प्रवृति सभवत ठीक ही हो क्योकि जव हम विशेष रिद्म को सुनते है तो इसके प्रभाव से नाचने का मन होता हे, हम अपने पैरो को थपथपाने लगते हे और अपने कधो को हिलाने लगते है (और यदि आप पिलिग्रम फादर के सवध मे ऐसा करते हुये अनुमान करे तो आप हस उठेगे।)

एक अभिलेख से ऐसा विदित होता है कि साम-सिगरो (धर्मगीत गायको) के एक छोटे दल ने जो सगीत अपनाया था, उसको किसी पिलग्रिम (प्यूरिटन सम्प्रदायी) ने ही लिपिवद्ध किया था। इस वात का सहज अनुमान हो सकता है कि उन सभी के लिये वह समय कितना गभीर था जव वे डचो के लीडिन

नगर के बन्दरगाह पर मेफ्लोर जहाज मे अज्ञात महासागर पार करने के लिये सवार हुये थे और उन्होने अपनी परिचित मातृभूमि को छोड दिया था तथा वे उस अज्ञात नये ससार को चल दिये थे जहाँ से उन्हे लौटने की आशा नही थी। जब कभी लोग कही जाने के लिये अलग होने वाले होते हैं तो वे सदा एक दूसरे से मिला करते है। ये पिलग्रिम भी चलते समय अपने मित्रो से मिले। उनमे से किसी ने इस अवसर की झाकी प्रस्तुत की है

> जब जहाज हमे ले जाने के लिये तैयार था, उस समय हमारे उन भाई-बधुओ ने जो हमारे साथ नही जा रहे थे, हमे पादरी के घर मे दावत दी। पादरी का घर काफी बडा था। हम लोगो ने वहाँ आराम किया। हमने उस विदा की वेला मे आँखो मे आँसू भरकर साम गीत गाये। इन गीतो को मधुर कण्ठ से गाकर ही प्रसन्नता नही मिली बल्कि हमारे हृदय मे आनन्द भर गया। पहिले न जाने कितनी बार अच्छे गीत गाये गये होगे लेकिन उस समय वस्तुत वह मेलोडी सबसे अधिक मधुर प्रतीत हुई जिसे हमने कभी न सुना था।

गायको के मन मे कई सन्देह और अनिष्ट की शकाएँ उत्पन्न हुई होगी क्योंकि उन्होंने अपने साहस बटोरने के लिये ही गीत गाये। मानवीय हृदय के प्रति सगीत की भाषा कितनी समीप और व्यक्तिगत होती है—यह ऐसी भाषा है जो शब्दो के अर्थो के परे एक विशेष प्रभाव डालती है।

जब मूर्तियो के उपासक व्यक्ति अपने देवी-देवताओ के आगे नाचे तो सगीत केवल अन्त स्फूर्ति की भाषा थी। यही कारण है कि पुराने पादरी रिद्म मे विश्वास नही करते थे क्योंकि ईसाइयो के गिरजाघरो मे नृत्य करना धार्मिक कर्म नही समझा जाता था। यदि शुरू के गोरो को हमारे समुद्री तट पर सुदूर इण्डियन के ढोल थपथपाने के स्वर सुनाई दे जाते तो वे उसे अपने लिये अभिशाप और शैतान मानते। उन्हे इतने समय तक इस बात की ट्रेनिंग दी गई थी कि कौन सा सगीत सही है और कौन-सा गलत। वे इसके इतने अभ्यस्त हो गये थे कि जैसा कि हमने देखा है कि वे भूल गये थे कि कबीलो

मे रहने वाले लोगो के लिये रिद्म स्वाभाविक अभिव्यक्ति है और रिद्म का उनके लिये वही महत्व था जैसा कि बच्चो के लिये।

उस समय पुस्तको का अभाव था, पादरी वाक्याशो को रेखाबद्ध कर देते थे और सामूहिक रूप से धर्मगीत गाने वाले गीत की एक कडी गा लेने के बाद अपने पादरी की इस बात की प्रतीक्षा कर उठते थे कि वह उन्हे अगली कडी का माडेल प्रस्तुत करेगा। यह बहुत कुछ ऐसा ही तरीका है जब छात्रो ने सगीत का अध्ययन करना न सीखा हो और उन्हे अध्यापक गीत सिखाये। वे छात्र पहिले गीत को रटकर सीखते है और उसके बाद उसे स्वरबद्ध करते हैं।

गोरो को यहाँ आने पर कठिनाइयो और खतरो का सामना करना पडा। यदि उन पर विचार किया जाय तो यह महसूस करते हुये अधिक आश्चर्य होता है कि उन्होने सामान से लदी बहती नौका के आने के पन्द्रह वर्ष बाद मेसाच्यूसेट्स मे उत्तरी अमरीका का प्रथम कालेज ही स्थापित नही किया बल्कि पहिला मुद्रणालय भी लगाया। उन्होने तीस वर्ष मे अपनी **बे साम** बुक छापी। उसमे पहिले गीत ही थे। और पचास वर्ष बाद उन्होने अपनी 'साम' पुस्तको मे गीतो के साथ सगीत के सकेत भी छापे। **बे साम** बुक का उपयोग केवल न्यू इग्लैण्ड के गिरजाघरो मे ही नही किया जाता था अपितु इग्लैण्ड और स्काटलैण्ड मे भी इस पुस्तक की बहुत प्रतियाँ बिकी।

लगभग सौ वर्ष अथवा इससे कुछ कम या अधिक समय तक न्यू इग्लैण्ड मे केवल 'प्यूरिटन सामोडी' का सगीत ही प्रचलित रहा। उसके बाद अन्य लोग आये, वे अपने साथ वाद्ययत्र लाये और जगह-जगह पर बसते गये। उन्हे सगीत के लिये अधिक समय और सुविधा मिलने लगी। कुछ ऐसे विचारहीन व्यक्ति हैं जो इतिहास को नही मानते। उनका कहना है कि अमरीका मे सगीत नही था। ऐसा कहने का अर्थ यह है कि वे अमरीका की योरुप से तुलना करते हैं। यदि व्यक्ति को इतिहास के बारे मे कुछ भी ज्ञान हो जाय और दोनो महाद्वीपो के मनुष्यो की कहानी का कुछ भी पता हो सके तो अमरीका को सगीतहीन मानना मूर्खतापूर्ण विचार है।

आज भी कण्ट्री कम्युनिटी (समुदायो) मे जनता के लिये ऐसे अवसर नही हैं कि वे किसी प्रकार की कला की रचना कर सके। एक किसान सुबह से लेकर काफी रात तक अपने खेतो मे काम करता है अथवा अपने जानवरो की देखभाल करता है। सयुक्त राज्य अमरीका मे सर्व प्रथम आने वाले व्यक्ति केवल कण्ट्री या ग्रामीण समुदायो मे ही नही रह रहे थे अपितु वे सभी वातो मे अग्रणी भी रहे। उस समय उनके पास कलाओ का आनन्द उठाने का अवसर न था। किसी भी कला को समृद्ध करने अथवा जीवित रखने के लिये यह आवश्यक है कि उसका अधिकाधिक अभ्यास किया जाय। शुरू में अमरीकनो को कला मे अभ्यास करने के लिये कोई अवसर न था। वे एक महान महाद्वीप के बसाने मे लगे हुये थे।

किसी भी देश का सगीत प्रारम्भ मे पूर्णरूपेण विकसित नही हुआ हे। प्रारभ मे एक नये देश को सगीतात्मक सस्कृति अन्य स्थानो से लानी पडती है। योरुप के अन्य देशो ने अपनी सस्कृति मे अन्य सस्कृतियो से आदान-प्रदान किया है। शायद फ्रास मे यह आदान-प्रदान वहुत कम हुआ है। यदि प्रत्येक सस्कृति का अध्ययन करे तो यह लगता है कि प्रारभ के गीतकारो ने गिरजाघर के सगीत के नोटेशन को स्वीकार किया। महान वैश के समय मे जर्मनी के कोर्ट फ्रान्स और इटली से सगीत लेकर अपना सगीत बनाते रहे। जर्मनी मे गिरजाघर के सगीत के रूपो मे परिवर्तन हुआ तथा धार्मिक सुधार से नवीन सगीत की रचना हुई। उसके वाद जर्मनी मे अपने सगीत का विकास होने लगा। हेनरी परसेल से पूर्व ऐसा समय था जब योरुप मे इगलिश म्यूजिक की माँग थी।

पिलग्रिम फादर्स के आने के वाद १५० वर्षो तक अमरीकी उपनिवेशो के अधिकाश लोग कण्ट्री कम्युनिटी (ग्रामीण समुदायो) मे वसते रहे। आगामी सौ वर्षों तक शुरू शुरू मे आने वाले लोग पश्चिमी भागो मे फैलने लगे जिसका परिणाम यह हुआ कि कुछ ही वर्पो पूर्व वहाँ सगीत का विकास प्रारभ हुआ है।

यह स्वाभाविक ही था कि इस देश मे वसने वाले लोगो के साथ

योरुप से सगीत आया। न्यू इग्लैण्ड ही एक ऐसा भाग था जहाँ ओल्ड इग्लैण्ड से शिष्टाचार और सगीत आया और जहाँ सर्व प्रथम सगठित गायन होने लगा और वही से देश के अन्य भागो मे सगीत फैलने लगा। पिलग्रिमो के आने के १५० वर्ष बाद अमरीका के अपने प्रथम "प्रमुख सगीतकार" उभरने लगे। लेकिन पिलग्रिमो के आने से बहुत पहिले योरुप मे सभ्यता और कलाओ की अधिक प्रगति हो चुकी थी। वहाँ एक से अधिक सभ्यताएँ थी। लोग शहरो मे रहने लगे थे और कई पीढियो तक कलाओ का अभ्यास करने के आदी हो चुके थे। योरुप मे किन्ही अर्थ प्रभावो के फलस्वरूप सगीत का विकास हो रहा था लेकिन ऐसे प्रभावो से अमरीका सदैव वचित रहा। इन प्रभावो मे गिरजाघर और कोर्ट के प्रभाव प्रमुख रहे।

प्यूरिटनो ने महान गिरजाघरो और कैथीड्रलो की उत्कृष्ट सगीत सर्विस की ओर से ध्यान हटा लिया। उस सर्विस मे 'एन्थम' और सामूहिक पूजा गीतो के गायन का आयोजन होता था। कोर्ट एक ऐसा दूसरा साधन था जिससे सगीत को आश्रय मिल जाता था, लेकिन अमरीका मे इस प्रकार सगीत को कभी आश्रय न मिला। राजाओ और रानियो के यहाँ रिवाज था कि उनके दरबार के लिये सगीत प्रस्तुत करने तथा रचनाओ के लिये सर्वोत्तम सगीतज्ञो को नौकरी दे दी जाती थी। यदि आप हेनरी परसेल की जीवनी के बारे मे पढे तो आपको यह विदित होगा कि इन्ही दो साधनो से उसने अपना जीवन-यापन किया और यही ऐसे साधन थे जिनसे उसे सतत प्रेरणा मिलती रही। कभी-कभी कोई योरुपवासी सगीतकार अपना अधिकतम जीवन अपने आश्रयदाता के साथ ही बिता देता था जैसा कि हेडन ने किया। ऐसे सगीतकार अपने जीवन यापन के लिये किसी राजकुमार के आश्रय और सरक्षण मे रहते थे और उनके मनोविनोद और ऐश्वर्य के लिये गीतो की रचना किया करते थे। अमरीका मे कभी दरबारी जीवन नही रहा क्योकि प्यूरिटन राजाओ और राजकुमारो की ओर से भी विमुख हो चुके थे।

अमरीका और अन्य देशो के सगीत मे एक बहुत बडा अन्तर है जिसका आभास अमरीकी सगीत से मालूम होता है इग्लैण्ड मे प्रत्येक अग्रेज था, जर्मनी

मे प्रत्येक जर्मन था; फ्रास मे फ्रासीसी ही थे और इटली मे इटेलियन। परन्तु अमरीकी कौन थे ? उनमे प्रत्येक व्यक्ति सम्मिलित था और जो कोई भी वहाँ पहुँचा, वह भी उनमे शामिल हो गया, अमरीका सभी के स्वागत के लिये उन्मुक्त था।

अमरीका एक ऐसा देश है जिसमे सभी राष्ट्रो के व्यक्तियो ने एक साथ मिलकर रहना सीख लिया है। यही कारण है कि अमरीका को ग्रेट मेलटिग पॉट (वडा सम्मिश्रण केन्द्र) कहते है। ये लोग अपने साथ अपना सगीत लाये और एक दूसरे के साथ घुल मिल गये। अमरीका मे सबसे अधिक प्रकार के लोग आकर एक दूसरे से मिले हैं। इसलिये यहाँ पर अन्य राष्ट्रो के जो भी लोग आये, उनके सगीत का समेकित सगीत ही अमरीका का सगीत बन गया या किसी सगीतज्ञ का यह भी कहना है कि अमरीका मे अलग-अलग राष्ट्रो की अलग-अलग सस्कृतियो के सम्मिश्रण से सगीत की अनेक विधाओ (म्यूजिक्स) की रचना हुई है।

जैसे जैसे समय बीतता गया, पेनसिलेवेनिया मे लोग बसते गये, उन्हे सगीत प्रिय था, वे वेल्श, जर्मन और स्वीडन वासी थे और अपने साथ अपना अपना सगीत लाये थे। वोहेमिया योरुप का सबसे अधिक सगीत प्रिय प्रदेश है और वहाँ से मोरेवियन जाति के लोग आये। वे लोग पेनसिलेवेनिया के वेथलेहेम मे जाकर बस गये। उन लोगो के सगीत का प्रभाव अभी तक विद्यमान है। लोग अव भी प्रतिवर्ष 'वेथलेहेम वेश क्वायर' सुनते जाते हैं।

वर्जीनिया उपनिवेश मे शायद किसी प्रकार का सगीत रहा हो क्योकि यह उपनिवेश पिलग्रिमो के न्यू इग्लैण्ड मे आने से पहिले ही वस चुका था किन्तु अभिलेखो से कोई सूचना प्राप्त नही होती। तथापि हम यह जानते हे कि यह सगीत "सामसिगिग यानकीज" की देन है। यद्यपि इन लोगो की सगीत मे अधिक रुचि न थी फिर भी उनकी रुचि मे प्रवलता, तत्परता और आत्मीयता थी जिसके फलस्वरूप सिंगिग सोसाइटीज (गायन-समितियाँ) और सिंगिग स्कूल (गायन-स्कूल) स्थापित होने लगे। और उन्ही के माध्यम से सगीत देश के शेष भाग मे पनप उठा।

प्यूरिटनो के सगीत को पहिले-पहल क्षति हुई। न तो उनके पास सगीत के लिये वाद्य-यन्त्र ही थे और न उन्हे सगीत के लिये निर्देश ही मिल पाते थे इसलिये वे सगीत का अधिक विकास न कर पाये। एक-न-एक पुराने देश से वाद्य-यन्त्र लाये गये और न्यू इगलैण्ड-वासियो ने अपने गीतो की नवीन पुस्तके तैयार कर ली। वे इस बात को जानते थे कि उन्हे सगीत के क्षेत्र मे कठिनाइयो का सामना करना है और उन्हे यह महसूस होने लगा कि उन्हे अपने 'नोट्स' पढना सीखना चाहिये।

हमे यह विदित है कि पहिले उनकी **बे साम बुक** मे सगीत को लिपिबद्ध करके छापा नही गया था क्योकि लोग स्वरबद्ध सगीत को नही पढ पाते थे। धीरे-धीरे उनकी पुस्तको मे 'साम ट्यून' गाने के लिये हिदायते शामिल होने लगी। वे इन हिदायतो को **ग्राउड्स एण्ड रूल्स आफ म्यूजिक** कहा करते थे। परन्तु कुछ समय के लिये इस स्थिति ने भी प्यूरिटनो को भ्रम मे डाले रखा और उन्होने कहा, "यदि हम एक बार नोट के आधार पर गीत गाने लगे तो हमे नियम के आधार पर प्रार्थना है करनी और प्रवचन देना है।" और यह सोचकर उन्हें यह आशका होने लगी कि कही वे फिर अपने पुराने तरीको पर ही न आ जाये, जिनसे वे असतुष्ट हुये थे और जिनके कारण उन्हे आराधना के लिये अनेक नियमो का पालन करना पडा था। वर्ष बीतते गये, बात चलती रही और वे चिन्तित भी रहे। वे अधिक अच्छा गाना चाहते थे लेकिन यह नही जानते थे कि कसे गावे। उन्होने सावधानी से इस स्थिति को सभाला और उन्होने उपयुक्त समय मे ही सगीत के नियम बना लिये। वे सगीत के नोट पढने लगे। उन्होने इस प्रकार गाना-बजाना सीख लिया जिससे रविवार के दिन चर्च-सगीत (सण्डे-गो-टू-मीटिंग) से किसी प्रकार की बाधा नही पडती।

१७७० मे जर्मनी मे बी थॉवन का जन्म हुआ और उसी वर्ष न्यू इग्लैण्ड मे प्रारम्भिक गायन स्कूलो को सगठित किया गया। इन नये स्कूलो मे बहुत समय तक अपने गीत नही गाये गये बल्कि ऐसे गीतो का चलन रहा जो नियम आदि का उल्लघन किये बिना मीटिंग हाऊस मे भी गाये जा सकते थे। उसी

वर्ष बोस्टन मे न्यू इंग्लैण्ड साम-सिंगर नामक पुस्तक छपी। प्रारम्भिक अमरीकी सगीतकारो मे से विलियम विलिंग्स नामक सगीतकार ने उस पुस्तक का सकलन किया। एक महानुभाव ने पुस्तक के मुख-पृष्ठ पर चित्र बनाया जो आज भी पाल रेवेयर के नाम से प्रसिद्ध है। उनकी ख्याति इसलिये नही हुई कि उन्होने 'साम ट्यून बुक' का मुखपृष्ठ बनाया था बल्कि उन्हे लोग इसलिये जानते है कि उन्होने इस रचना के पॉच वर्ष बाद एक रात को घोडे की सवारी की थी और वह घटना उनके जीवन की अविस्मरणीय घटना है।

हमारे प्रथम अमरीकी सगीतकार

माई डेज हेव बीन सो वनडर्स फ्री

हम अपने देश मे स्वावलम्बी और स्वतत्र हो गये और समय के साथ हमे हमारा सगीतकार भी मिला। प्रथम अमरीकी सगीतकार का नाम फ्रान्सिस हापकिन्सन था और उसका जन्म फिलेडेलफिया मे हुआ था। पाल रेवेयर ने 'साम ट्यून' के सकलन के पृष्ठ तैयार किये। उसके कुछ वर्ष पूर्व हापकिन्सन ने **ओड टू म्यूजिक** और **माई डेज हैव बीन सो वन्डर्स फ्री** नामक गीतो की रचना की। यह बात बिल्कुल ठीक लगती है कि हमारा पहिला सगीतकार जार्ज वाशिंगटन का मित्र ही होगा और वह भी स्वतत्रता-घोषणा के गायको मे से एक गायक होगा। हमारे दूसरे प्रेसीडेंट जान एडम्स ने एक बार अपनी पत्नी को पत्र लिखा जिसमे उस सगीतकार के बारे मे लिखा था। उन्होने अपनी पत्नी को यह लिखा

> होपकिन्सन सुन्दर, नाटे, विलक्षण और मेधावी व्यक्तियो मे से एक है। उसका सिर एक बडे सेब से बडा नही है। मुझे प्रकृति मे ऐसा अन्य कुछ भी नही दिखा है जिससे उसकी तुलना की जाय। उसके व्यक्तिगत साक्षात्कार से केवल मनोरजन ही नही होता बल्कि प्रसन्नता मिलती है। वह सभ्य और शिष्ट है और साथ ही अधिक मिलनसार है।"

प्रारम्भिक गायको मे से दूसरा गायक विलियम बिलिंग्स था जो बोस्टन मे चर्मकार था। वह स्वय एक "चरित्र" का प्रतीक था। वह सगीत को

बहुत चाहता था और सगीत के प्रति उसका उत्साह था। निदान उसने अपना चर्मशोधन का रोजगार छोड दिया और सगीत को ही अपने जीवन-यापन के लिये व्यवसाय बना लिया, उन दिनो इस देश में कोई भी व्यक्ति केवल सगीत के सहारे जीविका नही कमा सकता था और बिलिग्स निर्धन ही मर गया परन्तु न्यू इग्लैण्ड मे उसकी ख्याति फैल गई और उसका सगीत सुदूर फिलेडलफिया मे प्रयोग मे आने लगा। उसमे बजाने या गाने की क्षमता से कही अधिक सगीत के प्रति उत्साह था। वह एक आँख से अन्धा था, उसकी एक बॉह को लकवा लग गया था, उसके छोटे बडे पैर थे और उसकी आवाज मे कर्कशता थी। उसके कान ठीक थे। पाल रेवियर ने 'साम ट्यून' पुस्तक तैयार की। इसके अतिरिक्त विलिग्स ने ऐसी रचनाएँ की जिन्हे वह "स्वर सगत पद" (फ्यूग्यूयग पीस) कहा करता था और जिनके बारे मे उसका विचार था कि "उन रचनाओ मे पुरानी रचनाओ की अपेक्षा बीस गुनी अधिक शक्ति है।" बोस्टन मे एक कर्स्ट (सगीत समारोह) का आयोजन किया गया और उसके दो एन्थेम (गीत) प्रस्तुत किये गये। उस सगीत समारोह का समापन हेंडेल के **द मसीहा** से **हेलेल्युजा कोरस** गीत गाकर किया गया।

अमरीकी क्रान्ति की लडाई के कुछ वर्ष बाद सयुक्त राज्य अमरीका मे ओरकेस्ट्रा के गीतो की पहिली पुस्तक प्रकाशित की गई। उसका नाम था— **दि डेथ साग ऑफ एन इण्डियन चीफ।**

हमारे राष्ट्रीय गीतो का प्रकाशन

स्वीट लैण्ड ऑफ लिबर्टी, ऑफ दी आई सिग"

लोगो ने स्वतत्र होने के लिये अधिक परिश्रम किया और सकट सहे। इन लोगो के वारिसो को यह लगा कि उनकी स्वतत्रता खतरे मे है तो उन्होने युद्ध करने की ठान ली। देश-भक्ति की भावना के जागृत होते ही लोगो ने सगीत से अपने मन की भावना को अभिव्यक्ति करना प्रारम कर दिया। यह स्वाभाविक ही था कि हमारे राष्ट्रीय गीतो की रचना उसी समय हुई जब हमारे देश-भक्ति मे सच्चे उतरने की परीक्षा का समय सामने था।

फिर भी अमरीका की सबसे अधिक लोकप्रिय ट्यून इस समय न बनी। **यान्की डूडल** गीत की ट्यून कितनी सुहावनी और अजीब है और यह कहा जाता है कि राष्ट्रीय गीतो की रचना से पूर्व ही उसकी रचना हो चुकी थी। **यान्की डूडल** की ट्यून पुरानी है और शायद यही कारण है कि उस गीत की यह ट्यून अजीब लगती हे।

जब ब्रिटिश सिपाहियो ने न्यू इग्लैण्ड के किसानो का उपहास करने के लिये **याकी डूडल** गीत गाया, उस समय यह गीत उतना ही सरल और असस्कृत राष्ट्रीय गीत था जिसे हम आज भी उसी प्रकार जानते है। लेकिन ऐसा अनुमान किया जाता है कि एक हजार वर्षो से पूर्व इटली के गिरिजा-घरो मे यह गीत गाया जाता था। उस समय यह गीत बहुत धीरे-धीरे गाया जाता था और उसके नोट्स एक ही टाइम-वेल्यू (समान आरोह-अवरोह) के होते थे। इसलिये उस गीत मे रिद्म नही था। यदि हम इस सिद्धान्त को स्वीकार कर ले तो यह ट्यून गिरजाघर से बाहर आ गई और दक्षिणी योरुप के अगूर के खेतो मे किसान इसे गाने लगे। यह स्वाभाविक बात थी कि इस ट्यून के अनुकूल गीत गाये जाने लगे। धीरे-धीरे यह ट्यून उत्तर मे खिसक कर हालैण्ड मे आ गई जहाँ 'जॉनी' के स्थान पर पुराना डच शब्द 'याकर' प्रयोग किया जाता था। "डूडल" पुराना फ्रिशियन शब्द था जिसका अर्थ मन्दबुद्धि का व्यक्ति अथवा "डम्ब बेल" (गुगी घण्टी) समझा जाता था। शताब्दियाँ बीतती गई और यह ट्यून इग्लैण्ड में पहुँच गई और वहाँ नर्सो ने बच्चो को यह ट्यून सुनाई और वे यह गीत गाने लगी

लूसी लॉकेट लॉस्ट हर पाकेट,
किटी फिशर फाउड इट
नथिग इन इट, नथिग ऑन इट
वट द बाइडिग राउड इट।

हम नर्सरी मे जो ट्यून सीखते है, उसकी अपेक्षा अन्य कोई भी ट्यून इस गीत के समीप नही है। इग्लैण्ड मे 'कामन वेल्थ' स्थापित हुई और कुछ समय के लिये कोई भी सम्राट नही रहा, उस समय प्रोटेक्टर आलीवर क्रामवेल

लदन नगर मे घोडे पर चढकर घूमने लगा जिससे लोग उसे शासक समझें। उसने केंटिश पोनी (टट्टू) पर वैठकर केण्टरवरी से प्रस्थान किया। वह एक छोटा गोल टोप भी पहिने था जिसमे एक पख लगा था और विनोदी स्वभाव के घुडसवार उसके साथी जो उसका उपहास भी कर देते थे। वे उपहास मे यह गीत गाते थे

याकी डूडल केम टू टाउन
अपोन ए केंटिश पोनी,
स्टक ए फेदर इन हिज़ हैट
एण्ड काल्ड हिम मेकेरोनी।

इटेलियन स्टाइल के बने हुये कसे कपडो को **मेकरोनी** कहा करते थे। उस समय युवक उसी फैशन के कपडे पहिना करते थे।

सौ वर्ष वाद अमरीका मे लोग ब्रिटेन के लाल कोट पहिनने लगे और उन्हे पहिनकर न्यू इग्लैण्ड के किसानो का उपहास करने लगे। सरल स्वभाव के देहाती लोग वडे आश्चर्य से ब्रिटिश सिपाहियो को उन चमकदार पोशाक मे तोपो के साथ देखकर हैरान रह जाते थे। उन यात्रानुभवी सिपाहियो को ये किसान भी कितने विचित्र लगते थे। और लोगो का उपहास करना सवसे सरल काम है लेकिन यह निर्मम स्वभाव की वात है। जब न्यू इग्लैण्ड के निवासी अपने गिरजाघरो मे रविवार को अपनी साम ट्यून गाते तो ब्रिटिश सिपाही गिरजाघर के वाहर खडे हो जाते और वे उनका मज़ाक उडाते तथा उनसे अधिक जोर से गाने की कोशिश करते। वे **याकी डूडल** गीत गाते।

सन् १७७५ मे अप्रैल की एक रात थी, उस रात को ब्रिटिश सिपाही वोस्टन से लेक्सिगटन को प्रस्थान कर गये। वे कदम मिलाने के लिये **याकी** डूडल गीत गा रहे थे। उनके आगे एक सचमुच ही याकी था जिसका उन्हे कोई ज्ञान न था। उसका नाम पाल रेवेयर था और वह अपने पोनी पर सवार था। एक ऐसा दिन आया कि समय ही वदल गया और ब्रिटिश जनरल कॉर्नवालिस ने दुखी होकर यार्क टाउन मे आत्म-समर्पण कर दिया। ब्रिटिश वैण्ड ने पराजित होकर ठीक ही यह धुन वजाई **द वर्ल्ड टर्न्ड अप**

साइड डाउन, लेकिन अमरीकी बेण्ड ने इसका समुचित उत्तर दिया और याकी डूडल गीत की ट्यून बजाई ।

प्रथम अमरीकी संगीतकार के पुत्र का नाम जोसेफ हापकिन्सन था। वह उन दिनों अमरीका का सर्वोत्तम हार्प्सिकार्ड का वादक था और उसी ने हेल कोलम्बिया की रचना की थी। उसने यह कहानी बताई कि वह इस गीत की रचना किस प्रकार कर सका। यह वह समय था जब फ्रांस अमरीका को दुःख दे रहा था। उस समय जोन एडम्स दूसरे प्रेसीडेंट थे। राष्ट्रीय भावना फिर जोर पकड़ गई और दो राजनीतिक दल जमकर भाग लेने लगे। १७९८ की ग्रीष्म-ऋतु थी, शनिवार का दिन था और दोपहर के बाद का समय था। उस समय फिलेडेल्फिया में कांग्रेस अपनी समस्याओं पर वाद-विवाद कर रही थी। गायक गिल्बर्ट फॉक्स उसी समय हापकिन्सन से मिलने आये और वे स्कूल से ही हापकिन्सन को जानते थे।

मिस्टर फॉक्स दुविधा में फंसे थे। आगामी सोमवार की रात को उन्हें थियेटर में लाभ होने वाला था। उन्हें उस समय प्रेसीडेंट मार्च के लिये एक नया गीत प्रस्तुत करना था। उन्होंने हापकिन्सन को यह कठिनाई बताई कि थियेटर का कोई भी कवि गीत के अनुकूल शब्दों की कल्पना नहीं कर सकता। यह कठिन काम है कि ऐसा राष्ट्रीय गीत लिखा जाय जिससे किसी दल को दुःख न हो। शायद मिस्टर हापकिन्सन इस काम में उनकी सहायता कर सकेंगे। मिस्टर हापकिन्सन ने आश्वासन दे दिया और कहा कि वह यथाशक्ति इस सम्बन्ध में प्रयत्न करेंगे।

वेजेमिन कर ने हेल कोलम्बिया गीत के लिये विज्ञापन दे दिया। मिस्टर कर अमरीका के सगीत के प्रथम स्टोर कीपर थे।

हमारे राष्ट्रीय गीत—दी स्टार स्पैंग्लड बेनर—की रचना उस समय हुई है जबकि देश-भक्ति की भावना चरम सीमा पर थी। १८१२ से युद्ध हो रहा था और वह गीत १३ सितम्बर १८१४ को लिखा गया।

ब्रिटिश सिपाहियो ने एक अमरीकी डाक्टर को वन्दी वना लिया था और उसे वाल्टीमोर के वन्दरगाह से दूर लगर डालकर ठहरे हुये जहाज मे कैद कर रखा था। फ्रान्सिस स्काट की एक युवक वकील था और वह सवि-सूचक झण्डा लेकर वहाँ पहुँचा, और डाक्टर की मुक्ति के लिये निवेदन करने लगा। लेकिन ब्रिटिश सेना फोर्ट मेक्हेनरी पर चढाई करने की तैयारी कर रही थी और वॉल्टी-मोर के हडपने की तैयारी मे थे। उन्होने जव तक वे आक्रमण न कर दे तव तक की को भी कई दिनो तक वन्दी वना लिया। की स्वय १३ सितम्वर की रात को कैदी था जवकि उसने ब्रिटिश सेना की वम-वर्षा का प्रारमिक दृश्य अपनी आँखो से देखा। उन्होने उस जहाज को ऐसी जगह रोका था जहाँ से की को युद्ध का दृश्य स्पष्ट दिखाई दे रहा था। अमरीकियो को गत सप्ताहो मे काफी हानि उठानी पडी थी और दुश्मनो ने देश की राजवानी वाशिगटन शहर तक जला दिया था। ब्रिटिश सेना को यह विश्वास था कि वे इस नये हमले से जीत जायेगे। उन्हे यह आशा थी कि की को अपने देश के प्रति हुये घोर अपमान का दृश्य देखना पडेगा। वास्तव मे वह रात उसके लिये वहुत भयानक रात थी। वह डेक पर चक्कर काटता रहा और सारी रात नही सो सका। वह यह देखता रहा कि किले पर कहाँ-कहाँ वम गिरे है। उसने रात के मद्धिम प्रकाश मे किले के ऊपर तारो और धारियो का एक महान झण्डा (फ्लेग ऑफ स्टार्स एण्ड स्ट्राइप्स) लहराते हुये देखा। "क्या वह झण्डा उसे प्रात काल भी लहराता मिलेगा ?"

धीरे-धीरे अधेरा लोप होने लगा और पूर्व दिशा मे प्रकाश की किरने चमकने लगी। पानी के ऊपर इतना अधिक कुहरा छाया हुआ था कि वह किला नही देख पा रहा था। रात मे यकायक वम वर्षा रुक गई। उसे

आश्चर्य था कि ऐसा क्यो हुआ ? कोई समाचार नही मिला। वह यह भी देख नही पा रहा था कि कौन सा झण्डा लहरा रहा है ?

यकायक हवा का झोका आया, कुहासा छटने लगा और उसने अपनी थकी आँखो से ऐसा दृश्य देखा जिसके लिये उसे आशा न थी। उस झण्डे के एक किनारे पर गोली लग गई थी और उसका एक स्टार गायब हो गया था फिर भी वह **स्टार स्पैंग्लड बैनर** (झण्डा) शान से किले पर लहरा रहा था। उसने अपने मन मे ही यह गीत गाया **"ओ लांग मे इट वेव ओवर दी लैण्ड ऑफ द फ्री एण्ड द होम ऑव द ब्रेव।"**

मिस्टर की इतने भाव-विभोर हो चुके थे कि उन्होने अपनी जेब से एक लिफाफा निकाल लिया और वे वही अपने गीत के शब्द लिखने लगे जो उनके मन मे आ रहे थे। जब वह बॉल्टीमोर पहुँचे तो उन्होने वह गीत एक मुद्रक को दिया और वह गीत एक इश्तिहार की शक्ल मे छप गया। उसी रात को बॉल्टीमोर की एक सराय मे उस गीत को गाया गया। उस गीत को एक अग्रेजी शराबी की ट्यून मे गाया गया जो उन दिनो मे बहुत लोकप्रिय थी। उसी समय से वह गीत अमरीकी गीत माना जाने लगा। वह गीत अमरीकी गीत क्यो न माना जाता ? अमरीकी कभी इग्लैण्ड से ही आये थे। उसके शब्द, ट्यून और टाइम दिल हिलाने वाले थे और उस गीत को लगातार गाया जाने लगा। यहाँ तक कि वह अमरीकी राष्ट्रीय गीत (नेशनल एन्थम) बन गया।

अमेरिका नामक गीत राष्ट्रीय गीतो मे से एक गीत है और उसका युद्ध से कोई सम्बन्ध नही है। वह सचमुच नेशनल हिम्न (राष्ट्रीय गीत) है। सौ वर्ष से अधिक समय हुआ जब इस गीत की रचना सेम्युल फ्रान्सिस स्मिथ ने की थी। उसने भी बताया कि वह इस गीत को कैसे लिख सका।

एक सज्जन थे, वे योरुप से आये और अपने साथ जर्मन भाषा मे कुछ सगीत की पुस्तके भी लाये। उन्होने वे पुस्तके गीतकार लोवेल मेसन को दी जो सगीत पढ सकता था किन्तु जर्मन भाषा नही जानता था। मिस्टर मेसन ने उन पुस्तको को स्मिथ को दे दिया। स्मिथ गिरजाघर के वादक थे।

मिस्टर स्मिथ से यह निवेदन किया गया कि वह उन पुस्तको को देख ले और यह बताये कि सगीतज्ञ मेसन उन पुस्तको मे से क्या उपयोग कर सकेगे ? मिस्टर स्मिथ ने कहा .

एक दोपहर के बाद मै बडे आराम से उन पुस्तको को देख रहा था और "गाड सेव दी किंग" की ट्यून इतनी अच्छी लगी कि मैंने कलम निकाली और उसे लिखना प्रारभ कर दिया....वह गीत एक ही बार मे लिख लिया गया और उस समय यह भी अनुमान न था कि उस गीत को कभी-न-कभी अधिक लोक-प्रियता मिलेगी . उस गीत को प्रथम बार बच्चो के सामने गाया गया जबकि उस दिन अमरीकी स्वातन्त्र्य दिवस का आयोजन था ।

जैसे ही इतिहास बढता जाता है और नई कहानियाँ बनती जाती हैं, यह कहना सगत प्रतीत होता है कि अमरीकी राष्ट्रीय गीत की ट्यून वैसी ही होनी चाहिये जैसी कि अग्रेजी राष्ट्रीय गीत गाड सेव दी किंग की ट्यून है। फिर भी कितनी विचित्र बात है कि स्टार स्पेंगलड बेनर गीत इग्लिश लोकप्रिय गीत की ट्यून से ही गाया जाता है। मातृभूमि के गीत की ट्यून को अपनाने से यह लगता है कि जो बीत गई सो बीत गई और "अब हमे समीप आ जाना चाहिये।" शायद सगीत का अर्थ बन्दूको के आघात से भी अधिक गहरा होता है। शायद हम इसलिये गाते हैं कि हम अतीत भूलकर फिर प्रेम से हाथ मिला सके।

अमेरिका गीत की ट्यून गॉड सेव दी किंग गीत की ट्यून के समान ही नही है अपितु इससे अन्य कई राष्ट्रो के गीतो की ट्यूनो का भान होता है। वस्तुत सगीत की भाषा मे दो राष्ट्रो के विभाजन का प्रश्न ही नही उठता। काश सभी कानून गीत हो पाते तो सभी राष्ट्र आपस मे सर्वथा मित्र बने रहते।

संयुक्त राज्य अमरीका मे सगीत की वृद्धि:

अमरीकी हिम (गीत)

"सिंगिंग आल-डे-एण्ड-डिनर-ऑन-द-ग्राउंड्स"

हमारा व्यस्त देश सदैव से ही व्यस्त रहा है। विलियम विलिंग्स अजीब

शक्ल का आदमी था। वह सगीत मे विशेष उत्साही था। वह बोस्टन नगर मे चर्मकार का काम कर चुका था। वह सगीतक्षेत्र मे पहिले-पहल उस समय सफल प्रयत्न मे लगा था जव सुदूर जर्मनी मे बीथॉवन का जन्म हुआ था। बिलिंग्स ने गीतो की रचना की। इसके अतिरिक्त उसने 'सेक्रेड सिगिग स्कूल' का सगठन भी किया। वह स्कूल अब भी मौजूद है और उसे अब 'साउटन म्यूजिकल सोसाइटी' कहते है। अव सगीत के कई स्कूल खोले गये और नई दुनिया के लिये वे सगीत के प्रमुख केन्द्र वने।

उनका सामाजिक रूप से विशेष महत्व था क्योकि उनके माध्यम से **गिरजा-**घर का सगीत फैलने लगा और लोगो का उससे मनोविनोद होने लगा चाहे वे गिरजाघर के व्यक्ति हो अथवा न हो। इन स्कूलो ने देश मे एक नये व्यवसाय को जन्म दिया और इनकी सहायता से सगीत के अध्यापक वनने लगे। वे स्कूल एक नई सामग्री वनाने मे भी हितकर सिद्ध हुये। यह ऐसी सामग्री थी जिसे खरीदा और बेचा जा सकता था। यह सामग्री प्रकाशित सगीत ही था। प्रथम सगीत अध्यापक सगीत के विक्रेता ही थे जिन्होने 'साम ट्यून' की पुस्तको का विज्ञापन दिया और उन्हे वेचा। समाचारपत्रो मे भी सगीत के अध्यापको और गीत सग्रहो के विज्ञापन दिये जाने लगे। इन विज्ञा-पनो में से दर्जनो विज्ञापन ऐसे नाच सिखाने वाले अध्यापक अथवा सगीतज्ञो के थे जो जर्मन फ्लूट हार्प्सिकॉर्ड अथवा वायलिन वजाना सिखाना चाहते थे। अमरीका मे वाद्य-यत्र पहिले ही वनाये जाने लगे थे लेकिन सौ वर्षों तक उन वाद्य-यत्रो को वजाने मे सर्व साधारण ढग से कौशल नही प्राप्त हो सका था और यह कुशलता तव तक न आ सकी जव तक कि रेल नही वनी और आने-जाने के साधन न वढे। अमरीका मे "रैगटाइम" की ट्यून (हब्शी सगीत की धुन) लोक-प्रिय हो गई और उसके वाद लोगो मे सगीत वाद्य-यत्रो का अधिक प्रचार हो गया।

गायन-समितियो का यह पहिला काम था कि वे गायको को सगीत का पढना सिखाती थी। 'मोडाल साम ट्यून' की प्रथम पुस्तको मे सगीत की 'वार लाइन्स' न थी और 'टाइम सिगनेचर' भी न थे। मोडाल म्यूजिक मे

रिद्म का अभाव था इसलिये 'वार लाइन्स' और 'टाइम सिगनेचर्स' की आवश्यकता न महसूस हुई। लाल कोट पहिनने वाले अग्रेजो ने न्यू इग्लैण्ड के गिरजाघरो का सगीत सुना होगा और वह सगीत उन्हे अधिक 'प्रसन्न करने वाला सगीत' प्रतीत हुआ। इस बात की केवल कल्पना ही की जा सकती है कि सामूहिक रूप से किसी हिम्न (गीत)का गाना कितना कठिन काम था जबकि उस समय न तो कोई वाद्य-यत्र ही था और न कोई ऐसा सगीतज्ञ था जो सामूहिक गीत का सचालन कर सके। उत्साही व्यक्तियो को अत्यन्त मार्मिक ढग से आम स्वर मे अपना स्वर मिलाने का अधिक प्रयत्न करना होता होगा और उन्हे इस बात की अधिक कोशिश करनी होती होगी कि वे एक साथ गीत की पक्ति शुरू करे और एक साथ ही गीत समाप्त करे। गायको को बीच-बीच मे केवल अनुमान से ही काम लेना होता होगा। गीत के उच्च स्वर और कोमल स्वर मे गायक की वैसी ही दशा होती होगी जैसी कि एक सिपाही बनने वाला लडका मार्च करते समय प्राय यह सोचने लगता है कि सभी के कदम उठ चुके ह और वही कदम नही उठा पाया है। फिर भी उन्होंने गभीरता और सच्चाई से अपने कार्य मे सफलता प्राप्त की।

योरुप मे कई सौ वर्ष पूर्व नोट सिंगिग (गायन) का तरीका विकसित हो चुका था और लोग उससे आज भी परिचित हैं तथा जिसका प्रयोग आज भी स्कूलो मे होता है। इन नोट्स मे सिलेबिल्स (पदाश) जोड दिये जाते थे। प्रत्येक को अपना डू रि मी गाना पडता था। इग्लैण्ड के एक भाग मे डू रि मी को मध्यम स्वर मे उतारकर फा सोल ला (मी को अन्तरवर्ती बना करके) बना लिया गया और इन सिलेबिल्स (पदाश) को शेक्सपीयर के समय गाया जाता था, उस समय एलिजाबेथ महारानी का राज्य था।
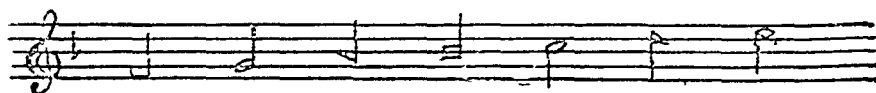
फा सोल ला फा सोल ला मी

जब सगीत के स्कूल खुले तो मुद्रित सगीत की आवश्यकता होने लगी और संगीत की ग्राउड्स (बुनियादी बातो) अथवा नियमो के लिये अच्छी हिदायतो की जरूरत पडने लगी जिससे कि सगीत सीखने वालो को पुस्तको का अधिकाधिक उपयोग कर मिले और साथ-ही-साथ अभ्यास तथा सामाजिक मनोरजन के लिये प्रचुर आकर्षक सगीत प्राप्त हो सके। पुस्तक से गाकर सीखने की पद्धति को आसान बनाने के लिये यह जरूरी था कि नोट्स को भी आकृतियाँ दी जाने लगी जिससे कि छात्र एक बार मे ही देखकर यह कह सके कि वह नोट 'सोल' या 'फा' है। डोक्सोलॉजी का रूप इस प्रकार बन गया

ओल्ड १००   चीयरफुल
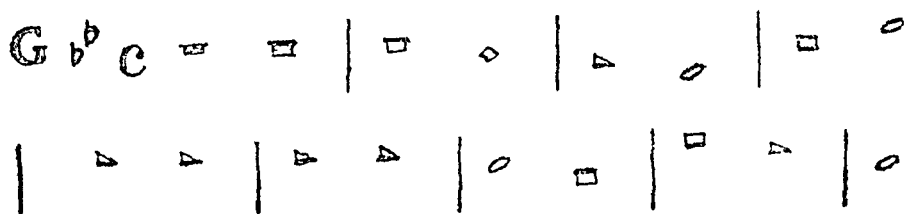
ओल्ड हण्ड्रेड्थ साम ट्यून प्रशसा और प्रसन्नता के लिये 'साम' गीतो के सग्रह के रूप मे माडल ट्यून की अकेली पुस्तक थी।

द ईजी इन्स्ट्रक्टर नाम की सबसे पुरानी परिचित शेप नोट बुक मे स्टाफ के लिये ट्यून इस प्रकार थी

शार्प की ऑन ए

'मेजर की' को 'शार्प की' कहा जाता था और 'माइनर की' को "फ्लेट की' कहा जाता था। 'मोड्स' के वताने का कोई आसान तरीका न था क्योकि जब वह सी मेजर तक पहुँच पाता, वे उसे 'सी' मे शार्प की (तीव्र स्वर) कह उठते यद्यपि उस की मे कोई तीव्रता नही होती थी।

सगीत के स्कूल 'स्वतत्र मगीत की घोषणा' करने वाले स्थान समझे जाते थे अतएव उन्हे प्राय सराय मे आयोजित किया जाता था। सगीत गिरजाघर के वाहर भी फैल रहा था। गायक अपनी वत्तियाँ खरीद लाते और उन्हे अपनी वेचो पर लगाकर उनकी मदद से पुस्तके देखा करते। वे दो या तीन पक्तियो मे अर्व वृत्ताकार होकर वैठते और वे दोपहर के वाद या सायकाल अपने क्लेफ्स, नोट-वेलूज और उन सभी बातो को सीखने के लिये प्रतिदिन तीन-तीन घण्टे के सत्रो मे चौवीस दिन तक अध्ययन करते जिन्हे अव लडके और लडकियाँ वडे होने से पहिले सीखा करते है। इसका सबसे वड़ा उद्देश्य यह होता था कि पाठ्यक्रम की समाप्ति के अन्त मे मीटिग कक्ष मे एक प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता था और उस समय कक्षा यह दिखा सकती थी कि उसने क्या-क्या सीख लिया है। सगीत स्कूल का अध्यापक भ्रमण करता रहता था, वह किसी अन्य गॉव या क्षेत्र को जाता और वहाँ चौवीस पाठो की एक कक्षा का आयोजन कराता और गीत-सग्रह की पुस्तको को अपने साथ ले जाता था। इन स्कूलो और समितियो के गीत गिरजाघरो की सरल और आसान ट्यून के गीतो की अपेक्षा धीरे-धीरे अधिक स्पष्ट और लम्बे होने लगे।

जव पूर्वी शहरो के गिरजाघरो मे ऑरगन का चलन हो गया तो वहाँ मगीत स्कूलो के अध्यापको की आवश्यकता न रही। योरुप से अच्छा सगीत और कुशल सगीतज्ञ आने लगे और वे अपने साथ वाद्य-यत्र भी लाये। अमरीका मे भी वाद्य-यत्र वनाने के अपने कारखाने शुरू हो गये। 'शेप नोटर्स' सुदूर पश्चिम और दक्षिण को फ्रटियर की तरह जाने लगे। योरुप से लाई गई अच्छी शिक्षा पद्धति प्रारम्भ कर दी गई जिसमे डू रे मी का ज्ञान भी सम्मिलित था। 'फा मोला' से सिखाने वाले अध्यापक (जैसा कि उन्हे 'फा सोला टीचर्स'

कहा जाता था) उन स्थानो को जाया करते थे जहां व्यक्तियो को संगीत का कुछ अच्छा ज्ञान न था। इस प्रकार शेप नोट सिस्टम (नोट की आकृति बनाकर संगीत सिखाने की पद्धति) ने ऐसा प्रभाव डाला कि देहात और शहर का संगीत अलग-अलग होने लगा, और लोक संगीत कला संगीत से अलग हो गया। दक्षिण मे समुद्री तट के किनारे शहरो और समुदायों मे अधिक विकसित संगीत का रिवाज था। योरुप से आने वाले अतिथि कलाकार कंसर्ट (सामूहिक संगीत) का प्रदर्शन करते थे। यह ऐसा क्षेत्र था जिसमे बड़े-बड़े किसान और गुलामो के मालिक रहा करते थे। जार्ज वाशिंगटन को सम्मिलित करके देश के सभी सम्भ्रान्त व्यक्ति अपने मिनिट्स (संगीत) के साथ नृत्य का आनन्द उठाने लगे थे और उनके रहन-सहन के तरीको मे शान-शौकत आ गई थी।

वह सगीत मधुर गति से चलता था ।

देहाती जिलो मे दूर-दूर तक "वकह्वीट नोट्स" सिखाये जाते थे, फिर भी सगीतज्ञ पूर्वी शहरो मे वढ गये और कालेजो मे अपने ही सगीतकार तैयार होने लगे । अमरीका मे प्रथम वार जिस सगीत का अभ्यास किया गया, यदि उस सगीत के वारे मे विचार किया जाय तो यह कहना स्वाभाविक है कि प्रथम अमरीकी सगीतकार हिम्न लेखक (गीतकार) रहे होगे । प्रस्तुत पुस्तक के लेखक के मित्र लोवेल मेसन ने माई कण्ट्री इट्ज ऑफ दी गीत लिखा और उन्होने नियरर माई गॉड टू दी और माई फेथ लुक्स अप टू दी जैसे कई श्रेष्ठ गीतो की रचना की । इन गीतो को हम आज भी गाते हैं शायद इसी समय अमरीकी गीत-रचना के दो भाग हो गये । कुछ शानदार अच्छे गीत थे जैसे मेसन के लिखे गीत, परन्तु एक अन्य प्रकार के गीत भी शुरू हुये जिन्हे गोस्पेल हिम्न (गल्प-गीत) कहा जाने लगा । इन गीतो का प्रचार कैम्प की वैठको, पुनरुद्धार करने वालो के आन्दोलनो और कुछ रविवार के स्कूलो मे हुआ । इन गीतो का उद्देश्य यह था कि अधिकाधिक सवेग उत्तेजित किया जाय अतएव ये गीत वैयक्तिक और भावनात्मक रहे । गीतो के पुनरुद्धार की अवधि मे रिब्र के प्रभावो की प्रशसा की जाने लगी और वे अपने आप ही पसन्द आने लगे । देश तेजी से आगे वढ रहा था, नई नई खोज हो रही थी, रेल चलने लगी थी और व्यक्ति सगीत को प्रसन्नता और विनोद का साधन समझने लगे थे । भावना प्रधान गीतो का फैशन हो गया । शाम के भोजन के वाद लोग वैठको मे आ जाते और पियानो वजाये जाते तथा परिवार के सभी सदस्य मिलकर भावना-प्रधान वेलेड गाया करते । यह वात केवल समय का साथ देने के लिये ही थी क्योकि भावनाप्रधान गीतो को पसन्द किया जाने लगा था । यदि भावना सरल और सच्ची होती तो उससे अभिप्रेत गीत अधिक समय तक चलता । कभी-कभी इस प्रकार का गीत ऐसा सगीतज्ञ लिखा करता जो यह भी न जानता था कि मेलोडी की दृष्टि से शव्दो का किस प्रकार प्रयोग किया जाय । लेकिन ईसाई धर्म के हिम्न (स्तोत्र) और भावना-प्रधान गीत भुलाये नही गये । गोरे उपदेशको से दक्षिणी नीग्रो ने गोस्पेल

हिम्न (गल्प गीत) सुने। इन गीतो मे शेल वी गेदर एट दी रिवर ?, विल दियर बी एनी स्टार्स इन माई क्राउन ?और ह्वेन दी रोल इज़ काल्ड अप योण्डर आई विल बी दियर मुख्य गीत थे।

अफ्रीका से आये लोगो ने नीग्रो के धार्मिक गीतो की रचना की

"स्विंग लो, स्वीट चेरिअॉट कमिन' फा' टू केरी मी होम।"

न्यू इग्लैण्ड के पथरीले समुद्री तट पर साम-गायको का एक छोटा दल मेफ्लोर नामक जहाज से आया। इससे एक वर्ष पूर्व अफ्रीका से गुलामो का पहिला जहाज दक्षिणी समुद्रतट के समीप आ चुका था। गोरों ने नीग्रो को गुलाम के रूप मे स्वीकार करना शुरू कर दिया था। यह कितनी विडबनापूर्ण बात है कि जिस देश मे गोरे स्वतत्र होने के लिये आये थे, उसी देश मे काले लोग गुलाम बनाये जाने लगे। फिर वे गोरो से बिल्कुल भिन्न थे, वे नितान्त अशिक्षित थे तथा जगली और कबीलो की जिन्दगी छोड़कर आये थे। सभ्य होने मे समय लगता है। उन्हे सबसे पहिले गोरो की भाषा सीखनी थी और फिर उन्हे गोरो के लिये काम करना सीखना था। रेड मेन की अपेक्षा नीग्रो का स्वभाव मधुर था। वे व्यवहार मे सरल थे और आदत तथा बोली से मधुर थे। वे सुख और दुख दोनो ही सह सकते थे। वे गोरो के साथ रह सकते थे। इण्डियन रिजर्व स्वभाव के थे और अकेले रहते थे इसलिये गुलामी स्वीकार नही कर सकते थे। वे स्वतत्र रहकर ही मरना चाहते थे।

नीग्रो जाति के लोगो को रिद्म और गीत के प्रति स्वाभाविक रुचि थी। वे अपने देश अफ्रीका मे नृत्य करते थे और ड्रम बजाते थे। उन्हें जो कुछ आता था, वे उसे अपने साथ ही लेते आये क्योकि उनके यहाँ सगीत के लिखने की रिवाज नही थी, इसलिये उनके यहाँ सगीत की पुस्तके नही थी। उनका सगीत प्रारभिक था और कबीलो से सम्बन्वित था।

नीग्रो के साथ सबसे बडी बात यह है कि वह किसी बाधा को स्वीकार नही करता और उसका मन दुखी हो या सुखी हो वह नाचना चाहे या गाना

चाहे—वह संगीत मे खूब दिल लगा लेता है। अन्य शब्दो मे यह कहा जा सकता है कि उसमें अभिव्यक्ति की अपार शक्ति है।

गोरे उपदेशको से नीग्रो ने गोरो के धर्म के बारे मे बहुत कुछ सीखा और उन्होंने इस प्रकार गोस्पेल सान्ग्स (ईसाई मत के गीत) सुने। नीग्रों को ईसाई मत के गीत बहुत अच्छे लगे और उन्होंने उन गीतो को अपनी अलग शैली मे गाना शुरू कर दिया। कुछ गोरे संगीतकारो ने अधिक भावना-प्रधान और स्पष्ट होने के कारण बहुत सस्ते और भद्दे गीत लिखे। नीग्रो लोगो ने गीत नही लिखे क्योंकि वे संगीत कला से विशेष परिचित न थे। न तो वे पढ सकते थे और न वे लिख सकते थे। लेकिन वे महसूस कर सकते थे। उन्होंने गीतो की रचना नही की बल्कि उनके गीत उनके मन से स्वय ही फूट पडे। उन गीतो की सबसे अधिक विशेषता उनकी सरलता और सचाई थी। गुलाम अपने दिल से चीखते थे। उनका चीखना ही गीत हो जाता था और उनमे शुद्धता तथा सरलता होती थी। कुछ लेखको ने यह कहा है कि नीग्रो ने अपने धर्म-गीतो को ईसाई मत के गीतो से कहीं-कहीं बहुत अच्छा बना लिया है। **शैल वी गेदर ऐट द रिवर, द ब्यूटीफुल, द ब्यूटीफुल रिवर ?"** के स्थान पर नीग्रो सिर्फ यही गाते थे—**रोल, जॉरडन, रोल। व्हेन द रोल इज़ काल्ड अप योन्डर आई विल बी दियर** जैसे आत्म सजग गीत की अपेक्षा नीग्रो यह गीत चिल्लाकर गाते—**आई वाण्ट टू बी रेडी, और डेसे बोन्स ग्वाइन ट् राइज अगेन अथवा ऑन दैट ग्रेट गिटिन'-अप मोरनिंग।**

गोरे उपदेशको ने नीग्रो को सिखाया। नीग्रो विश्राम के समय अपनी बैठके आयोजित करते थे तथा उनके अपने ही उपदेशक हुआ करते थे। एक गोरी महिला ने दक्षिण मे नीग्रो की आराधना सभा मे भाग लिया और उसने उस सभा का वर्णन किया है। जब वह नीग्रो की "टूटे-फूटे मीटिंग हाउस' मे घुसी, तो उसने देखा कि नीग्रो लोग रविवार को मीटिंग मे सम्मिलित होने के लिये सबसे अच्छे कपडे पहिने हुये थे।

'हमारे सर्विस मे पहुँचने से पूर्व ही सर्विस प्रारम हो चुकी थी। वह जन-

समूह मौन और भक्तिभाव से बैठा था, उन्होने बैठने में पंक्तियाँ बना लीं थीं और वे सभी बिना पीठ की खुरदरी बेंचो पर बैठे हुये थे। उपदेशक ने उस जन समूह को प्रार्थना शुरू करने के लिये कहा और वे लोग अपनी बेंचो से कुछ हिले और फिर घुटनो पर झुके। उस समय प्रत्येक नीग्रो का काला सिर भक्तिभाव से झुका हुआ था। फिर उपदेशक ने थरथराती हुई आवाज मे अपनी विनती प्रारंभ की। उन लोगो मे से किसी की खासी की आवाज सुनाई दे जाती क्योकि खासी का रोक सकना उसके लिये संभव न हो पाता था अथवा किसी बेचैन बच्चे की यकायक आवाज उठती, और फिर उच्चस्वर मे अत्यन्त विनम्र भाव से 'ओ लार्ड !' अथवा बडबडाते हुये 'आमीं', आमीं'—शब्द सुनाई देते। यह ऐसा वातावरण था कि प्रार्थना हो रही है और शायद ही इस प्रार्थना का अन्त हो। 'मिनिट' हुये, उनके लम्बे 'मिनिट' मे कितनी विचित्र भाव-विभोरता थी। उनके बुदबुदाते शब्द और उच्च स्वर ऊँचे ही होते गये तथा अधिक नाटकीय होते गये, यहा तक कि यकायक मुझे यह महसूस हुआ कि विद्युत कम्पन के समान लोगो के मुख से रचनात्मक पंक्तियाँ फूटने लगी है। उन पंक्तियों को पूरा सुन सकना कठिन था, सारा वातावरण भावना प्रधान हो रहा था जैसे बादल इकट्ठे होकर मडराने लगे हो—और तब ऐसा लगा कि

उन लोगो ने बाइबिल की कहानियो को अपने अनुभव के अनुकूल बना लिया।

अफ्रीका मे कबीलो के उत्सवो के अवसर पर पुरुष और स्त्रियाँ अपने मन के अनुसार धार्मिक अथवा युद्ध जैसी क्रीडाओ मे लग जाती थी और उनका उद्देश्य कुछ ही क्यो न होता हो। वे ढोल थपथपाते तथा गीत गाते थे। सयुक्त राज्य अमरीका मे वे आनन्दित होकर अपने गिरजाघर की मीटिंग मे गाया करते थे। वे गिरजाघर की बेचो को हटा देते और फिर एक कतार मे कई घण्टे तक पग-ध्वनि करते रहते और गिरजाघर के कमरे का चक्कर लगाते रहते, वे इस प्रकार गाते और अपनी मध्यम चाल को नियमित करते रहते। वे अपने उपदेशक से बाइबिल की एक पक्ति सुन लेते और उसी से पूरा गीत बना लेते, उसी को बार-बार दुहराते तथा अलग-अलग व्यक्ति उस गीत में कहीं-कही परिवर्तन भी कर देते थे। इन सर्विसेज को 'शाउटिन मीटिंग्स' भी कहा करते थे। बालक स्टीफेन फॉस्टर कभी-कभी नीग्रो के गिरजाघर मे 'शाउटिन' सुनने जाया करता था।

नीग्रो के अपने गीत थे जो धार्मिक गीत नही थे। वे कपास चुनते, अनाज साफ करते, नाव चलाते और रेल की पटरियाॅ बिछाते समय गीत गाते थे। वे केवल मनोविनोद के लिये सगीत उपयोग मे लाते थे।

उनके बहुत से धार्मिक गीतो और व्यवहारिक गीतो की प्रारभिक पक्तियो को उनके नेता प्रारभ करते थे और गीत की शेष पक्तियाॅ जनसमूह गाया करता था, जैसे नेता गाता था

आई गॉट ए रोब,
यू गॉट ए रोब,

और पत्येक व्यक्ति गाया करता :

आल गॉड्स चिलन गॉट ए रोब,
व्हेन आई गेट टू हेव म,
गोना पुट ऑन माई रोब,
गोना शाउट ऑल ओवर गाड्स हेव्'म।

मनोविनोद करने वाला संगीत : मिन्स्ट्रल शो

"टर्न एबाउट, एन' ह्वील एबाउट
एन' डू जीस सो,
एन' एवरी टाइम आई टर्न एबाउट
आई जम्प जिम क्रो।"

अमरीका के शहरो की सख्या वढती गई और वे वरावर वढते भी गये जिसके कारण वहाँ सगीत व्यावसायिक ढग से चलने लगा। देश धनी हो गया और विदेशी सगीतज्ञ तथा कलाकार धन कमाने के लिए अपनी-अपनी चीजे वेचने अमरीका आ गये। कर्स्ट (सगीत गोष्ठियो) का आयोजन किया गया और सिम्फनी ओरकेस्ट्रा (पूर्ण वाद्य-वृन्द के साथ वजाये जाने वाले गान के ओरकेस्ट्रा) सगठित किये गये। कार्यक्रमो मे योरुप का सर्वोत्तम सगीत प्रस्तुत किया जाने लगा और शहर के लोग कर्स्ट तथा गायक मण्डली के आयोजनो मे जाने लगे। इस प्रकार अमरीकियो की सगीत के प्रति रुचि मे परिष्कार हुआ तथा सगीत के स्तर मे सुधार होने लगा।

जर्मनी में वीथॉवन की मृत्यु हो चुकी थी और उसके कुछ समय वाद मध्य योरुप सर्वोत्तम योरुपीय सगीत तैयार कर रहा था, उन्ही दिनो मे राजनीतिक अशान्ति के कारण विद्रोह हो उठा और जिसकी असफलता के कारण कई जर्मन इस देश मे भाग आये। कुछ समय तक जर्मन लोगो का अमरीकी सस्कृति पर प्रभाव रहा और यह प्रभाव कुछ वर्षो तक इतना वढता गया कि अमरीकियो ने यह महसूस किया कि उन्हे सगीत मे सर्वोत्तम अनुदेश (इन्स्ट्रक्शन) प्राप्त करने के लिये जर्मनी जाना चाहिये। कई जर्मन सगीत अध्यापक अमरीका आये और उन्होने स्वभाववश अपने छात्रो को अपने देश की प्रशसा से अभिप्रेत किया। यही कारण है कि इस समय के अनेक प्रशिक्षित अमरीकी संगीतकारो की रचनाएँ योरुपीय सगीत परम्परा से प्रभावित होकर हुई।

गोरे गायको और नर्तको ने नीग्रो शैली का सगीत मनोविनोद के लिये अपनाया। वे नाचते थे और मजाक करते थे। अव वे ऐसा तमाशा करने लगे जिसे 'नीग्रो मिन्स्ट्रेल' कहते थे। मनोविनोद का यह अमरीकी तरीका ही

था जिसका वाद मे इग्लैण्ड मे चलन हो गया। नीग्रो और गोरो ने आपस मे सगीत का आदान-प्रदान किया और उस सगीत को अपने-अपने स्वभाव के अनुकूल बना लिया और इस प्रकार अन्य प्रकार के 'सगीत' की रचना हुई। नीग्रो ने गोरो के वेलेट अपनी भाषा के अनुरूप वनाये क्योकि उन्हे वे सभी गीत अच्छे लगते थे जिनमे कोई कहानी होती थी। उदाहरण के लिये केसी जोन्स का उल्लेख किया जा सकता है।

इन 'शो' (खेलो) मे नीग्रो मिन्स्ट्रिल के रूप मे गोरे ही रहा करते थे जो अपने मुँह पर कालिख पोतकर हूबहू नीग्रो जैसे दिखते थे। उन विनोद के कार्यक्रमो मे प्रसन्न करने वाले और दु खी करने वाले गीत, उपहास, नृत्य और अजीव-अजीब वाते सम्मिलित की जाती थी। यह सभी कार्यक्रम नीग्रो की नकल मात्र था, उसके खुश मिजाज को अपनाया जाता था और उसके गीतो की विलक्षणता, उसका हास्य और उपहास भी स्वीकार कर लिया जाता था। एक अमरीकी ने डिक्सी नामक सवसे अधिक लोकप्रिय गीत की रचना की। इस गीत के रचयिता उत्तर के डेन एमिट थे और उन्होने अपने दी बिग फोर खेल मे इस गीत को उस मिन्स्ट्रिल के अनुरूप वनाया था जो खेल की रगशाला मे "चारो ओर चलते हुये" नजर आता था। पहिले मिन्स्ट्रिल ग्रुप वहुत छोटे-छोटे होते थे। डेन एमिट के 'विग फोर' से तात्पर्य यह था कि उस ट्रूप मे विनोद करने वाले चार पात्र हैं। लेकिन सयुक्त राज्य अमरीका मे जैसे-जैसे प्रत्येक दिशा मे विकास हुआ, उसी प्रकार 'मिन्स्ट्रिल' मे भी प्रगति होती रही। स्टीफेन फॉस्टर के समय तक इन 'मिन्स्ट्रिल शो' मे काफी उन्नति हो चुकी थी। स्टीफेन फॉस्टर हमारे सवसे महत्त्वपूर्ण प्रथम गीतकार थे और उन्होने स्वय चालीस मनोविनोद करने वालो के शो (खेल) देखे है। जव कोई शो नगर मे आयोजित किया जाता तो यह विज्ञापन निकाला जाता था :

फोर्टी ! काउट एम ! फोर्टी।

विग। सुपर्ब। कोलोसल। गरगेनटअन!

(चालीस। उन्हे गिनिये। चालीस। विशाल। शानदार। उम्दा। गरगेंनटुअन।)

मनोविनोद करने वाले एक पक्ति मे या कभी-कभी दो पक्तियो मे कुछ

अर्धवृत्ताकार सर्किल मे दर्शको के सामने बैठ जाते थे । वे अपने चेहरे काले कर लेते थे । उनमे से कुछ कलाकार वाद्य-यत्र बजाते थे, वे विशेषकर बेजो बजाते थे और किनारे पर दो व्यक्ति बैठ जाते थे जो यदा-कदा परकुशन (थपकी देने) के लिये टेम्बुरीन और बोन्स बजा देते थे । उन्हे बोन्स और टेम्बो भी कहते थे ।

इन मिन्स्ट्रेल की कहानी एक सौ वर्षो से अधिक पुरानी है । उस समय टॉमस डी० राइस नाम का एक 'नर्तक और गायक' रहता था और वे उसे 'डेडी' राइस भी कहते थे । वह लम्बे कद का एक अभिनेता था और कामेडियन था और वह उस समय सिनसिनाटी के एक थियेटर मे लगा हुआ था । वह कहानी सुना सकता था, हार्न-पाइप बजा सकता था और इस प्रकार गा सकता था जिससे अधिकाधिक मनोविनोद होता था । वह स्वभाव से सनकी था, तथा वह चीजो के देखने मे सावधान रहता था और उन्हे ऐसी चतुरता से देखता था कि वह उन चीजो का दर्शको के सामने अधिकाधिक प्रयोग करके उनका मनोविनोद कर लेता था ।

फिर पिट्सवर्ग के ओल्ड ड्ररी थियेटर मे उसे जम्प जिम क्रो प्रस्तुत करने का अवसर मिला।

कफ नाम का एक काला (नीग्रो) लडका था और वह ग्रिफ्थ होटल मे काम करके अपनी गुजर किया करता था। वह होटल थियेटर के पास था। वह नाव से यात्रियो के ट्रक उठाकर होटल तक ले जाता था। इस काम मे प्रतियोगिता करने वाला एक और नीग्रो लडका था जिसका नाम जिजर था। कफ कभी-कभी कुछ अलग से आमदनी कर लेता था, वह यार्क व्याय की तरह अपना मुँह खोले रहता था जिससे उसके मुँह मे पेनी डाली जा सके। कफ ही ऐसे फटे-पुराने और कसे हुये कपडे पहिना करता था जिनकी 'डेडी' राइस को अपने थियेटर के काम के लिये आवश्यकता होती थी। उन्होंने आपस मे करार कर लिया था। कफ शाम को थियेटर जाता था, अपने कपडे उतारता था और खेल के लिये अपने कपडे दे देता था।

थियेटर की घण्टी वजती और प्रारभ के सगीत के लिये राइस की वारी आती और राइस स्टेज पर मटक-मटक कर चलता। उसका मुंह जली हुई कार्क से काला पुता होता, वह फटा-पुराना कोट पहिने रहता और इतने फटे जूते पहिनता कि उसमे सूराख ही सूराख होते तथा उसमे पैवन्द लगे होते। वह फटा और झुका सा टोप पहन लेता और ऊनी विग लगा लेता। इस अजीव शक्ल और पोशाक का दर्शको पर विचित्र ही प्रभाव पडता। राइस अपना गीत शुरू करता और अपना आत्म-परिचय देता

ओह, जिम क्रो' ज कम टू टाउन,
एज यू ऑल मस्ट नो,
एन' ही व्हील एवाउट, ही टर्न एवाउट,
ही डू जिस सो,
एन' एवरी टाइम ही व्हील एवाउट,
ही जम्प जिम क्रो।

इसका तत्काल ही प्रभाव पडता। यह नया विचार सभी को अच्छा लगता और प्रारभिक गीत की प्रशसा मे करतल ध्वनि हो उठती थी। राइस

के गीत मे दर्शको की उत्सुकता बढने लगती और वह फिर अन्य गीत सुनाने लगता। इन गीतो की विषय सामग्री स्थानीय समाचार ही होते और वह नगर के लोकप्रिय व्यक्तियो के बारे मे गीत सुनाया करता। दर्शक खुश हो जाते। उसकी इतनी अधिक प्रशसा होती कि कह-कहो से कुछ सुन सकना भी कठिन हो जाता। इससे पूर्व इतना भव्य प्रदर्शन कभी भी नही हुआ। कभी-कभी ऐसा लगता कि 'जिम क्रो' गीत सारी रात होता रहेगा।

'डेडी' स्टेज पर ही होता, वहाँ वह गीत गाता और नाचता जब कि कफ पर्दे के पीछे से सरक जाता क्योकि वह किसी स्टीम बोट की सीटी की ओर अपना ध्यान लगाता था। वह यही सोचा करता था कि स्टीम बोट यात्रियो को लेकर आ रही होगी और जिजर किनारे पर पहुँच गया होगा और ट्रक ढोने का सभी काम उसे मिल गया होगा। बेचारा कफ इस स्थिति को जितना टाल सकता था, टाल देता था और जब वह यह देखता कि राइस का 'काम' चल ही रहा है और दर्शको की प्रशसा का अन्त नही है तो वह इसे सहन न कर पाता था। वह 'दृश्य' के किनारे से अपना चेहरा निकालकर जोर से कानाफूसी करके कह उठता—

"मास्सा राइस, स्टीम बोट' ज कमिन' ! मस्ट हेव मा क्लोज !"

(मास्टर राइस, स्टीम बोट आ रही है। मेरे कपडे वापिस कर दे।')

उसका अनुरोध बेकार हो जाता। राइस को सुनाई ही नही पड़ता। वह स्टेज के बाहर रहता और जैसे ही वह नगर के किसी अप्रिय अधिकारी का मजाक कर उठता कि जनता प्रसन्न होकर उन्मुक्त भाव से हस पडती। कफ अपना सिर ओर बाहर करता और इस बार कहता

"मास्सा राइस। मस्ट हेव मा क्लोज। स्टीम बोट 'ज कमिन्' !'

(मास्टर राइस। मेरे कपडे वापिस कर दे। स्टीम बोट आ रही है।)

राइस ने उसे कभी नही सुना। लेकिन दर्शको को वास्तविक अभिनय के पीछे अन्य 'अभिनय' भी दिखाई देने लगता और वे सभी उस कलाकार से अपरिचित ही थे। दर्शको की ठट्ठा मारकर हसी चलती रहती और भूरि-भूरि प्रशसा से करतल ध्वनि होती रहती। विवश वह सामान ढोने वाला

लडका अपने कुछ ही कपडे पहिनकर स्टेज पर आ जाता और राइस के कन्धे को पकड लेता और चिल्लाता ·

"मास्सा राइस, जिमी निगर' ज क्लोज। स्टीम बोट 'ज कमिन' ।"

(मास्टर राइस। मेरे कपडे वापिस कर दे । स्टीम बोट आ रही है।)

यह घटना हाऊस के शोर को कम कर पाती। बत्तियाँ बुझा दी जाती और तभी दर्शको से बार-बार आग्रह किया जाता कि वे थियेटर छोड दे। और यह एक ऐसी कहानी है जो 'नीग्रो मिन्स्ट्रल' के बारे मे कुछ बाते बताती है। मनोविनोद के लिये सगीत का यह रूप वस्तुत अमरीकी ही था।

राइस को इग्लैण्ड मे स्टेज पर अपना खेल दिखाने मे अधिक सफलता मिली। उसने धन इकट्ठा कर लिया, वह अपनी सनक के कारण अपने को धनी दिखाने के लिये अपने कोट और वेस्टकोट मे पाँच और दस डालर सोने के बटन लगा लेता था। वह प्राय उन्हे अपने कोट से तोड लेता था और बडी उदारता से स्मारिका के रूप मे अन्य व्यक्तियो को उपहार मे दे देता था।

नीग्रो मिन्स्ट्रल का यह ऐसा शो था जिसे स्टीफेन फॉस्टर ने पिट्सबर्ग मे सौ वर्षो पहिले देखा था जबकि वह एक बालक था।

स्टीफेन कॉलिन्स फॉस्टर

लोकप्रिय अमरीकी गीतकार

सौ वर्षों से अधिक समय पूर्व की बात है। उस समय लडके और लड़कियाँ अपनी आजीविका कमाने के लिए इतनी बडी नही हो पाती थी जितनी कि आज वे बडी होकर अपनी आजीविका कमाती है। उस समय विलियम फॉस्टर नामक सोलह वर्षीय बालक पिट्सबर्ग मे सोदागरो की फर्म मे काम करने के लिए घर से निकल गया। उसका जन्म अमरीका मे हुआ था। लेकिन उसके पुरखे और पिता अमरीकी सगीतकार एडवर्ड मेकडोवल के समान स्काटिश-आइरिश थे। उसके माता और पिता के अलग-अलग परिवारो मे ऐसे सगे-सबधी थे जिन्होने रेवोल्यूशनरी वार (क्रान्तियुद्ध) मे प्रतिष्ठा प्राप्त की थी।

उस समय पिट्सबर्ग एक प्रमुख नगर था। वह नगर गोरो की बस्तियो के समीप स्थित था और उसके सुदूर पश्चिम मे इण्डियन वनो मे रहते थे और मैदानो मे भैसो के झुण्ड का पीछा किया करते थे। पूर्वीय समुद्री तट पर दो सौ वर्षों से पूर्व ही सबसे पहिले गोरो ने पदार्पण किया था। धीरे-धीरे वे रेटमेन के क्षेत्रो मे पश्चिमी की ओर बराबर बढते रहे और अधिक सख्या मे एकत्र होते गये। यहाँ तक रेडमेन को वहा से भागना पडा।

युवक विलियम फॉस्टर ने जिस फर्म मे काम करना शुरू किया था, वह फर्म बिसातखाने और आम चीजो का व्यापार करती थी। वे सभी प्रकार का सामान मोल लेते थे जिसे वे उन प्रमुख क्षेत्रो मे रहने वालो के हाथ बेचा करते थे। उन दिनो मे ऐसा नही था कि मुख्य मार्ग मे जूतो, हैट और शक्कर की अलग-अलग दुकाने हो जैसे कि आज लोग मुख्य मार्ग मे जूता खरीदने के लिए जूते की दूकान हैट मोल लेने के लिए हैट की दूकान और शक्कर खरीदने के लिए परचूनी की दुकान मे जाकर अपनी इच्छानुसार सामान खरीद सकते है। आज प्रत्येक वस्तु के लिए अलग-अलग स्टोर होते

हैं। प्रायः मुख्य मार्ग मे एक ही स्टोर होता था और वहाँ आपको अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए सभी सामान मिल जाया करता था—आप कोयले से लेकर काफी तक एक ही स्टोर से खरीद सकते थे। ऐसे स्टोर मे दक्षिण से काफी और शक्कर मगाई जाती थी और न्यूयार्क तथा फिलेडेलफिया जैसे बडे शहरो से वर्तन और पहिनने के कपडे तथा ऐसे अन्य सामान यथा फाइग पेन, जूते और टोप मगाये जाते थे जो न्यू इग्लैण्ड के कई छोटे-छोटे कारखानो मे तैयार किये जाते थे।

पिट्सवर्ग एक वडी नदी के किनारे वसा हुआ था, फर्म का यह काम था कि वह आस-पास की वनी चीजो को नौकाओ मे भरती थी। इन चीजो मे फर खाल और आटा जैसी वस्तुएँ होती थी और उन्हे ओहियो तथा मिसीसिपी नदियो द्वारा न्यू ओरलीन्स को भेज दिया जाता था जहाँ सामान या तो धन लेकर वेच दिया जाता था या दक्षिण की वनी उन चीजो यथा कपास और शक्कर से विनिमय कर लिया जाता था जिनकी उत्तर मे आवश्कता होती थी। विलियम फॉस्टर परिश्रमी लडका था क्योकि वह उन लोगो का भागीदार हो गया जिन्होने उसे काम दिया था और वह वर्ष मे कुछ वार ऐसी यात्राएँ करके अपना काम किया करता था।

भारी वोझे वाली नौकाओ को नदी के वहाव के साथ जाने मे अधिक समय लग जाया करता था। पिट्सवर्ग लौटने के लिए दो सभव मार्ग थे और दोनो मे ही अधिक समय लगता था। कभी-कभी फॉस्टर इण्डियन कण्ट्री-नार्थ केरोलीना, केनटकी और वेस्ट वर्जीनिया होकर थल-मार्ग से वापिस आता था। उस समय रेलगाडियाँ नही थी और उसे घोडे पर चढकर आना पडता था। वह स्थल-मार्ग से यात्रा तभी कर सकता था जबकि एक वडा दल उसी दिशा में एक साथ यात्रा कर रहा हो क्योकि इण्डियन लोगो से डर बना रहता था। वे अपने साथ हथियार रखते थे और सदा सावधान रहते थे कि कही कोई अप्रत्याशित वात न हो जाय। कभी-कभी फॉस्टर नौका से अवमहासागर के तट होकर न्यूयार्क तक यात्रा करता था। उस मार्ग मे भी इस प्रकार की अप्रत्याशित वाते सामने आती थी। एक वार वह जहाज मे सवार था, उसे

समुद्री डाकुओ ने अपने काबू मे कर लिया किन्तु सौभाग्य से उसी समय एक स्पेनिश युद्ध पोत वहाँ पहुँच गया और उसने डाकुओ को डराकर भगा दिया। यह ऐसी घटना थी जिसमे से वह बाल-बाल बचा था। जिसे वह वर्षो बाद भी याद कर लेता था। उन अग्रणी यात्राओ के प्रारभिक दिनो मे किसी लडके अथवा लडकी को साहसिक सच्ची कहानियाँ अनायास मिल जाती थी। उनके अपने जीवन भी ऐसी साहसिक घटनाओ से भरपूर थे। बच्चे प्रायः अपने माता-पिता के पास बडे चाव से उन कहानियो को ध्यान-मग्न होकर सुनते थे जो उनके माता-पिता की युवावस्था की घटनाओ पर आधारित होती थी।

जब फॉस्टर नौका मे उत्तर की ओर वापिस आता था तब वह न्यूयार्क और फिलेडलफिया से पिट्सबर्ग स्टोर के लिए सामान खरीद कर लाता था। पहिले घोडो की पीठ पर सामान लादकर पश्चिम ले जाया जाता था किन्तु बाद मे वे कोन्स्टोगा वेगन प्रयोग मे लाने लगे। उन 'प्रेरी स्कनरों' अथवा बन्द वेगनो को अब केवल सग्रहालयो अथवा किसी चलचित्र मे ही देखा जा सकता है। इन वेगनो को एक से अधिक घोडे खीचा करते थे और हर एक घोडे की गर्दन पर घण्टियो की लडी बधी रहती थी। जब वेगनो की लम्बी कतार ऊबड-खाबड सडको पर चलती थी तो इन वेगनो मे खटपट और चरमराहट की आवाज उठती थी किन्तु उन पहाड़ी रास्तो मे उस वातावरण को घण्टियो की आवाज सुखद और सुरीली बना देती थी। फॉस्टर अपने जीवन-पर्यन्त उन घण्टियो की आवाज नही भूल सका।

इन यात्राओ मे से एक यात्रा मे उसकी एक लडकी से भेट हुई जिसका नाम एलिजा टामलिन्सन था जो फिलेडलफिया मे अपनी (चाची) आट से मिलने आई हुई थी। वह व्यापार के लिए आया था। फिर भी उसने मिस

उन्हें उतनी अधिक बात करने की सामग्री मिलती। जब उसने उस लड़की के सम्मुख निश्चित रूप से अपनाने का प्रस्ताव रखा तो उसने स्पष्ट रूप से प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और बाद में जेम्सबर्ग में एलिझा के किसी अन्य सम्बन्धियों के घर उन दोनों का विवाह हो गया।

उन दिनों में लड़कियों को अधिक साहसी होने की भी आवश्यकता थी। एलिझा को ही देखें तो उसे घोड़े पर सवार पहाड़ी मार्गों में से होकर तीन सौ मील की यात्रा के बाद एक ऐसे एक की स्थान पर पहुँचना था जहाँ वह कभी नहीं गई थी और वहाँ उसे अपनी सोहाग-रात मनानी थी तथा वहीं अपने शेष जीवन के लिए घर बनाना था। फॉस्टर को इस यात्रा में चौदह दिन लग गये और जब वे पिट्सबर्ग के निकट पहुँचे तो एलिझा यात्रा के अन्तिम दिन बहुत थक चुकी थी। यद्यपि पिट्सबर्ग शाम के धुंधलेपन में एलिझा को एक छोटा सा नगर लग रहा था लेकिन उनका कहना है कि वह उस नगर को शुरू से ही पसन्द करती थी। इसका अर्थ यह हुआ कि वह विलियम के अगाढ़ प्रेम में डूबी हुई थी।

वर्ष बीतते गये, विलियम फॉस्टर समृद्धशील हो गया और नगर के ऊँचे भाग में उसने भूमि का एक बड़ा प्लाट खरीद लिया। वहाँ उन्होंने एक घर बनाया। उन्होंने उस घर का नाम 'व्हाइट काटेज' रखा। वह घर पहाड़ी पर था तथा वहाँ से सुन्दर नदी के उतार-चढ़ाव का सुहावना दृश्य दिखाई देता था। उसने एक नगर की नींव डाली और उस नगर का नाम लारेंसविले रखा तथा अपनी सम्पत्ति उस नगर को अर्पित कर दी। उसके दस बच्चे थे, नवाँ बच्चा ऐसा बच्चा था जिसमें हम सभी की अत्यधिक रुचि है। वह बच्चा चौथी जुलाई को पैदा हुआ। जिस दिन बड़े-बड़े उत्सव मनाये जा रहे थे।

वह विशेष चौथी तारीख थी क्योंकि उसी दिन संयुक्त राज्य अमरीका की पचासवीं वर्षगाँठ थी। फॉस्टर जन-सेवा भावना से ओत-प्रोत था और उसने अपने घर के पीछे के जंगल में उत्सव मनाया। बैण्ड पर यांकी डूडल और हेल कोलम्बिया गीतों की धुन बजाई गई और जनसमूह ने आवेग से गीत गाये। वहाँ भाषण हुए और बाँवरी डिनर के नाम से सहभोज भी हुआ। आजकल

उत्सवों पर आतिशबाजी छोड़ी जाती है लेकिन उस समय आतिशबाजी न होने के कारण कुछ लोगों ने अपनी बन्दूकें दागी। दोपहर के समय राष्ट्रीय झण्डा फहराया गया और चारों ओर खुशी की लहर दौड़ गई और झण्डे को तोप दाग कर सलामी दी गई। प्रत्येक व्यक्ति ने दि स्टार स्पेंगिल्ड बेनर नामक राष्ट्र-गीत गाया। इन जंगलों में आमोद-प्रमोद और उत्साह से उत्सव मनाया जा रहा था, उसी समय 'व्हाइट कॉटेज' अपेक्षाकृत शान्तिमय उत्साह से ओतप्रोत थी क्योंकि उसी दोपहर को फॉस्टर का नवाँ बच्चा पैदा हुआ था। वह लड़का था। उन्होंने उसका नाम स्टीफेन कालिन्स फॉस्टर रख लिया।

उस दिन दोपहर के बाद देश के अन्य भागों में दो महान दिवंगत अमरीकियों की स्मृति में श्रद्धांजलियां अर्पित की जा रही थीं। इन महापुरुषों के नाम थॉमस जेफरसन और जान एडम्स थे। दोनों ही संयुक्त राज्य अमरीका के प्रेसीडेंट रह चुके थे और दोनों ने ही "स्वतंत्रता घोषणापत्र" पर हस्ताक्षर किये थे।

वह ऐसे गीत सुनता था जिनकी रचना पूरी सभा गाते-गाते कर लिया करती थी। इस सगीत का उस नवयुवक के हृदय पर विशेष प्रभाव पडा।

स्टीफेन फॉस्टर को सगीत के प्रति वचपन से ही विशेष प्रेम था। जव वह दो वर्ष का था और साफ बोल भी न सकता था, वह उस समय अपनी वहिन का गिटार उठा लेता था और उसे अपना "इन्नुली पिजानी" कहा करता था। जव वह सात वर्ष का हुआ, वह एक दिन एक म्यूजिक स्टोर मे गया और वहाँ उसने फ्लेग्योलेट (नफीरी) ली जो काउटर पर पडी थी। उसने उसे ऐसे छुआ कि कोई देख न ले और यह भी देखा कि वह कैसे वजती है। कुछ ही मिनटो मे उसने दर्शको को उस पर हेल कोलम्बिया गीत की धुन वजाकर आश्चर्यचकित कर दिया। वाद मे उसने फ्ल्यूट (वासुरी) पियानो और यहाँ तक कि वाइलिन वजाना सीख लिया। 'लीव' के गिरजाघर मे स्टीफेन ने नीग्रो के सगीत की भावना को हृदयगम किया। जव 'लीव' और टॉम मिलकर घर के वाहर गीत गाया करते थे तो ऐसा लगता था कि उसने अवश्य ही कुछ पर्वतीय लोक-गीतो को भी सुना होगा। उसने **फ्राग वेण्ट ए-कोर्टिन** जैसे गीत भी सीख लिये होगे। वह वडे चाव से नीग्रो को नाव मे सामान चढाते और उतारते समय देखा करता था और घाट पर काम करने वाले मजदूरो के गीत सुना करता था। इनमे से कुछ गीत चेण्टीज में (मल्लाहो के सम्मिलित गीत) रहे होगे। लेकिन इन गीतो, गिरजाघर के हिम (आराधना गीतो), स्प्रिच्युल्स (आध्यात्म-गीतो) और लीव के गिरजाघर के 'शाउटिन' ने इस नवयुवक को सगीत-प्रिय वनने की भूमिका प्रदान की। जब वह मिन्स्ट्रिल शो देखने योग्य हो गया तो उसने देखा कि सगीत और नृत्य करके मनोविनोद करने वाले गोरे नीग्रो की नकल करते थे। नवीन देश के ऐसे अग्रणी नगर मे जहाँ लोग प्रमुख रुप से देश के धन और शक्ति के सचय मे लगे हुए थे, वहाँ ललित कला से आनन्द उठाने के लिये वहुत कम अवसर थे। स्टीफेन काफी वडा हो गया था। योरुप के सगीत की परम्परा को नही जान पाया था और वॉश, वीथॉवन, मोजार्ट और अन्य महान सगीतकारो के सगीत को भी न सुन सका। उन दिनो विक्ट्रोलास तथा रेडियो नही थे

और बहुत कम सगीत सम्मेलन हो पाते थे। अतएव वह ऐसा सगीत कहाँ सुनता ?

उसकी सगीत मे रुचि उसके पिता के लिये एक जटिल समस्या थी। स्टीफेन की एक बडी बहिन थी जो उससे काफी बडी थी और वह सगीत-प्रेमी थी। उसके भाई विलियम ने उसके लिये पूर्व प्रदेश से एक पियानो मगवाया। यह पियानो घोडे और वैगन से पर्वत पार करके लाया गया। मिस्टर फॉस्टर को सगीत पसन्द था और वह स्वय कभी-कभी फिडिल (वासुरी) पर ट्यून बजाया करते थे। उनके विचार मे सगीत उनकी पुत्री के लिये तो उपयुक्त था लेकिन उनकी समझ मे यह नही आता था कि सगीत किसी पुरुष का व्यवसाय हो सकता है। वास्तव मे वे अपने बेटे स्टीफेन को समझ ही नही पाते थे और कहा करते थे कि संगीत ही स्टीफेन की दुर्बलता है। उसकी माँ ने पूर्व देशो मे संगीत सुना था और वह अपने बेटे की सगीत के प्रति भावना को अपने पति की अपेक्षा अधिक समझती थी।

दूसरी कठिनाई यह भी थी कि स्टीफेन पढने-लिखने मे चतुर न था। उसे अध्ययन करने मे कोई आपत्ति नही थी और वास्तव मे उसने स्वय बहुत कुछ पढा। परन्तु उसने स्कूल का जीवन पसन्द नही किया और उसे स्कूल के अनुशासन से चिढ थी। उसे सर्वप्रथम पढने-लिखने मे कठिनाई उस समय हुई जबकि वह पाँच वर्ष का था और स्कूल गया ही था। उससे कहा गया कि वह वर्णमाला सुनाये, उसने साहस से पढना शुरू किया किन्तु यकायक बीच में ही रुक गया, वह इण्डियन की तरह चीखने लगा और एक मील दूरी पर स्थित घर की ओर भागने लगा। जब तक वह घर नही पहुँचा वह चीखता और भागता रहा।

उसे अपना घर सबसे अधिक प्यारा था। वह अपनी माँ के प्रति श्रद्धानत रहता था, और अपने बडे भाइयो-विलियम, मोरीसन, डनिग, हेनरी और अपनी बहिनो के साथ उसके बहुत ही मधुर सबध थे। जब कभी वह घर से जाता तो उसे अपने चाचा स्ट्रथर्स के घर को छोडकर अन्य सभी जगह अपने घर की बहुत याद आया करती थी। उसने अपने पिता को एक पत्र लिखा, उस

समय वह दस वर्ष का था किन्तु जब उस पत्र की चर्चा की जाने लगी तो उसे क्षोभ हुआ। वह पत्र उसने सगीत के लिये लिखा था

पूज्य पिता जी,

कृपया मेरे लिये 'कामिक सागस्टर' भिजवा दे क्योकि आपने उसे भिजवाने के लिये वचन दिया है। यदि मेरे पास पेन्सिल होती अथवा मेरे पास काली स्याही खरीदने के लिये धन होता तो मैं अपने कागज पर लकीरे खीच लेता किन्तु यदि मेरे पास अपनी सीटी होती तो न जाने मुझे कितनी प्रसन्नता मिलती और मेरा ख्याल है कि मै लम्बा पत्र न लिखता। आज प्रात काल बीस या तीस दम्पति-बर्फ-गाडी से यात्रा करने निकले है। डाक्टर बेन कल रात घर आ गए और हमे बताया कि हेनरी यहाँ आने वाले है। मेरी इच्छा है कि उनके साथ डनिंग भी चले आये। आप उनसे कह दे कि दोनो ही यहाँ आने का प्रयास करे क्योकि मेरी इच्छा है कि दोनो के दर्शन करूँ। मुझे दोनो से ही बहुत बाते करनी है।

आपका प्रिय पुत्र,
स्टीफेन सी० फॉस्टर

वह अपने चाचा स्ट्रूथर्स के यहाँ जब कभी जाता तो उसे वहाँ बहुत चैन मिलता। उसकी बहिन ने एक अवसर पर विलियम को लिखा 'स्टीफेन को चाचा स्ट्रूथर्स के यहाँ बहुत अच्छा लगता है। उनके घर को छोडकर जाने का उसका बिल्कुल भी मन नही होता। उन्होने यह भी लिखा कि चाचा उसे किसी बात से नही रोकते। वह वहाँ अपनी इच्छा से घोडो और जानवरो के साथ कुछ भी क्यो न करे। इन सब बातो से वह स्वय सबसे बडा आदमी महसूस करता है।"

चाचा स्ट्रूथर्स उस समय बहुत वृद्ध थे। वह सर्वेयर और शिकारी रह चुके थे और वह इण्डियन से भी लडे थे। वह वास्तव मे सीमान्त प्रदेश के व्यक्ति थे। उन्होने अपनी वृद्धावस्था मे ओहियो मे एक फार्म बना लिया था। ओहियो को फ्रटियर ही समझा जाता था और उसे उत्तरी-पश्चिमी राज्य क्षेत्र कहते थे। वे लकडी के बने घर मे रहते थे और उस समय भी वह कून

और पोजम्स के शिकार के लिये रात मे घूमा करते थे । कभी-कभी वह स्टीफेन को भी चाँदनी रात मे कून के शिकार के लिये ले जाया करते थे। वे इण्डियन लोगो के बारे मे साहसिक कहानियाँ सुनाते थे जिन्हे सुनकर स्टीफेन रोमाचित हो उठता था। एक दिन उस वृद्ध व्यक्ति को अपना नन्हा भतीजा न मिल सका। उन्होने उसे अन्दर और बाहर सभी स्थानो मे खोजा लेकिन स्टीव कही चला गया था। अन्त मे उन्होने उसे भूसे के ढेर मे गरदन छिपाये बैठा देखा जहाँ से वह मुर्गियो के बच्चो, बत्तखो और बाडे के जानवरो को देख रहा था। उससे जब यह पूछा गया "क्या कर रहे हो ?" उसने उत्तर दिया "यो ही कुछ सोच रहा हूँ ।"

चाचा स्ट्रूथर्स को वह लडका अच्छा लगता था और उन्होने उस बालक की मौलिकता तथा सगीत की प्रतिभा जैसी विशेष क्षमता को समझ लिया था । उन्होने यह भविष्यवाणी कर दी थी कि स्टीफेन किसी-न-किसी दिन प्रसिद्ध आदमी होगा ।

स्टीफेन को स्कूल मे पढने की अपेक्षा अकेले घूमने मे विशेष आनन्द आता था। वह जगलो मे या नदी के किनारे घूमा करता था। वह शर्मीला था और लोगो से अधिक 'मेल-मिलाप' नही बढा पाता था लेकिन अपने मित्रो के समूह मे प्राय सबसे अधिक विनोदशील बन जाता था। वह पोच नही था, उसमे पर्याप्त साहस था और वह किसी लडके की लडाई मे बडी आसानी से कूद पडता था जैसे कि कोई अन्य लडका तैयार हो जाता है। उसका भाई कहा करता था कि स्टीव लडने मे वीर और चतुर है तथा गुण्डो को बरदाश्त नही कर सकता है। एक स्कूल मे उसका एक मित्र था जो उससे एक वर्ष छोटा था और वे दोनो मिलकर कभी-कभी 'हुकी' खेल (ताश के खेल) खेला करते थे और दोनो जगलो मे इकट्ठे घूमा करते थे। वे जगली स्ट्राबेरी इकट्ठी करते और अपने जूते-मोजे उतारकर किसी छोटी नदी मे जल-क्रीडा के लिये चले जाते थे। जब वह लडका बडा हो गया तो उसने यह बताया कि स्टीफेन उसको स्कूल के अन्य लडको के झगडो मे अक्सर बचाया करता था। जब वह तीन वर्ष से कम आयु का था, स्टीव को पुल के किनारे दो

गुण्डे मिले जो एक शराब पिये व्यक्ति को गाली दे रहे थे और पीट रहे थे। वह निधड़क उस लड़ाई मे शामिल हो गया और दुर्बल का सहारा बनकर लड़ने लगा। उसने उन दोनो गुण्डो मे से एक गुण्डे को पीटा और दूसरे को भगा दिया। उस लड़ाई मे उसके गाल पर एक चाकू लगा और उस घाव का निशान उसकी तमाम जिन्दगी बना रहा।

जब वह नौ वर्ष का था तो उसने अपने साथियो के साथ मिलकर एक ड्रेमेटिक-क्लब (नाटक मण्डली) की स्थापना की थी। उन्होंने एक केरिज हाउस में थियेटर बनाया। स्टीव को छोडकर सभी लडको ने उसके लिये धन जुटाया। स्टीव को ऐसा इसलिये नही करना पडा क्योकि वह प्रमुख नायक था। उन दिनो काले चेहरे बनाकर मिन्स्ट्रल शो ही लोकप्रिय मनोरंजन थे और ये लड़के उनकी नकल उतारते थे। जब स्टीव मच पर आता और जिप कून, लॉग टेल्ड ब्लू, कोल-ब्लेक रोज तथा जम्प जिम क्रो गीत गाता तो उससे इन गीतो को बारबार पुन सुनाने की मॉग की जाती। वह मजाकिया अभिनय कर लेता था। ये लडके सप्ताह मे तीन प्रदर्शन करते थे। वे इतना धन कमा लेते थे कि वे शनिवार की रातो को पिट्सबर्ग जा सके और वहाँ वे वास्तविक प्रदर्शन और आगन्तुक अभिनेताओ को देख सके। इस समय तक पिता फॉस्टर को धन सबधी मामलो मे हानि उठानी पडी और उनके परिवार को अपना सुन्दर घर छोडना पड़ा। जब स्टीफेन बडा हो रहा था, उसके परिवार को कई बार इधर-उधर जाना पडा लेकिन वे सदैव पिट्सबर्ग शहर के आसपास ही बने रहे और कुछ वर्षो तक उन्हे एलीगिनी सिटी मे रहना पडा।

इधर-उधर आने जाने से स्टीव की पढाई मे अडचन आई। जब उसे एक ऐसे उपदेशक ने शिक्षा दी जो कठोर अनुशासन का हामी नही था, तो उसकी शिक्षा मे प्रगति हुई। लेकिन उसकी शिक्षा उसके माता-पिता के लिये सदैव समस्या ही रही। स्टीफेन का दुर्भाग्य ही था कि वह अपनी बढती आयु मे प्रथम श्रेणी का सगीत न सुन सका और उसे ऐसे सगीत के अध्ययन करने का भी अवसर नही मिल सका। परन्तु उसने और उसके माता-पिता ने कभी स्वप्न मे भी नही सोचा था कि सगीत से गम्भीर अध्ययन और विकास के

अवसर भी प्राप्त हो सकते है और सगीत के द्वारा जीवन में मान और धन भी मिल जाता है। उन्होने कभी यह भी न सोचा कि सगीत का गभीर अध्ययन उस वाछनीय अनुशासन की व्यवस्था कर देगा जिसकी स्टीफेन को आवश्यकता थी और सगीत से ही स्टीफेन को अपने जीवन को सुख से व्यवस्थित रखने का अवसर मिल सकेगा। उसकी बीस वर्ष से अधिक आयु होने लगी और उसे ऐसा अभाव प्रतीत होने लगा जिसे वह अपने जीवन मे पूरा न कर पा रहा था। उसे म्यूजिकल थ्योरी (सगीत सिद्धान्त), फार्म (रूप) और हार्मोनी (गति) जैसी बातो की विशेष जानकारी नही थी फिर भी वह गीतो को ऐसा सगीतबद्ध कर लेता था जैसा भी उसके मन मे भर जाता था। सगीत के ये ही रूप उसके लिये सबसे अधिक सरल और स्वाभाविक होते थे। उसने गीत भी लिखे और उनको सगीतबद्ध किया क्योकि उसे अन्य व्यक्तियो के गीतो की तुलना मे अपने गीतो के अनुकूल सगीत-रचना करना आसान लगा। उसमे कल्पना-शक्ति और भावना थी और उसके पिता इस दान को "विचित्र" प्रतिभा मानते थे।

जब वह एथेन्स मे था तब उसने अपने सगीत को लिपिबद्ध करना प्रारभ कर दिया। उसने कमेसमेण्ट (यूनिवर्सिटियो मे दीक्षान्त समारोह) के लिये सगीत की रचना की जिसकी व्यवस्था चार फ्लूट (वासुरियो) पर की गई। वह सगीत **टिओगा वाल्ज** कहलाया। उसने गीत का पहिला भाग स्वय प्रस्तुत किया, दर्शको को वह गीत बहुत अच्छा लगा और उन्होने उसे सुनने का फिर आग्रह किया। उसे फिर अपने घर की याद आने लगी और वह इस स्कूल मे केवल एक वर्ष तक ही रुका। वह घर लौट आया, वहाँ उसने जेफरसन कालेज मे दाखिला करा लिया किन्तु वह वहाँ भी अधिक न रुक सका। फिर भी उसने फ्रेंच और जर्मन भाषाओं का अध्ययन किया। उसका भाई मोरिसन कहा करता था कि स्टीव वाटरकलर्स से चित्र भी बनाया करता था।

वह केवल सोलह वर्ष ही का था जब उसका प्रथम गीत प्रकाशित हुआ। उस गीत का शीर्षक था **ओपन दाई लेटिस, लव,** वह गीत उसने सूसेन पेण्टलेण्ड के लिये लिखा था जिसकी आयु दस वर्ष की थी। उस समय फॉस्टर परिवार के पास कोई पियानो नही था और पेण्टलेण्ड के पास पियानो था अतएव स्टीफेन उसके पियानो को वजाने के लिये उसके पास जाता था।

इसी समय उसके परिवार के लोगो ने यह विचार किया कि स्टीफेन को वेस्ट पाइण्ट अथवा एन्नापोलिस मे दाखिल करा दिया जाय। इससे इस बात का पता लगता है कि उसके परिवार वालो को यह आभास भी नही था कि स्टीफेन के लिये उपयुक्त धन्धा कौन-सा होगा ? सेना अथवा नौ सेना कुछ लडको की विशेष पसन्द हो सकती है परन्तु स्टीफेन फॉस्टर जैसे कल्पनाशील लडके के लिये सैन्य-जीवन कभी भी उपयुक्त नही हो सकता था जो घण्टो वैठकर अपने पियानो पर सगीत का सृजन करने मे लगा रहता था। जव उसकी बहिन अथवा मित्र गाते तव उसे उस गीत को सुमधुर वनाने के लिये फ्लूट (वासुरी) से धुन निकालने मे मजा आता था। काश उसे कोई पथ प्रदर्शक मिल पाता जो उसे सगीत के वास्तविक लक्ष्य की ओर ले जाता और निश्चित उद्देश्य वता सकता, तो न जाने वह प्रसन्नता से कितना कठोर परिश्रम करता।

स्टीव अपने अतरग मित्रो के साथ बैठकर अनौपचारिक ढग से सगीत की रचना करना पसन्द करता था। उसे अपने सुपरिचित लडको और लडकियो के साथ शाम की पार्टियो मे पियानो वजाने और उनके साथ गाने मे आनन्द आता था। उसकी सुरीली और पक्की आवाज थी जिसमे सकरुण मधुरता सी थी जिससे वह अपने श्रोताओ को रुला भी सकता था। वह ऐसे कन्सर्ट (सगीत सभा) मे भाग लेता था और वहाँ सामूहिक गान मे शामिल होता था जो किसी धर्मार्थ प्रयोजन के लिये आयोजित किये जाते थे। लेकिन उसे दिखावा पसन्द न था। यदि उसे यह आभास भी हो जाता था कि किसी व्यक्ति ने उसका प्रदर्शन करने के लिये उसे आमन्त्रित किया है तो वह पियानो के पास तक नही जाता था। जव वह अठारह वर्ष का था, एक वार परिवार के एक पुराने मित्र ने एक वडी पार्टी का आयोजन किया और उस आयोजन मे फॉस्टर परिवार के सभी सदस्यो को आमन्त्रित किया गया। जव स्टीफेन ने यह सुना कि घर की मालकिन यह कह रही है "स्टीफेन से कह देना कि वह अपने साथ वासुरी भी लेता आये।" इतना सुनते ही वह उस पार्टी में जाने से इन्कार कर गया और उसने कहा "श्रीमती . से कह देना कि जैसी उनकी इच्छा है मैं अपनी वासुरी भेज दूगा।"

उसका भाई मोरिसन शाम के समय कमरे मे वैठा करता और स्टीव को अपने आप गाते तथा वजाते हुये सुना करता। वह वताया करता था कि स्टीफेन गाते और वजाते समय चिल्ला उठता था। मॉरिसन ने यह भी कहा है कि स्टीफेन के मस्तिष्क मे निरतर मेलोडीज की तरगे उठा करती थी। "प्राय रात को वह उठ वैठता था। वत्ती जलाता और कागज पर किसी मेलोडी (मधुर गीत) की पक्ति लिख लिया करता था।" वह फिर विस्तरे पर जाकर सो जाता था।

युवको का एक क्लव था उस समय स्टीफेन की आयु उन्नीस वर्ष की थी। फॉस्टर के घर मे इस क्लव की प्रति सप्ताह दो वैठके होती थी और वहाँ गीतो को हार्मोनी (मधुर ध्वनि) मे गाने का अभ्यास किया जाता था। वे अपने को 'एस० टी० के नाइट' कहते थे। (एस० टी० का पयोजन स्क्वेयर

टेबुल से हो किन्तु इसके बारे मे किसी को ज्ञात नही है क्योकि यह उनका रहस्य था) स्टीव उनके गाने मे नेतृत्व करता था और वह अपने कार्य मे बहुत दक्ष था। वे सभी नीग्रो गीत गाते थे जो उस समय अधिक लोकप्रिय थे और वे ऐसे ही गीतो को अधिक पसन्द करते थे। अतएव स्टीफेन ने उनके लिये अधिक गीत लिखना प्रारम कर दिया।

उसने अपने क्लब मे जो पहिला गीत गाने के लिये दिया, उसका शीर्षक था ' लुईजैना बेलो। उन्होने इस गीत को इतना अधिक पसन्द किया कि स्टीव को अधिक प्रोत्साहन मिल गया और उसने दूसरे सप्ताह ओल्ड अंकिल नेड नामक गीत की रचना की। इसी प्रोत्साहन की स्टीव को आवश्यकता थी। पिट्सबर्ग मे इन गीतो की ख्याति फैलने मे अधिक समय न लगा। लोग इन गीतो को एक दूसरे से ठीक इसी प्रकार सीखने लगे जैसे कि लोक गीत सीख लिये जाते हैं।

जब कभी पिट्सबर्ग मे यात्रा करने कवि-मण्डलियाँ आती, स्टीफेन और मोरिसन उन खेलो को देखने जाते। कभी-कभी शेक्सपीयर के नाटक खेले जाते और उन नाटको मे कुशल अभिनेता रहते। इस प्रकार महीने बीतते गये और स्टीफेन बीस वर्ष का हो गया। यद्यपि उसके गीत लोगो की जबान पर चढ गये थे फिर भी उसने अथवा उसके पिता ने यह कभी नही सोचा कि गीत लिखना उसके जीवन का सभावित कार्य भी हो सकता है। उसके पिता ने यह विचार व्यक्त किया कि अब उपयुक्त समय आ गया है जबकि स्टीफेन सगीत से अपना ध्यान हटाकर किसी अन्य उपयोगी कार्य मे लगाये।

यह निश्चित किया गया कि उसे सिन सिनाटी चला जाना चाहिये जहाँ उसका भाई डनिंग व्यापार कर रहा था और वहाँ जाकर वह उसका हिसाब-किताब रखे। एक दिन उसका परिवार और मित्र उसे विदा करने आ गये और वह नाव से डनिंग की ओर चल पडा। वहाँ स्टीफेन फॉस्टर तीन वर्ष तक रहा, उसने डनिंग के कार्यालय मे बडे क्रम, सफाई और व्यापारिक ढग से हिसाब-किताब रखा। वह अपने खाली समय मे गीत लिख लिया करता था। सौभाग्य से सिनसिनाटी सदैव सगीत का केन्द्र रहा है और उसे वहाँ

अधिक सगीत सुनने का अवसर मिला। जब स्टीफेन वहाँ था तभी कुछ ऐसी बात हुई जिससे उसके मन मे पहिली बार यह विचार आया कि वह अपने सगीत से ही अपनी रोजी कमा सकता है। फॉस्टर की पिट्सबर्ग में एक सगीत अध्यापक से भेट हुई थी और अब वह व्यक्ति सिनसिनाटी मे सगीत रचनाओ का एक मामूली सा प्रकाशक था। यह वही व्यक्ति था जिसने **जम्प जिम क्रो** प्रकाशित किया था। स्टीफेन ने उसे अपने दो गीत दिये **ओल्ड अंकिल नेड** और **ओह ! सुजेना**। गीत प्रकाशित कर दिये गये और उनकी इतनी अच्छी बिक्री हुई कि प्रकाशक को दस हजार डालर का लाभ हुआ जिससे उस प्रकाशक ने अपना व्यापार बडे पैमाने पर जमा लिया। स्टीफेन को अपने गीतो के मूल्य का पता ही न था, इसी लिये उसने इन्हे यो ही दे डाला था और इनके एवज मे उसे कुछ प्रकाशित प्रतिया ही मुफ्त मिली थी।

परन्तु इससे उसकी ख्याति फैल गई। उससे यह अनुरोध होने लगा कि वह विभिन्न मिन्स्ट्रिल ट्रुप (गीत मण्डलियो) के लिये विशेष प्रकार के गीत लिखे। लोग उसे काम देने लगे। जब न्यूयार्क के एक प्रकाशक ने उससे गीत लिखने का निवेदन किया तो स्टीफेन फॉस्टर को यह अनुभव होने लगा कि अब उसकी ख्याति बढने लगी है। अतिथि गायक उसे जानने लगे, अब वह सगीत के क्षेत्रो मे परिचित हो गया और थियेटर मे उसका स्वागत होने लगा। अब उसे थियेटर मे अन्दर जाने के लिये टिकट खरीदने की आवयश्कता नही पडती थी और वह यो ही थियेटर के अन्दर जा सकता था। ट्रुपो ने उसके गीतो का विज्ञापन देना शुरू कर दिया। चार गीत **फॉस्टर एथ्योपियन मेलोडीज** के नाम से प्रकाशित हुये। उन गीतो के नाम ये **नेली वाज ए लेडी, माई ब्रुडर गम, डोल्सी जॉन्स और नेली ब्लाई**। जब स्टीफेन की आयु तेईस वर्ष की हो गई तब केलीफोर्निया मे उसे अपने गीतो से प्रचुर धन की प्राप्ति होने लगी और फोर्टीनाइनर्स ने ओह ! सुजेना गीत को 'थीम साग' के रूप मे स्वीकार कर लिया। वह गीत महाद्वीप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक गाया जाने लगा। योरुप के अतिथि पियानो-वादक हर्ज और थॉलवर्ग ने ओह ! सुजन्ना गीत को लेकर सामूहिक सगीत के विविध रूपो मे सुनाया।

स्टीफेन फॉस्टर को अन्तत सफलता प्राप्त हुई। उसे ऐसा लगा कि उसे अनायास ही सफलता मिली है। प्रत्येक व्यक्ति उसके गीतो को गाता था, गुनगुनाता था अथवा सीटी की आवाज से दुहराता था। अब उसके लिये आवश्यक नही था कि वह व्यापार के हिसाब-किताब रखने के काम मे लगा रहे जबकि उसका मन सगीत मे ही रमा हुआ था। तीन वर्ष बाद वह घर लौट आया। वहाँ उसने अपने घर के ऊपर पीछे वाले कमरे मे एक स्टूडियो बना लिया। उसने वहाँ दत्तचित्त होकर अध्ययन किया और न्यूयार्क के प्रकाशक को सगीत देने के धन्धे मे जुट गया। उसके लिये एक ऐसा प्रबन्ध हो गया कि उसे एक प्रति बिकने पर तीन सेण्ट मिलने लगे। वह काम करने मे इतना गभीर हो गया कि केवल अपनी माँ के सिवाय अपने स्टूडियो मे किसी को नही आने देता था।

इस समय तक उसकी आयु के बराबर कई लडकियो और लडको की शादी हो चुकी थी। जब वह सिन-सिनाटी मे रह रहा था तब वह सूज़न पेण्टलैण्ड के विवाहोत्सव मे सम्मिलित होने के लिये गया। इसी लडकी के लिये उसने अपना पहिला गीत लिखा था जब वह दस वर्ष की थी। उसका पति एस० टी० के नाइटो मे से एक था।

अग्रेजी उपन्यासकार चार्ल्स डिकेन्स अमरीकी यात्रा करते समय पिट्सबर्ग भी पहुँचे। वह वहाँ बीमार पड गये और उन्हे देखने के लिये डाक्टर मेक्डुगल आये। डॉक्टर मेक्डुगल जेन मेक्डुगल के पिता थे और जेन मेक्डुगल स्टीफेन के मित्रो मे से एक मित्र था। डॉक्टर मेक्डुगल अपने रोगियो को देखने के लिये जब जाते तब उनका पुराना नीग्रो नौकर 'जो' गाडी चलाता था। जिस समय वृद्ध जो को डाक्टर की गाडी चलाने से छुट्टी मिलती थी तो उसे घर मे बटलर का काम भी करना पडता था। उसने कई बार 'मिस जेनी' के प्रशसको का दरवाजे पर ही स्वागत किया। वह लडखडा कर चलता। उसके चेहरे पर मन्द मुस्कराहट होती और वह मिस जेनी के पास पहुँचता तथा उसके मिलने वालो के नाम बताता और उनके फूलो के गुच्छे उसे दे देता था।

जेन मेक्डुगल अत्यन्त सुन्दर लडकी थी। उसके सुनहरे बाल थे और

उसकी आखे बेमिसाल थी। स्टीफेन उससे प्राय. मिला करता था और एक ऐसा समय भी आया कि वह उससे प्रेम करने लगा। उसने बाद मे बताया कि जेन के सुन्दर बालो के कारण ही वह उससे प्रेम करने लगा था। एक शाम को जो स्टीव को घर के अन्दर ले जा रहा था कि स्टीफेन ने उससे कहा, "किसी दिन मैं तुम पर भी गीत लिखूगा।"

और उसने ऐसा ही किया परन्तु बहुत वर्ष बाद। उसे ओल्ड ब्लेक जो लिखने की प्रेरणा मिली लेकिन उस समय वह बूढा हब्शी जो इस ससार से चल बसा था।

उसके लिये वह शाम कितनी व्यग्र होगी जब स्टीफेन ने जेन की परीक्षा लेनी चाही। स्टीफेन केवल पहुँचा ही था कि वृद्ध जो ने किसी अन्य अतिथि रिचर्ड कोवन (जो एस० टी० का एक नाइट भी था) के आने की सूचना दी। जेन को तारीख का धोखा लग गया होगा कि उसने दोनो को एक ही शाम को बुलाया। परन्तु स्टीफेन वहाँ पहिले आ चुका था और उसका चले जाने का भी विचार न था। जब रिचर्ड अन्दर आया तो स्टीफेन ने अपनी पीठ फेर ली और एक पुस्तक उठा ली तथा प्रकाश के पास ऐसा बैठ गया कि सारी शाम उसका पढने का इरादा है। वह शायद बैठा ही रहा और पुस्तक को ध्यान से देखता रहा तथा उसने एक शब्द भी नही पढा। उसे चिन्तन के लिये बहुत कुछ मिल गया था। रिचर्ड कावेन धनी, सुन्दर और विशेष आकर्षक व्यक्ति था। वह पहिले ही से वकालत कर रहा था तथा विवाह करने की स्थिति मे भी था। स्टीफेन देखने मे अच्छा था किन्तु उसे सुन्दर नही कहा जा सकता और उसका कद भी कम था, तथा निश्चय ही वह धनी नही था। निस्सदेह वह अधिक दुखी होकर यही सोच रहा था कि जेन के लिये उसका प्रतिद्वन्दी उसकी अपेक्षा अधिक सुन्दर है। वह स्वभाव से सदैव नम्र और सज्जन था परन्तु उस रात मे वह कोई भी बेवकूफी न सह सका। वह शाम उसके लिये अधिक थकान देने वाली थी और साढे दस बज गये जब बाहर से किसी के आने की आशा न थी। रिचर्ड जाने के लिये उठा और शानदार तरीके से सेना की टोपी पहिनी (क्योकि उन दिनो पुरुष

टोप पहिनने के आदी थे जैसे कि वे कोट पहिनते थे) और स्टीफेन की पीठ की ओर झुका तथा यह कहा "श्रीमन्, नमस्ते।"

स्टीफेन कुछ भी न बोला, वह बैठा रहा। जेन ने रिचर्ड को द्वार तक पहुँचाया और फिर बरामदे तक आई क्योंकि उसे यह पता था कि सकट समीप है। उसने बाद मे यह स्वीकार किया कि उसे वास्तव मे ही यह नही ज्ञात था कि उसकी सहानुभूति रिचर्ड के प्रति थी अथवा स्टीफेन के प्रति। इस बारे मे उसे सोचने के लिये बिल्कुल भी समय न मिला। जैसे ही वह कमरे में घुसी, स्टीफेन मेज के किनारे खडा था। उसका चेहरा उदास और आक्रोशपूर्ण था।

उसने कहा "मिस जेन, आज मैं तुमसे स्पष्ट उत्तर चाहता हूँ कि तुम हाँ करोगी या नही?"

ऐसी शीघ्रता के प्रस्तावो मे विजय की सभावना रहती है। परन्तु देखने मे यह ठीक ही प्रतीत होता है कि स्टीफेन को इस समस्या के सुलझाने का यही रास्ता था क्योंकि स्टीफेन को ही जेन से विवाह करना था। उस शाम की "नाराजगी" बहुत ही कम समय रही और विवाह के बाद स्टीव और डिक कोवन अच्छे मित्र बने रहे।

स्टीफेन चौबीस वर्ष की आयु मे प्रसिद्ध हो गया जैसा कि उसके चाचा स्ट्रूथर्स ने भविष्यवाणी की थी। वह और अधिक गीत लिखने लगा। वह सर्वप्रथम गायको के लिये गीत लिखा करता था और उनके शब्द नीग्रो—बोली के होते थे। गोरो की भाषा के शब्दो मे उसका पहिला गीत था ओल्ड फॉक्स एट होम। उसने जिम क्रो टाइप की तरह निरर्थक शब्दो के साथ मज़ाकिया गीत लिखे यथा डी केम्प टाउन रेसेज और ओह। लेमुअल, उस समय पार्लर सान्ग्स (वार्तालाप कक्ष मे गाये जाने वाले भावनापूर्ण गीत) अधिक लोकप्रिय हो गये तथा ओल्ड डॉग ट्रे हार्ड टाइम्स कम अगेन नो मोर, उसके प्रेम गीत यथा जेनट्ल एनी, लौरा ली और कम हिदर माई लव लाईज ड्रीमिंग। जेन से उसे कई गीतो की प्रेरणा मिली जेनी विथ द लाइट ब्राउन हेयर, और जेनी'ज, कमिंग ओवर द ग्रीन। उसने कुछ हिम (आराधना

गीत) भी लिखे। उसके १८८ गीतों मे से एक गीत अनेक विदेशी भाषाओं मे अनूदित हो चुका है और समस्त ससार मे सुना गया है। उस गीत का नाम है—ओल्ड फोक्स एट होम।

उसने वे डाउन अपॉन द पेडी रिवर—कविता लिखनी प्रारम की लेकिन वह इस नदी के नाम से सतुष्ट नही था। एक दिन वह अपने भाई मोरिसन के दफ्तर मे गया और उनसे पूछा "दो पदो का नाम बताइये जिसे दक्षिणी नदी के लिये प्रयोग किया जा सके। मैं उस नाम को अपने "ओल्ड फॉक्स एट होम" नामक गीत मे प्रयोग करना चाहता हूँ।"

मोरीसन ने उससे पूछा कि "याजू" नाम कैसा रहेगा। लेकिन स्टीफेन ने कहा "वह शब्द पहिले ही प्रयोग मे आ चुका है।"

मोरिसन ने फिर "पेडी" शब्द बताया। सगीतकार कह उठा "जी, मैं इसको भी प्रयोग न करूँगा।"

तब मोरिसन ने अपनी डेस्क के ऊपर से एक एटलस उठाई और उन्होंने सयुक्त राज्य अमरीका का नक्शा खोला। अन्त मे मोरिसन की अगुली फ्लोरिडा में एक छोटी नदी के पास रुक गई जिसको 'स्वानी' कहते थे।

"यही वह नाम है।" स्टीफेन प्रसन्नता के साथ चिल्लाया। और कहा—'वास्तव मे यही वह नाम है।" तथा बिना कुछ आगे कहे वह अपने भाई के दफ्तर से बाहर निकल आया।

वह फ्लोरीडा मे कभी नही गया था और उसने स्वानी नही देखी थी, फास्टर ने सुदूर दक्षिण मे कुछ नदियो की यात्रा की थी। हल्के सुनहरे बालो वाली

और उसने दक्षिणी भाग का जीवन देखकर **मसाज इन डी कोल्ड, कोल्ड ग्राउंड** जैसे गीत लिखे।

(इस पुस्तक का लेखक १९३६ मे ग्रीष्मऋतु की एक शाम के समय बेल्जियन के ब्रूगीज मे एक केफे के सामने भोजन कर रहा था। इस पुराने शहर के मध्ययुगीन स्क्वेयर के पार बहुत ऊँची टावर थी। सूर्य अस्त हुआ और अधकार बढने लगा, टावर से उन केरीलान (एक प्रकार का वाद्य-यत्र) के स्वर सुनाई देने लगे जिन्हे एक विख्यात केरीलान बजाने वाला प्रस्तुत कर रहा था। समुद्र पार के अतिथियो के सम्मान मे कार्यक्रम का शेष आधा भाग अमरीकी धुनो पर आधारित था। कार्यक्रम का एक अश गलत छप गया था "मसा'ज़ इन डी गोल्ड, गोल्ड ग्राउण्ड")।

फॉस्टर को अपने गीत पसन्द थे किन्तु उसे सदैव यह अभाव अखरता रहा कि उसने सगीत की ट्रेनिग नही पाई है और उसमे सगीत रचना के तकनीकी ज्ञान की कमी है। शायद एक कारण यह भी हो कि उसने कभी अपने गीतो के लिये अधिक धन नही माँगा। शायद इसलिये उसने धन की कमी चिन्ता नही की। इस तथ्य ने जेन के जीवन को कर्मठ बना दिया और लोग उसके अति समीप आ गये।

फॉस्टर के जीवन काल मे विभिन्न गायक मण्डलियो ने आपस मे नये गीत चलाने के लिये प्रतियोगिता की। प्रसिद्ध कम्पनियो मे ई० पी० क्रिस्टी की एक कम्पनी थी और वह नीग्रो के लोकप्रिय मेलोडी कर्स्ट को प्रस्तुत करती थी। फॉस्टर ने पन्द्रह डालर की अल्प राशि मे ही क्रिस्टी को अपने कुछ गीतो को पहिली बार गाने की अनुमति दे दी। क्रिस्टी के सहयोगी गायक सर्वप्रथम थे जिन्होने फॉस्टर के **ओह! व्वाय्ज, केरी मी लोग** और **ओल्ड फाक्स एट होम** गीत प्रस्तुत किये। फॉस्टर ने क्रिस्टी के हाथ यह अधिकार भी बेच दिया कि क्रिस्टी के नाम से ही दूसरा गीत प्रकाशित हो। स्टीफेन फॉस्टर ने इस बात की चिन्ता नही की और अधिक समय तक यह विचार रहा कि क्रिस्टी ने ही यह गीत लिखा होगा। फॉस्टर ने इस बात की इसलिये अनुमति दी क्योकि दूसरे प्रकार के सगीत की रचना करने की

सोच रहा था और यह महसूस करता था कि उसे केवल एथूपिया के गीतो का एकमात्र रचियता ही न समझ लिया जाय। बाद मे उसने यह स्वीकार करने की इच्छा व्यक्त की कि ओल्ड फाक्स एट होम गीत उसका है और उस गीत के रचियता के रूप मे उसका नाम दिया जाय।

उसके परिवार के एक मित्र ने उसे लम्बे वालो वाला एक सुन्दर शिकारी कुत्ता दिया जो उसका सदैव साथी बना रहा। फॉस्टर के परिवार के सदस्य पार्क के किनारे रहते थे और स्टीफेन को यह देखकर प्रसन्नता होती थी कि उसका कुत्ता जन-साधारण के बच्चो मे खेल रहा है। यह वही कुत्ता है जिसकी विश्वासपूर्ण मित्रता को उसने ओल्ड डाग ट्रे नामक गीत मे उल्लेख किया है। कुछ समय बाद उसके पास एक और कुत्ता आ गया जिसका घर नही था और उसे गली मे भटकते हुये पकड लिया था। उसने उसका नाम 'केलोमिटी (विपदा)' रख लिया था क्योकि वह दु खभरी आवाज मे भूकता था।

प्रारभ मे स्टीफेन और जेन फॉस्टर स्टीफेन के परिवार के साथ रहे। कुछ समय बाद उन्हे पुत्री लाभ हुआ और तब वे न्यूयार्क चले गये। वहाँ फॉस्टर को आर्केस्ट्रा और कोरस (समवेत स्वर मे गाये जाने वाले गीत) सुनने का अवसर मिला लेकिन यह ऐसा अवसर था जो उसे अपने जीवन मे बहुत देर से मिल सका। उसने कुछ वर्षो तक रहने के लिये पर्याप्त धन कमाया किन्तु उसे इस बात का विचार भी नही था कि वह भविष्य के लिये किस प्रकार धन बचाकर रखे। वह केवल मात्र भावनाओ से प्रेरित होकर रहा और उसके जीवन मे कोई योजना नही थी। इसके कारण उसे आन्तरिक रूप से असतोष होने लगा तथा उसका जीवन अव्यवस्थित और दु खी बन गया जिसका अन्त भी दु खद रहा।

उसे सदैव ही घर की याद सताती रही। न्यूयार्क में एक वर्ष रहने के. बाद स्टीफेन फॉस्टर को यकायक घर की याद आई और वह एक दिन अपनी पत्नी से कह उठा कि सामान बॉध लो और घर चले। उन्होने चौबीस घण्टे मे ही अपना फर्नीचर वेच दिया और पश्चिमी पेन्सिलवेनिया को चल पडे। वे वहाँ अप्रत्याशित रूप से रात को जा पहुँचे। उन्होने बुलाने की घण्टी

बजाई, स्टीफेन की माँ जग गई और वे नीचे आई। उसकी माँ को बरामदे में ही उसकी पदचाप मालूम हो गई थी और जब वे हाल मे से जा रही थी तो उन्होने पुकार कर कहा "क्या मेरा प्यारा बेटा घर लौट आया है ?"

स्टीफेन उनकी आवाज सुनकर इतना प्रभावित हुआ कि जैसे ही उन्होने दरवाजा खोला कि देखा कि वह बरामदे की बेंच पर बैठा बच्चे की तरह रो रहा है। फॉस्टर की माँ जब तक जीवित रही, वह अपने व्यवसाय के लिये न्यूयार्क अथवा यदाकदा मनोरजक यात्रा के अतिरिक्त अपने घर मे कही नही गया।

श्रीमती स्टीफेन इस बात से शायद ही कुछ आराम पाती। एक से अधिक परिवार साथ रहने मे सुविधा नही रहती और उन्हे यह बात सोचकर कष्ट हुआ होगा कि वह स्वय और उनकी छोटी बच्ची मेरियोन फॉस्टर के जीवन और उसके घर मे पूर्णता लाने मे असमर्थ हैं। ऐसे भी समय आ जाते जब उन्हे अलग रहना पडता। जब स्टीफेन अपने छोटे से परिवार के निर्वाह के लिये पर्याप्त धन न कमा पाता तो श्रीमती स्टीफेन आजीविका कमाने के लिये काम करती थी। उन दिनो मे यह बात असाधारण लगती थी कि एक विवाहित स्त्री घर के बाहर काम करे। आज एक महिला की इस बात की प्रशसा की जाती है कि वह घर को सभाल कर बाहर भी काम कर लेती है लेकिन उन दिनो में महिला उसी समय काम करती थी जबकि उसे जीवन निर्वाह के लिये काम करना आवश्यक हो जाता था। इसके कारण भी स्टीफेन को अपने प्रति असतोष हो जाता था। जब फॉस्टर के माता-पिता का देहान्त हो गया, भाई डनिंग भी गुजर गया और कई भाई बाहर चले गये तो फॉस्टर खोया-खोया सा लगने लगा। उसे केवल उसी घर मे अपनापन महसूस होता था जिसमे उसकी माँ रहती थी। जब उसका यह सहारा भी टूट गया तो वह इधर-उधर भटकने लगा।

वह न्यूयार्क लौट आया। कुछ ही समय मे उसकी पीने की आदत पड गई और उसने बहुत कोशिश की कि शराब पीना छोड दे लेकिन उसकी शराब के प्रति तृष्णा कम न हो सकी। गृह-युद्ध के समय फॉस्टर का परिवार

न्यूयार्क में ही रह रहा था। छोटी बच्ची मेरियोन आठ वर्ष की थी। किसी ने फॉस्टर को गली में देखा और उसे देख कर यह वर्णन किया है

"उसका कद छोटा था और वह अधिक स्वच्छ नीला दो शाखी पूंछ का कोट और ऊँचा सिल्क का हैट पहिने हुये था। लेकिन कई वर्ष पहिले ही उसने साफ सुथरे कपड़े पहिनना बन्द कर दिया था। एक ऐसा समय आया कि उसके गीत सरलता से न प्रकाशित हो सके और जैसे-जैसे समय बीतता गया कि उसकी पत्नी अपने लिये काम खोजने पिट्सबर्ग में वापिस आ गई। उसका पति न्यूयार्क में अकेला रह गया। उसे कपकपी लेकर बुखार आने लगा और वह वास्तव में बीमार ही हो गया।"

लगभग पैंतीस वर्ष की आयु में यकायक उनने फिर कई गीत लिखना शुरू किया। इसी समय उनने ओल्ड ब्लेक जो गीत लिखा। उनमें से कुछ गीत इस प्रकार हैं: **वर्जीनिया बेली, द मेरी, मेरी मन्थ ऑफ मे, अवर ब्राइट समर डेज आर गोन।** उसका अन्तिम गीत **बियूटीफुल ड्रीमर** था। जीवन के अन्त में उनने अपने गीत बहुत कम दामों में बेच दिये। उसे ऐसा महसूस होने लगा था कि उसकी अधिक आवश्यकता नहीं है। वह बहुत कम खाता था और भोजन में रुचि नहीं रखता था। धीरे-धीरे कपड़ों से भी रुचि जाती रही। उसे एकाकीपन महसूस होने लगा था और वह अकेला रहता था। वह बावरी में एक पुराने जीर्ण-शीर्ण किराने के स्टोर के पीछे अपना अधिक समय

सामान वाँधने के वादामी कागज का भी प्रयोग कर लेता था और वह उसी कागज पर लकीरे खीच कर गीत लिखने लगता था क्योंकि उसके मस्तिष्क मे वरावर गीत गूजा करते थे।

सर्दियो का मौसम था, सुवह का समय था, उसके मित्र कूपर को यह समाचार मिला कि फॉस्टर किसी दुर्घटना से गस्त हो गया है। उसने शीघ्र ही कपडे पहिने और होटल की ओर तेजी से चलने लगा जहाँ स्टीफेन फॉस्टर रहा करता था। उसने अपने मित्र को देखा वह फर्श पर गिरा पडा था, उसके शरीर पर घाव के निशान थे और रक्त वह रहा था। उसने डाक्टर को वुलाया। फॉस्टर को अस्पताल भेजा गया और वहाँ वह सदा के लिये चल वसा। उसकी एक जेव मे एक छोटा वटुआ मिला जिसमे अडतीस सेण्ट थे और कागज का एक छोटा टुकडा था जिस पर पेन्सिल से लिखा था

प्रिय मित्रो और उदार सज्जनो।

कुछ वर्षो वाद महान गायिका विल्सन अमरीका आई। आते ही उन्होंने **ओल्ड फोक्स एट होम** गीत सुना। वह उस गीत की करुण, मधुरता और मर्मस्पर्शी शव्दो को सुनकर इतनी भाव-विभोर हो उठी कि उन्होने शीघ्र ही उस गीत को सीखना शुरू कर दिया। उसके वाद उन्होंने अपने कसर्ट में लगभग सदैव ही उसी गीत को गाया।

फॉस्टर जीवित था तभी यह गीत कई देशो मे गाया जाने लगा था। इस गीत की रचना के कुछ वर्षो वाद एक सज्जन स्कॉटलैण्ड के सीमान्त क्षेत्रो मे से होकर पैदल यात्रा कर रहे थे। वहाँ उन्होने गडरिया के लडको और लडकियो को फॉस्टर के गीत गाते सुना और इन गीतो के अलावा वे वर्न्स तथा रेमजे के वैलेड्स भी गा रहे थे। उन्होने एक सभा मे वताया कि वेग पाइप्स (मशक वाजा वजाने वाले **स्काट्स ह्वा हे वी, वेलेस ब्लेड** और **लार्ड एयोल्स कोर्टशिप** जैसे महान वैलेड वजाना समाप्त ही करते कि उसके वाद कोई अमरीको (फॉस्टर) गीत प्रारभ किया जाता और सभी उसमे साथ देने लगते। ये गीत फॉस्टर की अमरीकी मेलोडी के नाम से प्रसिद्ध है। इन्हें चीन, अफ्रीका और आस्ट्रेलिया जैसे सुदूर देशो मे भी गाया जाता है।

स्काटलैण्ड के एक निवासी ने एक रोचक कहानी कही है जिससे फॉस्टर के गीतो की गुणवत्ता प्रकाश मे आती है। जब वह एक लडका था और ग्लासगो मे एक विद्यार्थी था तो वह अपनी टीन की सीटी से फॉस्टर के गीतो की धुनो का अभ्यास करता था लेकिन उसे यह भी पता न था कि उन गीतो का रचियता फॉस्टर होगा। वह कहता था कि स्कूल की दावत उस समय तक अधूरी ही समझी जाती थी जब तक कि फॉस्टर के किन्ही गीतो को गा न लिया जाय लेकिन यह सच है कि जिस प्रकार लोक-गीतो के बारे मे उनके रचियता का पता नही लगता उसी प्रकार यह बात किसी को भी नही मालूम थी कि किसी अमरीकी फॉस्टर ने ही उन गीतो की रचना की है। उसने बताया है कि किसी भी अवसर पर वातावरण बिल्कुल ही बदल जाता था जब कभी ऑरकेस्ट्रा पर फॉस्टर के "पुराने सरस गीत" बजाये जाते थे।

फॉस्टर सयुक्त राज्य अमरीका की धरती का सच्चा लाल था। अन्य किसी देश मे ऐसे बालक का जन्म नही हुआ। उसने अपने देश और अपने देशवासियो के ही गीत गाये। उसके गीतो मे सरलता निश्च्छलता और मानवता वैसी ही थी जैसी कि लोकगीतो मे होती है। इन गीतो मे कठिनता नाम की कोई भी चीज़ नही है। उन मेलोडी मे उच्च और मध्यम सभी स्वर जीवन को स्फूर्ति और शक्ति प्रदान करते है। उन गीतो मे वफादारी और प्रेम की ऐसी भावनाये भरी है कि प्रत्येक व्यक्ति उन्हे समझ सकता है। उनका सदेश सार्वभौमिक है। उनकी भाषा जनसाधारण के हृदय की भाषा है।

स्टीफेन फॉस्टर को उसकी मृत्यु के ७६ वर्ष बाद १९४० मे न्यूयार्क यूनिवर्सिटी हाल मे प्रसिद्ध व्यक्ति के रूप मे नामाकित किया गया। वह प्रथम सगीतकार है और अब तक एक ही सगीतकार है जिसको वहाँ श्रद्धापूर्ण स्थान दिया गया है।

स्टीफेन कोलिन्स फॉस्टर पिट्सबर्ग, पेनसिलवेनिया मे ४ जुलाई, १८२६ को पैदा हुआ। उनका १३ जनवरी, १८६४ को न्यूयार्क नगर मे स्वर्गवास हुआ; उन्हे पिट्सबर्ग मे दफनाया गया।

जान फिलिप सूज़ा

'द मार्च किंग'

जान फिलिप का लालन-पालन वाशिंगटन नगर मे हुआ। वाशिंगटन देश की राजधानी था। वहाँ उसने बहुत बैण्ड सगीत सुना। वह ऐसा समय था जब बैण्ड सुनकर कम्पन हो उठता था और उसके सुनने से असाधारण रूप से स्फूर्ति हो उठती थी क्योकि उस समय गृह-युद्ध चल रहा था। बैण्ड सगीत सर्वथा उसी समय जोशीला होता है जब देश-भावना जागृत की जाय और युद्ध के समय ऐसी भावनाओ को बहुत उभारा जाता है। युवक जॉन फिलिप की नस-नस मे अन्य लडको के समान बैण्ड का सगीत समा गया था। चाहे वह अच्छा या बुरा सगीत हो किन्तु उसे वह सगीत बहुत अच्छा लगता था।

उसका पिता एनटोनियो मेरीन बैण्ड मे ट्राम-बोन बजाता था और जोन (अथवा फिलिप, जैसा कि उसका पिता उसे पुकारा करता था) को अपने पिता जी बहुत अच्छे लगते थे। और वह उनका आदर करता था। इस बात से यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि उस बालक को कौन-कौन अच्छा लगता था। हम सभी यह सोचते है कि हमारे पिता जो कुछ भी करते हैं, वह ठीक है। शायद ही सारे ससार मे कोई ऐसा लडका या लडकी मिले जो बैण्ड के प्रस्थान के समय उसकी धुन से भाव-विभोर न हो उठता हो।

एनटोनिया सूज़ा पुर्तगाल का निवासी था लेकिन जब उसके परिवार को पुर्तगाल में क्रान्ति होने के कारण भागना पडा तो वे स्पेन चले गये और एन्टोनियो सेविले में उत्पन्न हुआ। बाद मे वह इग्लैण्ड चला गया और फिर अमरीका जा पहुँचा। बुकलियन मे उसकी बवेरिया की एक लडकी से भेट हुई जो सयुक्त राज्य अमरीका देखने आई थी। वह जीवन-पर्यन्त अमरीका मे

रह गई क्योंकि उसने टानी सूजा से विवाह कर लिया। वर्ष-बीतते गये और उनके दस बच्चे हुये। उन सभी बच्चों में जोन फिलिप सबसे बड़ा था। यह स्वाभाविक था कि सबसे पहिले उसी को अपने जीवन-निर्वाह के लिये कमाना शुरू करना था क्योंकि उसके अन्य सभी भाई-बहिन छोटे थे और उनका लालन-पालन होना था। वह बचपन से संगीतज्ञ बनना चाहता था।

उसके अपने संगीत के पाठों का प्रारम्भ अच्छा न हुआ। बात कुछ ऐसी है उसके पिता का एक पुराना मित्र था वह स्पेन निवासी था और प्राय सूजा के घर मिलने के लिये आया करता था। एक दिन शाम को वह मिलने आया और वह उसके पिता से जिस कमरे में बात कर रहा था उसी कमरे में फिलिप ने गेंद लुढकाना प्रारम्भ कर दिया और वहाँ से हटकर न गया।

इन्हीं महाशय के पुत्र ने फिलिप के पड़ोस में संगीत-विद्यालय खोला। जब वह लड़का सात वर्ष का हुआ, उसका वहाँ अन्य साठ विद्यार्थियों के साथ दाखिला करा दिया गया और उसने वहाँ वायलिन बजाना सीखना आरम्भ किया। उन चिल्लाकर गाने वाले वृद्ध महाशय के पुत्र के गुरु होने से भी उसे विशेष कठिनाई से अपना समय बिताना पड़ा।

फिलिप ने प्रोफेसर एस्यूटा (वायलिन अध्यापक) को मिस्टर सूज़ा से कहते हुये यह सुना कि यदि फिलिप ने कुछ सीखा भी नहीं तो कम-से-कम वह इधर-उधर गलियों में आवारा घूमने से बच जायेगा। फिलिप यह सुनकर अप्रसन्न हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि उसने अपने विद्यार्थी जीवन के प्रथम तीन वर्षों में एस्यूटा की कक्षा में उसके किसी प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। अध्यापक भी यह न बता सका कि लड़का कुछ सीख रहा है या नहीं। लेकिन इन सभी दिनों में फिलिप संगीत को अधिक मनोयोग से सीखता ही गया कि वह संगीत उसके जीवन के साथ आत्मसात कर गया क्योंकि उसकी प्रबल इच्छा थी कि वह संगीत सीखे। और अन्त में जब तीन वर्ष हो गये तो उसकी पहिली परीक्षा हुई।

स्कूल पाँच पदक प्रदान करता था। प्रत्येक को यह जानकर कितना आश्चर्य हुआ होगा कि फिलिप ने केवल एक ही पदक नहीं अपितु सभी पाँचों पदक जीत लिये। मिस्टर एस्यूटा बड़े असमंजस में पड़ गये। उन्होंने मिस्टर सूज़ा से कहा कि उनके लिये यह संभव नहीं कि उनके लड़के को ही सारे पदक दिये जायें क्योंकि यह आशंका है कि अन्य छात्र बुरा मानेंगे। मिस्टर सूज़ा एक समझदार आदमी थे। उन्हें मिस्टर एस्यूटा की बात सुनकर हँसी आ गई। उन्होंने कहा कि मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि मेरे पुत्र ने सारे पदक जीत लिये हैं लेकिन यदि ये पदक उसे न भी दिये जायें तो इससे उसे कोई अभाव प्रतीत न होगा और उन्होंने निवेदन किया कि यदि इन पदकों का अधिक अच्छा उपयोग हो सके तो ये पदक किसी अन्य छात्र को दे दिये जायें। एस्यूटा ने तीन पदक फिलिप को दिये और दो पदक अन्य छात्रों को। जान फिलिप सूज़ा को जीवन पर कई महान उपाधियाँ दी गई और उसे राजाओं

ने भी पदक दिये किन्तु उसने उन्ही तीन स्वर्ण-पदको को अपने पास रखा जो ऐस्यूटा से ही मिले थे। उसने कहा कि उन पदको को देखकर यह सदैव याद आती रहती थी कि उसके मौन ने सभी को धोखा ही रहा और वह मानने लगा कि "मौन वास्तव मे अनुपम उपलब्धि है।"

उसे ग्यारहवी वर्ष मे एक विशेष अवसर मिला जब उसे अकादमी के वार्षिक सन्ध्याकालीन कन्सर्ट (सगीत-समारोह) के सोलो मे भाग लेना था। उसे अपनी वाद्य-कला से पहिले ही आय होने लगी थी अतएव उसे वाद्य-वादन मे किसी प्रकार की उलझन नही थी। यदि वह तनिक भी अधीर होता तो वह सभी कुछ ऐसा न कर पाता जो कुछ उसने कर दिखाया क्योकि उसने उस कन्सर्ट (सगीत समारोह) मे एक भूल की। उससे उसे एक सीख मिली।

उसने कन्सर्ट (सगीत समारोह) के ही दिन बेस-बाल के खेल का आयोजन भी कर लिया। जब वह भूखा, थका और धूल-धूसरित होकर घर लौटा तो उसने घर मे सभी कुछ अस्त-व्यस्त पाया, उसकी माँ बीमार थी उसकी सबसे बडी बहिन किसी से भेट करने गई थी और नौकरानी बाहर गई हुई थी। उसे सफाई करनी थी, अपने रविवार के कपडे निकालने थे और केवल एक सैण्डविच खाकर ही सतोष करना था। लेकिन उसे एक धुली कमीज नही मिल सकी क्योकि कपडे धुलकर नही आये थे।

और बाहर निकल आई। कमीज के कॉलर मे पिन लगाकर पीठ से जोड दिया गया था, वह कॉलर खुल गया और कमीज उसके सिर के पास से सरकने लगी। कमीज उसकी गर्दन से खिसक गई। दर्शक हँस पडे और उसके शरीर से कमीज गिरने लगी जिसके कारण वह सोलो मे अपने वाद्य-यत्र के नोट्स भूल गया। वह मच से भाग उठा और उसने अपने को छिपाने के लिये एक अधेरा कोना ढूढ लिया। वह मन से इतना अधिक दुखी हुआ कि उसकी इच्छा हुई कि वह मर क्यो न जाय।

कन्सर्ट (सगीत समारोह) के बाद अध्यापक और शिष्यो को आइस-क्रीम और केक के जलपान के लिये बुलाया गया। फिलिप ने इस बात की कोशिश की कि उसे कोई भी न देख सके। फिर भी मिस्टर एस्यूटा ने उसे ढूढ निकाला और उससे कहा

"तुमने कितना गडबड किया। तुम्हे शर्मिन्दा होना चाहिये। तुम जलपान पाने के भी योग्य नही हो। तुम्हे दोपहर के बाद गेद नही खेलना था बल्कि तुम्हे सध्या समय के अधिक महत्वपूर्ण कार्य के लिये तैयार होना था।"

फिलिप के लिये आइसक्रीम न रही। यह ऐसा पाठ था जिसे वह कभी नही भूल सका और उसने कहा कि उसके बाद या तो काम करता था या खेलता था और उसने एक समय मे दोनो काम फिर कभी नही किये।

उसी अध्यापक के साथ एक अन्य घटना है जिससे उस बालक ने एक और पाठ सीखा। उसने अन्य व्यक्तियो के साथ सहानुभूतिपूर्ण और विवेकशील होने की बात सीखी।

निस्सदेह आप जानते ही है कि एक अध्यापक के लिये सदैव शान्त और प्रसन्नचित्त होना कठिन कार्य है। जैसा बच्चे करते है, वैसा अध्यापक के लिये करना सभव नही है। सिर मे दर्द होने पर या किसी पार्टी मे जाने की इच्छा होने पर अध्यापन का काम रोक नही सकता। एक बार मिस्टर एस्यूटा फोडो से पीडित थे, परन्तु उनको उस दशा मे भी पढाना पडा यद्यपि उन्हे अत्यन्त कष्ट हो रहा था। दर्द और बेचैनी के अतिरिक्त फोडो के होने से व्यक्ति का मिजाज भी ठीक नही रहता। फिलिप अपना पाठ सीखते

समय अपने अध्यापक के दुखी मन को धैर्य बधाने के लिये कुछ न कर सका इसके अतिरिक्त वह स्वय वहुत दुखी हुआ क्योकि उसे यह महसूस हुआ कि। वह अपने अध्यापक को प्रसन्न करने के लिये उस दिन कुछ भी न कर सका। जव मिस्टर एस्यूटा पढाते-पढाते वीच मे रुक गये और फिलिप को पियानो पर एक दीर्घ स्वर निकालने के लिये कहा तो फिलिप ने उत्तर दिया कि वह उस समय तक स्वर निकालता रहेगा जव तक कि उसके हाथ काम देगे। इससे अध्यापक को क्रोध आ गया और उन्हे यह महसूस हुआ कि उनकी वात का विरोध किया गया है। फिलिप ने फिर प्रयत्न नही किया अपितु अपने अध्यापक से वहस करने लगा कि उसकी वॉह पहिले ही दीवाल मे अडने की वजह से उठ नही पा रही है। यह सुनकर के अध्यापक आग-ववूला हो उठा। वह अपने दाहिने हाथ मे वायलिन बजाने का गज पकडे हुए था। यह गज उसे एक वहुमूल्य उपहार के रूप मे मिला था। उसने जव अपने दाहिने हाथ को जोर से घुमाया तो गज कुर्सी से लगकर दो टुकडे हो गया।

उन्होने चिल्लाकर कहा, "दूर हो जाओ।" और उस दिन की फिलिप की पढाई इस तरह समाप्त हुई।

वेचारा फिलिप क्या करता। उसने महसूस किया कि उसने ऐसा कुछ भी नही किया कि उसके साथ ऐसा व्यवहार किया जाय और जव वह अपने घर पहुँचा तो उसके पिता को ऐसा लगा कि कोई वात फिलिप को कष्ट दे रही है। पिता के पूछने पर फिलिप ने सारी कहानी सुना दी। उसके पिता ने कहा

"ठीक है, मेरा ख्याल है कि तुम सगीतज्ञ नही होना चाहते। क्या कोई अन्य कार्य भी है जिसे तुम करना पसन्द करोगे ?"

"जी हॉ," लडके ने उत्तर दिया और उसका मन वहुत उदास था। वह कहने लगा कि मैं एक वेकर (नानवाई) वनना चाहता हूँ।

"एक नानवाई ?"

"जी हॉ, एक नानवाई।"

मिस्टर सूजा ने विचार किया, "ठीक हे। मैं इस वात का प्रयत्न करूँगा

कि तुम्हे किसी बेकरी (नानबाई की दूकान) मे अच्छी जगह मिल जाय। मैं जाऊँगा और तुम्हे यह काम दिलाने की कोशिश करूँगा।" और वे यह कहकर घर से बाहर चले गये।

कुछ ही देर बाद वे लौटकर आ गये और अपने पुत्र से कहने लगे, "मुझे चार्ली मिले।' चार्ली यहाँ से दो ब्लाक की दूरी पर बेकरी का काम करते हैं। चार्ली ने मुझसे कहा है कि वह तुमको रोटी पकाना और मास तथा फल भरकर गुझिया बनाना सिखा देगे।" वे यह भी कह गये कि वे अपने पुत्र को बेकरी की अपेक्षा अधिक पढाना चाहते थे क्योंकि उन्होंने ऐसा महसूस किया था कि उसके अधिक लिख-पढ जाने के बाद उन्हे अपनी आर्थिक दशा सुधारने मे विशेष सहायता मिलेगी। उन्होंने फिलिप से कहा कि वह बेकरी के काम के साथ अपनी पढाई जारी रखे और सगीत छोड दे। उन्होंने फिलिप से कहा, "चार्ली तुम्हे आज शाम के साढे आठ बजे से ही बेकरी का काम सिखाना चाहता है।"

फिलिप बेकर के यहाँ साढे आठ बजे जा पहुँचा। उन्होंने सारी रात काम किया। उसने प्रात काल वैगन भराने मे मदद की और रोटियाँ पहुँचाने के लिये ड्रायवर के साथ चल दिया। वह इस बात से अधिक प्रभावित था कि वैगन का घोडा सभी ग्राहको के घर पहिचानता था। उसे प्रात आठ बजे छुट्टी मिली और वह अपने घर जलपान करने आ गया। वह उस रात केवल आध घण्टा ही सो सका था। बेकरी मे काम करने वाले लोग उस समय थोडी देर के लिये सो लेते हैं जब रोटियाँ तन्दूर मे पकने के लिये छोड दी जाती है।

स्कूल के बाद दोपहर बाद फिलिप की इच्छा नही हुई कि वह बेसबाल खेले। वह घर गया और शाम के भोजन के वक्त तक उदासीन होकर इधर-उधर देखता रहा। उसे भोजन करने के बाद बेकरी जाना था। उसके लिये फिर वैसी ही रात थी लेकिन अब उसे एक अन्तर लगा कि बेकरी का मालिक और उसकी पत्नी उसके लिये इतनी मेहरबान नही थी जितनी कि पहिले दिन थी। उसने दूसरे दिन स्कूल मे भी कुछ न सीखा और जब शाम

हुई तो किसी न किसी प्रकार बेकरी मे तीसरी रात काटने के लिये घर से चल दिया। उस दिन वह बहुत उदास था। इस बार बेकरी के मालिक ने झिडककर यह बताया कि उसे यह काम करना है, वह काम करना है और एक बार उसे सीढियाँ चढकर पालने मे उनके रोते हुये बच्चे को भी झुलाना है। वह इतना थक गया था कि उसे नीद आ गई जबकि बेबी चिल्लाता ही रहा। वहाँ मिसेज चार्ली आ गई और उन्होने चपत लगाकर फिलिप को जगा दिया। तीसरी प्रात काल सभी के घर रोटियाँ पहुँचाकर जब वह घर लौटा तो बिल्कुल ही थका हुआ था। जब उसके पिता ने पूछा, "तुम्हे आज प्रात काल कैसा लग रहा है ?", इससे पहिले कि वह कोई उत्तर दे, वह तुरन्त गहरी नीद मे सो गया। तब फिलिप के पिता ने अपनी पत्नी से कहा कि उसे जलपान करा दिया जाय और बिस्तर मे लिटा दिया जाय तथा उसे सारे दिन सोने दिया जाय। उस शाम को उन्होने फिलिप से कहा "निस्सदेह तुम नानबाई बनना चाहते हो, क्या फिलिप यह बात ठीक नही है ?"

लडके ने दु खी होकर उत्तर दिया, "जी नही, मै बेकर बनने की अपेक्षा मरना स्वीकार कर लूगा।"

उसके पिता ने सरलता से कहा, "फिर मेरा विचार है कि तुम एस्यूटा के साथ ही रहो और अपना सगीत शुरू कर दो।"

उसके बाद फिलिप और उसके अध्यापक मे सदैव मित्रता बनी रही। उसने परिश्रम से अध्ययन किया, ओरकेस्ट्रा पर काम किया, लय का ज्ञान बढाया तथा सकेत देखकर सगीत पढने (साइट-रीडिंग) लगा। उसके पिता ने इस बात की कोशिश की कि फिलिप को ट्रामबोन सिखा दिया जाय किन्तु फिलिप उसे प्रारभ भी न कर सका, पडोसियो को भी यह अच्छा नही लगा कि वह ट्रामबोन का अभ्यास करे। लेकिन उसका पिता जिस बैण्ड मे काम करता था, उसमे उस बालक को यदा-कदा सिम्बॉल (झाँझ) बजाने दिये जाता अथवा वह ट्राऐंगल या सेक्सहार्न बजाया करता था। इस प्रकार वह दस वर्ष की आयु मे यह जान गया कि बैण्ड के साथ बाजा बजाने मे कैसा महसूस होता है। जब जौन फिलिप सूजा तेरह वर्ष का होगा, उसने चार जोडो का बैण्ड

बना लिया। उसे छोड़कर सभी बजाने वाले आयु मे बहुत बड़े थे। वह पहले स्वय वायलिन बजाता और बैण्ड वाले दूसरा वायलिन, वायला, कण्ट्रा-बेस, क्लेरिनिट कॉर्नेट, ट्राम्बोन और ड्रम बजाते। वे नृत्यो के साथ बाजे बजाते थे और फिलिप वायलिन बजाकर सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेता था।

वह एक दिन कर्स्टो (समवेत वाद्य) का अभ्यास कर रहा था कि उसके द्वार को किसी ने खटखटाया। उसने दरवाजा खोला और एक सज्जन को देखा जो पॉच मिनट से बाजो की धुन सुन रहे थे और उन्होने इस आश्चर्य से द्वार खटखटाया कि बजाने वाले कौन है? फिलिप ने उस व्यक्ति को अन्दर आने के लिये आमन्त्रित किया। उस आदमी ने उसके बजाने पर बधाई दी और उससे पूछा, "क्या आपका कभी यह भी विचार हुआ है कि आप सर्कस में काम करे।" फिलिप ने उत्तर दिया, "मैने ऐसा कभी नही सोचा है।" फिर उन सज्जन ने यह कहा कि वे सर्कस के बॅण्ड के लीडर है। उस समय उस सर्कस का काम वाशिंगटन मे चल रहा था। उन्होने कहा, "यदि आप चाहे तो आपको भी उस बैण्ड मे उपयुक्त स्थान दिया जा सकता है।" फिलिप को यह विचार पसन्द आया। इसमे सन्देह नही है कि सर्कस किसी भी बालक को अच्छा लग सकता है। उसने कहा कि उसे यह विचार पसन्द है लेकिन वह यह नही बता सकता कि उसके पिता को भी यह विचार स्वीकार होगा। उन्होने फिलिप को यह सुझाव दिया कि वह अपने पिता को यह विचार बताये बिना कार्य प्रारभ कर दे। लेकिन फिलिप का अपना ही विचार था और इसके अतिरिक्त उसे अपने पिता बहुत अच्छे लगते थे जिन्हे छोड़कर वह कही नही जाना चाहता था। फिर सर्कस के महानुभाव ने यह सुझाव दिया कि सम्भवत पिता को यह ज्ञात नही है कि सर्कस के साथ उसके बेटे के होने मे उसका कितना अच्छा भविष्य हो जाता है।

उन सज्जन ने फिलिप को अधिक फुसलाया और यह सुझाव दिया कि वे अगली शाम से ही सर्कस शुरु करने वाले है और वह उनके साथ चले। दो दिन बाद वह अपने पिता को लिख सकता है कि उसे वहॉ कितना अच्छा

लगा और सम्भवत फिर उसका पिता उसके कार्य मे अवरोध न डाले। फिलिप ने यह स्वीकार कर लिया। उन सज्जन ने फिलिप को यह वताया कि वह यह वात गुप्त रखे और वह वहाँ मे चला गया।

उस लडके ने इस वात को जितना अधिक सोचा उतना ही वह अपनी कल्पना से इस प्रस्ताव को अधिक अच्छा समझने लगा। वह सर्कस मे काम करेगा, धन कमायेगा और शायद एक दिन ऐसा भी आ जाय कि वह सर्कस वैण्ड का स्वय लीडर हो जाय। यह ठीक ही था कि वह इसके वारे मे किसी से कुछ भी न कहे। अतएव उसने अपने पडोसी मित्र एड को विश्वास मे सभी कुछ वता दिया। एड ने शायद अपनी माँ से कहा क्योंकि उसे यह काम एक अन्य दृष्टिकोण मे विचित्र ही लगा और उसकी माँ ने मिसेज सूजा से कह दिया।

फिलिप अगली प्रात काल वहुत देर तक अपने विस्तर मे लेटा हुआ यह स्वप्न देख रहा था कि वह एक विशाल तम्बू के नीचे सर्कस के वैण्ड का सचालन कर रहा है कि उसके पिता ने आवाज देकर उसे जगाया।

"वेटा। गुड मोर्निंग।"

"पिताजी। गुड मोर्निंग।"

उसके पिता ने कहा कि आज तुम कपडे पहिनते समय अपने रविवार के कपडे पहिनना।

फिलिप को यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि ऐसी क्या वात है ? वह रविवार का दिन नही था फिर भी उसने रविवार की पोशाक मे जलपान किया और फिर उसके पिता ने कहा, "चलो, कुछ सैर कर आये।"

वे मेरीन वैरको की ओर चल दिये। ९ जून था और उस दिन उसके पिता ने उसको मेरीन कोर मे एपरनटिस व्याय की तरह भर्ती करा दिया ताकि वह तव तक सगीत का अध्ययन करे जव तक कि उसका सर्कस मे जाने का दीवानापन दूर न हो जाय। उन्हे यह मालूम था कि उसका तेरह वर्षीय वालक मेरीन कोर छोडकर सर्कस के लिये भाग नही सकता।

उस समय फिलिप ने ऐसा सगीत सुना और अनुभव किया कि वह कभी

भूल नहीं सकता था। उसने सर्वोत्तम संगीतज्ञ थियोडोर टॉमस को वायलिन पर **ट्रामेरी** बजाते सुना। उसके लिये वह सर्वोत्तम संगीत था और उसने इनसे पहिले इससे अधिक सुन्दर वॉयलिन नहीं सुना था। पहिली बार उसको एक विचार सूझा कि सबसे अधिक आश्चर्यचकित बात यह होगी कि संगीत को लेख-बद्ध किया जाय। संगीत से सुनने वाले को शांति और सुख मिलता है।

वर्ष बीतते गये और सूजा अधिकाधिक संगीत-संगठनों में काम करता रहा और उसकी आयु बढ़ती गई। उसने सबसे प्रथम बार ओरकेस्ट्रल यूनियन में वायलिन बजाया और साथ-ही-साथ संचालक के साथ वायलिन, पियानो और 'हार्मोनी' का अध्ययन किया। उसका संगीतज्ञों और संगीत-प्रेमियों में परिचय कराया गया। एक संगीत-प्रेमी चेम्बर म्यूजिक का भी संरक्षक था और प्रति मंगलवार की सन्ध्या समय अपने घर पर स्ट्रिंग क्वार्टेट ग्रुप का गाना-बजाना कराता था। उसने युवक सूजा को उस ग्रुप में सम्मिलित होने के लिये आमन्त्रित किया। सन्ध्या समय के इन्हीं कार्यक्रमों के अवसरों पर सूजा को हेडन की चेम्बर-कृतियाँ और अन्य पुराने कलाकारों की दुर्लभ कृतियाँ देखने को मिलीं। इनका संगीत विशेषकर योरुप की संगीतशालाओं से मँगाया गया था।

संगीत-संरक्षक महोदय ने सूजा के निवेदन पर नौ-सेना के सेक्रेटरी द्वारा उसे मेरीन बैण्ड से मुक्त करा दिया। फिर उन्होंने उस युवक से आग्रह किया कि वह योरुप जाकर अपनी संगीत-शिक्षा पूरी कर ले। उस समय यह महसूस किया जाता था कि यदि किसी अमरीकी को संगीत में पारंगत होना है तो वह जर्मनी में जाकर संगीत-शिक्षा ले।

सूजा ने अपने नये मित्र को यह सूचित किया कि उसके लिये योरुप जा सकना संभव नहीं है क्योंकि उसका पिता उसे भिजवाने का व्यय वहन नहीं कर सकेंगे। उसके पिता को कई छोटे बच्चे पालने थे। उसके मित्र ने उसकी आपत्ति का निराकरण करते हुये यह सुझाव दिया कि वह उन दानवीर के पास चला जाय जिन्हें वे जानते थे और उन्हें यह विश्वास था कि वे उस प्रतिभामान युवक को संगीत-शिक्षा दिलाने में आर्थिक सहायता दे देंगे किन्तु

सूज़ा इस विचार से सहमत न हो सका। उसकी यह इच्छा न थी कि वह किसी का अहसानमन्द हो। यह वात उसके स्वाभिमान और स्वतत्र स्वभाव के विपरीत थी कि वह किसी भी दशा मे किसी का कोई अहसान ले। उसने अपनी शिक्षा अमरीका मे ही पूरी की और बडे होने पर उसे कोई पश्चात्ताप भी न हुआ क्योकि अमरीका मे शिक्षा ले लेने से वह 'सच्चा अमरीकी सगीतज्ञ" कहला सका।

उसके पास छात्र आने लगे और वह अपनी रचनाएँ करने लगा। उसने एक अन्य व्यक्ति को वॉल्ट्ज (जर्मनी का एक प्रकार का नृत्य) का एक सेट अपने नाम से छपने के लिये दिया। वह व्यक्ति सगीतज्ञ न था लेकिन उसका विचार था कि वह सगीत से अपनी प्रेमिका को जीत सकेगा। सूज़ा की अगली दो रचनाएँ प्रयाण-गीत थे जिन्हे उसने धन के लिये नही बेचा वल्कि प्रत्येक गीत की सौ-सौ प्रतियाँ लेकर के ही उन गीतो को प्रकाशित करा दिया।

कभी-कभी ऐसा भी समय आता जब उसे अपने अध्ययन से निराशा हो जाती थी क्योकि वह यह महसूस किया करता था कि उसके घर मे सगीत का वातावरण न होने से उसके अध्ययन मे वाधा पडती है। उसकी माँ को सगीत से प्रेम नही था और उसके पिता ने यद्यपि ट्रामबोन बजाया था लेकिन वे अच्छे टेकनिकल सगीतज्ञ न थे। और उसके अध्यापक एस्पूटा भी बहुत कठोर थे परन्तु वे केवल छात्राओ के प्रति ही दयालु रहते थे। वह लडको के साथ सजीदगी वरतते थे और उनपर कठोर अनुशासन रखते थे। शायद यही कारण था कि सूज़ा सगीत सीखने के सम्भव अवसर का उपयोग करने के लिये तैयार था और उसे यथाशीघ्र कार्यरूप मे परिणत भी करने लगता था क्योकि उसे उत्साह की अधिक आवश्यकता थी।

उसे यकायक थियेटर के कण्डक्ट (सचालन) करने का अवसर मिला जिसे उसने स्वीकार कर लिया। थियेटर का सचालक कही चला गया था। वह देखकर सगीत पढ सकता और केवल एक वार रिहर्सल (पूर्वाभ्यास) करते समय सीख भी लेता था और वह वाद मे उसे प्रस्तुत कर सकता था।

वह मगीत-ज्ञान के पूरा करने के लिये इतना अविक इच्छुक रहता था कि वह थियेटर मे प्रोग्राम शुरु करने से तीन घण्टे पहिले ही पहुँच जाता था। एक दिन ओपरा हाऊस मे कण्डक्टर बीमार हो गया। सूजा को उसका काम करने के लिये बुलाया गया। उस पर भरोसा था कि वह सगीत-सचालन-कार्य निभा लेगा। इसके वाद उसे सचमुच प्रथम अवसर मिला, वह एक शो (खेल) के लिये ओरकेस्ट्रा का लीडर बन गया। उसे अब खेल दिखाने के लिये जगह-जगह की यात्रा करनी थी।

सूजा पच्चीस वर्ष का हुआ भी न था कि उससे पूर्व अमरीका मे इस बात का क्षोभ फैलने लगा कि गिल्बर्ट और सुलीवेन लाइट ओपरा एच० एम० एस० **पिनेफोर** की खूब धूमधाम थी। उस समय लेखको की रक्षा के लिये अन्तर्राष्ट्रीय कापीराइट का कानून नही था अतएव दर्जनो कम्पनियाँ गिल्बर्ट और सुलीवेन ओपरो (ओपरेटा) का प्रदर्शन कर रही थी तथा वे लेखको को रायल्टी के एवज मे एक सेण्ट भी न देती थी। एक दिन सूजा से कहा गया कि सोसाइटी ऑफ अमेच्योर का एक ग्रुप **पिनेफोर** ओपरा प्रस्तुत करना चाहता है और उसे इस बात का अवसर मिल सकेगा कि वह उनका सचालन करे। उन्होंने वहुत अच्छा भुगतान किया और उस ओपरा के अधिक दिनो तक चलते रहने की आशा थी इसलिये सूजा को उसके सचालन-कार्य निभाने मे प्रसन्नता थी। जब वह अगली शाम को अपना काम करने गया तो उसे वहाँ अच्छे गायक और सुन्दर अभिनेत्रियाँ मिली। इससे पूर्व उसे कभी इतने अच्छे गायक और सुन्दर अभिनेत्रियाँ नही मिली थी। उसने कहा

"युवको जैसी अनुभवहीनता के कारण मैं रिहर्मल के समय बहुत कठोर रहा करता था। यह आश्चर्य की बात है कि दक्ष अभिनेता प्रसन्नता से अधिक-से-अधिक अभ्यास कर लेते हे जबकि बेवकूफ और अभिमानी कलाकार प्राय मन ही मन कुढ जाते हे यदि उनकी भूल का सुधार किया जाय या उनसे कहा जाय कि एक बार फिर रिहर्सल कर ले। आखिरकार जब हमने अपना खेल दिखाया तो सभी दर्शको मे रोमाच की लहर दौड गई।" अगले वर्ष जब गिल्बर्ट और सुलीविन अमरीका आये, वह ओपरा उस समय भी

चल रहा था। उन्होने उस ओपरा को सुना और सुलीविन ने सगीतकार की प्रशसा की जिसे सुनकर सूजा बहुत प्रसन्न हुआ।

२२ फरवरी को उन "सुन्दर अभिनेत्रियो" मे से एक अभिनेत्री ने सूजा का फिलेडेलफिया की जेनी बेलिस मे परिचय कराया। वह अभिनेत्री की शिष्या थी। सूजा के विचार से वह छोटी लडकी इतनी सुन्दर थी कि उस जैसी सुन्दरी उसने कभी भी अपने जीवन मे नही देखी थी। वह उसे बहुत अच्छी लगी। उसे उसका व्यवहार भाने लगा, उसकी बातचीत पसन्द आई, वह उसका रूप देखकर मुग्ध हो गया और उसकी सुरीली आवाज अच्छी लगने लगी। उसने सूजा से कहा कि वह एक ही दिन दो जन्म-दिन मना रही है, एक वाशिगटन का और दूसरा अपना। वह कुल सोलह वर्ष की थी। सूजा ने उसके सत्रह वर्ष की होने से पहिले ही उससे विवाह कर लिया।

उसने सगीतपूर्ण एक सुखान्त नाटक (म्युजिकल कामेडी) लिखा और जिसका जगह-जगह प्रदर्शन हुआ और उसने उस नाटक का सचालन किया। आखिरकार सूजा को इस कार्य मे इतनी अधिक ख्याति मिली जिसके कारण वह आज भी याद किया जाता है। वह मेरीन बैण्ड का लीडर बन गया; वह ऐसे बैण्ड का लीडर बन गया जिसमे उसने अपने बचपन मे काम किया था और वाद्य-यत्र बजाना सीखा था। वह अपने पिता के प्रति सचमुच आभारी था कि उन्होने उसे सर्कस मे जाने से रोक लिया था।

उसे सबसे पहिली चिन्ता यह थी कि बैण्ड के लिये एक सगीत-पुस्तकालय बना लिया जाय। उसके इस सगीत-पुस्तकालय मे नये सगीत का सग्रह नही था। प्रत्येक चीज बहुत पुरानी थी और वे वाद्ययत्रो के लिये उचित रूप मे व्यवस्थित न थी और उसे उन चीजो मे कुछ भी उपयोगिता न दिखी। उसने सबसे पहिले उस पुस्तकालय मे अच्छे सगीत की चीजो का सग्रह किया, उसके बाद उसने उस सगीत का अभ्यास किया तथा अपने साथियो से भी बराबर रिहर्सल कराया।

सयुक्त राज्य अमरीका के प्रेसीडेट के लिये एक सरकारी बैण्ड है, वही मेरीन बैण्ड है। व्हाइट हाउस मे जब कभी किसी स्वागत समारोह या उत्सव

के समय ओर्केस्ट्रा की जरूरत होती है तो मेरीन बैण्ड ही ओरकेस्ट्रा प्रस्तुत करता हे। जब कभी परेड होती है अथवा राजधानी मे सगीत समारोह का आयोजन किया जाता है तो ऐसे अवसरो पर मेरीन वैण्ड ही वजाया जाता है। उन कार्यक्रमो मे जहाँ विदेशी राजदूत उपस्थित हो और सौजन्य के कारण यह आवश्यक हो कि उनके प्रेमपूर्ण सम्बन्धो को ध्यान मे रखा जाय तो उस समय मेरीन बैण्ड को उन देशो की राष्ट्रीय धुने वजानी होती है जिनके राजदूत उस उत्सव मे उपस्थित हे। सूजा अपने विशेष सगीत के साथ सदैव तैयार रहता था। उसने अपने सगीत-पुस्तकालय मे सभी देशो की राष्ट्रीय धुने इकट्ठी कर ली थी। उसने एक सग्रह प्रकाशित कराया जिसमे राष्ट्रीय तथा विशेष प्रकार के गीत सम्मिलित थे। उस पुस्तक मे केवल महान देशो के ही गीत सम्मिलित न थे अपितु सेमोआ, लेपलैण्ड, एवीसीनिया और अमरीकी इण्डियन के कई कबीलो के गीत भी थे। उस राष्ट्रीय गीतो की पुस्तक मे एपाशे, चेसेकी, चिपेवा, डेकोटा, एस्कीमो, आओवा, इरीकिस, वेन्क्ववर जैसे कबीलो के गीत शामिल किये गये। उन सभी गीतो को लयबद्ध कर लिया गया था जिससे कि उनकी धुनो को वैण्ड पर वजाया जा सकता था। हमने उन गीतो को अपने लयवद्ध करने के नियमो के अनुसार ऐसा ढाल लिया था कि वे इण्डियन स्वय अपनी धुनो को नही पहिचान सकते थे। फिर भी सूजा किसी-न-किसी प्रकार उन नृवशवेत्ताओ (इथोनालोजिस्ट्स) और अन्य लोगो से धुने इकट्ठी करता रहा जो इण्डियनो के साथ रहे और उनके साथ घूमे थे।

व्हाइट हाउस के ईस्ट रूम मे स्वागत समाराहो मे प्रेसीडेन्ट के स्वागत के लिये मत्रिमण्डल के मत्री, राजदूत, जनरल और एडमिरल एकत्र होते थे उस समय यह रिवाज था कि वैण्ड **हेल टू दी चीफ*** की धुन वजाता था जिसमे यह घोषित होता कि प्रेसीडेन्ट स्वय आ रहे है। यह परम्परा कई वर्षों तक चलती रही। एक वार आर्थर अपने अतिथियो को छोडकर वरामदे

*हेल टू द चीफ स्कॉटलैण्ड का पुराना वोटिंग सॉग है।

मे चले गये और सूजा से बात की। प्रेसीडेंट ने पूछा, "जब हम डिनर के लिये अन्दर कमरे मे गये तो आपने क्या बजाया ?"

सूजा ने उत्तर दिया, 'श्रीमन् प्रसीडेंट, **हेल टू दी चीफ**।"

"क्या आप इसे उपयुक्त गीत समझते है ?"

"जी, नही।"—सूजा ने उत्तर दिया। "यह गीत बहुत पहिले अपने नाम के कारण चुना गया था किन्तु इस बात पर ध्यान नही दिया गया कि इसका क्या रूप है ? यह नौका मे बैठकर गाया जाने वाला गीत है (**हेल टू दी चीफ** स्काटलैण्ड का पुराना गीत है जो नौका-विहार के समय गाया जाता था) और इसमे आधुनिक सैनिक भावना का अभाव है अतएव न तो यह गीत स्वागत के लिये ठीक है और न परेड के लिये।"

"फिर इसको बदल दो।"—प्रेसीडेंट ने आज्ञा दी।

उसके बाद सूजा ने व्हाइट हाऊस के अन्दर आयोजित होने वाले उत्सवो के लिये प्रेसीडेन्शियल पोलोनैज और बाहर के अवसरो के लिये सेम्पर फाइ-डलिस मार्च गीतो की रचना की।

वाशिंगटन पोस्ट समाचार पत्र के तत्वावधान मे ग्रीष्म काल मे पब्लिक स्कूलो के विभिन्न ग्रेडो के छात्रो की निबन्ध प्रतियोगिता होगी जिसमे निबन्धो के लिये पुरस्कार और पदक दिये जायेगे। इस महान कार्यक्रम के लिये जून मे एक दिन निश्चित किया गया और उस दिन के कार्यक्रम मे मेरीन बैण्ड का वादन भी सम्मिलित था। अखबार के एक मालिक ने सूजा से कहा कि प्रति-योगिता के सचालन के लिये वह एक प्रयाण-गीत की रचना करे और वह उस दिन उसे सर्वप्रथम बजाये जिस दिन पुरस्कार वितरित किये जाये। इस अवसर के लिये सूजा ने **वाशिंगटन पोस्ट मार्च** नामक गीत की रचना की और उसे प्रस्तुत किया। यह गीत इतना अधिक लोकप्रिय हुआ कि सारे संसार मे बजाया गया। जिस दिन वह गीत वाशिंगटन मे बजाया गया, उस दिन कदाचित वाशिंगटन के सभी बच्चे उपस्थित रहे होगे। बैण्ड के चारो ओर पेडो पर बच्चे चढ गये जिससे वे बैण्ड के सगीत को अच्छी तरह सुन सके।

वाशिंगटन पोस्ट मार्च की पहली धुन के साथ-साथ हाई स्कूल के केडिट मार्च करने लगे जिसे देखकर सभी बच्चों ने हर्ष से करतल ध्वनि की। वाशिंगटन के बच्चों के लिये वह दिन महान था। उसके बाद सूज़ा ने **हाई स्कूल केडिट्स मार्च** नामक गीत लिखा। जब वह दौरे पर बाहर जाता था तब उससे प्रिय गीत बजाने के लिये आग्रह किये जाते थे। ऐसे ही दौरे मे एक बार उनसे एक यह निवेदन किया गया कि वह **आइस कोल्ड केडिट्स** नामक गीत की धुन बजा दे। इस आग्रह से सूजा को बहुत प्रसन्नता हुई।

वाशिंगटन पोस्ट मार्च नामक गीत किस प्रकार सारे ससार मे फैल गया, इसकी झलक हमें एक कहानी से मिलती है। इस गीत के लिखे जाने के वर्षो बाद सेना का एक मेजर बोनियों के जगल मे घूम रहा था। उसे यकायक जगल मे वायलिन के स्वर सुनाई पडे। उस पर **वाशिंगटन पोस्ट मार्च** की धुन बजाई जा रही थी। वह उस आवाज की ओर चलने लगा और एक आदि-वासी के बालक के पास पहुँच गया। उस बालक ने इस गीत की स्वर-लिपि को अपने सामने पेड पर लगा रखा था और वह उसे देखकर अपनी फिडिल (नफीरी) पर इस गीत को निकालने का अभ्यास कर रहा था।

डासिंग-मास्टरो (नृत्य कलाविद्) ने एक नये प्रकार का नृत्य दिखाने के लिये इस ट्यून को अपनाया। इस नृत्य को "टू-स्टेप" नृत्य कहते थे। परन्तु बाद मे जब सूज़ा योरुप गया तो उसने यह पाया कि इग्लैण्ड और जर्मनी मे इस नृत्य को "वाशिंगटन पोस्ट" का ही नाम दे दिया गया है।

जान फिलिप सूज़ा को एक सस्था पर बहुत गर्व था, उसने इस सस्था मे बैण्ड का अभ्यास प्रारभ कराया और जब उसे यह सतोष हो गया कि बैण्ड पर सगीत की पर्याप्त अच्छी धुने बजाई जा सकती है तो उसकी यह इच्छा हुई कि बैण्ड को यात्रा के लिये ले जाया जाय जिससे वाशिंगटन के बाहर भी लोग बैण्ड को सुने। नार्थ केरोलीना मे फेटेविले नगर मे एक राष्ट्रीय समारोह का आयोजन किया गया था। यह उत्सव मेक्लिनवर्ग स्वतत्रता घोषण की स्मृति-स्वरूप मनाया गया। मेरीन बैण्ड को इस उत्सव मे सम्मिलित होने के लिये आमन्त्रित किया गया। क्योकि प्रेसीडेट स्वय भाषण देने के लिये वहाँ

पहुँचने मे असमर्थ थे। प्रमुख नागरिको की समिति ने एक चेयरमैन चुना जिसने सूजा से सगीत-कार्यक्रम के बारे मे बातचीत की। सूजा ने कहा

"अच्छा, हम **स्टॉर स्पेंग्लिड बेनर** गीत से इस समारोह का प्रारभ करेंगे।" चेयरमैन ने सहमत होकर कहा, "बिलकुल ठीक है।"

सूजा ने आगे का कार्यक्रम बताया · "फिर हम मियर-बियर द्वारा लिखित दी प्रोफेट नामक ओपेरा से कारोनेगन मार्च गीत की धुन बजायेगे। उसके बाद **विलियम टेल** का **ओवरच्युर**, **आन दी ब्लू डेन्यूब**, ऐडा से कुछ अश और फिर **माई कण्ट्री इट्ज आफ दी** नामक गीतो की धुने बजायेगे।

दक्षिण निवासी चेयरमेन ने कहा, "यह सभी कार्यक्रम बहुत अच्छा है लेकिन मै आपका ध्यान यहाँ की एक ट्यून की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ जो हमे माँ के दूध के समान प्रिय है। पता नही आपके बैण्ड पर यह गीत बजाया जाता है या नही परन्तु हम अवश्य उस गीत को सुनना चाहेगे।"

सूजा ने तटस्थता तथा निरुत्साह से पूछा, "वह कौन सा गीत है ?"

"उस गीत को **डिक्सी** कहते है।"

बैण्ड मास्टर ने कहा कि मुझे उसकी ट्यून मालूम है। उसके बाद उसने कहा, "मै यह विचार करूँगा कि क्या हम उसका उपयोग कर सकेगे अथवा नही। आपको ज्ञात ही है कि हमारा सगठन कला के निमित्त है और हम सदैव अपने कार्यक्रमो को बहुत ही गभीरता से विचार करते है।"

बेचारे चेयरमेन ने धीरे-धीरे कहा, "ठीक है। परन्तु यदि आप उस गीत को भी अपने कार्यक्रम मे सम्मिलित कर सके तो मेरा ख्याल है कि जनता उसे सुनना पसन्द करेगी। आत्म-समर्पण के बाद बहुतो ने उस गीत को सुना नही है।"

सूजा सदैव ऐसे अवसरो की तलाश मे रहता था जिनमे नाटकीय महत्त्व होता था ओर इस समय उसे ऐसा लगा कि यह अवसर भी इतना ही महत्व का है। उसने कहा कि कोई भी अच्छा सगीतज्ञ दक्षिण देशो मे जाना न चाहेगा जब तक कि उसके गीत-सग्रह मे **डिक्सी** नामक गीत भी सम्मिलित न हो।

उत्सव के दिन पर्वतीय क्षेत्रो और ग्रामो से लोग आकर नगर मे इकट्ठे होने लगे और वहाँ बहुत भीड हो गई । भीड इस कदर थी कि बहुत से लोग वैगनो मे सोये और सूज़ा ने तो कुछ बच्चो को सामान के बक्सो और बेंचो पर घुटने समेट कर सोते हुये देखा। फेटेविले मे रौनक ही रौनक थी।

सर्वप्रथम गवर्नर ने भाषण दिया और फिर सूज़ा के बैण्ड ने राष्ट्रीय धुन बजाई। जनता ने बहुत ही शान्त और सहज भाव से इसे सुना। उसके बाद चेयरमैन ने एक सिनेटर (सीनेट का सदस्य) का परिचय कराते हुये भाषण दिया। सेनेटर 'राज्य का सभ्रान्त व्यक्ति' माना जाता था। जैसे ही चेयरमैन ने अपना स्थान ग्रहण किया और सेनेटर महोदय अपना भाषण प्रारभ भी न कर पाये थे कि सूजा ने बडी फुर्ती के साथ अपने साथियो को इशारा किया और वे एकदम **डिक्सी** गीत की धुन बजाने लगे। सूज़ा का कहना था कि इस धुन का प्रभाव ऐसा हुआ जैसे कि बिजली का झटका लगे। उस जन-समूह मे उन्माद की लहर दौड गई और जनता का यह आल्हाद भरा शोर भीड को चीरता हुआ सडको तक पहुँचा। हैट उछाले जाने लगे। वृद्ध व्यक्ति भाव-विभोर हो विह्वल हो उठे। महिलाये एक दूसरे के आलिंगन मे बध गई और पन्द्रह मिनट तक समारोह का कार्यक्रम रुका रहा।

यह कितने विस्मय की बात है कि कोई मधुर गीत हमारे हृदयो मे इतना गहरा उतर जाता है।

सप्ताह भर बैण्ड फेटल विले मे रहा। उसके कार्यक्रम इस प्रकार थे —

ओवरच्युर	**विलियम टेल**
गीत	**डिक्सी**
वाल्ज	**ब्लू डेन्यूब**
गीत	**डिक्सी**
देशभक्ति के गीत	**फॉस्ट**
गीत	**डिक्सी**
मेडले (मिला-जुला सगीत)	**फेवरिट ट्यून्स**
गीत	**डिक्सी**

वायलिन पर टॉमस के **ट्रामेरी** वजाकर स्वर्गिक आनन्द लेना चाहता था। यह सुनकर सचालक महोदय की आँखे उत्साह से भर गई और उन्होने कुछ याद करते हुये कहा कि वे बहुत कोमल ध्वनियाँ थी।"

सूज़ा ने कहा कि **ग्लेडियेटर मार्च** उसका पहिला जोरदार गीत था जिसे उसने प्रकाशन को पचास डालरो मे वेचना चाहा किन्तु वह गीत उसे लौटा दिया गया। फिर उसने इसे एक प्रकाशक को पैंतीस डालर मे वेच दिया और उस प्रकाशक ने **सेम्पर फाइडलिस हाई स्कूल केडिट्स** और अन्य प्रयाण गीतो के लिये भी इतनी ही राशि दी। प्रकाशक ने सूज़ा के सैन्य सचालन के गीतो से बहुत धन कमाया और सगीतकार को कुछ भी न मिला। वह प्रकाशक दो कारखाने खरीद सका, एक कारखाने मे 'रीड' तैयार किये जाते थे और दूसरे कारखाने मे पीतल के औजार तैयार किये जाते थे। यह कार्य सूज़ा के गीतो को वेचकर ही किया गया था। इस घटना से स्टीफेन फॉस्टर की याद आ जाती है जिन्होने **ओल्ड अंकिल नेड और ओह! सुज़ेना** गीतो को जिस आदमी के हाथ वेचा था उसने इन दो गीतो से दस हजार डालर कमाये और म्यूजिक पब्लिशिग हाऊस की स्थापना कर ली थी। फोस्टर को अपने गीतो की कुछ ही प्रतियाँ मुफ्त मिल सकी। सूजा ने इस बात से कुछ सीखा और उसने फिर प्रयाण-गीतो को एक ही वार इकमुश्त दाम लेकर नही वेचा। उसे **लिबर्टी बेल मार्च** से रायल्टी के रूप मे पैंतीस हजार डालर की प्राप्ति हुई।

सूज़ा ने अपने दीर्घ और व्यस्त जीवन मे सौ से अधिक प्रयाण-गीत लिखे, इसके अतिरिक्त उसने वाल्ज (जर्मनी का एक प्रकार का नृत्य) फेन्टेसियाज (कल्पना प्रधान गीत), ओपेरा, सूटस (वाद्य सगीत-सम्बन्धी कृति), गीत और पुस्तको की रचना की जिनमे उसने अपने जीवन की रोचक कहानी और वच्चो के लिये **पाइपटाउन सेण्डी** नामक कहानी भी लिखी। परन्तु उसके प्रयाण गीत ही अधिक प्रसिद्ध है और इन्ही गीतो के कारण उसको याद किया जाता है। वह किसी भी अवसर के लिये प्रयाण-गीत लिखने मे कुशल हो गया था। उसने अपने प्रसिद्ध वैण्ड को लेकर सयुक्त राज्य अमरीका मे कई

वार यात्रा की। इन यात्राओं के कारण वह अमरीका के संगीतज्ञों में सबसे अधिक लोक-प्रिय और प्यारा व्यक्ति बन गया। किसी नगर में सूज़ा का पहुँचना ही एक घटना समझी जाती थी। कभी-कभी मेयर उसके आने के सम्मान में छुट्टी कर देते थे और झण्डे फहराये जाते थे। उसने अपना बैण्ड लेकर योरुप में कई यात्रायें की और एक बार सारे संसार का भ्रमण किया।

जब वह इंगलैण्ड में पहिली बार गया तो सूज़ा से सम्राट जार्ज छठे के बाबा सम्राट एडवर्ड अष्टम के सम्मुख बैण्ड बजाने का निवेदन किया गया। सम्राट ने सम्राज्ञी के जन्म-दिन पर उसके बैण्ड-वादन की इच्छा प्रकट की। यह बात बैण्ड वालों से भी छिपाकर रखी गई। उन्हें इस बात का कोई अनुमान भी न था कि उन्हें अपना बैण्ड राजपरिवार के लिये बजाना होगा जब तक कि वे ट्रेन में सवार होकर सेंड्रिंगहेम में पहुँचे जहाँ सम्राट का ग्रामीण क्षेत्र में एक महल था। उस दिन सन्ध्या समय के कार्यक्रम में सूज़ा ने प्रयाण-गीतों के अतिरिक्त अमरीकी गिरजाघरों के गीतों की धुनें बजाईं तथा प्लांटेशन सांग्स (अमरीका में हब्शियों द्वारा गाये जाने वाले गीत) और नृत्य-गीत की धुनें बजाईं। सम्राट ने बार-बार उन गीतों की धुनों को दुबारा बजाने के लिये कहा। फिर उन्होंने सूज़ा को विक्टोरियन आर्डर के मेडल से विभूषित किया।

इंग्लैण्ड में प्रकाशित एक छोटी ब्रासबैण्ड जर्नल (पत्रिका) में एक लेख छपा कि सूज़ा को "प्रयाण-गीतों का सम्राट" उसी प्रकार कहा जा सकता है जैसा कि जान स्ट्रास को 'वाल्ज सम्राट" माना जाता था।

सूज़ा ने विदेश की यात्रा पूरी की और फिर अपने देश को लौट आया। उसने न्यूयार्क में जहाज से उतरते ही उन सभी बातों के बारे में विचार किया कि उसे कहाँ-कहाँ उपस्थित होना पड़ेगा। यकायक उसे अपने मस्तिष्क में बैण्ड की एक सुरीली आवाज सुनाई देने लगी। वह एक ऐसी मेलोडी (मधुर गीत) थी जिसकी प्रतिध्वनि उसके हृदय में घर लौटते समय बराबर होती रही। वह उस मेलोडी को तनिक भी न भूल सका क्योंकि वह गीत उसे अत्यधिक आत्म-विभोर कर चुका था। उसने घर पहुँचकर कल्पना पर आधारित उस

मेलोडी को सगीत-वद्ध किया। वह दिन प्रतिदिन अपनी समुद्री यात्रा मे उस मेलोडी की अन्तर्ध्वनि सुनता था जिसे उसने ज्यो का त्यो लेखबद्ध करने का प्रयत्न किया। वह सबसे अधिक लोकप्रिय प्रयाण गीत था, गीत का नाम था **दी स्टार्स एण्ड स्ट्राइप्स फौरएवर**। उस गीत को राष्ट्रीय प्रयाण गीत जैसी प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। एक फ्रासीसी महिला ने एक वार सूजा से कहा कि उस प्रयाण-गीत की धुन ऐसी लगती है कि कोई अमरीकी उकाव ऑरोरा वोरियेलिस की ओर तेजी से उड रहा हो।

सूजा ने इग्लैण्ड के श्रोताओ को ससार के सवसे अच्छे श्रोताओ जैसा माना। उसने लिखा कि हमारे वडे नगरो के कुछ सगीत प्रेमी इग्लैण्ड के सगीत प्रेमियो की समता कर सके लेकिन मेरा यह विश्वास है कि इग्लैण्ड वासियो के समान अच्छे श्रोता नही वन सकते। सगीत के क्षेत्र मे ख्याति वढाना शिक्षित अग्रेजो के लिये महत्वपूर्ण कार्य है। इग्लैण्ड मे श्रोता निष्पक्ष और वडे उत्साही होते है।" उसने यह भी विचार व्यक्त किया कि "एक अग्रेज किसी रचना को उसके सगीत के मूल्य के अनुसार आकते है।"

लेडीज होम जर्नल के तत्कालीन सम्पादक एडवर्ड वॉक ने सूजा को इस वात के लिये पॉच सौ डालर और कापीराइट के अधिकार देने की इच्छा प्रकट की कि सूजा एस० एप० स्मिथ का गीत **माई कण्ट्री इस्ट्स आफ दी** को नया स्वर देदे जो अव तक **गॉड सेव दी किंग** की तर्ज पर गाया जाता था। लेकिन सूजा ऐसा करने पर राजी नही हुआ। सूजा यह महसूस किया करता था कि सगीत चाहे अच्छा हो या वुरा या अरुचिकर ही क्यो न हो फिर भी वह सगीत उस ट्यून को नही वदल सकेगा जिसे जनता ने कई वर्षो से अपनाया है।

दूसरी वार सूज़ा अपना वैण्ड लेकर इग्लैण्ड गया। वैण्ड के लीडर ने सम्राट के लिये अभिनन्दनीय प्रयाण-गीत लिखा जिसका शीर्षक था—**इम्पीरियल एडवर्ड**। इस वार वैण्ड का कार्यक्रम सम्राट के विडसर महल मे आयोजित किया गया। सूज़ा को यह वताया गया कि वच्चो को जव यह मालूम हुआ कि वह आ रहा है तो उन्होने अपने शिशु-विहार (नर्सरी) मे ग्रामोफोन

पर सूजा के वैण्ड के रिकार्ड वजाकर अपना सामूहिक सगीत कार्यक्रम आयोजित किया है। उन्हे उस शाम को वास्तविक सगीत-कार्यक्रम मे उपस्थित होने की अनुमति न थी। इन्ही वच्चो मे से एक वच्चा वडा होकर इग्लैण्ड का किग जार्ज अष्टम हुआ।

इस सध्या को सूजा को यह सूचना मिली कि सम्राट कार्यक्रम के अन्त मे अमरीकी राष्ट्रीय गीत सुनना चाहते है। इसलिये सूजा ने अपने साथियो को यह हिदायत कर दी कि हमे अपना राष्ट्रीय गीत सुनाना है और इस गीत के समाप्त होते ही बिना किसी अवरोध के मध्यम तथा लम्वे स्वर मे **गॉड सेव दी किग** गीत की धुन वजानी है। कार्यक्रम समाप्त हो गया और प्रशसा के वाद खामोशी छा गई। फिर सूजा ने अपने व्यक्तियो को सामने खडा किया। सिगनल दिखाया गया। ज्यो ही **स्टार स्पॅगल्ड वेनर** का गगन-भेदी पद विडसर महल के विशाल कक्ष मे गूजने लगा त्योही सम्राट उठे और ध्यान-मग्न हो गये। उनके साथ ही श्रोतागण उठकर खडे हो गये। और उस पद के अन्त मे "एण्ड दी होम आव दी ब्रेव" के वाद वैण्ड ने दीर्घ स्वर मे **डिमीन्यूनडो** प्रस्तुत किया। उसके वाद वहुत धीमे स्वर मे वही धुन ब्रिटिश राष्ट्रीय गीत मे परिणित हो गई। प्रारभ मे वह धुन ऐसी थी कि अधिक ध्यान देकर सुननी पडी और फिर **गॉड सेव दी किग** की धुन वजाई गई। यह गीत अमरीका वासियो के लिये **माई कण्ट्री इट्स ऑफ दी** के समान ही है। सूजा सम्राट को देख रहा था और वह सम्राट के मुख पर परिवर्तित भावनाओ को समझ रहा था। सगीत के स्वर प्रभावकारी ढग से वढते ही गये, सूजा को यह लगा कि सम्राट कुछ विचार कर रहे ह "ये परदेशी

इग्लैण्ड मे एक दूसरा कर्स्ट (सगीत-समारोह) आयोजित किया गया जिसकी कहानी उसके वैण्ड के व्यक्तियो की योग्यता को प्रकट करती है। वे इग्लैण्ड पहुँचे और यात्रा करने लगे। उन्होने अपनी एक यात्रा मे स्ट्रट-फोर्ड-ऑन-एवन के शेक्सपियर मेमोरियल थियेटर मे कर्स्ट (सामूहिक सगीत कार्यक्रम) प्रस्तुत किया। उसी समय वारविक की काउन्टिस ने उनसे समीप ही वारविक महल मे अतिथियो के सम्मुख अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करने का आग्रह किया। लेकिन उसके कार्यक्रम मे कोई गुजाइश न थी अतएव उन महिला ने फिर निवेदन किया कि वे अर्धरात्रि मे अपने सगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत करे। उस रात आँधी आ गई और पानी बरसने लगा। वैण्ड मोटर-गाडियो से वहाँ पहुँचाया गया किन्तु जिस कार मे सगीत की सामग्री थी, वह पहाडी पर फिसल कर नियत्रण के वाहर हो गई। सगीत समारोह का कार्यक्रम समाप्त भी हो गया और वह सगीत-सामग्री वहाँ न पहुँच सकी। वैण्ड की प्रत्येक धुन केवल स्मृति के सहारे बनाई गई।

लगभग प्रत्येक व्यक्ति को ही यह पता लग गया कि सूजा कैसा है लेकिन एक बैक मे प्रसिद्ध वैण्ड-लीडर गया और उसे पहिली बार पहिचाना न जा सका। उस जगह वैण्ड का एक सप्ताह से कार्यक्रम चल रहा था और बैण्ड के मैनेजर कई हजार डालरो का चैक लेकर सूजा के साथ चैक भुनाने बैंक गये थे।

खजाची ने सूजा से कहा "आपकी शनाख्त करानी है।"

उसके बाद वैण्ड मास्टर खजाची की ओर पीठ करके खडा हो गया। उसने अपनी बाँहे उठाई और एक अदृश्य वैण्ड का सचालन करने लगा। उसने मुँह से सीटी बजाई जिससे **द स्टार्स एण्ड स्ट्राइप्स फॉर एवर** की धुन निकल रही थी। क्लर्कों की हसी फूट पडी और उन्होने उसकी भूरि-भूरि प्रशसा की। उनमे से एक ने खजाची के कान मे कुछ कहा और उस चैक का भुगतान कर दिया गया।

सूजा ग्रीष्म ऋतु मे अपनी यात्राओ और वैण्ड के कार्य से अवकाश पाता तो अपनी हॉबी मे लग जाता। जब वह लडका था तब वह अपने पिता के

साथ शिकार खेलने जाया करता था। यद्यपि उसे दक्षिणी केरोलीना के सुरक्षित जगलो मे वत्तख, हिरन और वटेर का शिकार करना पसद था फिर भी वह उसे जाल विछाकर शिकार करना अधिक अच्छा लगता था। वह जिन्दा कबूतरों की अपेक्षा मिट्टी के कबूतरो को मारना अधिक पसन्द करता था और मिट्टी की चिडियो का शिकार करना उसे वहुत अच्छा लगता था। वह पक्का निशाने-वाज था। उसे घोडे की सवारी करने का शौक था। उसने प्रथम महायुद्ध के दौरान ग्रीष्म ऋतु मे घोडे की पीठ पर एक हजार मील की यात्रा के लिये प्रस्थान किया था। वह अपने घर पर भी घोडे रखता था।

जव वह वासठ वर्ष का था, एक अन्य अमरीकी सगीतकार मित्र जॉन एल्डन कारपेन्टर ने उससे निवेदन किया कि नौ सेना (नैवल) स्टेशन के वैण्ड मे उसकी सहायता की आवश्यकता है। उन्होने उससे पूछा कि क्या वह वहॉ पहुँच सकेगा? वह वहॉ गया। फलस्वरूप उसने नौसेना मे लेफ्टीनेट के पद पर सगीत का इचार्ज होकर काम करना प्रारभ कर दिया। उसने ३५० व्यक्तियो का एक वैण्ड तैयार किया जिसमे कमाण्डर सगीत डायरेक्टर और सर्जन थे और फिर उसने नैवल स्टेशन के प्रत्येक रेजीमेन्ट के लिये वैण्ड सगठित किये। वह जहाजो अथवा स्टेशनो को वैण्ड भेजा करता था, जव और जहॉ उनके भिजवाने की आवश्यकता होती थी। उसने युद्धकाल मे रेडक्रास और स्वतत्रता-ऋण आन्दोलन जैसे कार्यो के लिये अपने वैण्ड के कार्यक्रम प्रस्तुत किये और लाखो डालर एकत्र कर लिये।

जव वह युवक था और मैरीन वैण्ड का सचालन कर रहा था, उस समय वह लम्वी दाढो रखता था। वह सोचता था कि दाढी से वह विदेशी दिखाई देता है। अमरीकी सगीतज्ञो को उन दिनो मे वहुत कम अवसर मिला करते थे। अमरीका वासियो का यह विचार था कि केवल विदेशी ही सगीत की क्षमता रखते है और कई अमरीकी सगीतज्ञो ने इस वात का प्रयत्न किया कि वे विदेशी जैसे दिखे। सूज़ा ने वास्तव मे यह सोचा कि उसकी दाढी ने उसके केरियर के वनाने मे विशेष सहायता दी है। जैसे-जैसे वह वडा होता गया, वह अपनी दाढी वरावर काटता गया जैसा कि उसके चित्रो से लगता

है। आखिरकार युद्धकाल मे उसने अपनी दाढी विल्कुल ही साफ कर दी। सूजा कहा करता था कि उसकी दाढी ने ही युद्ध जीता है। वह अपनी इस वात को इस प्रकार समझाता था कि जब कैसर ने यह सुना कि लोगो ने अपनी दाढी काट दी है तो कैसर ने कहा कि ऐसे लोगो से लडना वेकार ही है जो इस प्रकार का त्याग कर सकते है। लेकिन इसका कारण यह था कि वह आयु मे कम लगे। उसने वासठ वर्ष की आयु मे नौ सेना मे काम प्रारभ किया जबकि उस समय यह नियम था कि सैतीलीस वर्ष से अधिक आयु के व्यक्ति को भरती न किया जाय। लेकिन सूजा इस नियम के अपवाद रहे। नौ सेना को उनकी आवश्यकता थी। शायद उन्होने यह सोचा कि यदि वह दाढी साफ कर दे तो वह सैतालीस वर्ष से कम आयु के ही लगेगे।

सूजा को अपने वैण्ड रखने का काफी अनुभव हो चुका था और सूजा ने यह देखा कि अमरीकी सगीतज्ञो की सख्या वरावर वढ रही है। जव उसे युवावस्था मे मैरीन वैण्ड के सचालन का कार्यभार मिला, उस समय वैण्ड मे छ व्यक्तियो से अधिक अमरीका के मूल निवासी नही थे। वारह वर्ष वाद जव उसने अपना वैण्ड सगठित किया तो उसने सभी अमरीकावासियो को ही उसमे भरती करने का प्रयत्न किया। शुरू मे उसने अपने वैण्ड मे विभिन्न वाद्य-यत्रो के सर्वोत्तम वादको को रखा, भले ही उनका जन्म विदेश मे क्यो न हुआ हो परन्तु समय के साथ-साथ अधिकाश अमरीकावासियो को ही उस वैण्ड मे स्थान मिल गया। वह उस समय वडा प्रसन्न होता था। जव उसके वैण्ड का पूर्व सदस्य अपने पुत्रो को उसकी देखरेख मे वैण्ड मे भरती होने के लिये भेजता था।

सूजा प्रसन्न चित्त और विनोदी स्वभाव का था। वह उदार मेजवान था। उसे अकेला भोजन करना विलकुल अच्छा न लगता था। उसके व्यक्तित्व मे आकर्षण था, लोग उसकी ओर खिच जाते थे। वह सचालन कार्य मे कठोर ौर अनुशासन का हामी था। फिर भी उसके लोग उसे वहुत पसन्द करते थे। वैण्ड के लोगो मे भाई-चारे की भावना थी। जव वैण्ड मे अस्सी या सौ

व्यक्ति हो जाते तो वे आपस मे ही मनोविनोद के लिये टीम बनाकर गेंद खेला करते थे।

यदि सूजा अपने बचपन मे ही अध्ययन करने के लिये विदेश चला गया होता जब उसे ऐसा अवसर मिला था कि वह "प्रयाण-गीतो का सम्राट" कैसे बन पाता। वह कदाचित किसी अन्य प्रकार का ही सगीतकार होता। वह जिन हार्मोनी का प्रयोग करता था, वे प्राय बहुत सरल प्रकार की होती थी। वे टोनिक, डोमीनेण्ट और सब डोमीनेण्ट होती थी, ये हार्मोनी इस प्रकार की होती थी जिनके बारे मे सगीतविद् यह महसूस करते हे कि जब गीतकारो को अधिक सगीत नही आता तो वे इसी प्रकार की हार्मोनी का प्रयोग करते है। फॉस्टर की हार्मोनी (स्वर-लहरियाँ) कुछ इसी प्रकार की थी। परन्तु प्रत्येक सगीतज्ञ के लिये पूर्ण कुशल होने की आवश्यकता नही है। कभी-कभी सगीत के विद्वान अध्यापक यह भूल जाते ह कि सगीत का वास्तविक आकर्षण उसकी अपनी आत्मा (स्प्रिट) हे, उतार-चढाव नही। सूजा के प्रयाण-गीतो मे एक ऐसी शृ खला और आवेग है कि श्रोताओ के हृदय प्रयाण-गीतो मे रम जाते हैं। कई बार सूजा के प्रयाण-गीतो ने थके हुये लोगो की थकान दूर की है। उन गीतो मे कठिन समय मे यात्रा करने वाले लोगो के थके पैरो को आराम मिला है। उन गीतो की रिद्म और लय आनन्ददायक होती है। सूजा यह विचार किया करता था कि सगीत मे 'विनोदकारी" भावना ससार के लिये विशेप उपयोगी हो सकती है बजाय इसके कि सगीत की केवल तकनीकी ढग से ही प्रशसा की जाय। वास्तव मे सगीत का मूल्य प्रमुख होता हैं। बच्चे को सर्वप्रथम सगीत से अधिक आनन्द मिलता है और उसके बाद वह सगीत की प्रशसा करता हैं। सूजा ने सदैव ही अपने कार्यक्रमो को विनोद की दृष्टि से व्यवस्थित किया। यही कारण था कि वह अधिक लोकप्रिय रहा। सगीत मे विनोद की भावना उसके सीखने से अधिक श्रेयस्कर समझी जाती है।

एक बार जर्मनी मे यह कहा गया कि उसके बैण्ड ने बहुत अच्छा कार्यक्रम प्रस्तुत किया और उसके सगीत मे विशेप **माधुर्य** था। यह कहना मूर्खता ही

था क्योकि इस विचार से केवल तुलना की भावना प्रकट होती है। कुछ लोगो को मिठाई अच्छी लगती है और कुछ लोग अचार पसन्द करते है। इन दोनो मे तुलना का कोई धरातल ही नही। अलवत्ता कोई दोनो को ही अलग-अलग समय पर पसन्द कर लेते है।

सूज़ा को हेलीन्कोन स्यूवा की आवाज अच्छी नही लगी जो मेरीन वैण्ड मे पहिले प्रयोग की जाती थी। यह एक वडा वाद्य-यत्र होता था जिसे वैण्ड वजाने वाले के वदन पर वॉध दिया जाता था। वजाने वाला उसे सिर तक उठाया करता था। उसने वाद्य-यत्र तैयार करने वाले मिस्त्री को समझाया कि ट्यूव एक लम्वे आकार की सीधी घण्टी के साथ इस प्रकार वनाया जाय कि उसकी आवाज कुल वैण्ड मे छा जाये जैसे कि किसी परत पर वर्फ जमा होती है। ऐसा वाद्य-यत्र वनाया गया और उसका आज भी प्रयोग होता है। इस वाद्य यत्र को सूज़ाफोन कहते है।

लेफ्टिनेट कमाण्डर सूजा ने 'केण्ड म्यूजिक' शव्द की रचना की। उसने यह कभी महसूस नही किया कि सगीतज्ञो से व्यक्तिगत ढग से सगीत सुनने की अपेक्षा 'केण्ड म्यूजिक' को स्थान मिलने लगेगा। जव वह लगभग पचहत्तर वर्ष का था, उसे यह सूचना दी गई कि एक मोटर मे यान्त्रिक सगीत की सज्जा व्यवस्थित कर ली जायेगी। उसका विश्व-विख्यात प्रयाण-गीत एक मोटर से सेना की टुकडियो का पथ-प्रशस्त करेगा। उसने पूछा ·

"क्या मोटर भी कदम से कदम मिलाकर चल सकेगी ?"

सूज़ा को यह विश्वास नही हुआ कि सगीत मे राष्ट्रीयता है। उसने महसूस किया कि सगीतकार राष्ट्रीय सगीत के ऐसे लेखक होते है जो केवल अपनी भावनाओ को व्यक्त करते है और जीवन के प्रति अपनी प्रतिक्रियाओ को व्यक्त करते है। शायद उसका यह कहना ठीक ही था। नार्वे मे रहने वाला व्यक्ति वर्फ से आच्छादित स्थल के दृश्य को देखकर जैसा महसूस करेगा उससे कही अलग विचार उस व्यक्ति का होगा जो भू-मध्य रेखा के समीप किसी जगल मे रह रहा हो। इन दोनो व्यक्तियो के वायुयानो के वारे में भी अलग-अलग विचार होगे। सूज़ा ने कहा, "आप मेलोडी को ऐसे नही

बाँध सकते जैसा कि आप किसी देश को सीमाबद्ध कर लेते है। सगीत की रचना कई बोलियो मे हो सकती है किन्तु उसकी भाषा व्यापक होती है।" उसने अपनी कई यात्राओ मे यह अनुभव किया कि लोगो की सगीत के प्रति भावनाएँ एक-सी ही होती है, चाहे भौगोलिक स्थिति के कारण लोग अलग-अलग ही क्यो न हो। उसने कहा कि जब कभी उसने हँसाने वाले सगीत को सुनाया तो लोगो को उसी जगह हँसी आई जहाँ उसके सगीत में हँसी थी, चाहे दर्शक स्पेन के रहे हो अथवा उत्तरी डेकोटा के।

उसका आनन्दमय और व्यस्त जीवन था और उसने आनन्ददायक और व्यस्त जीवन के लिये सगीत की रचना की। उसने कभी उदास करने वाले सगीत की रचना नही की परन्तु यदि कभी ऐसा अवसर भी आया तो उसने इस प्रकार का भी सगीत प्रस्तुत किया। उसका विचार था कि उसे और उसके बैण्ड को इसलिये सफलता मिली कि उसने सदैव प्रसन्नतादायक सगीत ही प्रस्तुत किया। सूज़ा कहा करते थे कि ससार को सदैव प्रसन्नतादायक सगीत की आवश्यकता है।

जान फिलिप सूजा वाशिगटन, डी० सी मे ६ नवम्बर, १८५४ को पैदा हुये और रीडिग, पेन्सिलवेनिया मे ६ मार्च, १९३२ को स्वर्गवासी हुये।

था क्योकि इस विचार से केवल तुलना की भावना प्रकट होती है। कुछ लोगो को मिठाई अच्छी लगती है और कुछ लोग अचार पसन्द करते है। इन दोनो मे तुलना का कोई धरातल ही नही। अलवत्ता कोई दोनो को ही अलग-अलग समय पर पसन्द कर लेते हे।

सूज़ा को हेलीन्कोन स्यूवा की आवाज अच्छी नही लगी जो मेरीन वैण्ड मे पहिले प्रयोग की जाती थी। यह एक वडा वाद्य-यत्र होता था जिसे वैण्ड वजाने वाले के वदन पर वाँध दिया जाता था। वजाने वाला उसे सिर तक उठाया करता था। उसने वाद्य-यत्र तैयार करने वाले मिस्त्री को समझाया कि ट्यूब एक लम्वे आकार की सीधी घण्टी के साथ इस प्रकार वनाया जाय कि उसकी आवाज कुल बैण्ड मे छा जाये जैसे कि किसी परत पर वर्फ जमा होती है। ऐसा वाद्य-यत्र वनाया गया और उसका आज भी प्रयोग होता है। इस वाद्य यत्र को सूजाफोन कहते है।

लेफ्टिनेट कमाण्डर सूजा ने 'केण्ड म्यूजिक' शव्द की रचना की। उसने यह कभी महसूस नही किया कि सगीतज्ञो से व्यक्तिगत ढग से सगीत सुनने की अपेक्षा 'केण्ड म्यूजिक' को स्थान मिलने लगेगा। जब वह लगभग पचहत्तर वर्ष का था, उसे यह सूचना दी गई कि एक मोटर मे यान्त्रिक सगीत की सज्जा व्यवस्थित कर ली जायेगी। उसका विश्व-विख्यात प्रयाण-गीत एक मोटर से सेना की टुकडियो का पथ-प्रशस्त करेगा। उसने पूछा

"क्या मोटर भी कदम से कदम मिलाकर चल सकेगी ?"

सूज़ा को यह विश्वास नही हुआ कि सगीत मे राष्ट्रीयता है। उसने महसूस किया कि सगीतकार राष्ट्रीय सगीत के ऐसे लेखक होते है जो केवल अपनी भावनाओ को व्यक्त करते है और जीवन के प्रति अपनी प्रतिक्रियाओ को व्यक्त करते है। शायद उसका यह कहना ठीक ही था। नार्वे मे रहने वाला व्यक्ति वर्फ से आच्छादित स्थल के दृश्य को देखकर जैसा महसूस करेगा उससे कही अलग विचार उस व्यक्ति का होगा जो भू-मध्य रेखा के समीप किसी जगल मे रह रहा हो। इन दोनो व्यक्तियो के वायुयानो के वारे में भी अलग-अलग विचार होगे। सूज़ा ने कहा, "आप मेलोडी को ऐसे नही

विक्टर हरबर्ट्

"आप सदैव ही यथाशक्ति सर्वोत्तम कार्य करें, चाहे वह कार्य कैसा ही क्यों न हो।"

सौ वर्षों से पहिले की बात है। उस समय एक गुणी आयरलैंड वासी सेम्युअल लवर रहा करते थे। उनके नाती-पोते उन्हे कभी नही भूल सकते। लवर चित्रकार, कवि, गीतकार, गायक, नाटककार, विनोदी, सगीतज्ञ, अभिनेता और अकेले ही मनोरजन करने वाले कलाकार थे। उन्होने शानदार ऑपेरा तथा कोमिक ऑपेरा लिब्रेटो लिखे और उन्हे अपनी हेण्डी ऐण्डी नामक पुस्तक के कारण कुशल उपन्यासकार के रूप मे ख्याति मिली। इसमे आश्चर्य की बात नही है कि उनका नाती बडे स्वाभिमान से उनके बारे मे बात किया करता था। उनमे किसी भी गीत को याद रखने की अपूर्व क्षमता थी और उनके पोते विक्टर हरबर्ट मे भी गीत याद रखने की विलक्षण प्रतिभा थी लेकिन वह गीत के स्रोत को सदैव ठीक नही बता पाता था।

सेम्युल लवर अपनी असाधारण स्मृति-शक्ति को किस प्रकार उपयोग मे लाता था—इसके बारे मे एक रोचक कथा है। उसने अपने समकालीन महान वायलन वादक पागानिनी के चित्र को स्मृति से तैयार किया। वायलिन वादक का असाधारण व्यक्तित्व था और उसका चेहरा भी बडा विचित्र था। वायलिन वादक लम्बे, पतले-दुबले शरीर का व्यक्ति था। उसकी नाक लम्बी थी। उसका भोला चेहरा गोरा था और उसके सिर पर घुघराले काले बाल थे। वह वायलिन को इतनी अधिक उदास भावनाओ से बजाया करता था कि कुछ लोगो ने यह महसूस किया कि उसे वास्तव मे दैवी शक्तियाँ प्राप्त है और वास्तव मे कोई दैवी शक्ति ही इतना भावनापूर्ण वायलिन बजा सकती है। पागानिनी ने डबलिन मे अपने वायलिन के कार्यक्रम को प्रस्तुत किया तभी सेम्युल लवर की तीव्र इच्छा हुई कि असाधारण आकृति के सगीतज्ञ का चित्र

क्यो न वजाया जाय। वायलिन वादक ने चित्र वनवाने की सहमति दे दी और वह चित्रकार के पास कई वार वैठा किन्तु चित्रकार को उसका चेहरा गम्भीर उदास दिखा। चित्रकार ने यह प्रयत्न किया कि किसी-न-किसी प्रकार सगीतज्ञ को प्रसन्न चित्त कर सके। उसने वायलिन वादक से कहा कि उसे अपनी सगीत रचना मे उन्मुक्त भाव से **मन की मौज** वहुत अच्छी लगती है और वह अपने गीत को गुनगुनाने लगा। पागानानी को आश्चर्य हुआ और उसने पूछा

"क्या आप कभी स्ट्रासवर्ग गये है ?"

"कभी नही।"

"फिर आपने यह गीत कही सुना है ?"

'मैंने आपको इस गीत की धुन बजाते सुना है।"

"जी नहीं—ऐसा कभी नही सुन सकते जव तक कि आप स्ट्रासवर्ग न हो आये हो।"

"जी हाँ—मैंने इस गीत की धुन लन्दन मे सुनी थी।"—चित्रकार ने जोर देकर कहा।

"मैने स्ट्रासबर्ग मे उस गीत की रचना की थी और मैने उसे लन्दन मे कभी नही सुनाया।"—वायलिन वादक ने भी वार-वार यही कहा।

"क्षमा करे।"—लवर कहता ही गया और उसे इस वात की प्रसन्नता थी कि उसने वायलिन वादक के मन मे एक विचार उत्पन्न कर दिया है। उसने यह कहा कि आपने यह धुन ऑपेरा-हाऊस मे सुनाई थी।

"मुझे याद नही आता।"

"वह रात का समय था। आपने पॉस्टा के साथ **ओब्लिगाटो** की धुन बजाई।"

"पॉस्टा! जी हॉ, उस रात को उन्होने कितने शानदार ढग से गीत सुनाया।"

"और आपने भी कितने अच्छे ढग से वायलिन वजाया।"

पागानिनी ने ववाई स्वीकार कर ली और कहता गया "लेकिन इससे

आपका क्या तात्पर्य है ! "जी हाँ, मैने उस समय वह धुन बजाई थी लेकिन लदन मे केवल एक वार ही वह धुन वजाई गई है। आप भी सगीतज्ञ लगते हे। यह ऐसी धुन नही है कि सरलता से याद की जा सके।"

लवर ने अधिक प्रिय ढग से यह समझाया कि उस गीत को फिर दोहराने के लिये आग्रह किया गया था और इस प्रकार मुझे वह धुन दूसरी वार सुनने का अवसर मिला।

"जी हाँ, लेकिन मै कहता हूँ कि फिर भी उस धुन को याद रखना सरल नही है जब तक कि व्यक्ति सगीतज्ञ न हो।"

कुछ वर्षो बाद सेमुअल लवर ने एक मित्र के प्रति अधिक उदारता दिखाई फलस्वरूप अपना पर्याप्त धन खो बैठा और उसे फिर शीघ्र ही धन कमाना था। अतएव उसने अमरीका आने का निश्चय कर लिया। अमरीका ऐसे लोगो को सदैव आश्रय देता रहा है जो या तो स्वतत्र बनना चाहते हे अथवा प्रचुर धन कमाना चाहते है। लवर अमरीका मे वहुत से व्यक्तियो से परिचित थे। उन परिचित व्यक्तियो मे अमरीकी लेखक हॉथार्न भी थे और इसलिये उनका वहाँ सहृदयतापूर्ण स्वागत किया गया।

उन्होने शीघ्र ही एक मनोरजक कार्यक्रम प्रस्तुत करने की व्यवस्था थी। उस कार्यक्रम के लिये एक-एक डालर के टिकट रखे गये। हाल सुन्दरियो और फैशन वालो से खचाखच भर गया और कई व्यक्ति निराश लौट गये। न्यूयार्क हैरल्ड ने यह रिपोर्ट दी ·

"मिस्टर लवर ने आठ वजे झुककर दर्शको को अभिवादन किया और दर्शको ने अधिक सहानुभूति तथा प्रशसा से करतल ध्वनि से उसका स्वागत किया। यह वताना कठिन है कि उन्होने किस प्रकार का सगीत प्रस्तुत किया। उस सगीत के रूप को किसी भी प्रकार स्पष्ट करना उसके प्रति अन्याय ही है क्योकि उस सगीत की बारीकियो को नही समझा जा सकता। इतना कहना पर्याप्त होगा कि उस कार्यक्रम मे हास्य, गीत, मजाक और रचनाओ का पाठ आदि अधिक सुन्दर ढग से प्रस्तुत किया गया था जिसमे कभी-कभी हृदय-विदारक दुख की झलक भी थी। यह कार्यक्रम ऐसी मधुर शैली मे

प्रस्तुत किया गया था कि यदि एक बार श्रोता मनोविनोद से उछल पडते तो दूसरी बार आँखों मे आँसू भरकर दुखी हो जाते। वे सभी गीत उसकी अपनी रचनाएँ थी और इस देश के लिये केवल दो या तीन रचनाओ को छोड कर सभी रचनाए नई थी। . "

मिस्टर लवर अमरीका मे दो वर्ष रहे और उन्हे अपने कार्यक्रमो मे अपूर्व सफलता मिली। उन्होने अमरीका मे कई नगरो का भ्रमण किया। उन्होने वहाँ "आइरिश ईवनिंग्स" के नाम से अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किये और उसके बाद वे इग्लैंड लौट आये। उन्होने लन्दन के पास ही सेवन ओक्स मे अपना घर बना लिया। कुछ समय तक वे मनोरजन कार्यक्रम आयोजित करते रहे और फिर अपने अमरीका मे प्रवास के दौरान के अनुभवो के आधार पर "अमेरिकन आइरिश ईवनिंग्स" नामक कार्यक्रम देते रहे। उसके बाद वे जीवन-पर्यन्त लिखते रहे तथा चित्र बनाते रहे।

उनकी पुत्री फेनी का विवाह एडवर्ड हरबर्ट से हुआ। उसके डबलिन मे पुत्र हुआ जिसका नाम विक्टर रखा गया। विक्टर दो वर्ष का ही हुआ होगा कि उसके पिता मिस्टर हरबर्ट का देहान्त हो गया। फिर फेनी अपने पुत्र को लेकर इग्लैण्ड मे आकर अपने पिता के साथ रहने लगी। विक्टर हरबर्ट जन्म से आयरलैण्ड का निवासी था लेकिन वह बचपन मे ही कुछ समय आयरलैंड मे रह सका। इसी कारण बाद मे उसे अपने पिता की अपेक्षा नाना की बहुत याद आती थी।

उस बालक ने अपने नाना के घर काफी सगीत सुना। उसकी माँ भी बहुत अच्छा पियानो बजा लेती थी और उसके नाना के कई अतिथि भी अच्छे सगीतज्ञ थे। विक्टर को बचपन से ही आयरलैण्ड के लोक गीत सुनने का अवसर मिला था। मिस्टर लवर विक्टर को अपने घुटनो पर झुलाकर अमरीका की कहानियाँ सुनाते थे और न्यूयार्क नगर तथा शानदार नियाग्रा प्रपात के बारे मे बताते थे।

जब विक्टर स्कूल जाने के योग्य हुआ तब उसके नाना ने उसकी माता को यह सुझाव दिया कि वह अपने बेटे को लेकर जर्मनी चली जाय जहाँ

विक्टर को कम खर्च मे बहुत अच्छी शिक्षा दी जा सकती है। शायद वे यह भी सोचते थे कि कही उनका बेवता कोरा अग्रेज ही न हो जाय। वे स्वय इग्लैण्ड मे रहना पसन्द करते थे परन्तु उनके मन मे अपने देश आयरलैण्ड के प्रति अटूट भक्ति थी और वे विक्टर के मन मे भी आयरलैण्ड के प्रति देश-भक्ति जगाना चाहता था।

मिसेज हरबर्ट इस विचार से सहमत हो गई। उन्होने अपना सामान बाँधा और उसमे नहाने के दो पोर्टेबल टब भी रख लिये। और वे अपने पुत्र के साथ जर्मनी के दक्षिण भाग की ओर चल दी। योरुपवासियो को उनके सामान मे नहाने के टब देखकर हँसी आ जाती थी। वे कोन्सटेस नामक सुन्दर झील पर बसे एक नगर मे आकर रहने लगी। वहाँ श्रीमती हरबर्ट की एक जर्मन डाक्टर से मुलाकात हुई और उन्होने उनके साथ विवाह कर लिया। उसके बाद वह परिवार स्टटगार्ट मे आकर रहने लगा। इस प्रकार उस आयरलैण्ड के बालक को जर्मनी मे शिक्षा मिली और वह बाद मे एक दिन अमरीका मे रहने लगा तथा वहाँ वह एक महान सगीतकार बना।

वह स्कूल जाने लगा और अपनी कक्षा मे आगे रहना चाहता था। उसे खेल पसन्द थे। उसकी माँ जब कभी उसे कोई वाद्य-यत्र सीखने के लिये कहती तो वह इस उलझन से अपने आपको बचाना चाहता था। शायद इसका कारण यह हो कि उसके दूसरे पिता डाक्टर थे और यह तै किया गया था कि विक्टर को डाक्टरी का काम ही करना है। वह इस विचार से सहमत था और उसने यह कभी नही सोचा कि वह एक सगीतज्ञ हो सकेगा।

वहाँ एक बहुत ही अच्छा वायलिन वादक था जो उसके घर आया जाया करता था और विक्टर की माँ की इच्छा होती थी कि यदि उसका पुत्र वायलिन बजाना सीख ले तो कितना अच्छा है क्योकि वह इस योग्य हो जायेगा कि वायलिन से शानदार और सुरीले स्वर निकाल सकेगा। उसकी समझ से यह ठीक ही था कि उसका पुत्र कम से कम एक वाद्य-यत्र बजाना सीख ले। लेकिन वह कोई भी वाद्य-यत्र बजाना सीखना न चाहता था। सेलो (एक प्रकार का वायलिन बाजा के सीखने मे काफी समय लगने की सभावना थी और वह अपने अध्ययन के बाद कुछ समय खेल-कूद तथा मनोरजन

में बिताना चाहता था। वह अपने दैनिक कार्यो मे बराबर आगे बढता ही रहता और किसी दिन डाक्टर बन जाता और शायद उसे यह भी पता न होता कि वह सगीतज्ञ बन सकेगा लेकिन एक ऐसी घटना हो गई कि वह अपनी माँ की इच्छा को कार्यरूप मे परिणत करने के लिये तत्पर हो गया।

उसके स्कूल बैण्ड को किसी उत्सघ की तैयारी के लिये एक अन्य बासुरी-वादक की आवश्यकता हुई। विक्टर हरवर्ट को उस जगह काम करने का आदेश मिल गया और उससे यह कहा गया कि वह दो सप्ताह मे डोनीजेट्टी के **द डाटर आव द रेजीमेण्ट** गीत की प्रारभिक पक्ति की धुन बासुरी पर सीख ले। जब उसने उसे सीखने का निश्चय कर लिया तब वह अपने काम में लग गया। और उसने कितना अधिक कार्य किया। उसे दो सप्ताह मे सार्वजनिक प्रदर्शन के लिये वह गीत ही सीखना न था बल्कि उसे वह वाद्य-यत्र वजाना भी सीखना था।

उसने बाँसुरी बजाना सीख लिया। उत्सव समाप्त हो गया बासुरी पर उस गीत की धुन भी वजी लेकिन उन दो सप्ताहो का वह समय उसकी माँ के लिये कितना विचित्र था। उस घर मे बासुरी की लगातार तीखी आवाज होती थी जबकि उसे सेलो के मध्यम और गभीर स्वर अच्छे लगते थे। फिर वह यह भी सोचती थी कि वह कैसा विचित्र वाद्य-यत्र है जिसे वजाने के लिये उसके पुत्र को बाध्य किया गया है। वह कितनी छोटी बासुरी थी। फिर भी उससे विक्टर के सगीत का प्रारभ हुआ।

कुछ समय वाद उसका एक लडके से परिचय हुआ जिसे वायलिन वजाना आता था। उसे अपने नये मित्र का वायलिन वजाना अच्छा लगता था और जब उसके मित्र ने विक्टर को पिकोलो-वादको के प्रति उसकी माँ के विचार बताए तो विक्टर ने अन्तत अपनी माँ से एक सेलो खरीदने के लिये निवेदन किया। विक्टर यह ठीक ही समझता था कि केवल पढाई तक ही सीमित रहा जाय क्योकि उसने बाद मे यह कहा है कि जब से उसने वायलिन-सेलो को सीखना आरभ किया, उसकी पढाई के काम मे हानि हुई। वह अपनी कक्षा के प्रथम पाँच विद्यार्थियो मे से न रह सका।

वह लगभग पन्द्रह या सोलह वर्ष का ही था कि उसने सेलो का अभ्यास करना प्रारम्भ कर दिया। उसे अपने वायलिन बजाने वाले मित्र के पिता के प्रभाव से उस समय के सर्वोत्तम वायलिन वादको मे से एक वायलिन वादक के शिष्य बनने का अवसर मिला। वह अपने गुरू के घर एक वर्ष से अधिक समय तक रहा और इससे उसे अधिक लाभ हुआ। वह अपने गुरू की देखरेख मे रहता था जिससे वह कभी अशुद्ध न बजा सका। उसकी निरतर और शीघ्र प्रगति होती गई। वह शीघ्र ही ओरकेस्ट्रा मे काम करने के योग्य बन गया। इस प्रकार उसकी शिक्षा मे उन्नति होने लगी क्योकि उसे लिज्ञ, ब्रेहम्स, रूबिनस्टीन, मेण्ट-सेन्स, डेलबिस जैसे महान सगीतज्ञो के नेतृत्व मे बजाने का अवसर मिलता रहा।

कुछ वर्षो तक हरबर्ट योरुप मे यात्रा करता रहा और ओरकेस्ट्रा मे भाग लेता रहा। वह कभी-कभी कर्स्ट (सगीत कार्यक्रमो) मे अपना सोलो कार्यक्रम भी प्रस्तुत करता था। एक बार ड्रेसडेन मे वह थियेटर हाल मे समय से पहिले पहुँच गया और उसने पियानो छेडना शुरू कर दिया। उसने कभी पियानो बजाना नही सीखा था लेकिन उसने अपने आप ही थोडा बहुत बजाना सीख लिया था। ओरकेस्ट्रा का एक दूसरा सगीतज्ञ उसके पास आया और उससे कहने लगा

"तुम्हे गीतो की रचना करनी चाहिये।"

शायद यह पहिला अवसर था जब युवक विक्टर हरबर्ट के मन मे गीतो की रचना का विचार आया। उसे सदेह था कि क्या उसमे ऐसी प्रतिभा है। लेकिन उसके मित्र ने कहा कि उसमे ऐसी प्रतिभा है और उसे समय नष्ट न करके सगीत की रचना करना प्रारम्भ करना चाहिये। उसके कुछ समय बाद हरबर्ट को स्टटगार्ट मे कोर्ट आपेरा में प्रथम वायलिन वादक का स्थान मिल गया और फिर उसने अपने सहयोगी सगीतज्ञ की सलाह पर एक प्रोफेसर से सगीत रचना का अध्ययन गभीरता से प्रारम्भ कर दिया। उन प्रोफेसर महोदय ने उसे हार्मोनी (समताल), काउटर प्वाइट (सुरसगति) और ओरकेस्ट्रेशन (स्वर या साज मिलाने की क्रिया) के बारे मे ठोस ज्ञान दिया।

इसके साथ-साथ उसे सैलो और ओरकेस्ट्रा के लिये टुकड़े लिखने के लिये शिक्षा दी गई। उसको इस प्रकार कुछ ट्रेनिंग हो गई और फिर उससे कहा गया कि वह सैलो और ओरकेस्ट्रा के लिये एक कन्सर्टो (मध्यिका) में वाद्य-संगीत सम्बन्धी रचना करे। वह रचना ऐसी बनी कि उसे संगीतज्ञ समाज के समक्ष प्रस्तुत किया जा सकता था और इस रचना के समय तक वह केवल चार महीने ही अध्ययन कर पाया था।

विक्टर हरबर्ट सदैव कठोर परिश्रम कर सकता था। जब उसने रचनाएं प्रारम्भ कर दी तो फिर उसने यह कार्य रोका नहीं। साथ ही साथ वह यह भी जानता था कि वह किस प्रकार मनोविनोद करे। स्टुटगार्ट में जब वह कोर्ट ओपेरा में वायलिन वादक का काम कर रहा था, उस अवधि में नगर का एक अधिक लोकप्रिय नवयुवक समझा जाने लगा। वह लम्बे कद का था। उसका चेहरा आकर्षक था। वह देखने में सुन्दर लगता था। वह आदत से उदार था, स्वभाव से हंसमुख। वह सदैव एक अच्छी कहानी सुनाने के लिये उत्सुक रहता था।

वायलिन-वादक का स्थान दिया जा सके। उसे यह प्रस्ताव बहुत पसन्द आया। उसके साथ वायलिन-वादक का विवाह हो गया और विवाह के कुछ दिन बाद ही वे न्यूयार्क मे आ पहुँचे। उस समय विक्टर हरबर्ट सत्ताईस वर्ष का था।

उसे अमरीका उतना ही अच्छा लगता था जितना कि उसके नाना को। वह वहाँ अपने शेष जीवन-भर रहा। वह चारो ओर उत्साह से घूमता रहा और एक सच्चा अमरीकी सैलानी बन गया। जब कभी किसी वायलिन-वादक की आवश्यकता होती, हरबर्ट को आमन्त्रित किया जाता। उसने थियोडोर टॉमस के नेतृत्व मे फिल-हारमोनिक सोसाइटी के साथ वायलिन बजाया। थियोडोर टॉमस एक सचालक थे, सूजा ने उनकी बहुत प्रशसा की है। हरबर्ट ने स्वय एन्टन सीड्ल की अधिक प्रशसा की। एन्टन सीड्ल मेट्रोपालिटन के जर्मन ओपेरा के सचालक थे। हरबर्ट वायलिन अच्छा बजा लेता था तथा उसे सगीत का विविध प्रकार का अनुभव था जिसके कारण सीडल का ध्यान उसकी ओर आकर्षित हुआ और हरबर्ट ब्राइटन बीच मे ग्रीष्म ऋतु के कर्स्ट (सगीत समारोह) मे उसके सहायक सचालक के रूप मे काम करने लगा। उसने इसके साथ ही नेशनल कन्जरवेटरी मे सेलो सिखाया। उवेरेक भी उसी समय वहाँ थे। (एडवर्ड मेक्डूवेल की माँ कन्जरवेटरी की सेक्रेटरी थी।) हरबर्ट ने चेम्बर सगीत दलो मे भी काम किया और सेलो-वादक के रूप मे अधिक ख्याति प्राप्त की। मेट्रोपालिटन ओरकेस्ट्रा मे उसके साथ ही एक अन्य वायलिन-वादक बैठता था। इसी वायलिन-वादक का पौत्र फर्डीग्रोफे हुआ जो जाज़ म्यूज़िक का व्यवस्थापक बना।

जब अमरीका मे रहते हुए हरबर्ट को सात वर्ष हो चुके थे तब उसे प्रसिद्ध बैण्ड मास्टर गिलमोर के निधन के बाद न्यूयार्क मे गिलमोर बैण्ड का लीडर बनने के लिये आमन्त्रित किया गया। (उसके समय मे गिलमोर का बैण्ड अमरीका मे सबसे अधिक प्रसिद्ध हो चुका था और गिलमोर स्वय प्रसिद्ध बैण्ड मास्टर जान फिलिप सूजा की प्रतिमूर्ति था।) इस प्रकार हरबर्ट को गभीर सगीत से अलग हटने का प्रथम अवसर मिला। उसे सीड्ल के मेट्रोपोलिटन ओरकेस्ट्रा मे काम करने का पर्याप्त अनुभव था अतएव बैण्डमैन हरबर्ट को

प्रशसनीय और पारगत सगीतज्ञ मानते थे। निस्सदेह उसने सीड्ल की छडी (बैण्ड मास्टर की ताल देने की छडी) के इशारे से बैण्ड का सचालन-कार्य बहुत कुछ सीख लिया था। वह रिहर्सल कराने मे बहुत कठोर था और सदैव अच्छे किस्म का सगीत पसन्द करता था। वह अपने साथियो को डाट देता था यदि वे उम्दा किस्म का सगीत प्रस्तुत न कर पाते थे। लेकिन यदि उसे इस बात का आभास हो पाता कि वे अधिक काम करके थक गये हे और उनके लिये रिहर्सल करना कठिन है तो वह सभी कुछ बद कर देता था और मनोरजक कहानी सुनाकर उनका मनोविनोद करता था। उसके साथी उसे सदैव पसन्द करते थे। बाद मे वह पिट्सबर्ग ओरकेस्ट्रा का संचालक बन गया, वहाँ भी लोग उसे उतना ही पसन्द करने लगे। वे उसे हमेशा "अपने लडकों मे से एक लडके" के समान प्रिय मानते थे। जब हरबर्ट का जन्मदिन आता तो उसके बैण्ड अथवा ओरकेस्ट्रा के साथी हरबर्ट के घर के बाहर एकत्र हो जाते और कोई गीत अलापते। सेण्ट पेट्रिक दिवस के अवसर पर वे सभी हरी टाई पहिनते और इस प्रकार उसके आयरलैण्ड के मूल निवासी होने के कारण सम्मान प्रकट करते क्योकि हरबर्ट अपने मन मे आयरलैण्ड का मूल निवासी होने का गर्व महसूस करता था।

विक्टर हरबर्ट शान-शौकत और सुख से रहना पसन्द करता था। उसके जीवन का एक मुख्य लक्ष्य यह भी था कि वह अच्छी तरह रह सके। वह धन खर्च करना चाहता था और उसे धन खर्च कराते हुये अच्छा लगता था। वह मित्र बनाने मे इतना ही पारगत था जितना कि वह सगीत विद्या मे निपुण था। वह हर जगह 'हर दिल अजीज' हो जाया करता था। उसके एक मित्र ने कहा कि हरबर्ट के सगीत और मित्रता मे सभी कुछ था। जब वह अपने बैण्ड या ओरकेस्ट्रा को लेकर यात्राये करता तो वह एक टयूबा बजाने वाला नियुक्त कर लेता जिसका विशेष काम यह था कि वह पतली टहनियो की बनी भोजन की टोकरी को ठसाठस भरा रखे। टयूबा बजाने वाले को इस काम के लिये विशेष भत्ता मिला करता था। हरबर्ट के लिये यह सोचना सम्भव नहीं था कि वह अपना भोजन छोड सके अथवा वह अपने

प्रिय भोजन तथा मदिरा के बिना रह सके। वह इतने मन से अपना भोजन करता था कि भोजन के दौरान व्यवसाय की बात नही करता था। वह स्वादिष्ट भोजन की प्रशसा करता था। उसे महिलाओ के **संगीत समारोह मे** कभी-कभी छोटे-छोटे चुटकुलो से बहुत आनन्द आता था जबकि इन सगीत समारोहो मे धनी एमेच्युर उसे और उसके साथियो को चेम्बर सगीत मे साथ देने के लिये काम मे लगा लेते थे। वह सदा यह चाहता था कि भोजन बहुत स्वादिष्ट हो और अपने मे एक ही बात। और साथ ही-साथ भोजन के समय मन-पसन्द और खुशनुमा बाते होती रहे।

हरबर्ट बैण्ड मास्टर के रूप मे वर्दी पसन्द करता था और परेड मे अपने साथियो का नेता बनकर उसे मार्च करना अच्छा लगता था। वह इस बात से बहुत प्रसन्न था कि उसका बैण्ड प्रेसीडेट मेक्किन्ले के इनआगरल बॉल के अवसर पर बजाने के लिये चुना गया। वह ऐसा समय था जब बडे-बडे नृत्यो के आयोजन का फैशन था। उस समय शानदार और बडे नृत्यो की व्यवस्था करने मे एक-दूसरे से होड करते थे और शाम के मनोरजन पर ही हजारो डालर व्यय कर दिये जाते थे। हरबर्ट ने न्यूयार्क के एक ऐसे ही नृत्य-समारोह मे अपना बैण्ड बजाया जिससे पहिले प्रस्तुत किये गये सभी नृत्य समारोह फीके पड गये। हरबर्ट को शान-शौकत पसन्द थी। एक स्वाभिमानी व्यक्ति को किसी विशेष दल मे सबसे ऊँचा स्थान प्राप्त होने पर सतोष मिल जाता है अतएव हरबर्ट को कभी-कभी ऐसी स्पर्द्धा मे फँस जाना पडता था जिससे उसका स्थान और ऊँचा हो जाय।

हरबर्ट की सबसे बडी इच्छा यह थी कि उसका नाम शानदार ओपेरा के सगीत रचनाकार के रूप मे जाना जाय। उसने अपने दो सफल ओपेरा लिखे और उनका प्रदर्शन भी देखा फिर भी आज उसे उन ओपेरा के कारण याद नही किया जाता है। अमरीका मे आठ वर्ष रहने के बाद ही उसके वास्तविक केरियर का प्रारभ हुआ जिसके द्वारा सयुक्त राज्य अमरीका के सगीत-इतिहास मे उसे ओपरेटा के रचियता के रूप मे भी स्थान मिला।

हरबर्ट स्वभाव से सुगम सगीत पसन्द करता था। उसने गभीर सगीत

की रचना की। ड्वोरेक ने उसके वायलिन-सेलो की बहुत प्रशसा की परन्तु इसकी अपेक्षा वह सुगम सगीत मे ही अधिक सफल रहा। यह देखकर कि अमरीका मे केवल सुगम सगीत के क्षेत्र मे ही किसी सगीत रचियता को सफलता प्राप्त हो सकती है, उसने थियेटर के सगीत मे और अधिक रुचि लेना प्रारभ कर दिया। उसने यह देखा कि ओफेन वैरा और सर आर्थर सुलिवेन के सुगम सगीत के ओपेरो की भूरि-भूरि प्रशसा हो रही है और उनके लेखको को इन ओपेरो से बहुत आय हो रही है, इसलिये हरबर्ट ने यह निश्चय कर लिया कि वह हास्य के ओपेरा तब तक लिखेगा जब तक कि वह इतना धन न कमा ले कि फिर अपनी इच्छा से लिखता रहे। इसका परिणाम यह हुआ कि वह अपने शेष जीवन भर सुगम ओपेरा लिखता रहा।

इस प्रकार के सगीत से उसे अपने जीवन के व्यवसाय का निर्दिष्ट स्थान मिल गया जब वह लगभग पैंतीस वर्ष का ही था। वह सरल भाव से सुहावने गीतो की रचना करने लगा और वह शूबर्ट की रचनाओ से अधिक प्रभावित होकर वैसे ही रोचक गीत लिखने लगा। वह सर्वतोमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति था, उसे बैण्ड के सचालन मे चार अलग-अलग भाषाओ मे अनुदेश देने मे कठिनाई नही होती थी और वह तत्काल ही बदलकर इगलिश से जर्मन, इटे-लियन या फ्रेंच भाषा मे बोलने लगता था। इसी प्रकार वह अपने ओपेरो मे भी एक साथ कई काम कर लेता था।

किसी भी सगीतज्ञ को ओपेरा लिखने से पूर्व ओपेरा सबधी पुस्तिका या शब्द समूह अपने पास रखने चाहिय जब तक कि उसमे स्वय वेनगर जैसी लिखने की क्षमता न आ जाय। हरबर्ट ने चेम्बर सगीत की रचना की, उसने वोरसेस्टर उत्सव के लिये एक छोटा नाटक (समवेत गान) लिखा, उसका शीर्षक था—**सेरेनेड फॉर स्ट्रिंग्स**। उस नाटक को देखने के लिये अधिक दर्शक इकट्ठे हुये जिससे उसकी सर्वतोमुखी प्रतिभा की बहुत प्रशसा हुई, परन्तु वह अब भी उसे सतोष न था और अपने मित्रो से प्राय कहा करता था

"मेरी इच्छा है कि मै एक अच्छा कोमिक-ओपेरा लिबरेटो लिख सकू।"

शिकागो विश्वमेला के एक उत्सव के लिये हरबर्ट को सगीत-रचना का

काम मिला और इस प्रकार हरबर्ट रगमच के अधिक समीप आ गया। मेला के अवसर पर यह कार्यक्रम इतने बडे पैमाने पर करने का विचार किया गया कि उसका प्रदर्शन ही न हो सका परन्तु हरबर्ट को अपने नये परिचितो से शीघ्र ही लिवरेटो की रचना की प्रेरणा मिली जिसका उसे अभाव महसूस हो रहा था। उसने सर्वप्रथम अपना **प्रिंस एनानियास** नामक ओपरेटा न्यूयार्क मे प्रस्तुत किया, उस समय हरबर्ट लगभग पैंतीस वर्ष का था। उसमे उसे असफलता मिली। कुछ भी क्यो न हो, वह अपना काम शुरु कर चुका था और वह अपनी असफलता से हतोत्साह होने वाला नही था। उसने अगले वर्ष **द विजार्ड ऑफ द नाइल** प्रदर्शित किया, यह सफल रहा। यद्यपि आलोचको ने उसकी कटु आलोचना की। उन्होने बताया कि ओपरेटा का सगीत "बहुत हल्का" और "नकली" है लेकिन सर्वसाधारण ने उसे बहुत पसन्द किया। बाद मे वह इग्लैण्ड, जर्मनी और मेक्सिको मे भी प्रस्तुत किया गया।

वह पिट्सबर्ग सिम्फोनी ओरकेस्ट्रा का सचालक हो गया, और उसने छ वर्ष तक बराबर सर्वोत्तम ओरकेस्ट्रा सगीत का प्रतिदिन अभ्यास किया तथा उसे प्रस्तुत किया, फिर भी उसने समय बचाकर अपनी इच्छा के अनुकूल सुगम सगीत की रचना भी की। उसने अपने लोकप्रिय ओपरेटा—**द फॉरचून टेलर**—की रचना उसी वर्ष की थी, जब वह पिट्सबर्ग गया था। वह इस बात से प्रसन्न था कि लोग उसकी सर्वतोमुखी प्रतिभा की प्रशसा करते हैं। लोग उसकी आलोचना भी करते थे और कहा करते थे कि जो सुगम सगीत की रचना करता वह गभीर शास्त्रीय सगीत को भली-भाति नही निभा पाता। उसे यह सुनकर भी प्रसन्नता होती थी कि लोग उसे परिश्रमी मानते है। उसे इस बात का गौरव था कि वह रिचर्ड स्ट्रॉस और क्रीस्लर जैसे महान सगीतज्ञो के सम्पर्क मे उस समय आया जब वे अपना ओरकेस्ट्रा लेकर पिट्सबर्ग आये थे। अमरीका के सगीत के सरक्षको मे से एण्ड्रू कारनेगी का नाम प्रमुख है। वे विक्टर हरबर्ट के उत्साही प्रशसक थे और पिट्सबर्ग ओरकेस्ट्रा के लिये कहा करते थे

"मेरे विचार से विक्टर हरवर्ट और उसके साथियो का दिन मे दो वार सगीत सुनना ही स्वर्ग है।"

लेकिन वह न्यूयार्क की ओर फिर चल दिया और वही उसने थियेटर के लिये सगीत की अधिकाधिक रचना करना प्रारभ की। न्यूयार्क के एक प्रकाशक ने रोवर्ट हरवर्ट की प्रारभिक रचनाओ को यह कहकर रद कर दिया कि हरवर्ट को ओरकेस्ट्रा के काम मे ही लगा रहना चाहिये तथा गीतो की रचना का कार्य केवल गीतकारो को ही करना चाहिये। वाद मे वही प्रकाशक हरवर्ट की रचनाओ को प्रकाशित कर उठा और जिस व्यक्ति को यह सलाह दी गई थी कि वह गीतो की रचना न करे, वह अव अमरीका के प्रिय गीतकारो मे से एक गीतकार बन गया।

हरवर्ट के अधिकाश गीत आर्डर मिलने पर लिखे गये है और कदाचित उसने किसी आर्डर को अस्वीकार नही किया। उसके जीवन मे एक समय ऐसा भी आया जव कि उसने चार ओपरेटा लिखे **द सिगिग गर्ल, दी अमीर, सिरेनो डी बरजेरेक** और **द वाइसराय**। उसने इन चारो ओपरेटा को एक साथ लिखा था। उसके थियेटर मे तीन नीची डेस्के और बुक कीपर की एक ऊँची डेस्क थी। जव वह लिखते-लिखते थक जाता था, तब वह खड़े होकर लिखने लगता था। सगीत-रचना की स्वरलिपि (स्कोर्स) उसके सामने खुली रहती थी। सगीत की देवी की प्रेरणा से वह अभिभूत हो जाता और फिर एक के बाद दूसरी रचना कर उठता। इन चारो ओपरेटा मे अलग-अलग समय, स्थान और चरित्रो का चित्राकन किया गया है। **द सिगिग गर्ल** का दृश्य स्थल जर्मनी मे था और इसी प्रकार **द अमीर** के लिये अफगानिस्तान, **सिरेनो दी बरजेरेक** के लिये पुराना फ्रान्स और **'द वाइसराय'** के लिये वेनिस दृश्य स्थल रहे। हरवर्ट ने अपने मन की स्थिति को बराबर वदलने के लिये अपने कमरे मे बर्फ भरकर एक टब रख लिया था और वर्फ पर अलग-अलग किस्म की वेब्रेजे (स्फूर्तिदायक पेय) की वोतले रख ली थी और वह इन किस्म-किस्म की बोतलो को अलग-अलग ओपरेटा के लिखने के समय इस्तेमाल करता था।

इन चार ओपरेटा के अतिरिक्त उसने उस वर्ष चेम्बर सगीत और वाद्य-

वृन्द सम्बन्धी एक बडी प्रभावपूर्ण कृति की रचना की। उसे काम करने में मजा आता था। वह ड्रेस्डेन के उस सगीतज्ञ को कभी नहीं भूल सका जिसने पहिली बार उससे कहा था कि वह गीतो की रचना करे। उसके लिये रचना-कार्य इतना ही सरल था जितना कि उसे मित्र बनाना और उसने अपने जीवन मे बहुत कुछ लिखा। उसे अपने जीवन की सफलताओ मे यदाकदा असफलताओ को भी स्वीकार करना पडा परन्तु हरबर्ट दिल का पक्का था, इसलिये उन असफलताओ के आघातो को झेल गया।

यदि कोई कलाकार दो विभिन्न क्षेत्रो मे काम करे तो उसकी अधिक आलोचना की जाती है। लोग अथवा आलोचक स्पर्धा से कटु आलोचना करते है और वे कलाकार की कृतियो को अच्छी तरह समझने मे असफल रह जाते हैं। हरबर्ट के गभीर सगीत के साथियो को उसकी लोकप्रियता अधिक अच्छी न लगी। लेकिन उसे लोकप्रिय क्षेत्र मे ऐसे साथी मिल गये थे जो हरबर्ट जैसे व्यक्ति को पाकर गौरवान्वित थे। हरबर्ट टिन पैन एली मे अच्छा काम करता रहा और वे लोग कहा करते थे कि हरबर्ट अपने काम मे उस्ताद है। हरबर्ट की तैयार की गई ट्यून मे परिवर्तन की आवश्यकता न होती थी। वह अपनी ट्यून तैयार किया करता था। वह ओरकेस्ट्रा को ध्यान मे रखकर ट्यून के बारे मे विचार किया करता था। वास्तव मे उसने पियानो पर सगीत की रचना नही की क्योकि वह पियानो अच्छी तरह बजा नही सकता था। जब वह सगीत की रचना करता था तो वह अपने ओरकेस्ट्रा के सभी वाद्य-यत्रों से ऐसी धुन निकलवाता था जैसी कि उसने वह धुन कभी सुनी हो और पियानो इस कार्य के लिये पर्याप्त नही था। लेकिन ओरकेस्ट्रा के लिये वाद्य-सगीत तैयार करने मे वह इतना अधिक कुशल था कि वह सगीत को अलग-अलग भागो मे स्वर-बद्ध कर लेता था यदि कभी जल्दी होती और फिर बाद मे सभी को मिलाकर समेकित रचना तैयार करता था।

कभी-कभी हरबर्ट पर यह दोष लगाया जाता था कि वह ऐसी मेलोडीज प्रयोग मे लाता है जो उसकी अपनी नही थी। उसकी स्मृति-शक्ति इतनी विलक्षण थी कि उसे कभी-कभी अपनी ट्यूनो से उन ट्यूनो को अलग करना

कठिन हो जाता था क्योकि वे ट्यून उसकी स्मृति का अग बन जाती थी। जब कभी वह अपने मित्र के लिये कुछ भी बजाता तो वह प्राय यह पूछ लेता था कि यह धुन कहाँ से ली गई है। बाद मे उसने यह स्वीकार कर लिया कि उसने महा सगीतज्ञो से सगीत की सामग्री सकलित की है।

हरबर्ट के **बेब्ज इन टॉयलैण्ड** से **द मार्च ग्राफ द टायज** को रेडियो के ग्रोरकेस्ट्रा सगीत मे प्राय बजाया जाता है।

वह सदैव ग्रार्डर लेकर लिखा करता था, ग्रतएव हरबर्ट रचना करते समय सदैव जानता था कि उसके गीतो को चलाने के लिये कौन गायक रहेगा। उसके **बेबेटे** ग्रोपेरा को साधारण ख्याति मिली लेकिन उसकी गायिका फ्रिजी शेफ को व्यक्तिगत रूप से ग्रधिक सफलता मिली। उस गायिका ने रगमच पर पहिले पहल गाया था। उसकी भूरि-भूरि प्रशसा की गई। वह इतनी प्रसन्न थी कि उसने गीतकार-सचालक को पकडकर रगमच पर ला खडा किया और मुग्ध दर्शको के सामने उसका चुम्बन किया तथा गले से चिपटा लिया। ग्रगले दिन ग्रखबारो मे उस चुम्बन और ग्रालिगन की काफी चर्चा रही और उससे यह भी लगा कि विक्टर हरबर्ट ने ही ऐसा किया था।

दो वर्ष बाद वही ग्रभिनेत्री हरबर्ट के सबसे ग्रधिक लोकप्रिय ग्रोपरा-**मेडम म्वॉजेल-मोडिस्टी** मे काम करने ग्राई। वह ग्रोपेरा हरबर्ट के जीवन की सबसे बडी सफलता थी। उस ग्रोपेरा मे **किस मी ग्रगेन** गीत बहुत लोक-प्रिय हो गया। यह रोचक कहानी है कि इस गीत की रचना किस प्रकार हुई और यह गीत इतना लोकप्रिय क्यों हो गया। हरबर्ट ने स्वय इस कहानी को बताया है और हम उसे यहाँ फिर दोहराते है।

विक्टर हरबर्ट नगर से बाहर कई कन्सर्टो का सचालन कर रहा था। उस समय **मेडम म्वॉजेल मोडिस्टी** के ओपेरा प्रणेता उससे मिलने के लिये आया और उसने हरबर्ट से कहा कि उसने एक ग्रोपेरा लिखा है और उसका विचार है कि एक ऐसी विशेष मेलोडी की रचना की जाय जो अन्य सभी गीतो से कही अधिक अच्छी हो। इसके अतिरिक्त वह मेलोडी ऐसी होनी चाहिये जिसे मिस शेफ सरलता से मधुर स्वर मे गा सके। हरबर्ट ने कोशिश तो

की लेकिन उसका यह कहना था—"हमे इस कार्य मे सफलता नही मिल सकी। मेरे मस्तिष्क मे छोटी-छोटी मेलोडी उभरी किन्तु उनमे से कोई भी ऐसी मेलोडी नही थी जिसकी उस समय आवश्यकता थी—मेरे मस्तिष्क मे ओरकेस्ट्रा और कसर्ट ही प्रमुख रूप से उभरते रहे।" कई दिन बीतते गये और सगीतकार को चिन्ता होने लगी। अन्त मे उसने यह निश्चय किया कि अधिक प्रत्यन करने की आवश्यकता है और उसने अपने मे ही कहा कि यह मूर्खता है कि किसी काम मे मन न लगाया जाय और यदि उसने ध्यान नही लगाया तो वह मेलोडी कभी भी न रच सकेगा।

उसने बताया, "उस रात जब वह सोने जा रहा था कि मेरे मस्तिष्क मे उस मेलोडी की भावना जग उठी। मुझे यकायक उस मेलोडी की ट्यून समझ मे आ गई। मैं उठा और गैस जला दी। फिर मैंने बत्तीस पक्तियां लिख ली जिनके लिखने की मुझको प्रेरणा मिली थी। मैंने महसूस किया कि मेरी जीत हुई। फिर मैं सो गया।" लेकिन कई वर्षो बाद हरबर्ट के प्रकाशक ने इस कहानी मे कुछ अश और जोड दिया। वह गीत उस ओपरेटा मे **किस मी अगेन** के रूप मे प्रस्तुत नही किया गया। वह गीत था—**इफ आई वर ऑन द स्टेज**। उस दृश्य मे प्रमुख महिला के भावोद्गार (फ्रिजी शेफ के गीत से) व्यक्त किये गये। प्रकाशक ने कहा कि उसमे एक मेलोडी की एक पक्ति ऐसी थी जो **किस मी अगेन** की अन्तिम पक्ति थी। प्रकाशक ने हरबर्ट से यह आग्रह किया कि वह उस उद्धरण से पूरा गीत बना दे और प्रथम भाग के लिये पूरा गीत लिख दे। ओपेरा प्रणेता ने सशोधित गीत प्रकाशक को को सौंपा और वह गीत 'सफल प्रयत्न' सिद्ध हुआ। इससे सात हजार प्रतियो की अपेक्षा एक लाख प्रतियाँ बिकी।

कई वर्ष बाद हरबर्ट ने गुनगुनाकर गाने वाले से **किस मी अगेन** गीत सुना। उसे 'उस आदमी के बिगडकर' गाने पर क्रोध आ गया। इससे उसे लेखको, सगीतकारो और प्रकाशको को मिलाकर एक एसोसियेशन बनाने की भारी प्रेरणा मिली जिसने कि वे अपने को सुरक्षित कर सके।

जब हरबर्ट का **'द रेड मिल'** नामक ओपरेटा का उद्घाटन हुआ तब

का ज्यादा से ज्यादा उपयोग किया जाता था। इन दिनो अतीत के प्रति विशेष सम्मोहन था। यह फैशन था कि लोकप्रिय सगीत के शो रेव्यू अथवा रेव्यू-स्टाइल पर आधारित सगीत की कामेडी के रूप मे प्रस्तुत किये जाते थे। वहाँ सगीत को जाज़ शैली पर रचा जा रहा था। हरवर्ट का सगीत और ऑपरेटा ऐसे लगने लगे थे कि वे पुराने हो। कुछ ही समय पूर्व की रचनाये अप्रचलित हो चली थी। जब लोग हरवर्ट से पूछते कि वह **किस मी अगेन** जैसे गीत फिर क्यो नही लिखते तो वह यह उत्तर दे देते कि उन्होने अच्छे गीत लिखे है किन्तु अब जनता मे परिवर्तन आ गया है और वह उन्हे अब स्वीकार नही कर पाती।

विक्टर हरवर्ट का **सूट आफ सेरेनेड्स** प्रसिद्ध गोरो के कन्सर्ट मे प्रस्तुत किया गया। उसी समारोह के लिये जर्शविन ने **रेपसोडी इन ब्लू** लिखा। उसने जाज़ गीत नही लिखे लेकिन उसका यह पहला अनुभव था कि उसने जाज़ सगीत के आर्केस्ट्रा की ट्यून की रचना की। इस कार्य से उसे यह शिकायत बनी रही कि उसने इस प्रकार दोहरा काम करके अपनी मूल रचना की प्रगति मे बाधा डाली है। उदाहरण के लिये जब कभी उसे शहनाई-वादक की अत्यावश्यकता होती तो उसे पता लगता कि शहनाई-वादक बेस-क्लेरिनेट के बजाने मे लगा हुआ है।

हरवर्ट ने अधिक उदारता से जार्ज जर्शविन को आरकेस्ट्रा-वादन सिखाया। परन्तु कुछ समय बाद हरवर्ट का निधन हो गया। उसने इस बात का भी प्रयत्न किया कि इरविग बर्लिन की सगीत-सिद्धान्त मे रुचि हो जाय। उसने बर्लिन से कहा

"यह सोचना भ्रामक है कि सगीत-सिद्धान्त की जानकारी से मेलोडी के स्वाभाविक प्रवाह मे गति-रोध हो जाता है। इसके विपरीत सगीत की शिक्षा ऐसी पृष्ठभूमि प्रस्तुत करेगा कि उससे आपके काम मे सुधार होगा।"

हरवर्ट अमरीका का वह महत्वपूर्ण सगीतकार था जिसने सिनेमा के लिये मौलिक गीतो की रचना की। वह जीवन के अन्त समय तक रचनाये करता रहा। जब वह सगीत की रचना न करता तो अधिक रात तक बैठकर अपने

पुराने गीता का रियाज किया करता। मई का दिन था। उसने बहुत देर तक रिहर्सल किया और फिर अपने प्रिय रेस्ट्रा मे भोजन करने आ गया। उसने अपना दिन का समय मित्रो मे काट दिया क्योकि उसे सर्वत्र मित्र मिल जाते थे। वह एक मित्र के पास पहुँचा जो ह्वीट-केक्स (गेहूँ की रोटियाँ) खा रहा था, वह उसके पास रुका और हँसकर उसे झिडकने लगा तथा कहने लगा कि वे दोनो ही इतने वृद्ध हो गये है कि अब ह्वीट-केक्स चबा सके। कुछ समय वाद उसका मित्र उसकी मेज के पास से निकला और उसने हरबर्ट को सेण्ड-विच खाते देखा तो उसके मित्र ने उससे यह कहा कि इसे छोड क्यो नही देते। लेकिन हरबर्ट ने कहा "चार्ली ! मैं जानवर के सुदृढ अगो का गोश्त भी खा सकता हूँ।"

उसने सदैव अपने को नवयुवक ही समझा। एक व्यक्ति जो हरबर्ट को जानता था, उसने यह कहा है कि हरबर्ट ने मरते समय तक भोजन में कमी नही की। वह सैण्डविच उसका अन्तिम भोजन था और उस दोपहर के वाद उसकी तबियत ठीक न रही तथा वह डाक्टर के पास गया। डाक्टर घर से वाहर था। जब तक डाक्टर घर लौटे कि वह सगीतज्ञ स्वर्गवासी हो गया।

डीमस टेलर ने हरबर्ट के वारे मे लिखा है "गीतकारो मे से वह एक प्रमुख, अन्तिम गीतकार था उसमे गीत-रचना की प्रतिभा थी। उसके सगीत मे उत्साह, आकर्षण और सम्मोहन था। वह सगीत कला मे चार-चाँद लगा देता था और यह वात अन्य सगीतज्ञो मे नही है तथा वे प्रदर्शन और ग्रह से आक्रान्त रहते हैं।"

[विक्टर हरवर्ट डबलिन, आयरलैण्ड मे १ फरवरी, १८५९ को पैदा हुये और वे न्यूयार्क नगर मे २७ मई, १९२४ को स्वर्गवासी हो गये।]

एडवर्ड मेक्डोवेल

**"जीवन का केवल यही सार है कि
हम यथाशक्ति उपयोगी बनें।"**

इस देश मे सबसे पहिले गोरे लोग इसलिये आये कि वे अपने धर्मपालन की कठिनाइयो से बच सके। वह धर्म उनके जीवन का अभिन्न अग बन चुका था। उन लोगो और उनके बच्चो को यह भी समझना आवश्यक था कि वे अन्य व्यक्तियो की स्वतत्रता के बारे मे भी विचार करे ताकि वे अपनी समस्याओ का निराकरण कर सके। लेकिन ससार मे बहुत दिनो के बाद ही कुछ सीख मिलता है। ससार के बहुत से भागो मे अब भी ऐसे व्यक्ति हैं जो यह सोचते हैं कि जो कुछ वे करते हैं, वही ठीक है और वे चाहते है कि प्रत्येक व्यक्ति भी वैसा ही करे। कभी कभी ऐसे भी लोग मिलते हैं जो अपने बचपन की इच्छाओ की पूर्ति नही कर पाते परन्तु वे यह चाहते हैं कि उनके पुत्र को अपनी महत्वाकाक्षाओ की पूर्ति के लिये अवसर मिले; एक उदार व्यक्ति की यह सदैव इच्छा होती है कि उसके पुत्र को वही अवसर मिलें, जिन्हे वह अपने जीवन मे प्राप्त न कर सका।

सयुक्त राज्य अमरीका का प्रेसीडेट अब्राहमलिकन था उस समय न्यूयार्क नगर के २२० क्लिनटन स्ट्रीट, क्वैकर क्वार्टर मे एक व्यापारी रहता था जिसका नाम टॉमस मेक्डोवल था। वह आइरिश और स्काच का पुत्र था तथा स्वय कट्टर धार्मिक विचारो का था। यदि टॉमस को वही सब कुछ करने को मिल जाता और वह अपने कठोर पिता के इशारे पर काम न करता तो वह कदाचित एक कलाकार बनता। जब वह छोटा था, तभी वह चित्र बना सकता था क्योकि उसकी चित्रकला मे विशेष रुचि थी। वह बाहर रहना पसन्द करता था और तमाम दिन लैंडस्केप चित्रित करते रहना उसे अधिक प्रिय था। लेकिन उसके पिता उन लोगो मे मे एक थे जो चित्रकला को यह

समझते हैं कि यह काम किसी पुरुष का नहीं है। उनका विचार था कि उनके पुत्र को व्यापार करना चाहिये। इसलिये टॉमस को दिन-प्रतिदिन नगर के एक कार्यालय में काम करने के लिये जाना पड़ता था।

उसने इंग्लैण्ड की एक युवा और सुन्दर लड़की से विवाह कर लिया। वह लड़की क्वैकर न थी। उनके दो पुत्र हुये। वाल्टर बड़ा था और उसके तीन वर्ष बाद एडवर्ड ऐलेक्जेण्डर का जन्म हुआ।

टामस के छोटे बच्चे रविवार को क्वैकर की बैठकों में भाग लेने जाते थे और उन्हें वहाँ कई घण्टों तक सख्त और ऊँची पीठ की बेंचों पर बैठना पड़ता था और वे वहाँ नितांत मौन रहते थे। वहाँ न तो कोई उपदेश था, न संगीत और न गायन। प्रत्येक व्यक्ति चुपचाप बैठा रहता था जब तक कि किसी क्वैकर की प्रेतात्मा किसी क्वैकर को बोलने के लिये प्रेरित न कर दे। सभा में एक ओर स्त्रियाँ बैठा करती थीं और सभा की दूसरी ओर पुरुष बैठा करते थे। बच्चों के लिये कठोर आराधना थी। इन मौन सभाओं का एडवर्ड के मन पर इतना गंभीर प्रभाव पड़ा कि जब एडवर्ड बड़ा होकर गिरजाघर जाने लगा और उसे वहाँ उम्दा संगीत तथा उपदेश ग्रहण करने को मिले तो वह स्वभाववश दूर किवाड़ के पास जाकर चुपचाप बैठ जाया करता था। वह सदैव यह महसूस करता रहता था कि कहीं उसे पकड़ न लिया जाय—जैसे किसी जाल में कोई फँस जाता हो और उसे निकल भागने का कोई अवसर न मिलता हो।

भूत और परियो के सदर्भो से भरपूर है। इनमे लोगो का पूर्ण विश्वास था। क्वैकर एडवर्ड मेक्डोवेल बचपन से अमरीका मे रहने लगा था लेकिन उसने आइरिश और स्कॉच पूर्वजो से यह आदत प्राप्त की थी। कुछ भी हो, वह वास्तव मे उन जगलो के उन छोटे लोगो मे बहुत विश्वास करता था। वह आकर्षक कहानियो और गल्पो मे रुचि रखता था। वह शहर का लडका था फिर भी उसे देहात बहुत पसन्द था क्योकि वह वहाँ जगलो मे घूम फिर सकता था और वह अकेले रहकर भूत-प्रेत से मिलने के लिये लालायित रहता था।

एडवर्ड के पिता की ड्राइग मे विलक्षण प्रतिभा थी। एडवर्ड ने अपने पिता से ही ड्राइग का कार्य सीखा। वह अपना अधिक समय स्केच बनाने मे लगाता था और स्केच बनाने का काम अच्छी तरह कर लेता था। जब उसकी माँ ने उसे एक स्केच-बुक दी तो उसके पिता ने कोई आपत्ति नही की क्योकि वह जानती थी कि उसकी ड्राइग मे बहुत दिलचस्पी है।

एडवर्ड की माँ को कला और सगीत का ज्ञान नही था फिर भी उसकी यह महत्वाकाक्षा थी कि एडवर्ड कला और सगीत मे पारंगत हो जाय। उसे यह लगा कि एडवर्ड मे कुछ हुनर जानने की स्वाभाविक रुचि है। वह यह जानती थी कि उसके घर में एक ऐसा लडका है जिसकी आदते ऐसी है जिन्हे क्वेकर परिवार मे हास्यास्पद समझा जाता है—उस लडके की रुचि सगीत, रग, परियो की कहानियो और जोखिम की कहानियो मे थी लेकिन उसे उसके स्वभाव के विपरीत ट्रेनिग दी जा रही थी। उसने विचार किया कि उसका सावधानी से पालन-पोषण किया जाय। वह शहर का लडका था और क्वैकर परिवार का सदस्य था। वह स्वप्नो की दुनियाँ मे रहा करता था और ऐसी कल्पना किया करता था कि वह सोचता था कि उसे ऐसे ससार मे रहना है जिसके बारे मे कभी-न-कभी लोग विश्वास करेंगे। वह वास्तव मे जनसाधारण लोगो से अलग ही था।

वह पोच नही था। वह अपने खिलौनो को भी तोड सकता था। क्रिसमस का दिन था, वह और वॉल्टर यान्त्रिक खिलौने से खेलते-खेलते थक गये तो

उसने उन खिलौनो को तोड दिया। ये खिलौने अपने आप ही चलते थे। वह कुश्ती भी लड सकता था—उसका यह शौक क्वैकर परिवार के लोगों से अलग ही था। गृह-युद्ध बीते कुछ ही दिन हुये थे और देश-प्रेम की भावनाओ से वातावरण ओत-प्रोत था। एक सात वर्षीय बालक एडवर्ड गली मे एक विदेशी पर टूट पडा। वह विदेशी एक गली मे इधर-उधर भटकने वाला लडका था जिसने झण्डे के बारे मे कुछ अपमानजनक शब्द कह दिये थे। एडवर्ड को वे अपमानजनक शब्द सहन न हुये। वह उस लडके से लडा और उसकी माँ ने देखा कि दोनो बच्चे गुत्थम-गुत्था लडते हुये गन्दी नाली मे लुढक रहे थे। कई वर्ष बीत गए, एडवर्ड की आयु तेरह वर्ष से अधिक होने लगी और वह जर्मनी मे पढने लगा। वहाँ वह एक अमरीकी मित्र के साथ एक स्ट्रीट मे घूम रहा था। उसे उस विदेश मे वही अकेला अमरीकी मित्र मिल पाया था। एडवर्ड उस समय तक जर्मन समझने लगा था। उनके पास ही शानदार जर्मन पुलिस वाला गुजरा। उसने सुना कि यह पुलिस वाला उसके मित्र के बारे मे कुछ अपमानजनक शब्द कह रहा है। वह शीघ्र ही व्यग करने वाले पुलिस वाले से लड पडा। उसके मित्र उसे रोका करते थे क्योकि उनका विचार था कि वह अपने देश मे नही है। इन घटनाओ से यह विदित होता है कि एडवर्ड झेपू और भावुक मन का होते हुये भी सदैव न्याय के लिये लड पडता था।

जब लडके बहुत छोटे थे, उस समय उनके माता-पिता पिकनिक के लिये उन्हे सेण्ट्रल पार्क ले जाते थे जहाँ उन्हे दौडने-भागने का अवसर मिल सके। उन दिनो मे सडके इस प्रकार कुटी हुई न थीं जैसी कि आज हैं। उस समय न तो टैक्सी थी और न बस। फिफ्थ एवेन्यू मे स्टोर्स की अपेक्षा सुन्दर घर थे और सेण्ट्रल पार्क बिल्कुल ही कण्ट्री लगता था। वह पार्क क्लिंटन स्ट्रीट के 'उतार' की ओर मेक्डोवेल के घर से लगभग तीन मील की दूरी पर स्थित था। मिस्टर मेक्डोवेल अपने परिवार के घोडे 'ब्रिटने' को किसी मांगी गई गाडी मे जोतते और पहिले ही से निश्चित किये गये दिन अपने परिवार के साथ पिकनिक के लिये जाते थे। सिपाही गहरी नीली यूनीफॉर्म पहिनकर

अक्सर सडको पर मार्च किया करते थे। उस समय कपडे बिल्कुल ही अलग प्रकार के थे। महिलाएँ हूप-स्कर्ट पहिना करती थी जो सवारी के समय इधर-उधर सरकाई जा सकती थी और घुमाई जा सकती थी। छोटी लडकियाँ पेण्टेलेट पहिना करती थी जो उनकी फ्रॉक से लटके रहते थे। छोटे लडके कसे हुये जाकेट पहिना करते थे। वडी आयु के लोग अब्राहम लिकन की तरह ऊँचे टोप और कसे हुये ट्राउजर्स तथा पीले रग के दस्ताने पहिना करते थे। उन दिनो गाडियो को घोडे खीचा करते थे। उस समय गगन चुम्वी अट्टालिकाएँ नही थी और वडे-बडे कमरो के घर भी नही थे। उस समय लोग वडे चैन से रहा करते थे, केवल बटन दबाकर काम हो जाने की उस समय सुविधा नही थी, न तो उस समय बिजली की रोशनी थी और न टेलीफोन थे।

उस समय न तो रेडियो थे और न विक्ट्रोलैस अतएव उस समय पढने के लिये अधिक इच्छा होती थी और लोगो के पास काफी समय होता था और वे अपने मनोरजन के लिये अन्य कई काम कर सकते थे। एडवर्ड को पढने का वहुत शौक था और जब कभी वह घर पर रहता था, वह पढा करता था। उसे घर और वाहर अपनी स्केच-बुक मे स्केच बनाते रहने मे अच्छा लगता था। वे स्केच वहुत अच्छे थे। इस पुस्तक मे उसका अपना एक स्केच है जिसे उसने स्वय चौदहवी वर्ष मे तैयार किया था। इस स्केच के देखने से यह लगता है कि उसके मूछे आने वाली थी।

मेक्डूवेल लडको को कदाचित सगीत का पहिला पाठ उनके बाबा मेक्डूवेल के फार्म मे सिखाया गया था। वाल्टर से एक वर्ष वडा उसका चचेरा भाई चार्ल्स मेक्डूवेल था और वह भी उस समय वहाँ था। सर्दी का दिन था और लडके जलपान की प्रतीक्षा कर रहे थे। एडवर्ड की माँ ने सभी लडको को डायनिंग रूम मे एक पक्ति मे खडा किया और उन्हे सिखाया

ट्रेम्प, ट्रेम्प, ट्रेम्प दी ब्यॉज आर मार्चिग.......''

उत्तर का प्रत्येक व्यक्ति वह युद्ध-गीत गाया करता था। लडके गीत गाते और तालियाँ वजाते हुये कमरे मे मार्च किया करते थे। एडवर्ड सबसे छोटा था,

उसकी आयु तीन वर्ष की थी और वह सबसे अच्छी तरह रिथ्म तथा गीत की ट्यून को निभा रहा था। उसकी सगीत मे प्रतिमा प्रारभ से झलक उठी अतएव उसके परिवार ने उसके लिये एक पियानो भी खरीद दिया। उसके अध्यापक दक्षिणी अमरीका के एक सज्जन थे जिन्हे मेक्डूवेल के घर मे ही रहने के लिये आमत्रित किया गया था। उन बच्चो के बाबा ने यह सोचा कि यह शिक्षा निरर्थक ही होगी। उनका विचार था कि एडवर्ड को कोई "उपयोगी कार्य" सीखना चाहिये। उनका विचार था कि सभी सगीतज्ञ ऐसे लगते हैं जैसे मदारी बदर ले जा रहे हो।

सगीत के प्रति उनकी यह प्रवृत्ति न तो अमरीकी व्यक्ति की तरह थी और न क्वैकर की तरह। यह ऐसी प्रवृत्ति थी जो उन्हे योरुप के पुराने जमाने से विरासत मे मिली हो। यदि आप रैश मेनिनॉफ या साइबलियस के बारे मे पढे तो आपको यह विदित होगा कि उनके दादा परदादा भी इसी प्रकार सोचा करते थे। यह ऐसी स्थिति थी जब सगीतज्ञो को नौकरो की तरह समझा जाता था। केवल शहजादे ही अपने कोर्ट मे सगीतज्ञो को रख पाते थे। हेडन सर्वोत्तम सगीतज्ञो मे से एक सगीतज्ञ थे फिर भी वह अपने सरक्षक प्रिंस एस्टर हेजी के दरबार मे नौकरो की वर्दी ही पहिना करते थे। इसी दुर्दशा के विरुद्ध बीथॉवन ने सघर्ष किया था। उसने एक बार अपने दयालु संरक्षक प्रिंस लॉब्कोविट्ज से जोरदार शब्दो मे यह कह दिया था कि उसकी प्रतिभा और कार्य ने उसे इतना उन्नत कर दिया है कि उसे जितना अधिक आदर मिलता है, उस आदर के लिये वह उपयुक्त है मानो वह वास्तव मे एक धनी और सम्पन्न परिवार का ही है। बीथॉवन स्वतन्त्र स्वभाव का सगीतज्ञ था, उसकी वजह से योरुप के सगीतज्ञो की सामाजिक प्रतिष्ठा ऊँची हुई। इसके विपरीत कुछ ऐसे भी लेखक और सगीतज्ञ हे जिन्होने पुराने जमाने की सरक्षकता मे अच्छाई समझी है। विक्टर हर्बर्ट सोचा करता था कि सयुक्त राज्य अमरीका मे सगीतज्ञो को संरक्षकता नही दी जा रही है इसलिये सगीत के विकास मे काफी गतिरोध है। निस्सदेह यह सच है कि हमारे देश ने काफी विकास किया है और अब देश इतना धनी हो गया है कि कला को प्रोत्साहित

किया जाय—इस विचार को कार्यरूप मे परिणित किया जाने लगा है और सगीत की अधिक प्रगति हुई है।

एडवर्ड मेक्डोवेल विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति न था। उसे अपने पाठ अच्छे लगते थे और वह यह भी समझता था कि उसका अध्यापक सगीत के प्रति कितना अधिक उत्साह रखता है लेकिन वह अभ्यास करना पसन्द न करता था। उसे पियानो पर अपनी छोटी-छोटी रचनाओ के बनाने मे आनन्द आता था। वह कहानियाँ लिखा करता था और चित्र बनाया करता था। कभी-कभी उसका अध्यापक उसे कुछ गाना-बजाना सिखाने लगता लेकिन वह सन्तप्त होकर यह देखता कि एडवर्ड छिपकर अपनी सगीत की पुस्तक पर उसका स्केच ही बना रहा है।

एडवर्ड कुछ निश्चित विचारो का व्यक्ति था। उसे उपनाम पसन्द न थे और वह यह नही चाहता था कि उसे एड या एडी कहा जाय। उसे यह भी अच्छा न लगता था कि लोग उसके बारे मे बात करे या कोई उसका चुम्बन ले और उसे डासिग-स्कूल मे उपस्थित रहने मे भी अच्छा न लगता था। यदि वह कभी डासिग स्कूल मे जाता भी था तो मिसेज मेक्डोवेल के ही आग्रह पर जाता था अन्यथा ऐसे स्कूल मे जाना क्वैकर परिवार की परम्परा के विरुद्ध बात थी। फिर भी एडवर्ड को स्कूल जाना ही पडता था। वह बहुत सुन्दर था, उसके काले बाल थे, चमकीली नीली आँखे थी और गुलाबी गालो पर चमक थी। वह बहुत चाहता था कि लडकियो से अलग रहे लेकिन लडकियाँ उसे बहुत पसन्द करती थी। उसे रिद्म का ज्ञान था इसलिये वह स्वाभाविक रूप से अच्छा नृतक भी था लेकिन उसे बेसबाल खेलना अधिक अच्छा लगता था।

दक्षिणी अमरीका से एक प्रतिभाशील महिला अपने पियानो के कार्यक्रम प्रस्तुत करने आई और न्यूयार्क मे उनके कर्स्ट (सगीत समारोह) आयोजित किये गये। उन आयोजनो मे खचाखच भीड थी। वह महिला टेरेसा केरिनो थी और उन्हे सर्वोत्तम महिला पियानो-वादको मे स्थान दिया जाता था। वह उस समय लगभग अठारह वर्ष की थी। वह पियानो-वादन कला मे प्रतिभा-

सम्पन्न थी। उन्होने वडी सुन्दरता से नौ वर्ष की आयु से ही पियानो बजाना शुरू कर दिया था। एडवर्ड के दक्षिणी अमरीकी अध्यापक मिस्टर व्यूट्रेगो ने उन महिला का मेक्डोवेल से परिचय कराया और वह मेक्डोवेल के घर भी आई। एडवर्ड ने उनके सम्मान मे पियानो वजाया और वह एडवर्ड को कुछ सिखाने के लिये तैयार हो गई। मिस्टर व्यूट्रेगो पियानो-वादक के बजाय वास्तव मे वायलिन-वादक था इसलिये उसके पियानो के पाठो का क्रम अनियमित हो जाता था। अव एडवर्ड को एक महान पियानो बजाने वाली का सम्पर्क मिल गया। केरिनो स्पेन देश की सुन्दरी थी और वह स्वभाव से कोमल थी। वह अपनी भावनाओ को व्यक्त करना चाहती थी और वह क्वैकरो के समान अपने विचारो को व्यक्त करना पसन्द नही करती थी। जब एडवर्ड उसको प्रसन्न करने के लिये वाद्ययत्र बजाता तो वह भाव-विभोर होकर उसे चिपटा लेती और उसका चुम्बन कर लेती। वह विरक्त भाव रखता और उसकी अवहेलना कर देता। केरिनो को शीघ्र ही एडवर्ड की भावनाओ का पता लग गया। उसके बाद जब वह अभ्यास न करता और वहुत वेतुके ढग से पियानो वजाता तो वह एडवर्ड को झिडकती नही थी वल्कि यह धमकी दे देती थी कि यदि वह ढग से काम न करेगा तो वह उसका चुम्बन ले लेगी। इस धमकी से उसने इतना अधिक परिश्रम किया कि वह अपनी प्रतिभा के अनुकूल योग्य बन गया।

वह पहिले पब्लिक स्कूल गया और फिर प्राइवेट फ्रेच स्कूल गया। थर्ड एवेन्यू के पास पूर्व दिशा मे उन्नीसवी स्ट्रीट मे जव उसका परिवार रह रहा था, एडवर्ड को एक पुरस्कार मिला। वह पुरस्कार न तो सगीत के लिये था और न ड्राइग के लिये और न फ्रेच के लिये वल्कि उसके विनोदी स्वभाव के लिये था जिससे उसके पिता को आश्चर्य हुआ। एक दिन लडके छत पर थे, उनमे उनका चचेरा भाई चार्ल्स भी था। वाल्टर ने कहा .

"चार्ल्स, तुम्हारा क्या अनुमान है कि इस समय एडी ने क्या किया होगा।"

"मै नही जानता कि क्या किया होगा ?"

वाल्टर को अपने छोटे भाई पर गर्व था। उसने कहा, "एडी एक महान लडका है।"

उसने ब्यूरो ड्रावर से मोती-जडी मूठ और रजत पत्र से ढकी रिवालवर निकाल ली। वाल्टर ने कहा

"इसकी ओर देखो। क्या आप ऐसी रिवालवर को शूटिग की प्रतियोगिता मे प्राप्त कर सकेंगे ? एडी ने इसे प्रतियोगिता मे प्राप्त किया है।"

वे घर के पीछे के मैदान (यार्ड) मे चले गये और वाल्टर ने एक ईंट मे एक कार्ड बाँध दिया। इसी कार्ड को निशाना वनाना था। वाल्टर और चार्ल्स ने कुछ गोलियो से निशान लगाये और उन्होंने एडवर्ड से आग्रह किया कि वह भी निशाना लगाकर यह दिखाये कि वह कैसा निशानेबाज है।

एडवर्ड कुछ दिन पहिले अपने साथ रिवालवर लेकर घर लौटा था तो उसके पिता ने उसे पूछा कि उसे रिवालवर कहाँ से मिली है। एडवर्ड ने उत्तर दिया कि उसे वह रिवालवर थर्ड एवेन्यू की शूटिग गैलरी की खिडकी से लटकती हुई मिली जब वह उस ओर से आ रहा था। वहाँ एक नोटिस लगा था कि यह रिवालवर उसको मिलेगी जो दिन मे निशानेबाजी मे सबसे ज्यादा अक प्राप्त करेगा। यह देखकर वह निशानेबाजी के लिये चला गया और उसे उस रिवालवर का पुरस्कार मिल गया।

उसके पिता को इस बात पर विश्वास ही न हो सका। वह पिस्टल लेकर एडवर्ड के साथ शीघ्र ही 'शूटिंग-गैलरी' पहुँचा। उस गैलरी के मालिक ने मिस्टर मेक्डोवेल का स्वागत किया और कहा कि इस लडके ने अन्य सभी निशाना-बाजो को हरा दिया है और इसने शान से यह रिवालवर जीत ली है। उस मालिक ने मिस्टर मेक्डोवेल को यह कहकर बधाई दी कि उनका लडका होनहार है। कई वर्ष वाद एडवर्ड एक उम्दा पियानो-वादक तथा सगीतकार वन गया लेकिन इससे पूर्व अपने वेटे का अनिश्चित केरियर देखकर वह यह कहानी सुनाकर गर्व नही कर पाता था बल्कि दुखी ही होता था।

एडवर्ड बारह वर्ष का हुआ और उसकी माँ उसे विदेश ले गई। वह लडका आयरलैण्ड जाना चाहता था क्योकि उसे आयरलैण्ड की कहानियाँ

बहुत पसन्द थी, वह स्काटलैण्ड जाना चाहता था जहाँ उसके पूर्वजों ने किल्ट पहिने थे और इग्लैण्ड जाना चाहता था जहाँ से उसकी माँ के घर के लोग आये थे। फिर वह फ्रास भी जाना चाहता था जिससे कि वह किसी स्कूल मे फ्रेंच विद्वान से बात कर सके और जर्मनी भी जाने का इच्छुक था जहाँ वह सगीत सुन सके।

उस ग्रीष्म ऋतु मे उसे काफी अनुभव हुए जिन्हे वह कभी नही भूल सका। बाद मे उसने पियानो के लिये कुछ टोन पोइम्स लिखी जिन्हे **सी पीसेज** कहा जाता है। **इन मिड ओशन** और **ए वांडरिंग आइस वर्ग** नामक कविताओ मे उसके प्रथम अनुभवो का उल्लेख है। बहुत से अमरीकी जब पहिली बार महासागर पार करते है तो वे शुरू से आने वाले पिलग्रिम के बारे मे सोचते है और यह सोचकर आश्चर्य करते है कि उन पिलग्रिम को विशाल अध-महासागर कैसा लगा होगा जब उन्होने **मेफ्लोर** नामक जहाज से तीन महीने तक समुद्र-यात्रा की होगी। मेक्डोवेल ने भी इस प्रकार सोचा और उसने सन् १६२० की रचना की।

उसने स्विटजरलैण्ड की सैर की। वह देश प्रसिद्ध निशानेबाज विलियम टेब की जन्म-भूमि है। उसने राइन नदी के चढाव की ओर स्टीमर से यात्रा की और उसने अपने सहयोगी यात्रियो के साथ पुराने दिनो के शबर बैरन के महल देखे। लेकिन एडवर्ड के जीवन मे एक ऐसा अनुभव हुआ जिसे उसने बहुत दिनो तक याद करते रहने की चिन्ता नही की। उसे यह अनुभव पेरिस मे हुआ था।

एक दिन वह फ्रान्स के सुन्दर नगर मे था और उसे कुछ कैण्डी की आवश्यकता थी। उसने फ्रास की कन्फेक्शनरियो के बारे मे बहुत कुछ सुन रखा था इसलिये वह स्वय पेरिस की सडको पर कैण्डी की दूकान खोजने के लिये चल दिया। वहाँ की दूकाने उसके अपने नगर की दूकानो से बिल्कुल ही भिन्न थी और उसने वहाँ किसी भी दूकान पर प्रदर्शन की अलमारियो मे सजाकर रखी कैण्डी को नही देखा। फिर उसे एक बोर्ड पर **कन्फेक्शन्स** शब्द लिखे दिखाई दिये और उसने उस दूकान की युवती क्लर्क से **कन्फेक्शन्स**

के लिये कहा। उसे किसी काउटर या शेल्फ मे कैण्डी नही दिखाई दी और उसने यह सोचा कि शायद फ्रास मे ऐसा रिवाज ही होगा कि कैण्डी को किसी भी दूकान की प्रदर्शन की अलमारी मे सजाकर न रखा जाता हो। वह उन सौदा बेचने वाली लडकियो की फुसफुसाहट और शोखी भरी नजरो मे भौंचक्का रह गया जो उसके आर्डर को सुन रही थी। जब वे उसे दिखाने के लिये लेस कन्फेक्शन उठा लाई तो उसे यह देखकर हैरानी हुई क्योकि उसे यह आशा थी कि वे कैण्डी लायेगी लेकिन वे चीजे महिलाओ के लिये सिल्क और लेस से बने अन्दर के कपडे (अण्डर क्लोथ्ज) थे और उनके ड्रेसिग गाउन थे। यह फ्रेंच का एक ऐसा पाठ था जिसे वह फिर कभी न भूल सका। वह उस स्टोर के बाहर निकल आया और उसका चेहरा शर्म से लाल हो गया था।

जब वह तेरह वर्ष का था, उसने न्यूयार्क फ्रेंच स्कूल मे अध्ययन करना छोड दिया था और उसके बाद उसने केवल सगीत का ही अध्ययन किया। उसकी माँ का यह अटूट विश्वास था कि वह किसी दिन एक अच्छा पियानो-वादक हो जायेगा। उन्होंने योरुप-दर्शन की यात्रा के तीन वर्ष बाद फिर यात्रा पर प्रस्थान किया। अब एडवर्ड की आयु पन्द्रह वर्ष की थी। इस बार उसे पेरिस की फ्रेंच कजरवेटरी के अध्यक्ष की देखरेख मे रख दिया गया जिससे वह गभीरता से सगीत-अध्ययन कर सके। इस बार वह जी-जान से काम करने लगा। वह प्रात काल छ बजे अपना काम शुरू करता और रात के नौ बजे तक काम करता रहता था। वह पियानो-वादन के अतिरिक्त सगीत की थियोरी और सगीत-रचना सीखता था। वह फ्रेंच भाषा मे भी दक्ष होने के लिये अध्ययन किया करता था।

वह एक दिन फ्रेंच का पाठ सीख रहा था कि उस समय वह स्केचिग-कार्य में दत्तचित्त हो गया। जब कभी उसके हाथ मे पेन्सिल होती तो वह सदैव स्केच बनाता रहता था। अध्यापक ने जब यह देखा कि उस का छात्र अपनी फ्रेंच ग्रामर की पुस्तक के पीछे कुछ छिपा रहा है तो उसने अपने छात्र से उसे दिखाने के लिये कहा। एडवर्ड को ऐसा लगा कि अध्यापक उसे अवश्य ही डाटेगे क्योकि उसने अध्यापक की हूबहू शक्ल का स्केच तैयार कर लिया

था और अपने स्केच मे अध्यापक की असाधारण लम्बी नाक का भली-भाति चित्राकन किया था। एडवर्ड को सचमुच आश्चर्य हुआ जब उसके अध्यापक ने डाटने के बजाय यह पूछा कि उसने ड्राइग कहाँ सीखी है। उसे यह स्वीकार करना पडा कि उसने कभी भी ड्राइग का अध्ययन नही किया है। फ्रेंच अध्यापक को यह जानकर अचम्भा हुआ कि उसमे इतनी समझ कहाँ से आ गई और उसने कहा कि वह उस तस्वीर को अपने पास रखना चाहता है।

बात यही समाप्त नही हुई। कुछ दिन बाद वह अध्यापक मिसेज मेक्डोवेल से भेट करने आये और उनसे कहा, "मेरे एक मित्र ऐसे है जो महान कलाकार है। मैंने एडवर्ड के बनाये स्केच को उन कलाकार महोदय को दिखाया है और वह इस बात से अधिक प्रभावित ह कि एडवर्ड ने मेरी हूबहू शक्ल बनाई है। कलाकार ने एक विशेष प्रस्ताव भेजा है। उन्होने कहा है कि वह एडवर्ड को केवल तीन वर्षों तक मुफ्त ही नही पढा देगे बल्कि उसकी सहायता भी करेंगे, इस प्रकार मेक्डोवेल को अपने रहने और भोजन के लिये कुछ भी न देना पडेगा। उन्हे एडवर्ड से बहुत आशा है और उनका विचार है कि एडवर्ड किसी न किसी दिन एक महान चित्रकार बन जायेगा।"

यह प्रलोभन कुछ कम न था। योरुप मे मेक्डोवल के सगीत-अध्ययन का व्यय बहुत अधिक था। मेक्डोवेल के माता-पिता उस लडके को बाहर सगीत सीखने के लिये सदेव अपने हिसाब-किताब की काट-छाट करके बजट बनाते रहते थे। अब यकायक एडवर्ड को ऐसा अवसर मिल गया जिसकी सहायता से वह मुफ्त मे ही एक अन्य कला मे पारगत हो सकता था जिसके लिये भी उसमे प्रतिभा थी। अब प्रश्न यह था कि वह चित्रकार बने अथवा पियानो-वादक? उसने सगीत मे बहुत परिश्रम किया था और ड्राइग को केवल खेल समझकर ही अपनाया था। उसे दोनो ही काम पसन्द थे। सगीत कला सीखना खर्चीला काम था और चित्रकला सीखना उसके लिये मुफ्त ही था। किसी एक काम मे पारगत होने के लिये विशेष परिश्रम की आवश्यकता है क्योंकि लगातार, कठोर और दत्तचित्त होकर काम करने की आदत से ही व्यक्ति सफल विशेषज्ञ हो सकता है। एक अन्य संगीतकार भी दोनो कलाओ मे

प्रतिभावान था और उसके सामने भी केवल एक कला को चुनने की समस्या थी। चार्ल्स गोनाड को सगीत-रचना के लिये 'प्रिक्स डी रोम' जैसा पुरस्कार मिला जिसके प्राप्त करने की इच्छा किसमे न होगी। और उसे ड्राइग के लिये भी पुरस्कार मिला। परन्तु वह सगीत के प्रति ही अधिक वफादार रहा। मेक्डोवेल ने भी सगीत को अपनाया। उसकी माँ अमरीका लौट गई और वह अपने प्रथम अध्यापक मिस्टर व्यूड्रेगो के साथ पेरिस मे ही रुक गया। मिस्टर व्यूड्रेगो उन दोनो अमरीकियो के साथ योरुप आये थे।

एडवर्ड ने अपने फ्रेंच मित्र के साथ शारट्रेस के समीप फार्म पर छुट्टी विताई। उसके लिये फ्रेंच परिवार के साथ रहना एक अजीव अनुभव था। जब गाँव के गिरजाघर के ओरगेनिस्ट को यह पता लगा कि समीप ही एक सगीतज्ञ ठहरा है, उसने एडवर्ड से निवेदन किया कि वह उसके स्थान पर काम कर ले जब तक वह छुट्टी पर रहे। किशोर मेक्डोवल ने गिरजाघर मे आर्गेन वजाया। उस गिरजाघर की सर्विस क्वैकर की उन मीटिंग से विल्कुल भिन्न थी जिनमे वह कभी बचपन मे भाग लिया करता था।

उसने पेरिस मे दो वर्ष अध्ययन किया और उसके वाद वह बेचैन रहने लगा। उसने बहुत सी बैश प्रील्यूड और फ्यूग्ज के सुर अन्य 'की' मे बदल लिये थे। और इससे सगीत का अनुशासन बढ गया था लेकिन वह यह महसूस करने लगा था कि उसके पियानो-वादन की कुशलता उस तीव्र गति से नही वढ पा रही है जितनी कि प्रगति होनी चाहिये। वह परिवर्तन करना चाहता था। वह जानता था कि उसने पेरिस मे रहकर सगीत की बुनियादी बातो को बहुत अच्छी तरह सीख लिया है। लेकिन रूविनस्टीन को बजाते हुये देखकर वह यह महसूस कर उठा कि वह फ्रास मे रहकर इतना अच्छा कभी न बजा सकेगा। वह एक कुशल पियानो वादक के साथ रहकर अभ्यास करना चाहता था। एक वर्ष बीत गया और उसने जर्मनी के एक सुन्दर छोटे नगर वीसवेडन मे अध्ययन किया और फिर वह फ्रेंक फोर्ट की कजरवेटरी मे गया। वहाँ उसने रैफ के साथ सगीत-रचना का अध्ययन किया। अभी तक छात्र रैफ की सगीत-रचनाओ को पियानो पर वजाते है। उसके अध्यापक उत्साह-

वर्द्धक और सहानुभूतिपूर्ण थे। दो वर्षों बाद वह बहुत अच्छी तरह पियानो बजाने लगा और उसके पियानो अध्यापक हेमेन ने यह सिफारिश की कि जब तक वह बीमार है, उसकी अनुपस्थिति मे एडवर्ड ही अध्यापन कार्य करे। लेकिन सभी जर्मन प्रोफेसर इतने अधिक उदार न थे। कुछ ऐसे भी 'ओल्ड फोगीं' होते है और वे दोनो प्रकार के नये और पुराने कलाकारो मे मिल जाया करते है जो बहुत कोशिश करने पर भी सगीत मे जान नही डाल पाते। उनमे से कुछ यह भी सोचते है कि केवल नोट्स का बजा लेना ही पर्याप्त है। वे कला के मानवी पक्ष अथवा जीवन की पुट नही दे पाते और वे शुद्धता, नोट, नियम, मासपेशियाँ, हाथ की स्थिति और इसी प्रकार की अन्य बातो पर ध्यान देते रहते है। अलबत्ता यह भी महत्वपूर्ण बात है। लेकिन नोट्स चाहे स्केल्स, आरपीगिओस या जेरनी ही क्यो न हो फिर भी उन्हे बजाते समय जीवन और शुद्ध रक्त का जोश या आवेश की किसी प्रकार कमी नही होनी चाहिये, तभी वे नोट्स जीवित रह पाते है। साइवलियस कहा करता था कि सगीत मे जो "जीवित" है, वही नोट्स हैं। स्केल्स और आरपीगिओस ही वादक की ख्याति स्थापित कर देते है और जेरनी तथा क्लेमेण्टी बहुत बडे हुनर हो सकते है। इनमे से कुछ प्रोफेसर मेकडोवेल के नवीन और स्पष्ट वादन के तरीके को स्वीकार न कर सके और वे हेमेन के स्थान पर उसे अध्यापन करने की अनुमति न दे सके। लेकिन रैफ ने कुछ प्राइवेट विद्यार्थियो को उसके पास भेज दिया और मेकडोवेल ने जर्मनी मे अध्यापन-कार्य शुरू कर दिया।

अब वह सुन्दर अमरीकी के नाम से परिचित हो गया। उसका सुडौल शरीर था, गोरा रग था, नीली चमकीली आँखे थी, लाल सी मूछें थी और लाल बाल थे।

ग्रीष्म ऋतु मे एक दिन वह उन्नीस वर्ष का हो गया। उस दिन फ्रैंकफर्ट मे उसके पास आता ही कौन, लेकिन उसका चचेरा लार्ड चार्ल्स ऊँची बाइसिकिल पर सवार होकर उसके पास पहुँच गया। दोनो ने एक दूसरे को बहुत दिनो से नही देखा था। एडवर्ड ने अपने मनपसन्द आवास-स्थान पर

अपने चचेरे भाई चार्ल्स को आराम से ठहराया। चार्ल्स एडवर्ड के विदेश मे सरल स्वभाव से रहने और काम करने के ढग से इतना अधिक प्रसन्न हुआ जितना एडवर्ड के उस रिवालवर को इनाम मे जीतने पर प्रसन्न हुआ था जब उसने शूटिंग की प्रतियोगिता मे सबसे अधिक ठीक निशाने लगाये थे।

रैफ ने एडवर्ड के पास कुछ छात्र भेजे थे उन छात्रो मे रैफ की अमरीका-वासी एक प्रिय शिष्या मिस मेरियन नेविस थी। जिनका घर कन्केटीकट मे था। रैफ का यह विचार था कि सयुक्त राज्य अमरीका की लडकी को ऐसे अध्यापक से अधिक सहायता मिलेगी जो उसकी भाषा जानता हो यद्यपि वह मन से अमरीकी को अपना अध्यापक बनाने के लिये तैयार न थी क्योकि अमरीकी को अध्यापक न बनाने की दृष्टि से ही वह इतनी लम्बी यात्रा करके योरुप आई थी। फिर भी वह एक वर्ष तक मेक्डोवेल के साथ अध्ययन करने के लिये सहमत हो गई। मेक्डोवल भी अपना अनुभव बढाने के लिये सर्व-प्रथम योरुप के विद्यार्थियो को ही सिखाना चाहता था। उसने उस छात्रा को पहिले वर्ष केवल 'केश' और 'एट्यूड्स' सिखाये और कोई भी 'गीत' न सिखाया। उस छात्रा को क्लारा शूमैन के पास सीखने का अवसर मिला लेकिन इतनी कठोर ट्रेनिग के बावजूद उसने मेक्डोवेल की छात्रा बने रहना ही अधिक पसन्द किया।

सर्वप्रथम रैफ ने ही उस 'सुन्दर अमरीकी' को सगीत रचना करने के लिये प्रोत्साहित किया था। जब उसने एडवर्ड से **फर्स्ट पियानो कंसर्टो सुना,** उसने यह कहा कि वह वाद्य-वादन लीश को सुनाने के लिये सचमुच ही बहुत अच्छा है। वास्तव मे यह उसकी अनुपम प्रशसा थी। रैफ ने मेक्डोवेल को लीश से मिलने के लिये यह एक परिचय-पत्र दिया और एक दिन अमरीकी सगीत-कार ने साहस किया और वह वीमर गया जहाँ लीश रहा करता था। लेकिन जब वह उस महान पियानो-वादक के द्वार पर पहुँचा तो वह बाहर बेंच पर बैठ गया क्योकि उसे घर मे घुसने से डर लगा। कुछ समय बाद वह घर के अन्दर गया। फिर बरामदे मे ही बैठ गया। कुछ छात्र लीश की कक्षा मे जा रहे थे और उन्होने उस प्रतीक्षा करने वाले युवक के बारे मे अपने गुरू

से कहा होगा कि एक युवक अपने हाथ मे म्यूजिक का पेपर लिये बाहर प्रतीक्षा कर रहा है। लीश हाल मे आ गया और मेक्डोवेल तत्काल ही समझ गया कि ऐसी विशिष्ट आकृति का वही महान कलाकार है जिससे वह भेट करने आया है। मेक्डोवल ने उन महाशय को अपना पत्र दिया। उसे बडे आदर से अन्दर लाया गया और उससे कहा गया कि वह अपनी सगीत रचना प्रस्तुत करे। वह इस नवीन और सुन्दर वातावरण मे बहुत ही लजीना था और लीश तथा उनके छात्रो के सामने कुछ भी बजाने मे भयभीत सा ही था फिर भी उसने अपनी सामर्थ्य मे सबसे अच्छा प्रदर्शन देने का प्रयत्न किया। उस महान कलाकार ने उसके कसर्टो की ही प्रशसा नही की अपितु उसके वाद्य-वादन की भी सराहना की। लीश महोदय ने उसकी केवल प्रशसा ही नही की बल्कि उसकी और भी सहायता की। लीश ने अपने प्रभाव से मेक्डोवल को यह सहायता दी कि उसकी रचनाएँ जर्मनी मे प्रस्तुत होने लगी।

रैफ एक अच्छे अध्यापक थे। वे यह जानकर गौरव महसूस कर उठे कि लीश के कहने पर सगीतज्ञो की जर्मन सोसाइटी ने मेक्डूवल के **फर्स्ट पियानो सूट** को बजाया है। वह मेक्डोवेल की अपूर्व सफलता के उस दिन की अधिक प्रतीक्षा मे थे किन्तु दुर्भाग्य आ धमका और उस आयोजन से कुछ समय पूर्व रैफ ससार से चल बसे। मेक्डोवेल दु ख से अधिक पीडित हो गया क्योकि वह अपने दयालु और सहानुभूतिपूर्ण अध्यापक को अधिक चाहता था। वह सान्त्वना पाने के लिये अपनी अमरीकी छात्रा मिस नेविस के पास गया और उसने मेक्डोवेल को यही सलाह दी कि अब वह अधिकाधिक परिश्रम करे। दो सप्ताह बाद उसने कर्स्ट (सगीत समारोह) मे अपना सूट प्रस्तुत किया और उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि लोगो ने लगातार "शाबाश, वाह ! वाह !!" की तुमुल ध्वनियो से उसके कुशल वाद्य-वादन का स्वागत किया है। वह इतना सकोची स्वभाव का था कि उसने पहिली बार ही यह सोच पाया कि उसकी सगीत-रचनाओ को प्रत्येक व्यक्ति पसन्द कर सकता है। इससे उसे अधिक प्रोत्साहन मिला। लीश ने उसकी प्रथम कृतियो को

जर्मनी मे प्रकाशित किये जाने की सिफारिश की और मेक्डोवेल ने अपने 'कन्सर्टो' को लीश को ही समर्पित किया। उसने कठोर परिश्रम किया, वह बराबर लिखता रहा, उसने वहुत अभ्यास किया और वह लगातार अध्यापन भी करता रहा। और वह अपनी अमरीकी छात्रा मिस नेविन्स के प्रेम मे फस गया।

ग्रीष्म ऋतु थी और वह तेईस वर्ष का हो गया। उस समय वह अमरीका आया और उसका कानेक्टीकट मे विवाह हो गया। नव-दम्पति फिर योरुप आ गये और वहाँ वे कुछ सप्ताह तक यात्रा करते रहे फिर वे जर्मनी मे आकर रहने लगे।

मेक्डोवेल ने जर्मनी मे कई वर्षो तक अध्यापन-कार्य किया और फिर अपने देश को लौटा। मेक्डोवेल ने सयुक्त राज्य अमरीका मे भी लगभग उतने ही वर्ष जीवन विताया जितना कि वह योरुप मे रह चुका था।

मेक्डोवेल परिवार उस समय वॉस्टन मे रहा करता था। उस सगीतकार को कई वार सफलताएँ मिली थी। उसे अपनी उस महान सफलता की अधिक याद थी जब उसने वोस्टन सिम्फोनी ओरकेस्ट्रा के साथ अपना **दूसरा कन्सर्टो** प्रस्तुत किया था और उस ओरकेस्ट्रा ने उसके **इण्डियन सूट** को भी वजाया था। उस शाम को उसे उसकी सफलता पर माला पहिनाई गई जिसे वह अपने न्यू हेम्पशायर फार्म की दीवाल पर सदैव टागे रहता था। वह अपने काम की प्रशसा सुनकर बहुत ही प्रसन्न होता था लेकिन जब कभी उसकी प्रशसा होती तो उसे वहुत सकोच होता और उलझन महसूस होती। वह कपट से घृणा करता था और उससे सदैव डरा करता था। उसने अपने माता-पिता को उतना धन कमाकर सौप दिया जितना कि उसकी सगीत की शिक्षा पर व्यय हुआ था और इस प्रकार उसने अपने माता-पिता के प्रयास की प्रशसा प्रकट की।

जब वह वास्टन मे रहता था तो उसके पास दो कुत्ते थे जिन्हे वह बहुत पसन्द करता था, उसने काली जाति के कुत्ते का नाम चार्ली चार्लिमेन और छोटे टेरियर का नाम चार्ली रख लिया था। चार्ली फार्म पर सगीतकार के सदैव साथ रहा करता था जहाँ ग्रीष्म ऋतु मे मेक्डोवेल के परिवार के लोग

रहा करते थे। चार्ली को सगीत-मर्म-भेदी बना लिया गया था क्योंकि जब वेगर का सगीत होता तो वह प्रसन्न होकर भोकने लगता था और जब ब्रेह्मस का सगीत होता तो वह दु खी होकर चिल्लाने लगता था।

मेक्डोवेल को कोलम्बिया विश्वविद्यालय मे म्यूजिक के प्रोफेसर पद पर काम करने के लिये आमत्रित किया गया इसलिये वह फिर अपने देश लौट आया। उस समय तक क्लिटन स्ट्रीट मे बना उसका घर नष्ट हो चुका था जहाँ उसने अपने बचपन के दिन बिताये थे। उसके स्थान पर एक भद्दा घर बना हुआ था क्योकि वह घर पूर्वी सेक्शन के क्षेत्र मे आ गया था। बाहर से आने वाले लोग वहाँ इकट्ठे होने लगे थे और जो लोग भी अमरीका पहुँचते, वे आराम से ही रहने की बात सोचते थे। उसी समय रूस से बेलाइन नाम का परिवार वहाँ आया और बेलाइन परिवार का ही चार वर्षीय बालक इर्विङ्ग बर्लिन बडा होकर लोकप्रिय गीतकार हो गया। वह **एलेक्जेंडर्स रेगटाइम बैण्ड** और **गाड ब्लेस अमेरिका** नामक गीतो का रचियता था।

मेक्डोवेल ने कोलम्बिया विश्वविद्यालय मे यथा-शक्ति अध्यापन कार्य किया और सगीत विभाग बनाने का प्रयत्न किया। वह अपने उन छात्रो के प्रति बहुत उदार था जो काम करने का पक्का इरादा रखते थे और अपने काम मे योग्यता दिखाते थे। वह उन छात्रो को मुफ्त सिखाने को तैयार रहता था जिनके पास धन नही था। वह विनोदी स्वभाव का था और उसकी हँसी इतनी उन्मुक्त थी कि सभी खुलकर हँस उठते थे। एक बार एक छात्र ने अपनी अभ्यास-पुस्तिका (एक्सरसाइज बुक) मे विश्राम-सूचक रेखाएँ लगा दी और अन्त मे डबल बार का निशान लगा दिया तो मेक्डोवेल ने लाल स्याही से मार्जिन मे यह लिखकर वह पुस्तिका लौटा दी कि "इस अभ्यास मे केवल यही शुद्ध लेखाश है।"

किसी भी गीत के प्रारभ होने से पूर्व उसके मन मे विश्वास और आशका की अनवरत हिलोरे उठती थी और उसमे पूर्वाभास की बेचैनी तथा रगमच के प्रति भय बना रहता था, उसकी पत्नी प्राय अन्त समय तक उसे अपना कार्यक्रम शुरु करने के लिये प्रोत्साहित किया करती थी। वह अध्यापन मे

अधिक समय लगाता था इससे उसके वाद्य-वादन पर असर पडता था। वह पियानो इतना अच्छा वजाता था कि उसके वारे मे एक आलोचक ने लिखा है कि पेडेरेव्सकी के वाद मेक्डोवल ही सबसे अधिक सतोष देने वाला पियानो-वादक था। मेक्डोवेल को यह जानकर बहुत दुख होता था कि वह अमुक कार्यक्रम मे अपना पियानो अच्छा नही बजा पाया।

वह शहर से वाहर जाना पसन्द करता था और वह न्यू हेम्पशायर की पहाडियो पर घूमा करता था तथा अपने किसान के साथ टमटम पर जाया करता था। उसने अपनी सबसे अधिक रचनाएँ उसी समय लिखी जव वह प्रत्येक झझट से दूर होकर नितान्त अकेला रह पाता। इस एकाकीपन के जीवन के लिये उसने न्यू हेम्पशायर के पीटरवोरो स्थित फार्म के समीप जगल मे एक छोटी केविन वना ली थी। वह छोटी केविन अव भी वहाँ है। लेकिन अब उस फार्म पर एक कालोनी बस गई है जिसमे कलाकार, लेखक, सगीतकार और इसी प्रकार के अन्य लोग रहते है क्योकि वहाँ वे अधिक अच्छा काम कर लेते है। उन्हे वहाँ न तो टेलीफोन पर वात करनी होती है, न अन्य व्यक्तियो के साथ भोजन के लिये जाना पडता है, और न ऐसी विघ्न-बाधाओ का सामना करना पडता है जो उनके जीवन मे प्रतिदिन अनायास आ जाया करती है। मेक्डोवेल के निधन के वाद मिसेज़ मेक्डोवेल ने अन्य कलाकारो के लिये अपना समय और शक्ति अर्पित कर दी क्योकि उनके पति की इच्छा थी कि कलाकारो और लेखको के लिये सुविधाजनक एकान्त स्थान की व्यवस्था की जानी चाहिये ताकि वे चिन्तन-मनन कर सके और रचनाएँ कर सके। अव वहाँ एकान्त मे बीस केविन वना दी गई हैं। उन केविनो को उस जगल मे वनाया गया है जिसके मालिक मेक्डोवेल रहे। कई अमरीकी सगीतकारो ने उस स्थान से अधिक लाभ उठाया है।

मेक्डोवेल अपने वचपन से ही पढना पसन्द करता था। किसी ने उसके लिये लिखा है कि 'उसमे साधारण सगीतज्ञ की मूर्खता से कही विपरीत बौद्धिक रुचि और व्यापक सस्कृति थी।" उसकी कई प्रकार के कार्यो मे व्यापक रुचि थी जैसा कि इस कथन की सार्थकता उसकी हावी (मुक्त समय

के रुचिपूर्ण कार्य) से प्रकट होती है। वह अधिकतर कविता पढा करता था और उसे कथा-कहानियो के गीतो तथा मध्य-युग के प्रेम-गीतो के बारे मे अधिक जानकारी थी, फिर भी उसे मार्क-ट्वेन और अकल रीमत की कहानियाँ पढने का शौक था। उसे बागवानी, फोटोग्राफी और बढईगीरी से प्रसन्नता मिलती थी। उसने बाग बगीचो के प्लान तैयार किये थे और घर के नक्शे बनाये थे। एक दिन वह फैकल्टी की मीटिग छोडकर दगल देखने के लिये चला गया। उसे यह देखकर वहुत प्रसन्नता मिली कि उसके एक तिहाई साथियो ने भी ऐसा ही किया है।

जब उसे यह मालूम हुआ कि उसके छोटे गॉव पीटर-बोरो मे कोई गोल्फ-कोर्स नही है तो उसने एक फार्म खरीदा और उसे अपने गाँव को उपहार मे दे दिया। उसने वहॉ एक क्लव हाऊस वनाने के लिये एक अमीर पडोसी से आगह किया। उस क्लब मे उसने सभी को आमन्त्रित किया, यहाँ तक कि उस क्लब मे सवसे गरीव भी गया और उन सभी ने मिलकर उस "शाही खेल" का आनन्द उठाया।

वह अध्यापन कार्य मे कितना ही अधिक व्यस्त क्यो न रहता हो परन्तु वह सदैव यह महसूस किया करता था कि उसे प्रत्येक दिन सगीत की कुछ पक्तियॉ अवश्य लिखनी ही थी उसने फ्रास मे अपना वचपन विताया और तभी यह अनुशासन सीख लिया था कि प्रतिदिन लिखने के अभ्यास की वैसी ही आवश्यकता है जैसी कि प्रतिदिन पियानो बजाने का अभ्यास करने की आवश्यकता है। उसने कभी भी पियानो वजाकर सगीत-रचना नही की लेकिन वह प्राय आशुकविता करते समय अपने विचारो को अपनी स्केच वुक मे लिख लिया करता था। फिर कभी ग्रीष्म ऋतु मे अपने फार्म पर वह अपने फुटकर विचारो को देखा करता और उन विचारो के आधार पर गीत लिखा करता था। उसने चार वडे पियानो-सोनटा की रचनाएँ की जिनमे से उसे **केल्टिक सोनेटा** सवसे अविक प्रिय रचना लगी। वह अपनी सभी वडी कृतियो मे उसे सवसे अधिक पूर्ण और सर्वोत्तम समझता था। उसने **केल्टिक सोनेटा** और **नोर्स सोनेटा** को ग्रीग को समर्पित किया जिनका संगीत उसे वहुत पसन्द

अधिक समय लगाता था इससे उसके वाद्य-वादन पर असर पडता था। वह पियानो इतना अच्छा वजाता था कि उसके वारे मे एक आलोचक ने लिखा है कि पेडेरेव्सकी के वाद मेक्डोवल ही सवसे अधिक सतोष देने वाला पियानो-वादक था। मेक्डोवेल को यह जानकर वहुत दुख होता था कि वह अमुक कार्यक्रम मे अपना पियानो अच्छा नही बजा पाया।

वह शहर से वाहर जाना पसन्द करता था और वह न्यू हेम्पशायर की पहाडियो पर घूमा करता था तथा अपने किसान के साथ टमटम पर जाया करता था। उसने अपनी सबसे अधिक रचनाएँ उसी समय लिखी जब वह प्रत्येक झझट से दूर होकर नितान्त अकेला रह पाता। इस एकाकीपन के जीवन के लिये उसने न्यू हेम्पशायर के पीटरवोरो स्थित फार्म के समीप जगल मे एक छोटी केविन वना ली थी। वह छोटी केबिन अब भी वहाँ है। लेकिन अब उस फार्म पर एक कालोनी वस गई है जिसमे कलाकार, लेखक, सगीतकार और इसी प्रकार के अन्य लोग रहते है क्योकि वहाँ वे अधिक अच्छा काम कर लेते है। उन्हे वहाँ न तो टेलीफोन पर वात करनी होती है, न अन्य व्यक्तियो के साथ भोजन के लिये जाना पडता है, और न ऐसी विघ्न-बाधाओ का सामना करना पडता है जो उनके जीवन मे प्रतिदिन अनायास आ जाया करती है। मेक्डोवेल के निघन के वाद मिसेज़ मेक्डोवेल ने अन्य कलाकारो के लिये अपना समय और शक्ति अर्पित कर दी क्योकि उनके पति की इच्छा थी कि कलाकारो और लेखको के लिये सुविधाजनक एकान्त स्थान की व्यवस्था की जानी चाहिये ताकि वे चिन्तन-मनन कर सके और रचनाएँ कर सके। अव वहाँ एकान्त मे वीस केविन वना दी गई हैं। उन केविनो को उस जगल मे वनाया गया है जिसके मालिक मेक्डोवेल रहे। कई अमरीकी सगीतकारो ने उस स्थान से अधिक लाभ उठाया है।

मेक्डोवेल अपने वचपन से ही पढना पसन्द करता था। किसी ने उसके लिये लिखा है कि 'उसमे साधारण सगीतज्ञ की मूर्खता से कही विपरीत वौद्विक रुचि और व्यापक सस्कृति थी।" उसकी कई प्रकार के कार्यो मे व्यापक रुचि थी जैसा कि इस कथन की सार्थकता उसकी हावी (मुक्त समय

के रुचिपूर्ण कार्य) से प्रकट होती है। वह अधिकतर कविता पढा करता था और उसे कथा-कहानियो के गीतो तथा मध्य-युग के प्रेम-गीतो के बारे मे अधिक जानकारी थी, फिर भी उसे मार्क-ट्वेन और अकल रीमत की कहानियाँ पढने का शौक था। उसे बागवानी, फोटोग्राफी और बढईगीरी से प्रसन्नता मिलती थी। उसने बाग बगीचो के प्लान तैयार किये थे और घर के नक्शे बनाये थे। एक दिन वह फैकल्टी की मीटिग छोडकर दगल देखने के लिये चला गया। उसे यह देखकर बहुत प्रसन्नता मिली कि उसके एक तिहाई साथियो ने भी ऐसा ही किया है।

जब उसे यह मालूम हुआ कि उसके छोटे गाँव पीटरबोरो मे कोई गोल्फ-कोर्स नही है तो उसने एक फार्म खरीदा और उसे अपने गाँव को उपहार मे दे दिया। उसने वहाँ एक क्लब हाऊस बनाने के लिये एक अमीर पडोसी से आग्रह किया। उस क्लब मे उसने सभी को आमन्त्रित किया, यहाँ तक कि उस क्लब मे सबसे गरीब भी गया और उन सभी ने मिलकर उस "शाही खेल" का आनन्द उठाया।

वह अध्यापन कार्य मे कितना ही अधिक व्यस्त क्यो न रहता हो परन्तु वह सदैव यह महसूस किया करता था कि उसे प्रत्येक दिन सगीत की कुछ पक्तियाँ अवश्य लिखनी ही थी उसने फ्रास मे अपना बचपन बिताया और तभी यह अनुशासन सीख लिया था कि प्रतिदिन लिखने के अभ्यास की वैसी ही आवश्यकता है जैसी कि प्रतिदिन पियानो बजाने का अभ्यास करने की आवश्यकता है। उसने कभी भी पियानो बजाकर सगीत-रचना नही की लेकिन वह प्राय आशुकविता करते समय अपने विचारो को अपनी स्केच बुक मे लिख लिया करता था। फिर कभी ग्रीष्म ऋतु मे अपने फार्म पर वह अपने फुटकर विचारो को देखा करता और उन विचारो के आधार पर गीत लिखा करता था। उसने चार बडे पियानो-सोनटा की रचनाएँ की जिनमे से उसे **केल्टिक सोनेटा** सबसे अधिक प्रिय रचना लगी। वह अपनी सभी बडी कृतियो मे उसे सबसे अधिक पूर्ण और सर्वोत्तम समझता था। उसने **केल्टिक सोनेटा** और **नोर्स सोनेटा** को ग्रीग को समर्पित किया जिनका संगीत उसे बहुत पसन्द

था। उसे अपनी छोटी रचनाओ मे सभी बाते देखते हुये **सी पीसेज** सबसे अच्छे लगे परन्तु वह **इण्डियन सूट** मे से **डर्ज** अधिक पसन्द करता था।

जब बोहेमियन सगीतकार ड्वोरेक इस देश मे था, उसने **न्यू वर्ल्ड सिम्फनी** लिखी, उस समय मेक्डोवेल को यह महसूस नही हुआ कि वह नीग्रो मेलोडी को इस तरीके मे उपयोग कर रहा है कि उससे 'अमरीकी' सगीत तैयार होने का मार्ग प्रशस्त हो रहा है। उसने यह नही सोचा कि वह अधिक सरलता से ऐसी शैली (स्टाइल) की स्थापना कर रहा है, जिसे 'अमरीकी' कहा जायेगा। यद्यपि उसने स्वय 'इण्डियन मेलोडी' का उपयोग किया, उसने कभी भी उस सगीत को 'अमरीकी सगीत' नही समझा। एलगर ने भी ऐसा ही महसूस किया क्योकि वह कभी फोक-ट्यून (लोक धुनो) को जानबूझ कर काम मे नही लाता था। मेक्डोवेल ने कहा "मनुष्य कपडे पहिनता है या किसी धन्धे मे लगा रहता है लेकिन उसके कपडो या धन्धे को देखकर वह कैसा ही क्यो न लगे फिर भी वह प्राय कुछ अलग ही व्यक्तित्व रखता है लेकिन जब हम उसको केवल उसकी वेश-भूषा से ही पहिचानने का प्रयत्न करते है तो हम उसके बारे मे कुछ भी नही जान पाते। और यही बात सगीत के लिये भी सत्य है। केवल मात्र कहे जाने वाला रशियन, बोहेमियन या किसी राष्ट्र का सगीत कला की श्रेणी मे नही रखा जा सकता क्योकि उस सगीत के लक्षणो को कोई भी दुहरा सकता है जिसे इस बात का शौक हो। इसके विपरीत सगीत के लिये भी एक प्रमुख बात है—व्यक्तित्व, और यही सगीत की कसौटी है। यदि सगीत किसी 'उपकरण' की सहायता से तैयार किया जाय तो उसे केवल 'दर्जीगीरी' ही माना जायेगा। राष्ट्रीय सगीत-रचना के लिये ऐसे साधन अपनाना मूर्खता है। यदि किसी राष्ट्र को सगीतकार की तलाश करनी है जो राष्ट्र-भावना को अभिव्यक्त कर सके तो ऐसे राष्ट्र मे सर्वप्रथम इस प्रकार के व्यक्ति होने चाहिये जो सही अर्थो मे अपने राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करते हो अर्थात् राष्ट्र का अभिन्न अग होने के नाते वे अपने देश मे प्रेम करते हो, वे अपने सगीत मे वही भावनाएँ भरते हो जिन्हे राष्ट्र ने अपने जीवन मे स्वीकार किया है। जहाँ तक अमरीका की अपनी बात है, उसके लिये सभी से परे

यह आवश्यकता है कि प्रत्येक प्रतिबंध से अलग हटकर पूर्ण स्वतत्रता मिले।
जनता और लेखक दोनो की यह आवश्यकता है। यह प्रतिबंध हमारे जीवन
मे योरुपीय विचार और पक्षपात के प्रति शाश्वत आदर रखते रहने से ही
आरोपित हुआ है। नीग्रो की वेश-भूषा बोहेमिया के अनुकूल बना ली जाय
और इस प्रकार छद्मवेश मे यो ही राष्ट्रीयता स्थापित कर दी जाय तो इससे
हमे कोई लाभ न होगा। हमे नवयुवको की सी आशाप्रद शक्ति और अपराजित
भावना की आवश्यकता है और यही अमरीकी व्यक्ति की पहिचान है।”

हमारा पहिला गभीर सगीतकार अमरीका मे पैदा हुआ और योरुप मे
उसकी ख्याति हुई तथा वहाँ उसकी सगीत की रचनाएँ प्रकाशित हुई। चालीस
वर्ष से अधिक समय हो गया है और वह अब इस ससार मे नही है लेकिन
जब आप अन्य सगीतकारो की जीवनियो और उनकी कृतियो के बारे मे
पढेगे, कदाचित आप यह महसूस करेगे कि अमरीकी सगीत के सम्बन्ध मे
मेक्डोगल के विचार सही थे। एक व्यक्ति के जीवन से कही अधिक समय किसी
कला की परिपक्वता मे लग जाता है, शायद आप यह महसूस करेगे कि मेक्डो-
वेल ने “युवको की आशाप्रद शक्ति और अपराजित भावना’ के विषय मे जो
कुछ कहा है, वह अमरीकी सगीत मे प्रवेश कर रहा है।

[एडवर्ड मेक्डोवेल का १८ दिसम्बर १८६१ को न्यूयार्क
शहर मे जन्म हुआ। वह २३ जनवरी, १९०८ को स्वर्ग-
वासी हुए।]

एथेलबर्ट नेविन

"बैश मेरे लिये प्रतिदिन की खुराक है।"

जव स्टीफेन फॉस्टर का देहान्त हुआ, उस समय डेढ वर्ष का एक छोटा वालक था जिसका नाम एथेलवर्ट नेविन था। फास्टर ने जिस जगह अपना वचपन विताया था, वही वह वालक वडा हो रहा था। वह स्थान पेन्सिलवेनिया मे पिट्सबर्ग के पडोस मे था। जव फॉस्टर छोटा था, पिट्सवर्ग नदी के किनारे वसा नगर था और वह नगर अव भी प्रमुख मार्गो के समीप है और उसके पश्चिम मे सुदूर जगलो भरा सीमात प्रदेश था। वह नदी के किनारे मल्लाहो के आकर्षक जीवन के सम्पर्क मे आया इसलिये उसे घाट पर काम करने वाले नीग्रो के गीत सुनने को मिले। उसने उन निम्नवर्ग के आदमियो का सगीत सुना जो स्वय गा-वजा कर एक दूसरे का मन वहलाया करते थे। एथेलवर्ट नेविन भी गीतकार वन गया लेकिन उसके गीतो मे ऐसा कुछ भी न था कि फॉस्टर की याद की जाती। उसका सारा जीवन फॉस्टर के जीवन से भिन्न था। उसे सगीत मे ट्रेनिग मिली थी जवकि फॉस्टर इस ट्रेनिग से वचित रहा था लेकिन दोनो ही कलाकार देर से सगीत सीखना प्रारभ कर सके क्योकि उन दिनो में और विशेषकर अमरीका की प्रारभिक जिन्दगी मे माता-पिता यह नही समझते थे कि अपने वच्चो को किस प्रकार सफल सगीतज्ञ वनाये। फॉस्टर ने स्वय अपने मन से गीत लिखे और वे गीत स्वान्त सुखाय लिखे गये। नेविन के गीत उसके जीवन की अनुभूतियाँ थी। उसकी अपने विषयो के प्रति काव्य-कल्पना थी लेकिन उसकी कृतियाँ स्वाभाविक न होने की अपेक्षा अधिक कृत्रिम थी। फिर भी वह अपनी रचनाओ को वास्तविक ही समझता था इसलिये उसने विश्वास से अपनी रचनाओ का प्रणयन किया।

नेविन वडा हो रहा था कि पिट्सवर्ग रेलो का केन्द्र वन गया। इससे

अधमहासागर के किनारे पूर्वी शहर मध्यवर्ती पश्चिमी भाग के साथ-सरल सम्पर्क स्थापित करने लगे। यह दूरी इतनी थी कि फॉस्टर के माता-पिता अपनी सुहागरात मनाने के लिये दो सप्ताह से अधिक समय मे तै कर पाये थे जबकि वे घोडे पर सवार होकर यात्रा पर निकले थे लेकिन अब ऐथलबर्ट नेविन के समय मे यह दूरी रेल से कुछ ही घण्टो मे तै की जा सकती थी। स्टीफेन फॉस्टर ने स्वप्न मे यह कभी नही सोचा कि वह समुद्र पार करके दूर देश की यात्रा करे लेकिन नेविन ने योरुप की कई यात्राएँ की। उसने वही अध्ययन किया। उसके सगीत मे योरुपीय परम्परा का पुट होते हुये भी वह अपने देश के प्रति अधिक झुका हुआ था। उसका लालन-पालन मेक्डोवेल के समान ही हुआ था। मेक्डोवेल उससे एक वर्ष ही बडा था। लेकिन मेक्डोवेल न्यूयार्क मे रहा और जब वह लगभग पन्द्रह वर्ष का हो गया तभी वह विदेश गया इसलिये उन दोनो की तब तक भेट न हो सकी जब तक कि वे वडे न हो गये तथा अच्छे सगीतज्ञ न बन गये। दोनो ही सगीतकार थे और कुशल पियानो-वादक थे। उन दोनो को जिस किसी ने पियानो बजाते सुना, यही कहा, 'मेक्डोवेल के सगीत मे कर्कशता है और नेविन के सगीत मे कविता है।"

नेविन का परिवार मेक्डोवेल और फॉस्टर के परिवार के समान ही था। वे स्काच-आइरिश वश के थे। एथेलवर्ट के पिता को पिट्सबर्ग के बारे मे उस समय की स्थिति पता थी जब वहाँ जेफरसन कालेज मे पढा करता था जब स्टीफेन फॉस्टर वहाँ गया था। लेकिन एक सप्ताह भी न हुआ कि स्टीफेन ने वह स्थान छोड दिया। बाद मे मिस्टर नेविन ने स्टीफेन फॉस्टर और नीग्रो गायको के बारे मे एक लेख लिखा। एथेलवर्ट की माँ मे सौदर्य और सस्कृति की विशेष भावना थी। जब वे छोटी थी, तब उनके लिये सुदूर पूर्व से एलीगेनी पहाडियों को पार करके घोडे की पीठ पर लादकर एक वडा पियानो लाया गया था। उन्हे सगीत वहुत पसन्द था।

नेविन का घर "वाइन-एकर" कहलाता था। नेविन पिट्सवर्ग के दक्षिण मे लगभग पन्द्रह मील दूर ओहियो नदी के किनारे सेविक्ले के समीप एजवर्थ

मे **पैदा** हुआ था। उसका घर इतना वडा और अव्यवस्थित था जैसे कि वह घर वच्चो के खेलने के लिये ही हो। उस घर मे कई वच्चे खेला करते थे क्योकि नेविन के परिवार मे आठ वच्चे थे और एथिलवर्ट पाँचवाँ वच्चा था।

वह उस समय पैदा हुआ जब गृह-युद्ध हो रहा था और उसने उन लोक-प्रिय गीतो को सुना जो उसके वचपन से ही गाये जा रहे थे। जब वह तीन वर्ष का हुआ तो वह ये गीत गा सकता था **टेंटिग आन दी ओल्ड कैम्प ग्राउंड** और **मार्चिग थ्रू जार्जिया**। जब वह पाँच वर्ष का हुआ तो वह पियानो की धुन के साथ-साथ गीत गा लेता था। उस समय भी वह सगीत सीखने के लिये उत्सुक रहता था। जब वह यह देखता कि उसके बडे चचेरे भाई सगीत के पाठो को शुरू कर रहे है तो वह कुछ सगीत के पृष्ठ लपेट लेता और अपनी वगल मे दवाकर घर के वाहर चला जाता। यदि उससे यह पूछा जाता "कहाँ जा रहे हो ?" वह उत्तर देता, "ओह ! मुझे जाना चाहिये और अपने साथ सगीत के पाठ भी ले जाना है।" उस वर्ष क्रिसमस से पहिले रात को उसके पिता अपनी जेव मे रखकर एक म्यूजिक वाक्स लाये। उन्होने उस छोटे वच्चे को अपने घुटनो पर बिठाया और क्रिसमस की पहली कहानी सुनाई। वे कभी-कभी अपनी जेव के म्यूजिक वाक्स के तार छेड देते जिससे आकाश मे मधुर ध्वनि उठा करती और इस प्रकार वे उस कहानी को और अधिक प्रभावकारी बना देते। वह लडका इस वात से भावावेश हो उठता और उसे यह विश्वास हो जाता कि वह सगीत की ध्वनि सचमुच स्वर्ग से ही आ रही है।

एथेलवर्ट को लडको के खेल-कूद कभी अच्छे न लगे, उसे लडकियो के साथ खेलना पसन्द था। वह इस वात से वहुत प्रसन्न होता था कि उसे वेसबॉल के खेल मे पानी पिलाने का स्थान दिया गया है। वह इसे एक सम्मान समझता था। शायद उसकी यह भावना ठीक ही थी। अक्सर यह घटना होती थी कि यदि उसे गेद के खेल मे शामिल भी कर लिया जाता तो वह अपना वल्ला जमीन पर फेक कर घर भाग जाता और वहाँ अपने पियानो को वजाने लगता। उससे यह पूछा जाता, "ऐसा क्यो किया ?" वह उत्तर दे

देता, "मैंने अभी कुछ ऐसा सोचा है जिसे पियानो पर बजाकर देखना चाहता था।"

जब वह आठ वर्ष का हुआ तो उसने अपने अध्यापक से पियानो के पाठ सीखने शुरु किये। वह बचपन से ही अधीर और स्वाभिमानी स्वभाव का था। उसकी नर्स भी इस आदत को दूर करने मे सहायक सिद्ध न हो सकी। वह उससे बार-बार छोटे-छोटे गीत ही गाने के लिये कह पाती थी या उसे नचाती थी। उसने सगीत सीखना प्रारभ कर दिया और कुछ समय बाद वह अपनी मेलोडी की रचना भी करने लगा। उसने अपनी पहिली रचना अपनी छोटी बहिन के लिये लिखी थी और उसी के नाम से उस रचना का शीर्षक था **लिलियन पोल्का**। उसने लिफाफे के ऊपर लिख दिया था

बाई बर्टी नेविन

एजेड इलेविन

उसका पहिला स्कूल एजवर्थ मे था, वहाँ एपिसकोपल चर्च का रेक्टर स्कूल मास्टर भी था और चर्च मे ही स्कूल लगा करता था। बर्टी के कई नेविन चचेरे भाई उस स्कूल मे विद्यार्थी थे। वास्तव मे उस नगर मे नेविन परिवारो की सख्या अधिक थी कि उस कम्युनिटी के लिये यह बात मजाक बन गई थी कि चर्च मे जाने वाले लोग अपनी प्रार्थनाओ मे यह भ्रम कर बैठते थे और कह देते थे, "हमारे पिता नेविन है।"

बर्टी की स्पष्ट और कोमल तीव्र स्वर की आवाज थी तथा वह नेविन आक्टीटे और गीनाड क्लब के कन्सर्ट मे गाया करता था। जिस वर्ष उसने अपनी पहिली रचना की थी, उसने उसी वर्ष उसे सार्वजनिक कन्सर्ट मे प्रस्तुत किया था। वह कसर्ट वेगनर-लीग का था जिसपर **टेनहासर मार्च** प्रस्तुत किया गया।

जब वह पन्द्रह वर्ष का था तब उसके माता-पिता उसे और उसकी बहिन को योरुप की यात्रा के लिये ले गये। बर्टी को ड्रेसडेन मे सगीत के अध्ययन का अवसर मिला और उसे लीपजिग, बर्लिन और वियाना मे सर्वोत्तम सगीत सुनने का अवसर मिला। वे रोम भी गये, वहाँ एपिसकोपल चर्च मे उसका चचेरा भाई नेविन रेक्टर था और बर्टी ने क्वैयर (गिरजो मे उपासना के

समय गाने-बजाने वालो की मण्डली) के साथ गाया। उसने कदाचित उस समय सबसे अधिक गीत गाये जब उसकी आवाज़ बदल रही थी। बाद में उसके गाने की आवाज कभी सशक्त न हो सकी और यह बात उसके लिये निराशाजनक थी। पतझड के मौसम मे नेविन परिवार के लोग 'वाइन एकर' लौट आये और वर्टी ने फ्रेशमेन क्लास मे दाखिला ले लिया जो अब पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय के नाम से प्रसिद्ध है।

लेकिन वह आदत से कालेज के छात्र जैसा न था। वह अपने मित्रो में साथी बने रहने के योग्य था किन्तु उसमे ऐसी क्षमता नही थी कि वह सभी के साथ घुल मिल सके। वह अपने अध्ययन के लिये भी तत्पर नही रहता था। वह स्वय पढकर अध्ययन करना चाहता था और बाद मे वह कई यात्राएँ करके अनुभव एकत्र करने लगा। उसने कालेज मे जो वर्ष बिताया उस वर्ष उसकी सगीत के प्रति सबसे अधिक रुचि थी। उसका फ्रेशमेन वर्ष ही उसके कालेज मे अध्ययन का अन्तिम वर्ष था। उसने पिट्सबर्ग ओरकेस्ट्रा मे चापिन का **ई फ्लेट पोलोनेसे** की धुन बजाई और उसने 'सेविक्ली मिन्स्ट्रेल' मे अभिनय किया। उसी वर्ष उसने गीत भी लिखे जो बाद मे प्रकाशित हुये।

उसने अपने घर मे यह इच्छा व्यक्त की कि वह एक व्यावसायिक सगीतज्ञ बनना चाहता है तो उसके पिता को इस विचार पर आपत्ति हुई। यह ऐसी ही बात है जिसे आपने अन्य सगीतकारो की जीवनियो मे भी सुना है। मिस्टर नेविन का यह विचार था कि सगीत का सीख लेना एक अच्छी कला है किन्तु उसे जीवन-यापन के लिये व्यवसाय नही बनाया जा सकता।

सगीत से धन अर्जित करना कठिन है। उसने सगीतज्ञो और कलाकारो को ऐसा नही समझा कि वे साधारण व्यक्तियो जैसे हो। जो कुछ भी हो, उसके पिता की यह धारणा थी कि यदि वर्टी ने अपने जीवन मे सगीत को आय का साधन बनाया तो वह भूखा रहा करेगा। पिता की इन अकाट्य दलीलो को वर्टी ने स्वीकार कर लिया और उसने एक अच्छा व्यापारी होने का प्रयत्न किया।

कुछ समय तक वह मुद्रण के काम मे लगा रहा क्योंकि उसके दो भाई उस व्यवसाय मे लगे हुए थे। दूकान के सामने एक वडे स्टोर की खिडकी थी और सेविकली परिवार की लडकियाँ जव कभी नगर मे खरीदारी के लिये जाती तो उस खिड़की के पास आकर खडी हो जाया करती थी और वर्टी को काम मे लगे हुए देखा करती थी। लेकिन इन आकर्षणों के वावजूद उसका व्यापार मे मन न लगा। उसकी उस काम में प्रवृत्ति नही थी क्योकि वह काम करते समय सगीत के वारे मे विचार किया करता था। एक रात वह अपने पिता के पास गया। वे अपने घर की लाइब्रेरी मे बैठे हुये थे। उसने उनसे कहा

"मुझे जीवन भर गरीव ही रहने दे लेकिन एक सगीतज्ञ बनने दे।"

कदाचित वर्टी की माँ बर्टी के भविष्य के प्रति पारिवारिक वहस मे वर्टी का ही मूक समर्थन करती थी। आखिरकार उसके पिता ने उसे सगीत सीखने तथा अभ्यास करने की अनुमति दे दी। अब बर्टी की आयु अठारह वर्ष की हो चुकी थी। वास्तव मे उसे यह अवसर कुछ वर्ष पूर्व ही मिल जाना था।

'वाइनएकर' जैसी छोटी जगह मे उसे "पत्र-व्यवहार द्वारा पाठ्यक्रम" के आधार पर ही सगीत-सिद्धान्त अध्ययन करने का अवसर मिला। उसने अपना यह अध्ययन न्यूयार्क मे सगीत सिखाने वाले एक अध्यापक से पत्र-व्यवहार करके पूरा किया। इसी वर्ष उसने एक दूसरी रचना की। वह एक सुन्दर गीत था जिसका शीर्षक था **एपल ब्लासम** उसने यह गीत अपने नाम से नही लिखा वल्कि इस गीत पर अपना 'वुडब्रिज' **उपनाम** दिया।

वहाँ कई सामाजिक कार्यक्रम होते रहते थे। वर्टी को उन मनोविनोद के कार्यक्रमो मे सम्मिलित होने मे आपत्ति न थी। जिन लडकियो के साथ वह वडा हुआ था, वह दूर वोर्डिंग स्कूल मे रहा करती थी लेकिन उनमे से कुछ पिट्सवर्ग मे रहती थी और सप्ताह के अन्त मे प्राय घर वापिस आ जाया करती थी। बसन्त का मौसम था। एक दिन उसकी एक परिचित लडकी अपनी दो सहेलियो के साथ छुट्टी विताने घर आई। वर्टी नेविन भी अपने दो मित्रो के साथ था। वे लडके उन लडकियो से स्टेशन पर ही मिल गये।

उन दिनो मे मोटर गाडियाँ नही थी और लोग पैदल चलना या घूमना-फिरना पसन्द करते थे। उनमे से एक लडके को यह पता था कि अगूर की बेले कही लगी हे और वे वहाँ जाकर उन्हे ढूढना चाहते थे। लडकियो ने सोचा कि यह एक अच्छा खेल रहेगा। उन्होने नदी पार की, वे पहाडी पर चढने लगे और बेलो तक पहुँच गये। वहाँ बेले ही बेले थी। वहाँ इतनी लम्बी रस्सियाँ थी कि उनपर सरक कर घाटी पार की जा सकती थी। लडको ने बहादुरी दिखाकर उस झूले को पहिले प्रयोग किया जिससे वे यह जान सके कि उसपर लडकियो का सरकना सुरक्षित रहेगा या नही। फिर बर्टी और बिली बुड ने यह सोचा कि इस बात मे मजा आयेगा कि वे मिलकर एक साथ झूले। वे उसपर चढ गये, उन्होने एक दूसरे के आमने-सामने अपने मुँह किये और झूले पर ऊँची-ऊँची पेगे भरने लगे। सचमुच यह शानदार खेल था। वे झूले पर घाटी के परे बहुत ऊँचे उठ गये, लडकियाँ उनकी प्रशसा कर रही थी और शेष लडकियाँ तथा लडका उन्हे देख रहे थे। वे चिल्लाकर, खुश होकर नीचे से हाथ हिला रहे थे।

यकायक रस्सी टूट गई। दोनो लडके पत्थर के टुकडो के समान उस छोटी घाटी मे नीचे गिर गये। बर्टी पहिले ऊपर आ गया और बाद मे बिली भी उसके साथ पहुँच गया। सेविकली परिवार की लडकी को उस छुट्टी मे सबको मेहमानेवाज़ी करनी थी। वह बहुत घबरा गई थी लेकिन उसकी सुन्दर सहेली एनीपाल बर्टी के झूले से गिरते समय बेढगे चेहरे को यादकर हँसी से लोट-पोट होने लगी थी। दुर्घटना में केवल बर्टी के टखने मे मोच आई थी। इसी कारण शाम की पार्टी वाइन-एकर मे ही की गई। बर्टी उस पार्टी मे नृत्य के साथ केवल वाद्य-वादन ही कर सका। उसने लोगो से यह कहा कि ऐनीपाल निस्सदेह बहुत सुन्दर लडकी है लेकिन वह बहुत कठोर भी है और उसे ऐसी लडकी जीवन मे दूसरी नही मिली। उस युवक पियानो-वादक के मस्तिष्क मे अभी तक उम हँसी की स्मृति शेष थी जब ऐनीपाल उसके गिर पडने पर हँस उठी थी।

इसके बाद छ महीने बीत गये। पिट्सबर्ग के दूसरी ओर ऐनी-पाल का

घर था और वहाँ बर्टी को शाम को होने वाली नव-वर्ष की पार्टी मे आमंत्रित किया गया। ऐनीपाल के पिता ने एक ट्रेन की व्यवस्था कर दी थी जिससे ऐनीपाल के सभी अतिथि वहाँ सरलता से पहुँच सके। बर्टी नेविन एक विचित्र लडका था, उसे सगीत और फूल अच्छे लगते थे,वह सवेगशील था तथा प्राय घबरा उठता था। ऐनीपाल जिन लडको से परिचित थी, उनसे कही भिन्न बर्टी का स्वभाव था। वह स्वय भी एक 'टॉम बाय' के समान थी। उसे घुडसवारी और घर के बाहर की जिदगी पसन्द थी। यह विचित्र ही बात थी कि उसे बर्टी जैसे लडके की याद बनी रही बात केवल इतनी ही नही है लेकिन जब वह अपने अतिथियो मे अपने ऐसे साथी ढूढने के लिये घूमने लगी जिसके साथ वह नृत्य कर सके, तब उसे बर्टी को ही सहज रूप मे चुन लेने मे अनुपम गौरव महसूस हुआ।

बसन्त और ग्रीष्म ऋतु के शेष समय मे ऐथिलबर्ट पत्र-व्यवहार द्वारा पढाई करता रहा। वह गिरजाघर मे जाकर आरगेन बजाया करता था। पतझड का मौसम था, उसने यह निश्चय किया कि वह अधिक गभीरता से सगीत-शिक्षा प्राप्त करे। बोस्टन उस समय सगीत और सगीतकारो का केन्द्र था, इसलिये बर्टी बोस्टन चला गया। जब वह वहाँ था, ऐनी की पढाई खतम हुई थी। वह अपनी कुछ सहेलियो के साथ आगे शिक्षा प्राप्त करने के लिये विदेश भेज दी गई जिससे कि वह विदेश से अपनी शिक्षा मे विशेषज्ञता हासिल कर सके।

आखिरकार ऐथिलबर्ट ने भी अधिक गभीरता से अपना काम शुरू कर दिया। उसने 'स्केल्स' अभ्यास और 'क्रेमर' के अध्ययन मे अच्छी तरह ज्ञान प्राप्त कर लिया था। उसके पियानो के अध्यापक लीश के शिष्य रह चुके थे। वे नेविन को केवल एक स्केल का अभ्यास करने के लिये कहते और उस पर नेविन की अगुली की एक विशेष गति होती। नेविन प्रतिदिन डेढ घण्टे तक अभ्यास करता। उसने अपनी माँ को लिखा कि कुछ वर्षो पहिले उनने ड्रेसडेन मे कुछ अभ्यास किये थे, वे अभ्यास अब के अभ्यासो की अपेक्षा कही अच्छे थे। जब उसे सगीत रचना के लिये भी एक अध्यापक मिला तब

भी उसका यही विचार रहा। उसे सैद्धान्तिक वातो मे ही इतना अधिक अभ्यास करना पडता था कि वह यह प्राय सोचा करता कि आठ वर्ष पूर्व ही उसने यह सब कुछ क्यो न समाप्त कर लिया। इस वात मे कितना अधिक समय बीत गया कि वह अपने पिता का यह विचार वदल सका कि उसे व्यापारी की अपेक्षा सगीतज्ञ होने मे अधिक प्रसन्नता है। इन वर्षो मे एथिलवर्ट नेविन को अधिक परिश्रम करना पडा। उसे उसी समय इन अभ्यासो मे लगा दिया जाता जब कि उसके मन मे प्रारभ मे ही सीखने की लगन थी। उसे इस प्रकार की शिक्षा देना कदाचित समयानुसार ही न था जबकि उसकी आशाओ पर पानी फिर चुका था और उसका मस्तिष्क इस वात से विमुख हो चुका था कि वह अपने जीवन मे कोई महत्वाकाक्षा पूर्ण करना चाहता है। इस विचारधारा का उसके मन पर ऐसा प्रभाव हुआ कि वह कभी अदम्य उत्साह से अपने काम मे लग जाता था और कभी अधिक निराश होकर यह सोचने लगता था कि क्या वह अपने जीवन मे कभी सफलता प्राप्त कर सकेगा। उसे लगता था कि उसके जीवन का उद्देश्य बहुत ही दूर हो चुका है। उसने घर मे कई वर्ष विताये फिर भी उसे प्राय घर की याद आया करती थी। उसकी माँ उससे अधिक आत्मीयता रखती थी और उसकी माँ की ममता उसे इतना अधिक जकडे हुए थी कि वह अपनी माँ से कभी अलग न हो सका जैसा कि प्राय अधिकाश लडके हो जाते है। वह अपनी माँ को लिखा करता था कि उसे दिन मे अधिक से अधिक समय काम करना है अन्यथा उसके लिये यह सम्भव नही है कि वह उतना काम कर सके जितना कि उसके अध्यापको को उससे आशा थी। उसका हाथ लगातार अभ्यास करते-करते कई वार सुन्न पड जाता था। किन्तु इन सभी वाधाओ का उस पर कोई प्रभाव नही था और वह अपनी माँ को लिखा करता था "चाहे कुछ भी क्यो न हो, वह अपना कार्य नही रोकेगा।

वह वोस्टन मे दूसरा वर्ष काम करने लगा। ऐथलवर्ट ने कुछ छात्रो को सिखाने और वादक के रूप मे अच्छा स्थान प्राप्त करने का प्रयत्न किया जिससे वह अपना व्ययभार उठा सके। लेकिन उसे कुछ भी प्राप्त न हो सका और

वह मन से कभी बहुत प्रसन्न और कभी बहुत निराश हो जाता था। उसने उस समय अपने को संगीतकार की अपेक्षा पियानो-वादक बनना अधिक श्रेयस्कर समझा। उसने लिखा "आह! कितनी निराशा है, मैं लगातार अभ्यास ही करता जाता हूँ—अभ्यास और अभ्यास—यहाँ तक कि अभ्यास करते-करते मुझसे मात हो जाती है और कभी यह सोचता हूँ कि न जाने कितने वर्ष बीत जायेंगे जब मैं कलात्मक ढंग से कुछ बजा सकूंगा।" उसी पत्र में उसने अपनी मां को यह भी लिखा कि उसके अध्यापक ने उसे एक सार्वजनिक कार्यक्रम में पियानो वादन पर बधाई दी है। उसने अपनी संगीत रचनाओं के लिये यह बताया, "मेरे पास बहुत से विचार हैं लेकिन मुझे इस बात के जानने की आवश्यकता है कि मैं इन विचारों को किस प्रकार 'म्यूजिक पेपर' पर अंकित

दोनो अभिन्न मित्र हो गये। उसके लिये वह वर्ष एक महान अवसर था, वह जर्मनी मे सगीत सुनता था, उसका विना किसी अवरोध के अध्ययन चल रहा था और वह जर्मन सीख रहा था। उसने लिखा कि कभी-कभी उसे इतनी अधिक निराशा होती थी कि वह शायद ही किसी को यह सलाह देगा कि वह व्यवसाय के लिये संगीतज्ञ बने।

पार्टियो और ओपेरो का आयोजन होता रहता था। और सारा काम कुल इतना ही नही था। वर्लिन मे नेविन का सामाजिक जीवन सुखद था। उसने वॉल्स और कसर्ट मे भाग लिया। उसके अध्यापक ने उसे अपने साथ वाक्स मे विठाया। यह सीट सम्राट की सीट के वाद होती थी। एथलवर्ट ने अपने परिवार के सदस्यो को लिखा कि उसकी सीट के पास ड्यूक, काउट, काउटेस काफी सख्या मे इकट्ठे हो जाते थे।

वह अपना अध्ययन दूसरे वर्ष भी करता रहा। ग्रीष्म ऋतु मे वह अपने घर गया और दूसरे वर्ष भी अध्ययन के लिये वर्लिन लौट आया। रास्ते मे वह लंदन मे रुका और वहाँ उसने गिल्वर्ट और सुलीवन के **द मिकाडो** का प्रदर्शन देखा। उसने सोचा कि वह प्रदर्शन सचमुच ही वहुत आकर्षक था। दूसरा वर्ष भी उसके लिये सफल वर्ष रहा क्योकि ऐनी और उसकी वहिन भी वहाँ आ गई थी। उस वर्ष क्रिसमस पार्टी मे असली मजा आया। अपने मित्रो के साथ नाचने-गाने के लिये क्रिसमस त्योहार वहुत दिनो से मनाया जाता है और पुराने जर्मनी मे यह त्योहार वहुत ही धूमधाम से होता है। नेविन को यह नही पता लगा कि वह उस क्रिसमस पेड के नीचे कितना सौभाग्यशाली है जहाँ उसने '**ओ टेनेनबाम**' और '**स्टिल नैश**' गीत सुने। उसके वाद सगीत केवल ट्यून तक ही सीमित रह गया और निर्जीव हो गया यद्यपि वह देश सगीत के लिये धनी था। युद्ध और सगीत साथ-साथ विकसित नही होते। जव राष्ट्र की विचारधाराएँ युद्ध मे लग जाती है तव सगीत लोप हो जाता है।

वसत ऋतु मे गर्मी के दिन थे। पिकनिको का आयोजन किया जाता, नदियो के किनारे सैर की जाती और पुराने हीडिलवर्ग तक पहुँचने के लिये यात्राओ के कार्यक्रम वनाये जाते इसलिये नेविन को ऐसा समय भी मिल जाता

कि वह की बोर्ड के सामने अधिक देर तक नही बैठ पाता था। यदि आप नेविन के जीवन की पूरी कहानी पढे तो आप उन दिनो मे जर्मनी के विद्यार्थी जीवन के सम्बन्ध मे रुचिकर वर्णन पायेगे।

जब वह अमरीका लौटकर आया तो उसने पिट्सबर्ग मे सफलतापूर्वक पियानो का कार्यक्रम दिया। उसके बाद के वर्षो मे वह कई कसर्ट मे काम करता रहा और उसने रचनाएँ भी की। जब वह छब्बीस वर्ष का हो गया तब उसकी ऐनी से शादी हो गई। उन्होने मेसाचूसेट्स मे अपना घर बनाया, वे बोस्टन या उसके समीप ही रहे। कभी-कभी वह अध्यापन कार्य भी करता। उसने पियानो के लिये कई गीत और टुकडे लिखे।

उसने योरुप की कई और यात्राएँ की। वह योरुप मे उस समय था जब उसके पियानो से सम्बन्धित रचनाएँ **वाटर सीन्स** के नाम से प्रकाशित हुईं। उन रचनाओ मे से **नारसिसस** इतनी अधिक लोकप्रिय हुई कि सारे ससार मे उसकी ट्यून बजाई जाने लगी। वह एक ऐसी ट्यून थी जो सभी के लिये प्रिय बन गई। उसकी लाखो प्रतियाँ बिक गई। उस ट्यून को ओरकेस्ट्रा, ओरगेन और हर्डी-गर्डी पर बजाया गया। प्रिंस ऑव वेल्स ने स्वय एक बार उस ट्यून को सुनाये जाने का अनुरोध किया। क्लोनडाइक की खानो मे काम करने वालो ने उस ट्यून को अपने माउथ-ओरगन पर बजाया और पियानो सीखने वाला प्रत्येक छात्र उस ट्यून को सीखना चाहता था। इसलिये उस सगीत-कार को कभी आराम नही मिल पाता था। वह प्रत्येक बार सार्वजनिक सभाओ मे वह ट्यून बजाता और उससे सदैव उसी ट्यून के बजाने के लिये आग्रह किया जाता। वह स्वय 'नारसिसस' की ट्यून को बेकार ट्यून कह देता था।

उसके दो बच्चे थे, एक लडका था और एक लडकी थी। वह पेरिस मे अपने रहने के लिये एक घर ढूंढ रहा था जहाँ वह अपने परिवार को भी साथ मे रख सके। उसे एक घर सबसे अधिक पसन्द आया, वह घर उस घर के ऊपर ही था जहाँ रोजा बॉनहियर रहते थे। वे **दी होर्स फयर** के प्रसिद्ध चित्रकार थे। लेकिन नेविन परिवार का वहाँ रह सकना समव न हो सका क्योंकि चित्रकार अपने सिर पर ही पियानो बजाने की ध्वनि न

सह सका। नेविन ने लिखा है, "यदि मुझे माइकिल ऐंजिलो और शेक्सपियर के घर मे स्थान मिले तथा मैं वहाॅ अपना पियानो न वजा सकूं तो मेरे लिये वह घर वेकार ही है।"

जव वह अमरीका मे रहा तो उसने कई कन्सर्ट मे भाग लिया और साथ ही साथ अनेक रचनाएँ की। वोस्टन मे उसका मेक्डोवेल से परिचय हो गया और उन दोनो ने एक कार्यक्रम मे साथ-साथ काम किया लेकिन दोनो मे से कोई भी सगीतज्ञो के किसी ग्रुप मे भी न था। मेक्डोवेल को इसमे इतना सकोच था कि वह किसी ग्रुप मे शामिल न हो सकता था और वोस्टन के सगीतज्ञ नेविन को देखकर नाक-भौ सिकोडने लगे थे क्योकि वे नेविन को कमजोर सगीतज्ञ मानते थे। लेकिन मेक्डोवेल एक ऐसा कलाकार था जो नेविन की प्रशसा करता था और मानता था कि नेविन का सगीतज्ञो मे अपना एक स्थान है। उसने यह महसूस किया कि नेविन ने कभी 'सिम्फनी' की रचनाएँ नही की हैं लेकिन वह "मेलोडी" निकाल सकता है जिनमे नवीनता और प्रवाह होता है। उसने कहा कि **नारसिसस** के ताल-लय-पूर्ण गीत को कभी नही भुलाया जा सकता चाहे "अधिक परिश्रम से तैयार की गई सिम्फनी भुला दी जायँ।"

नेविन कभी वहुत कठोर नही था। वह प्राय यह आवश्यक समझता था कि अपनी आवेशमयी दशा को सभालने के लिये उसे पुरानी दुनियाॅ की शान्ति चाहिये। योरुप का जीवन उसके अनुकूल था, उसे वहाँ अध्ययन करने मे आनन्द आता था और वह वहाॅ ऐसे तरीके मे काम कर लेता था कि वह तरीका अमरीका मे सभव नही था। अमरीका मे उसका सारा समय केवल धन कमाने मे ही लग जाता था। वह अपने परिवार के साथ कुछ समय इटली मे भी रहा। जव उसने गत वार योरुप की यात्रा की थी और वहाँ क्रिसमस के अवसर पर उसकी पत्नी ने उसे अत्यन्त विभोर होकर कसर्ट मे भाग लेते हुये देखा। जैसे ही उसने वजाना शुरू किया, उसकी पत्नी समीप के कमरे मे चली गई। वह यह नहीं जान सका कि वह वहीं है। वह वहुत ही धीमे वजा रहा था और गा रहा था। 'एवरी व्हियर, एवरी व्हियर, क्रिसमस टू नाइट।' उसके

बाद वह 'आशु' कविता मे उलझ गया। वह उस समय ऐसी विचित्र ट्यून वजाने लगा कि उसने इससे पूर्व या इसके बाद ऐसी ट्यून कभी नही वजाई। और जैसे-जैसे वह वजाता गया, उसके स्वप्न साकार हो उठे और वे सभी गीत उस कमरे मे छाया बनकर सजीव हो उठे। वह उन सभी गीतो को साकार देख उठा। वह उनसे मध्यम स्वर मे कह उठा, "लिटिल ब्याय ब्लू यह ट्यून तुम्हारे उपयुक्त है" और फिर वह उस स्थान की ओर देखने लगता जहाँ विकेन और ब्लिकेन तथा नाड साथ-साथ खडे हुये थे, तो वह उनसे कहता: "और यह ट्यून अब आपके लिये है—यह ट्यून आप तीनों के लिये ही है।' एक के बाद दूसरे गीत उसके मस्तिष्क मे आने लगे—वह छोटी बच्ची दिख उठी जिसकी गुडिया टूट गई थी, वह लडका याद आया जो रात मे जग गया था और उसने प्रत्येक का हसकर और नम्र शब्दो मे स्वागत किया।" बाद मे उसके डाक्टर ने बताया कि इस प्रकार की असाधारण कल्पनाएँ केवल कवि के मन मे ही आ सकती है और यह भी कहा जा सकता है कि इन्फ्लुयजा होने के कारण ऐसा हो गया हो।

एथिलबर्ट नेविन ने सगीत की रचना की जिसमे सौदर्य और आकर्षण था और वह उस समय के अनुकूल थी। उसकी 'मेलोडी' मे ट्यून थी। वह एक महान सगीतकार नही था और न उसने कई प्रकार के सगीत अपनाये थे। उसके सगीत की भावनाएँ स्पष्ट थी और उनमे सच्चाई थी। यदि उसकी जीवन-कहानी पढी जाय और उसका सगीत सुना जाय और फिर इर्विग वर्लिन की जीवन-कहानी पढी जाय तो यह वात अविश्वसनीय लगती है कि नेविन गीत का रचियता था क्योकि वर्लिन की यह इच्छा थी कि ससार को अन्य गीतो का रचियता न मानकर उसे उसी गीत का रचियता माना जाये। वह गीत **द रोजेरी** था।

नेविन की आयु पैंतीस वर्ष की थी जव उसने **द रोजरी** गीत लिखा। वह उस समय न्यूयार्क मे रहता था। उसे एक दिन अपनी माँ का पत्र मिला जिसमे एक समाचारपत्र की कतरन थी। वह एक कविता थी जिसका शीर्षक था **द रोजेरी** और उसे रावर्ट केमेरन रोजर्स ने लिखा था। एक मित्र ने

समाचारपत्र से वह कविता काट ली और कुछ वर्ष पूर्व उसकी माँ को दी थी। नेविन को वह कविता कुछ भी करने से एक महीने पूर्व मिल गई थी। फिर एक दिन उसने वह कविता ली, उसे पढा, उसके शब्द याद कर लिये और एक बार ही बैठकर उसे गीतबद्ध कर दिया। वह उसे अपनी पत्नी को उपहार स्वरूप भेट करने के लिये गया और यह लिखकर उसने वह कविता उपहार मे दी

यह एक लघु स्मारिका है, मैं बॉन ड्यू के प्रति आभारी हूँ जिनसे तुम मुझको मिली। तुम्हारे लिये मेरा सम्पूर्ण प्रेम और सद्‌भावना है—

सस्नेह—एथेलवर्ट नेविन

यदि नेविन को किसी के प्रति आत्मीयता हो जाती तो उसके लिये वह अत्यन्त स्वाभाविक रूप से मधुर और सरल शब्दो मे ऐसा सब कुछ लिख देता था। जब वह बच्चा था तब अपनी माँ अथवा बहिन को फूलो का गुच्छा देने के लिये उनके सामने आ उपस्थित होता था।

'द रोजरी' एक ऐसा गीत है जिसकी सबसे अधिक प्रतिया ससार मे बिकी है। यह ऐसा गीत था जिसकी 'टिन पैन एली' की भाषा मे तोड-मोड की आवश्यकता नही थी और यह गीत 'स्वाभाविक' था।

एक लेखक का विचार है कि यदि नेविन ने कुछ भी न लिखा होता और केवल **लिटिल ब्याय ब्लू** ही लिखा होता तो भी उसका सदैव स्मरण किया जाता। उसकी पत्नी ने बताया कि यह गीत रेल-यात्रा मे कई लिफाफो की पुश्त पर लिखा गया। उसने बच्चो के लिये अन्य गीत भी लिखे और उसे 'शिकागो वर्ल्डस फेयर' के लिये गीत लिखने के लिये बुलाया गया। उसने जर्मन और फ्रेंच कविताओ को सगीत-बद्ध किया तथा कुछ क्रिसमस केरल लिखे। उसके निधन के बाद उसका दूसरा गीत **माइटी लेक, ए रोज** प्रकाशित हुआ और यह गीत भी इतना लोकप्रिय हुआ कि इसकी हजारो प्रतियाँ बिक गई।

वेलेनटाइन का दिन था। नेविन के जीवन का वह अन्तिम वर्ष था। वह उस समय केन्केटीकट के न्यूहैवन मे रहता था। वहाँ उसने अपनी छोटी

लडकी के लिये एक पार्टी का आयोजन किया। उसका लड़का स्कूल मे था। उस समय उसकी पत्नी भी नही थी, इसलिये उसी ने अपने घर को रिवन और फूलो से सजाया और छोटे-नन्हे मुन्ने अतिथियो को वुलाने के लिये गाडियाँ भेजी जिन्हे वह अपनी लडकी की पार्टी के लिये वुलाना चाहता था। उसने उनका मनोरजन किया, उसने नृत्यो के लिये ट्यून वजाई और खेलो मे साथ दिया तथा उन वच्चो के लिये गीत गाये। जव एक पडोसी ने अन्दर झाका तो वह हँसा और उससे कहने लगा, "मै अपने जीवन मे सवसे अच्छा समय विता रहा हूँ।"

यह उसकी अन्तिम पार्टी थी। उसके तीन दिन वाद उसका स्वर्गवास हो गया। उसके जीवन मे उसके गीत इतना धन एकत्र नही कर सके कि वह अपना व्यय पूरा कर पाता। उसके वाद **द रोजेरी** गीत मे प्रचुर धन इकट्ठा हुआ।

[ऐथिलवर्ट नेविन का जन्म २६ नवम्वर, १८६२ को पेन्सिल-वेनिया के पिट्सवर्ग के समीप वाइन एकर मे हुआ था। और १७ फरवरी १९०१ को कन्केटिकट के न्यूहैवन मे उसका स्वर्गवास हो गया।]

अन्तराल (इएटल्यूड)

लोकप्रिय संगीत में बदलने वाले फैशन

एक नये प्रकार के संगीत का परिवर्तन हमे इस बात से सचेत करता है कि हम सभी के जीवन मे कितने अधिक संकट आये। सगीत की विधयों (मोड) में कदापि अन्तर नहीं आता जब तक कि राजनीतिक और सामाजिक परिपाटी मे परिवर्तन न हो जाय.....

—प्लेटो"

प्राचीन काल के गीतकारो (वार्ड) के समय से, दिन प्रतिदिन की घटनाओ, इतिहास के तथ्यो, महापुरुषो के कारनामो का वर्णन गीतो और वेलेडो मे होता आया है। सभी राष्ट्रो के अपने वेलेड और लोकप्रिय गीत होते है लेकिन सयुक्त राज्य अमरीका जैसे नये देश मे नवीन राजनीतिक विचारो के अनुसार जीवन का नया मार्ग प्रशस्त हुआ जिसके कारण लोकप्रिय सगीत मे आश्चर्य-जनक परिवर्तन हुये।

हम यह जानते हे कि दक्षिणी आवादी के क्षेत्रो मे नीग्रो को धार्मिक गीत सुनाये गये। फलस्वरूप 'स्प्रिचुअल' की रचना होने लगी। अमरीकी नीग्रो और मूल निवासियो के सगीत से गोरो पर जो असर हुआ उसकी अनुभूतियो के फलस्वरूप मिनिस्ट्रल शो के गीतो की रचना की गई। अमरीकी नीग्रो के धार्मिक गीतो (स्प्रिचुअलस) के वाद नीग्रो के एक अन्य प्रकार के सगीत का जन्म हुआ जिसे "व्लूज़" कहा जाता है। मिन्स्ट्रिल शो, गीत और भावनात्मक वेलेड से एक नवीन डास टाइम का विकास हुआ जिसे रैगटाइम कहते हैं।

सयुक्त राज्य अमरीका मे लोकप्रिय सगीत का विकास हो रहा था, उन महत्वपूर्ण वर्षो मे केन्द्रीय योरुप मे ब्रह्मस नामक एक सगीतकार रहता था जो अमरीकी रैगटाइम मे अधिक रुचि रखने लगा और उसने अपने एक मित्र को यह लिखा कि वह उस सगीत का उपयोग करना चाहता है। परन्तु वह

कुछ वर्षो वाद स्वर्गवासी हो गया। इन्ही वर्षो में कभी वोहेमियन सगीतकार ड्वेरक सयुक्त राज्य अमरीका मे रह रहा था और उसकी नीग्रो लोगो के सगीत मे विशेष रुचि हो गई। इन वर्षो मे कई अमरीकी सगीतकार या तो वढ रहे थे या केवल जन्म ही ले पाये थे।

किसी व्यक्ति ने एक वार नवीन रैगटाइम के वारे मे कहा "रैगटाइम मे एक ऐसी आरोह-अवरोह-पूर्ण गति है जिसे वरवस सुनने को कान आतुर हो जाते है।" इस "स्विग" पर वरावर जोर दिया जाना था और इसका विकास करना था। नीग्रो-रिद्म (लय) से लोकप्रिय सगीत मे एक नया टेम्पो पैदा हुआ और इसके साथ ही नर्वस रिद्म की भी उत्पत्ति हुई जिसमे स्वराघात परिवर्तन (सिनकोपेशन) के पुशिग्ज और उसी के वार-वार आने वाले अस्थायी विराम (हाल्टिग्स) रहते थे। स्वराघात परिवर्तन (सिनकोपेशन) स्वय नई वात नही थी। जिप्मी सगीत, हगरी देश के गीतो और नृत्यो तथा प्राचीन स्पेन के सगीत मे इसका अभाव न था। लेकिन रैगटाइम मे स्वराघात परि-वर्तन (सिनकोपेशन) की अलग ही लज्जत थी।

रैगटाइम एक प्रिय धुन वन गई। फिर एक सरल स्टेप के साथ रैगटाइम का वजाना एक सफलता मानी जाने लगी। इसके पाठ कम खर्चे से सीखे जा सकते थे। जिन लोगो के पास अपने पियानो थे, वे रैगटाइम आसानी से सीख लेते थे। १८९० से रैगटाइम के प्रति उत्तरोत्तर लोकप्रियता वढती गई जिससे सारे देश मे वाद्य-वादन की कुशलता वढने के लिये प्रोत्साहन मिला। रैगटाइम लोगो के लिए एक ऐसा सम्यक सगीत था जिससे लोग मतवाले होकर नाचने लगते थे। यदि लोगो के पास अपने वाद्य-यन्त्र होते तो उनको कम खर्चे पर सगीत सिखाया जा सकता था। और इससे राष्ट्र मे 'टिन पैन एली' नामक महान उद्योग का विकास होने लगा।

न्यूयार्क की अट्ठाईसवी स्ट्रीट मे छटी एवेन्यू और व्रोडवे के वीच छोटे व्लाक मे लोकप्रिय सगीत के प्रकाशको के कई कार्यालय खुल गये। इन कार्या-लयो मे छोटे-छोटे कमरे थे लेकिन उनमे वहुत कम छोटे "टिन पैन" पियानो के अतिरिक्त साज-सामान न था। उस व्लाक मे कई दूकाने थी जहाँ पियानो

के टुनटुनाने की आवाज प्रात काल से रात तक आती रहती थी। इस सेक्शन का नाम ही "टिन पैन ऐली" पड गया। इस सेक्शन का यह नारा था—'सब कुछ देकर गीत खरीदो।' प्रारम से ही "टिन-पैन ऐली" की उन्नति होने लगी। उसकी न्यूयार्क शहर मे ख्याति हो गई और साथ-ही-साथ उसमे अच्छे किस्म के "बातचीत करने के कक्ष" भी बन गये। इर्विंग बर्लिन अपने बचपन के दिनो मे इन्ही अंधेरे कमरो मे से एक कमरे की पतली सीढियो पर एक अगुली रगडता हुआ चढा करता था और उससे निकली ट्यून उसके मस्तिष्क मे छा गई थी। जार्ज जर्शविन टिन-पैन ऐली मे 'प्लगर' का काम करते थे। अब भी मिस्टर बर्लिन के कार्यालय मे बहुत जगह है और वहाँ से लोकप्रिय गीत प्रकाशित होते है। कम्बल और तस्वीरे कमरो की शोभा बढाती है। टिन-पैन एली मे सुकोमल वस्तुओ का सग्रह होता जा रहा है।

प्रथम विश्व महायुद्ध से पहिले और बाद मे रेगटाइम जाज सगीत हो गया और अब दूसरे प्रकार की सगीत-शैली को लोकप्रियता मिल गई। समय ऐसा आया कि वाद्य-वादन ने जाज़ नामक सगीत शैली को जन्म दिया जिसे "स्विग म्यूजिक" कहा जाने लगा। इस शैली से वाद्य-वादको ने एक ही गीत (थीम) को कई प्रकार बजाने का प्रयत्न किया अथवा उसके साथ की मेलो-डीज को विविध प्रकार से प्रस्तुत किया। ये मेलोडीज़ (मधुर गीत) एक प्रकार से लोकप्रिय 'काउटर प्वाइट' ही थे।

रैंगटाइम के प्रारम के दिनो मे **दी रैंगटाइम इन्स्ट्रक्टर** पुस्तक प्रकाशित हुई। इस पुस्तक को बेन हॉनी ने लिखा था। वह रैंगटाइम का प्रमुख सगीत-कार था और लोइस बिले का पियानोवादक था। न्यूयार्क के लोग उसे बहुत पसन्द करते थे। वह अपने प्रदर्शनो मे "स्केल की रैंगिग करके" अधिक आवेश उत्पन्न कर देता था। उसने मेन्डेलसोन्स का '**स्प्रिंग सांग**" और **रूबिनस्टीन** के **मेलोडी इन एफ** मे रेग का पुट दिया। वह विशेष प्रकार का मुख्य सगीतज्ञ भी था और उसके लिये "टिन पैन एली" के अरेजर (व्यवस्थापक) के रूप मे ऐसा होना ही था।

इर्विंग बर्लिन ने एक अगुली से ही अपने गीतो की ट्यून सीखी क्योंकि

उसे पियानो बजाना नही आता था। लेकिन ऐसे भी अनेक लोग थे जो दसों अगुलियो से पियानो बजा सकते थे और वे जानते थे कि कागज पर किस प्रकार सगीत को लिपिबद्ध किया जाय लेकिन उनमे से किसी ने एक ट्यून भी नही सोची थी। ये लोग अरेजर (व्यवस्थापक) थे। वे सगीतज्ञ से कहा करते, "आप अपनी ट्यून गुनगुनाएँ।" फिर वे उस ट्यून को कागज पर लिख देते थे। उनकी हार्मोनी बता देते थे और सगत कर देते थे। एक सरल ट्यून से लेकर हार्मोनिक एकाम्पनीमेण्ट तैयार करने या एक क्लासिकल मेलोडी से लेकर "रेग्ड" हार्मोनी और रिद्म के प्रस्तुत करने के अलावा अरेजर्स (व्यवस्थापको) का यह भी काम था कि वे नये वाद्य-यत्रो के काम्बीनेशन (समूह) तैयार करे। हैण्डी ने सेक्साफोन वाद्य-यत्र के प्रयोग को वढावा दिया। इस वाद्य-यत्र की ब्लू ट्यून ऐसे समय मे अधिक उपयोग मे आई जब नृत्य के ओरकेस्ट्रा मे विक्टर हर्बर्ट के रोमाटिक स्टाइल के वायलिन का प्रयोग कम होने लगा था और उसके स्थान पर जाज सगीत के लिये अपेक्षित 'विण्ड्स' (मुँह से बजाये जाने वाले वाद्य-यत्र) और 'परकुशन्स' (थपकी देकर बजाये जाने वाले वाद्य-यत्र) का प्रयोग किया जाने लगा था।

कुछ सगीतकार अपने गीत स्वय लिखते है, अन्य गीतकार गीतो की ट्यून लिखते है और ट्यून लिखने वालो के लिये अन्य व्यक्ति गीत लिखा करते है। गीत लिखने वालो को लिरिसिस्ट्स (गीतकार) कहते है। इरा जर्शविन ने अपने भाई की रचनाओ के लिये कई गीत लिखे। जार्ज जर्शविन ने दो पियानो के लिये **रेप्सोडी इन ब्लू** लिखा और अरेजर (व्यवस्थापक) 'फर्डे ग्रोफे' ने ओरकेस्ट्रा सगीत की रचना की जो उसकी तात्कालिक लोकप्रियता के लिये उतनी ही आवश्यक थी। फर्डे ग्रोफे के पितामह पियानोवादक थे और वे मेट्रोपालिटन ओपेरा हाऊस के ओरकेस्ट्रा मे विक्टर हर्बर्ट के साथ वाद्य-यत्र बजाते रहे।

टिन पैन ऐली ने अपने विशेप प्रकार के सगीत के लिये सभी कुछ प्रबध किया, वहाँ से मेलोडी गीत और साज-सामान मिलने लगा। लेकिन उसमे कोई नियत्रण न था। मेलोडी की लगातार "रैगिग" "जैजिग" और "होटिंग अप" से

उनकी शीघ्र ही क्षति होने लगी। ऐसा प्रतीत होता था 'जाज़' सगीत के साधारण प्रतिभा सम्पन्न लेखक भी इतनी रचनाएँ कर देते थे कि उन्हें बहुत अधिक मेलोडीज (मधुर गीतो) की आवश्यकता पडती थी। फिर उन्हे शास्त्रीय सगीत (क्लासिकल म्यूज़िक) की विषय-वस्तु लेने मे कोई हिचक न थी जिसे तोड-मरोड कर हास्यास्पद ध्वनियो मे बदल दिया करते थे। यो शास्त्रीय सगीत को बडे लोगो की चीज़ (**हाई ब्रो**) कहा करते थे। जाज़ घबरा देने वाला सगीत जिससे 'नर्वस' युग का बोध होता है और प्राय. असस्कृत रुचि वालो का यह निरतर प्रयास रहता है कि किसी चीज के महत्व को स्वीकार करे या शोरगुल करके उसकी आवाज को दबा दे।

(जो कुछ भी हो, **सांस्कृतिक** और **असांस्कृतिक** रुचि की बात को छोड देना ही उचित है क्योकि इन दोनो से एक प्रकार के विरोध की भावना पैदा होती है। यही ठीक होगा कि इन शब्दो को केवल उन्ही अर्थो मे प्रयोग मे लाया जाय जिनके लिये ये शब्द बने हैं और इन शब्दो को "कृतज्ञ (**सिसियर**)" और "कृतघ्न (**इंसिसियर**)" अथवा "शिक्षित (**एज्यूकेटेड**)" और "अशिक्षित (**अनएज्यूकेटेड**)" कहेगे।)

अमरीका मे पहिले-पहल सगीत कला की अपेक्षा एक उद्योग के रूप मे विकसित हुआ इसलिये लोकप्रिय सगीत की पर्याप्त वृद्धि हुई। कुछ ही पीढियो मे अमरीका की सस्थाओ और व्यक्तियो ने गभीर सगीतकारो को प्रोत्साहित करने के लिये धन लगाया है। अब तो सभी बाते अनिश्चित सी हैं। कई गभीर सगीतकार भी जाज़ सगीत और रिद्म को प्रयोग मे लाने लगे है।

सभी कलाओ के समान सगीत मे भी सर्वोत्तम सगीत उसी समय तक जीवित रहता है जब तक लोग उसे सुनें और समझें। यही कारण है कि सर्वोत्तम सगीत को गभीर सगीत भी कह देते है। यह अजीब बात है कि ऐसे सगीत के लिये कोई अन्य शब्द नही है क्योकि **गंभीर** शब्द भ्रामक है। इससे यह प्रतीत होता है कि हम सभी अपना मुह लटकाले, बिल्कुल भी न हँसे। बात यह नही है। कुछ **गंभीर** सगीत इतना प्रखर और प्रसन्नतादायक होता है जैसे कि सूर्य की किरन हो जिसमे मन्द मुस्कान हो और इतना हल्का हो जैसे कि

इक्षुगन्वा हो । इसे अमर सगीत भी कह सकते है और इसको लोकप्रिय सगीत भी मानते है । यह सगीत तभी तक चलता है जब तक कि फैशन मे परिवर्तन न हो । सगीत, कपडो ,अथवा मोटर-गाडियो मे जो कुछ भी लोकप्रिय होता है, वह केवल क्षण का आकर्षण ही है । जब महिलाएँ 'बस्टलेस' कपडे पहिना करती थी और घोडो की गाडियो मे सैर किया करती थी । उस समय लोकप्रिय सगीत मोटर-गाडियो और नये-नये स्पोर्ट्स के कपडो के युग मे लोकप्रिय सगीत से कही भिन्न सगीत था ।

'वेराइटी शो', फ्रासीसी नाट्य सगीत तथा आधुनिक सगीत कामेडी से पूर्व मिन्स्ट्रिल शो हुआ करते थे। उनका सगीत जाज़ के सगीत का जनक ही होगा। चित्रकला, मूर्तिकला और साहित्य मे जाज़ भावना का सर्वप्रथम उदय योरुप मे हुआ। लेकिन अमरीका ने उसका नामकरण किया जब वहाँ सगीत मे जाज की भावना आने लगी थी। मोज़ार्ट के समय व्यजन-ध्वनियो की हार्मोनी को संगीत कहते थे। आज बेसुरे स्वर और एकसी आवाजो को भी सगीत कह देते है ।

विलियम सी हैण्डी

"बिना परिश्रम के उत्कृष्टता नहीं आती"

—मेक गुफेज फिफ्थ रीडर

अभी सौ वर्ष भी नही हुये है, सयुक्त राज्य अमरीका मे गोरो ने मल निवासियो को गुलाम के रूप मे स्वीकार किया है। कुछ गोरे अपने गुलामो के प्रति उदार थे और कुछ मालिक उनके प्रति बहुत कठोर। कभी-कभी कोई गोरा अपने गुलाम को स्वतत्र भी कर देता है। क्रिस्टोफर ब्रीवर एक नीग्रो था। उसे स्वतत्रता दे दी गई लेकिन उसे अपने मालिक का व्यवहार बहुत अच्छा लगता था इसलिये उसने अपनी इच्छा से अपने मालिक के यहाँ विश्वास-पात्र नौकर के रूप मे काम करना चाहा। उसने अपना "धर्म परिवर्तित' किया और इससे पूर्व वह नृत्य के समय फिडिल बजाया करता था। उसके मालिक ने उसे अनुमति दे दी थी कि उसे फिडिल बजाकर जो कुछ भी आय हो, वह धन अपने पास ही रख ले। उन दिनो मे यदि किसी नीग्रो को गिरजाघर मे जाने की अनुमति मिल जाती या वह अपना धर्म बदल पाते तो वे यह महसूस किया करते कि नृत्य-सगीत और अन्य वाद्य-यत्र ठीक नही है। क्रिस्टो-फर ब्रीवर ने गिरजाघर जाना प्रारभ कर दिया और उसके बाद उसने अपनी फिडिल को छोड दिया और उसके बाद उसे न बजाया। उसकी पुत्री ऐलिज़ा-बेथ को गिटार बजाना अच्छा लगता था लेकिन वह गिरजाघर की सदस्या थी, इसलिये उसे गिटार बजाने की कभी अनुमति न मिली।

विलियम वाइज़ हैण्डी नाम का एक अन्य गुलाम भी था लेकिन वह क्रिस्टोफर ब्रीवर के समान सौभाग्यशील नही था। वह और उसके दो भाई स्वतत्र होना चाहते थे इसलिये वे अपने मालिक को छोड कर भाग गये। उनका पीछा किया गया। उसके दोनो भाई भाग गये लेकिन विलियम पकड लिया गया और उसे फिर गुलाम के रूप मे बेच दिया गया और वह अब सुदूर दक्षिण

में ले जाया गया। वह एलाबामा मे दूसरी बार भागना चाहता था कि उसके गोली मारी गई लेकिन वह बच गया। उसने अपने पुत्रो मे से पुत्र हेन्सन को अपनी आँखों के सामने बिकते देखा और उसका पुत्र आरकन्साज़ मे बेच दिया गया। वह इस दु ख को सहन करने के लिये ही जीवित रह गया था। हेन्सन के बारे में फिर उसे कोई समाचार नही मिला।

गुलामी के कारण मूल निवासियो के परिवार प्राय. तितर-बितर हो जाया करते थे। माता-पिता अपने बच्चे खो बैठते थे, भाई और बहिन एक-दूसरे से अलग कर दिये जाते थे और उन्हे अलग-अलग बेच दिया जाता था। इन लोगो के इतिहास की सबसे महान घटना है कि दक्षिण के जनरल ली ने उत्तर के जनरल ग्राण्ट के साथ आत्म-समर्पण कर दिया और इस कार्य से उनकी स्वतत्रता के प्रारम होने का सकेत मिलता है।

विलियम हैण्डी ने गुलाम होने पर भी काम किया और अध्ययन करते रहे। उन्होने एलबामा के फ्लोरेस मे एक जगह लट्ठे का केबिन बना लिया जिसे 'हैण्डीज़ हिल' के नाम से पुकारा जाने लगा। केबिन के रसोई-घर मे बहुत मिट्टी थी लेकिन उन्होने मिट्टी कूट-पीट कर पक्का फर्श जैसा फर्श तैयार कर लिया। उस स्थान के गोरे उनका आदर करते थे और जब मूल-निवासियो को स्वतत्र किया गया तो उन्हे सबसे पहिली बार फ्लोरेस मे अपनी सम्पत्ति का मालिक बना रहने दिया। उसके बाद वे मेथोडिस्ट मिनिस्टर हो गये। उनका पुत्र चार्ल्स भी एक मिनिस्टर था और उसने एलिज़ाबेथ ब्रीवर से विवाह किया। चार्ल्स ने अपनी पत्नी और बच्चो के लिये अच्छा घर बना लिया। उनके लडके विलियम क्रिस्टोफर का नाम अपने पितामह के नाम पर रखा गया और उसका 'लाग केबिन' मे जन्म हुआ था। उन्होने बताया कि वह "आत्म समर्पण" के आठ वर्ष बाद पैदा हुआ था। वह बडा हो गया और उसके लिये स्वाभाविक रूप से यह सोचा जाने लगा कि वह भी चर्च का मिनि-स्टर होगा लेकिन वह अपने परिवार के अनुमान के विपरीत मिनिस्टर के स्थान पर एक सगीतज्ञ बना। यही वह लडका था जिसने 'ब्लूज़' नाम का

सगीत लिखा। कदाचित यह सरल मार्ग नही था क्योकि इम जीवन को मफल बनाने मे अधिक कठिनाई और सघर्ष था।

उस छोटे लडके के माता-पिता कुछ ही समय पूर्व गुलामी से आज़ाद हुये थे। वह लडका फिर भो स्वतत्र न था कि सगीत की सभी आवश्यक सुविधाओ का उपयोग कर सके। लेकिन वह बचपन से ही सगीत पसन्द करता था और प्रकृति मे उसे जो भी स्वर सुनने को मिलते, उनकी वह बडे चाव से प्रशसा किया करता था। उन स्वरो से उसकी मन स्थिति बदलती रहती थी। वह रात मे उल्लू, चमगादड और व्हिप-पुअर-विल्स (अबाकील जाति का एक अमरीकी पक्षी) की आवाजे सुनकर उदास हो जाता था। उमे यह पता लगा कि यदि आग मे कोई सलाख गर्म करने के लिये रख दी जाय तो घर के पडोस से उल्लू उड जायेगे। इम प्रकार वह आग मे 'पोकर' रखकर उल्लू भगाने मे सफल हुआ। जब वह छ वर्ष का था, वह नीग्रो के फ्लोरेस डिस्ट्रिक्ट स्कूल मे दाखिल हुआ और उसने वहाँ शीघ्र ही सगीत का अध्ययन करना सीखना शुरू कर दिया।

जब वह बच्चा था, तभी से विलियम ने गिरजाघर के धार्मिक गीतो (स्प्रिचुअल्स) की स्वाभाविक धुन सुनी थी। जब वह कुछ बडा हो गया तब वह अपने पिता को देखा करता था कि यदि किसी ने **मार्च एलोग, आई'ल सी यू ऑन द जजमेट डे** गीत शुरू किया कि उसका पिता चिल्ला उठता था। जब वह अपने पिता से यह पूछता कि वे क्यो चिल्लाते है तो उसे यह उत्तर मिलता कि वह यही गीत है जिसे गुलामो ने उस समय गाया था जब गोरो ने उसके भाई हेन्सन को बेचा था।"

विलियम के स्कूल के अध्यापक सगीतज्ञो को निकम्मा और बेकार समझते थे, फिर भी वे स्वय सगीत बहुत पसन्द करते थे। अधिकाश स्कूलो मे सुबह का कुछ समय प्रार्थना और स्क्रिपचर के पढने के लिये नियत था और यही समय विलियम के स्कूल मे गायन तथा सगीत सिखाने के काम मे लाया जाता था। छात्रो को **डू-रे-मी** स्वरो मे 'नोट' पढाये जाते थे। स्कूल मे कोई पियानो या ओरगेन नही था लेकिन अध्यापक महोदय 'ए' निशान पर गढी 'ट्यूनिग

पार्क' काम मे लाते थे। इनके साथ छात्र ला अलाप उठते और उस स्थान मे वे उस गीत की ट्यून पकडते जिसे वे गाना चाहते थे। वे अपने बाँये हाथ मे पुस्तकें पकडते और दाये हाथ से थपकी देकर ताल बाधते और वे इस प्रकार गास्पेल हिम्स तथा अपनी पुस्तको के गीत गाते। वे प्रतिवर्ष बराबर कठिन पुस्तको से गीत गाते और फिर वेगनर, विजेट और वर्डी से उद्धृत गीत गाया करते थे। उन्हें कुछ समय के लिये सगीत की शिक्षा दी जाती थी जिससे उनके कान सुनने मे सध जायँ और वह हार्मोनी (लय-गति) समझ सके। विलियम के जीवन मे स्कूल का यह समय उसके लिये सबसे अच्छा समय था और जैसे ही उसने सगीत पढना सीख लिया, वह बडी उत्सुकता से सगीत को कागज पर लिखने भी लगा।

वह ऐसी जाति मे पैदा हुआ था कि उसे रिद्म सीखने की आवश्यकता नही थी क्योकि वह स्वभाव से ही उसे जानता था। उसके पितामह ग्रीवर ने यह समझाया कि वह यह अपने 'सिनफुल' दिनो (गुलामी के समय) मे नृत्य के लिये फिडिल बजाया करते थे और सगीतकार विशेष रिद्म को प्रयोग करके सगीत को किस प्रकार अधिक आवेशपूर्ण बनाया करते थे। ऐसे अवसर पर एक लडका फिडिल बजाने वाले के पीछे बुनाई की दो सलाइयाँ लेकर खडा हो जाता था।

प्रकार वह वास्तव मे सिर से पैर तक सगीत मे विभोर होकर अपना सगीत प्रस्तुत करता था। मिस्टर हैण्डी ने यह कहा, "मुझे अच्छी तरह याद है कि उन दिनो मे उत्सवो मे भाग लेने वालो और उनके आयोजकों को जिटरबग्स जैसे 'ब्रेक डाउन' या "स्ववैरडास" के समय फिडिल बजाते समय उतना ही आनद आता था जितना कि... आज 'स्विग बैंड' मे आनन्द आता है।"

जब विलियम लडका ही था तब उसे "अकल व्हिट" के साथ वाद्य-वादन की अनुमति न दी गई। उसे यह अनुमति बाद मे मिली। उसका एक सगा चाचा ऐसा भी था जो इतना कठोर अनुशासन करता था कि अपने बच्चो को सीटी भी नही बजाने देता था। जब विलियम की दादी ने यह कहा कि उसके बडे कान इस बात की निशानी है कि उसमे सगीत के लिये प्रतिभा है, तो वह अधिक प्रसन्न हुआ और उसे अपने परिवार से केवल मात्र यही प्रोत्साहन मिला। जब वह लगभग दस वर्ष का हो गया तो प्रकृति के स्वर और बाहर की आवाजे सुनकर उसके मस्तिष्क मे सगीत के नोट्स (ध्वनियो) की कल्पनाएँ उठने लगी। यहाँ तक कि बैल के रभाने से भी उसके मस्तिष्क पर ऐसा प्रभाव पडा मानो वह आवाज भी सगीत का 'नोट' हो और जब वह बडा हो गया तो उसने इस प्रभाव को अपने **हुकिंग काऊब्लूज** गीत मे व्यक्त किया।

विलियम दो वर्ष का भी न हो पाया था कि उसके बाबा हैण्डी का देहान्त हो गया। वह इस बात को कभी भी नही भूल सकता कि एक गोरे सज्जन ने उससे कहा था, "सनी, यदि तुम अपने बाबा के समान बने तो तुम भी एक महान व्यक्ति बन जाओगे।"

हैण्डी के घर मे भोजन की कमी नही थी लेकिन यदि उसको अपने लिये धन की आवश्यकता होती तो उसे स्वय धन कमाना पडता था। सण्डे स्कूल के लिये एक 'निकल' और चर्च के गीत सग्रह के लिये एक 'डाइम' की जरूरत होती थी। उसने एक बार एक गैलन दूध से बेजमिन फ्रेंकलिन की पुस्तक **पुअर रिचार्ड्स एलमेनेक** की प्रति बदल ली। उसने पुराने कपडे और लोहा खरीदा जिन्हे उसने बेच दिया। वह बेर और फल भी बेचा करता था जिन्हे

जब वह चौदह वर्ष का हो गया, विलियम के मन मे एक तीव्र इच्छा जग उठी। वह गिटार बजाना चाहता था। लेकिन उसे गिटार कहाँ से मिलता ? वह स्वय धन बचाकर गिटार खरीद सकता था। वह सरल काम नही था। वह कभी-कभी किसी सप्ताह मे तीन डालर ही कमा पाता। वह एक डालर अपनी माँ को और दूसरा डालर अपने पिता को देता और तीसरा डालर अपने पास ही रखता था। उसे अपने धन से जरूरत की चीजे भी खरीदनी पडती थी। इस प्रकार उसे एक वर्ष लग जाता और तभी वह किसी-न-किसी प्रकार धन बचाकर गिटार खरीद सकता था।

जब विलियम ने इस वाद्य-यत्र को प्राप्त करने के लिये अपना मन लगाया तो उस समय उसके मन की स्थिति ऐसी थी कि वह किसी के प्रेम मे उलझ गया है। उसे सारा ससार प्रसन्न और बदला हुआ दिखाई देने लगा था। उसने अपनी जीवन कहानी की पुस्तक* मे लिखा है, "जिन दिनो मुझे गिटार की आवश्यकता थी, उन दिनो मैं पक्षियो और आमोद-प्रमोद वाले कार्निवाल की ओर अधिक ध्यान देता था क्योकि उनमे से कुछ ऐसा लगता है कि कोई मेरे अन्दर गा रहा है और मै उनकी ओर आकर्षित हो जाता था।" वह उन्ही आवाजो को निकालना चाहता था जिन्हे वह सुना करता था। वह प्रतिदिन अधिक काम करता था क्योकि वह यह जानता था कि कठोर परिश्रम से धन कमाकर ही वह किसी दिन गिटार खरीद सकेगा। इतना अधिक परिश्रम करने पर भी उसे लगता था कि समय बीता जा रहा है।

एक दिन वह स्टोर विण्डो मे अपनी मन-पसन्द का वाद्य-यत्र देखने गया। वह प्राय स्टोर विण्डो तक जाता और वहाँ विण्डो के सामने खडा हो जाता तथा लालायित होकर उस वाद्य-यत्र की ओर देखता ही रहता कि क्या कभी ऐसा दिन होगा कि वह गिटार खरीद सकेगा। वह किसी को भी अपनी तीव्र इच्छा के बारे मे न बता सका। लेकिन उसके पिता ने यह देखा कि वह अधीर

---

*'फादर आव दी ब्लूज' डब्लू० सी० हैण्डी की आत्म-कथा; १९४१ मे प्रकाशित। प्रस्तुत पुस्तक मे लेखक और मेक्मिलन कम्पनी की अनुमति से उस पुस्तक के तथ्यो और उद्धरणो का प्रयोग किया गया है।

रहता है तो उन्होने उसे प्रसन्न रखने के लिये छोटे-मोटे विनोद के कार्य किये। वे अपने लडके को एक छोटी नदी पर ले जाकर उसे तैरना सिखाते थे। परन्तु विलियम ने तैरना नही सीखा। एक दिन वह अकेले ही वहाँ गया और सहसा एक गहरे गढ्ढे मे चला गया। उस समय या तो उसे तैरना था या डूब जाना था। उसके पिता ने उसे गृह-युद्ध के दिनो की एक बन्दूक (मस्केट) भी दी जिससे उसने निशाना लगाना सीख लिया किन्तु वह तीर और कमान से ही आखेट करना पसन्द करता था।

गोरो के 'बेप्टिस्ट क्वायर' के साथ एक ट्रेम्पेट' वादक आया जिसे देखकर विलियम के मन मे इच्छा हुई कि उसके पास एक ट्रेम्पेट भी हो। उसने गाय के सीध को खोखला करके एक ट्रेम्पेट बनाने का प्रयत्न किया और उसके मुंह पर एक छेद कर लिया। उसका यह वाद्य-यन्त्र शिकार के समय के लिये उपयुक्त बाजा बन गया लेकिन ट्रेम्पेट नही बन सका इसलिये उसने अब अधिक धन कमाने की चेष्टा की जिससे कि वह गिटार खरीद सके।

वसन्त के दिनो मे स्कूल के कमरे के दरवाज़ और खिडकियाँ खुली हुई थी और विलियम नीग्रो किसान का गीत सुन रहा था

आय-ओह-यू, आय-ओह-ओ,
आई वुडण्ट लिव इन कैरो, ओ !

खेतो, धधकती हुई भट्टियो और खदान के श्रमिको के काम करते समय के गीतो, गिरजाघर के स्प्रिचुअल्स (धार्मिक गीतो), स्कूल के संगीत और हैण्डीज़ हिल के बच्चो के संगीत उनकी स्मृति के अंग बन चुके थे जिससे वह मेलोडी और रिद्म बनाने लगा। इन गीतो से विलियम को संगीत की मूल बातें पता लगी। उसने इन्ही बातो का बाद मे उपयोग किया जब उसने 'ब्लूज' लिखे।

से चला जहाँ वह अपने परिवार के सदस्यो को दिखाना चाहता था जो उसकी प्रशसा करते। उसे विश्वास था कि वे उसे देखकर प्रसन्न हो उठेगे और उसे इस बात का स्वाभिमान था कि उसने अपनी कमाई से वह गिटार खरीदा है। जब वह घर आया और उन्हे अपना गिटार दिखाया, वह इतना प्रसन्न था कि कुछ भी न बोल सका। लेकिन जब किसी ने भी कुछ न कहा तो वह स्वय बोल उठा,

"इसकी चमक को देखिये यह मेरा है, यह **मेरा** । मैंने धन बचाया है।"

तब उसके पिता ने कहा। लेकिन उसके दु ख की बात यह रही कि उसकी प्रशसा अथवा प्रसन्नता मे कुछ भी नही कहा। वे क्रोधित हुये।

उन्होने हाँपते हुये कहा, "एक बक्स ले आये। एक गिटार ले आये। यह दैत्यो का एक बाजा है। मै तुमसे कहता हूँ कि इसे बाहर ले जाओ। तुम इसे अपने पास से अलग कर दो। तुम्हे क्या हो गया कि तुम अपने ईसाई धर्म के अनुयायी घर मे ऐसी अपवित्र चीज उठा लाये ? तुम इसे वही पहुँचा दो जहाँ से इसे लाये हो। सुन रहे हो जो कुछ मैंने कहा ?"

विलियम सुन रहा था। वह निश्चेष्ट हो गया। वह यह समझाना चाहता था कि गिटार रखने मे कोई अपराध नही है लेकिन उसके पिता के अन्यथा विचार थे। वह अपने आप यह महसूस करने लगा कि उसके लिये यह बिल्कुल असभव ही होगा कि वह अपने पिता को इस बात पर राजी कर सके कि वह उस वाद्य-यत्र को अपने पास रखना चाहता है। फिर भी उसने धीरे से कहा, "शायद अब इसे स्टोर वापिस न लेगा।" लेकिन उसके पिता ने कहा

"स्टोर के मालिक इस वाद्य-यत्र को किसी अन्य चीज से बदल देगे। इस मूल्य मे तुम वेबस्टर्स अनएब्रिज्ड डिक्शनरी की नई प्रति खरीद सकते हो और यह ऐसी पुस्तक है जिससे तुम लाभ उठा सकोगे।"

लडका हृदय मे दु खी होकर गिटार की एवज मे डिक्शनरी ले आया। इस दु खद घटना के बाद उसने वाद्य-यत्र पर कुछ पाठ सीखे। वह वाद्य-यत्र

पुराना ऑरगन था और इस पवित्र सगीत के लिये उसके पिता ने व्यय-भार वहन किया।

वह कुछ और भी चाहता था जिससे उसे वचित कर दिया गया। वह चित्रकला मे रुचि रखता था। उसके अध्यापक ने नक्शे तैयार करने की अनुमति दी। जब विलियम लोगो की शक्ले बनाता था जो उसे अच्छी लगती थी तब उसे नक्शे तैयार करने के लिये कहा जाता था।

उसने 'मिक्स्ड वोकल क्वार्टेट्स' के लिये 'पार्ट्स' की व्यवस्था करना प्रारम्भ कर दिया। सोलह वर्ष की आयु मे उसने महिलाओ की आवाज मे 'क्वार्टेट' की व्यवस्था की। जब वह अठारह वर्ष का था, एक महान घटना हुई जिसका उसके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

जिम टर्नर फ्लोरेन्स आये। वे वायलिन को इतनी अच्छी तरह बजा लेते थे कि उस नगर मे उनसे अच्छा वायलिन कभी नही सुना गया था। इसका विलियम हैण्डी के मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ा। जिम ने उसे एक अन्य ससार की झलक दिखाई। जिम ने एक ओरकेस्ट्रा का आयोजन किया और नाचना सिखाया। उन्हें उन दिनो के सभी नृत्य आते थे। उन्होंने मेम्फिस

वाद प्रतिदिन अपने घर को वापिस आता और नाई की दूकान पर रुक जाता और खिडकी मे से झाक उठता और यह सीखने की कोशिश करता कि अलग-अलग वाद्य-यत्रो पर किस प्रकार अगुलियाँ चल रही है और ब्लैक वोर्ड पर लिखे सगीत को कैसे सीखा जा रहा है। वह स्कूल मे अपनी डेस्क पर अगुलियाँ रखकर अभ्यास करता। उसे कुछ समय वाद एक कोरेनेट मिल गया जवकि वह पहिले ही अगुलियाँ चलाना सीख चुका था।

वह कोरनेट वजाना सीख चुका था इसलिये यह स्वाभाविक ही था कि वह शीघ्र ही किसी वैण्ड मे काम कर उठेगा। सवसे पहिले उसने नगर के वाहर जिम टर्नर के वैण्ड मे काम किया और उसे आठ डालर मिल गये। उसका दिन भी खुशी से वीता और उसे एक दिन मे ही इतनी मजदूरी मिल गई। यह खुशी उस खुशी से कही ज्यादा थी जव उसे एक सप्ताह के कठिन परिश्रम के वाद तीन डालर ही मिले थे। इससे उसके मन मे यह लालच भर गया कि वह सगीत को ही क्यो न व्यवसाय वना ले यद्यपि उसके पिता की यह इच्छा न थी।

उसने अठारह वर्ष की आयु मे स्कूल की पढाई पूरी कर ली और इसके वाद वह इधर-उधर भटकने लगा। सवसे पहिले उसने वेसेमर नगर मे सगीत सिखाना शुरू किया। फिर वह एक फाउड्री मे काम करने लगा क्योकि वहाँ उसे अधिक मजदूरी मिलती थी। वेसेमर मे उसने पहिला ब्रास-वैण्ड का सगठन किया और अन्य लोगो को वैण्ड सिखाया। देश मे दुर्दशा के दिन आ गए, फैक्टिरियाँ वन्द होने लगी और लोगो को काम मिलना वन्द हो गया। वह वर्मिघम चला गया। शिकागो मे 'वर्ल्ड फेयर' होने वाला था, उसने सोचा कि वहाँ उसे काम मिल जायेगा और वह लौजेट्टा क्वार्टेट के साथ शिकागो को चल दिया। उस समय यात्राओ मे अधिक समय लग जाता था। यदि कोई व्यक्ति उन्हे गाने के लिये वुलाता तो वे गीतो का कार्यक्रम प्रस्तुत करते। उन्होने भाडा देकर ट्रेन से यात्रा की और 'वाक्स कार' मे सो जाते थे या "व्लाइड वैगेज" मे सवारी करते थे। आखिरकार वे शिकागो पहुँच गये। उन्हे वहाँ यही समाचार मिला कि मेला एक वर्ष के लिये स्थगित कर दिया गया

है। उन्होने सोचा कि शायद सेण्ट लुइस मे सगीत के लिये अवसर मिले इसलिये वे सेण्ट लुइस को चल दिये। एक दिन एक आदमी ने उन्हे मुफ्त सवारी का प्रबन्ध कर दिया। यह बात उनके लिये सदेहप्रद थी। जब वे अपने गतव्य स्थान पर पहुँचे तो उस आदमी ने उन्हे समझाया कि उसे पहिले ही इतनी मजदूरी इसलिये दी गई थी कि वह प्रत्येक नीग्रो को इसी प्रकार बहका कर इस नगर मे ला सके, निस्सदेह वे नीग्रो ककड-मिट्टी के गड्ढे मे काम कर सके। उस आदमी को इस बात की चिन्ता नही थी कि लोग वहाँ ठहरते है या वहाँ से चले जाते है क्योकि वह आदमी उन लोगो को ट्रेन से उतारते ही अपनी फीस वसूल कर लेता था।

सेण्ट लुइस पहुँचकर क्वार्टेट को समाप्त ही करना पडा। वहाँ बहुत से सगीतज्ञ थे जिनको काम नही मिला था। उस शहर मे भी दुर्दशा थी। विलियम हैण्डी को दो सप्ताह के लिये काम मिल गया लेकिन उसके साथ उसी की जाति के एक ठेकेदार ने धोखा देकर उसकी मजदूरी छीन ली। अब उसके जीवन मे और अधिक सकट आ गया। वह जानता था कि उसे अपने दुर्भाग्य के सहारे रहना है और मिसीसिपी नदी की तलहटी के पत्थरो पर सोना है। केवल उसी की यह दुर्दशा नही थी, उस समय बहुत से अभागे और दुखी लोग थे जो नितान्त निर्धन थे। उन दुखियो मे गोरे और नीग्रो दोनो ही लोग थे। कभी वह किसी पूलरूम की कुर्सी पर ही सो जाता था लेकिन उस कुर्सी पर सोना कठिन काम था क्योकि पुलिस आवारा लोगो की तलाश मे घूमती रहती थी। पुलिस उन्हे कही पकड न ले और कैद न कर ले, इसलिये कुर्सी पर सोने वाले या तो अपनी आँखें खोले रहते थे या अपने पैर हिलाते रहते थे। हैण्डी ने भी उस कुर्सी पर सोना सीख लिया था। वह सोता रहता था और साथ ही एक पैर भी हिलाता रहता था। उसका कहना है कि उन दिनो पुलिस के अत्याचार से अभिभूत होकर उसने दो लोकप्रिय गीतो की रचना की थी। कई वर्ष बाद उसने यह महसूस किया कि उन दिनो मे उसे जो दुख सहने पडे थे, वही उसकी सफल रचनाओ के प्रेरक सिद्ध हुये। उन दुर्दिनो के बीत जाने के बाद उसे कभी पियानो बजाने का अवसर मिला और उसने एक बार ही साध्य-समय

के वादन मे **सेण्ट लुई ब्लूज** की रचना की। वह ट्यून अपने आप ही उसके मन से फूट पडी थी।

वह उन कठिनाइयो को न भी सहता और फ्लोरेंस मे अपने घर को लौट आता। लेकिन उसके पिता सगीत के प्रति उदासीन थे और जब कभी वह यह सोचता कि उसके अध्यापक ने उससे कभी यह कहा था, "सगीत से तुम्हारा क्या भला होगा, सगीत तुम्हे किसी नाली मे धकेल देगा।"—यह सब सोचकर वह वही रुका रहा क्योकि उसे यह आशका थी कि उसके वहाँ पहुँचते ही कही यह न कहा जाय, "यह सभी कुछ तुम्हे पहिले ही बता दिया गया था।" और यह ताना देकर ही उसका वहाँ स्वागत हुआ तो सचमुच उसकी वह विवश दशा उसकी मौजूदा दुर्दशा से कही बुरी होगी भले ही उसके पास धन न भी हो। उसने उत्तर और दक्षिण की कई यात्राएँ की और कई नगर देखे जहाँ इस बात के सकेत मिले, "यहाँ काले आदमियो (हब्शियो) के ठहरने का स्थान नही है।" उसने भविष्य मे यह गीत गाया और उसके साथ वाद्य-वादन किया, 'आई हेट टू सी द ईविन' सन गो डाउन।" उसने अपने हृदय के गहन अनुभव से ही इस विचार को रचनाबद्ध किया था।

विलियम हैण्डी ने मेहनत मजदूरी करके इण्डियाना को प्रस्थान किया और वहाँ यकायक उसके भाग्य ने पलटा खाया। उसे एवेन्सविले मे आसानी से एक कम्पनी मे काम मिल गया। वह कम्पनी सडको को फिर से पत्थर आदि बिछाकर ठीक करने मे लगी थी। विलियम भूखा था। जब अन्य मजदूर दोपहर का भोजन करने के लिये रुके तो उस दयालु 'मालिक' ने देखा कि विलियम के पास धन नही है और उसने उसे कुछ धन उधार दे दिया। उसके साथ अच्छा व्यवहार होने लगा और उसे अच्छा भोजन मिलने लगा जिससे उसे पहिले की अपेक्षा अधिक अच्छा लगने लगा। उसने देखा कि वहाँ उसके नगर के कई व्यक्ति काम कर रहे है। वे सभी अपनी मजदूरी इकट्ठी कर लेते और एक डालर प्रति सप्ताह के हिसाब से अपनी गुजर किया करते थे। हैण्डी चारो ओर घूमने गया और उसने यह देखा कि शहर मे कई ब्रास बैण्ड है। वह सभी परेडो, कसर्ट और रिहर्सलो मे उपस्थित होने

लगा। कुछ ही दिन हुये कि वह हेम्पटन वैण्ड मे काम करने लगा। लोग उसके वाद्य-वादन की ओर आकर्षित होने लगे और नगर मे उसकी चर्चा होने लगी।

हैण्डी को केटकी के हैण्डरसन मे दावतों के समय वाद्य-वादन का काम मिल गया। इससे वह मेहनत-मजदूरी से वचकर जीवन के एक अन्य व्यवसाय मे लग गया और अव वह व्यावसायिक रूप मे सगीतज्ञ वन गया। वह अव प्रसन्न था क्योकि उसके दुर्दिन समाप्त हो चुके थे। उसे कैंटकी के वातावरण मे प्रसन्नता मिली और वहाँ उसे सगीत ही सगीत नजर आया। उसने 'हार्मोनी' विपय पर एक पुस्तक और म्यूजिक की एनसाइक्लोपीडिया (सगीत शब्द-कोश) खरीद ली। उसकी एलिजावेथ प्राइस से भी भेंट हुई। इसी लडकी के साथ उसका वाद मे विवाह हो गया। हैण्डरसन मे कई सौ व्यक्तियो की एक जर्मन सिंगिग सोसाइटी (गायन सभा) थी। हैण्डी ने एक हाल मे द्वार-रक्षक का काम स्वीकार कर लिया जिससे वह सगीत सुन सके और लीडर के काम करने के तरीको को देख सके। उसे एक सगीतज्ञ के साथ पहिले काम करने का अवसर मिला था, उसी सगीतज्ञ ने उसको पत्र लिखा और उससे यह निवेदन किया कि वह शिकागो पहुँच जाय। शिकागो मे महाराज मिन्स्ट्रेल्स के वैण्ड मे कार्नेट-वादक की जगह खाली थी। वह सूचना पाते ही शिकागो चल दिया और वहाँ दो दिन मे ही पहुँच गया। देश की आर्थिक दशा शोचनीय थी इसलिये उसे प्रति सप्ताह छ डालर मिल सके किन्तु इसके साथ ही उसके मुफ्त भोजन की व्यवस्था भी की गई थी। लेकिन वाद मे वह अधिक वाद्य-यन्त्र वजाने लगा, क्वार्टेट को ट्रेनिग देने लगा और गायको का साथ देने के लिये ओरकेस्ट्रा वादको की व्यवस्था करने लगा, इस प्रकार उसके वेतन मे वृद्धि हो गई। वह कुछ समय वाद एक ट्रम्पेट खरीद सका, उसने अभ्यास करना प्रारम्भ कर दिया और वह देवदूत (आर्केन्जल) की तरह चार से छ घण्टे तक अभ्यास करने लगा।

कपडे खरीद सका और पहिले की अपेक्षा अधिक अच्छा महसूस कर उठा। उसके जीवन मे एक वह भी दिन था जब वह सेंट लुइस मे केवल कोट पहिनता था और कसकर बटन लगाये रहता था क्योकि उसके पास उन दिनो मे कमीज़ भी नही थी। उसे मिन्स्ट्रेल्स के दो वैण्डो मे एक वैण्ड का लीडर वनने का अवसर मिला और अव उसकी इतनी अच्छी वर्दी थी कि वह सचमुच वहुत अच्छा लगता था।

महाराज मिन्स्ट्रेल नीग्रो मिन्स्ट्रेल ही था लेकिन उसका प्रवन्ध गोरो के हाथ मे था। उनका दोपहर से कुछ पूर्व काम शुरू हो जाता था। उस समय मिन्स्ट्रेल कम्पनी को नगर मे परेड करनी पडती थी। नगर के लोग शाम को उनके कार्यक्रम देखा करते थे। मैनेजर थियेटर मे पौने वारह वजे सीटी वजा देता था जिससे परेड शुरू हो जाय। यदि कम्पनी उस स्थान से देर से लौटती जहाँ उन्होने गत रात अपना कार्यक्रम दिया है तो परेड सीधी रेल-रोड के रास्ते से ही शुरु हो जाती थी। उस परेड के आगे मैनेजर रहते थे जो चार घोडो की गाडी मे सवार होते थे। वे अपने सिल्क के हेट को छूकर सडको पर खडे नागरिको को शाम के कार्यक्रम की सूचना देते थे। दूसरी गाडी मे 'अभिनेता (स्टार्स)' रहते थे। उसके वाद (पैदल चलने वाले लोग होते थे। उस कम्पनी मे गायक, कोमेडियन और कलावाज थे। उसके वाद 'ड्रम मेजर' आता था और वह अपनी शानदार चाल से दर्शको का मन लुभा लेता था और उसके वाद वैण्ड रहता था। परेड पब्लिक स्क्वैर का चक्कर लगाती थी और सर्व-साधारण को क्लासीकल ओवरच्योर और लोकप्रिय धुन सुनाते थे। वे प्राय सूज़ा के लिये 'प्रयाण गीत' भी सुनाते थे। **अडर गार्डवर्स पिकनिक** की ट्यून को लोग वहुत पसन्द करते थे और इस ट्यून को वारवार वजाया जाता था।

वैण्ड के वजने के वाद कुछ विशेष कार्यक्रमो का आयोजन किया जाता था। कदाचित एक ट्रिक साइकिल वाला अपने खेल दिखाता था और उसके वाद एक भाषण होता था जिससे लोगो का इस ओर ध्यान आकर्षित किया जाय कि शाम का कार्यक्रम वहुत अच्छा होगा। इस परेड के वाद कलाकारो

को साढे सात वजे तक छुट्टी मिल जाती थी और नव स्थानीय ओपेरा हाउस के सामने फिर बैण्ड वजाया जाता था।

कई वर्षों तक हैण्डी मिन्स्ट्रल खेलो के साथ यात्रा करता रहा। उसने समस्त देश की यात्रा कर ली, उसने क्यूबा से केलोफोर्निया और कैनाडा से मेक्सिको तक यात्रा की। इन्ही वर्षों मे उसका विवाह हो गया और उसकी पत्नी भी उसके साथ रही। क्यूबा मे वह विचित्र देशी गीतो की ट्यूनो पर मोहित हो गया और उसे विशेषकर "शाई बैण्ड" की ट्यून बहुत अच्छी लगी जो पिछली गलियो मे दरवाजे बन्द करके बजाई जाती थी। तीस वर्ष बाद ये ट्यूने न्यूयार्क मे सुनाई दी और सारे देश मे ट्यूनें वजाई जाने लगी। इनका नाम रुम्बा था।

उस प्रदर्शन मे एक कोर्नेट भी था जिसे हैण्डी बजाया करता था। एक दिन अलवामा मे महाराज मिन्स्ट्रिल्स के कार्यक्रम मे विलियम हैण्डी के पिता अपने पुत्र के कार्य को देखने आये। विलियम के पिता अपने सगीतज्ञ पुत्र को देखने आये। विलियम के जीवन मे वह प्रसन्नता का महान अवसर था। विलियम यह जानता था कि उसके पिता को अपनी धारणा पर विजय पाने के लिये कितना अधिक परिश्रम करना पडा होगा। हैण्डी के पिता अपने सुपुत्र विलियम की सफलता देखकर प्रसन्न थे और अन्य श्रोताओ को गौरव से बता रहे थे कि बैण्ड का लीडर उनका पुत्र है। पर्दा गिरते ही उसके पिता अपने पुत्र के पास रगमच पर गये और उससे हाथ मिलाकर कहा, "मैंने कभी खेल नही देखा क्योंकि मैं धर्म का अनुयायी ही रहा। मैने अब खेल मे आनन्द पाया है। मैं तुम्हे देखकर बहुत गौरवान्वित हूँ। मैं तुम्हे क्षमा करता हूँ कि तुम एक सगीतज्ञ बन गये।"

हैण्डी दम्पति फ्लोरेस मे वापिस लौट आये और वहाँ उनके पहिला पुत्र हुआ। विलियम और जिम टर्नर ने इस अवसर पर एक छोटे ओरकेस्ट्रा का आयोजन किया। विलियम हैण्डी ने एक कसर्ट मे वाद्य-वादन किया। उस आयोजन मे एग्रीकलचरल एण्ड मेकेन्किल कालेज के प्रेसीडेंट भी उपस्थित थे। उस कन्सर्ट मे विलियम को इतनी सफलता मिली कि उसे इस वात के

लिये आमन्त्रित किया गया कि वह कालेज के वैण्ड, ओरकेस्ट्रा और वोकल म्यूजिक का डायरेक्टर हो जाय। उस समय वह सत्ताईस वर्ष का था। उसने यह जगह स्वीकार कर ली और फिर उसने पहिली वार अपना घर-वार बसाया।

रैगटाइम सगीत का फैशन हो रहा था। कुछ समय के लिये देश मे अमरीकी सगीत और नीग्रो के रैगटाइम सगीत को हेय दृष्टि से देखा जाता रहा। विदेश के सगीत को पसन्द किया जाता था चाहे वह सगीत कितना ही घटिया क्यो न हो। हैण्डी ने इस वात को स्वीकार नही किया। एक कसर्ट के लिये उसने **माई रैगटाइम बेबी** गीत फिर लिखा और उसमे शास्त्रीय (क्लासिकल) सगीत के स्वर दिये। इसकी अधिक प्रशसा की गई, यहाँ तक कालेज के प्रेसीडेंट ने हैण्डी को बधाई दी। हैण्डी शुरू से ही रैगटाइम सगीत को यथाशक्ति प्रोत्साहित कर रहा था। उसे कालेज मे बहुत कम वेतन मिलता था और दो वर्ष काम करने के वाद उसने यह महसूस किया कि वह अधिक कमा सकता है। और उसने नीग्रो के एक लोकप्रिय समाचार पत्र मे एक विज्ञापन दिया। इसके बाद वह फिर महाराज मिन्स्ट्रिल्स मे शामिल हो गया यद्यपि उस समय मिन्स्ट्रिल शो के अन्त होने के दिन आ चुके थे।

मिस्टर हैण्डी ने लिखा है, "दक्षिण के नीग्रो हर चीज़ को सगीतमय कर लेते है। वे ट्रेन, स्टीमबोट, स्लेज हैमर्स, दुष्ट अधिकारियो और जिद्दी खच्चरो के गीतो की रचना कर सकते है। वे अपने गीतो के साथ कुछ भी बजा सकते है और सगीत की लय पैदा करने के लिये वे "हारमोनिका से लेकर वॉशबोर्ड" तक काम मे लाते है, और ऐसी ही सामग्री से 'ब्लूज़' का विकास हुआ।

जव हैण्डी हार्मोनी वुक और म्यूज़िक एनसाइक्लोपीडिया का अध्ययन कर रहा था जिन्हे उसने हैण्डरसन मे खरीद था। उस समय वह यह सोचता था कि पुस्तको से ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण सामग्री प्राप्त होती है। यहाँ तक वह अपने पुराने देशवासियो के सगीत को हेय दृष्टि से देखता था। उसने महसूस किया कि लगातार किसी पक्ति को दोहराते रहना बहुत सरल

कार्य है, लेकिन अब उसे यह आभास हुआ कि ब्लूज़ का सगीत पुस्तको से नही बना है तथापि यह सगीत जन-जीवन के अनुभवो के आधार पर निम्न वर्ग के लोगो द्वारा तैयार किया गया है जो बहुत ही प्रभावशाली है।

मिसीसिपी के एक नगर मे शाम को वह एक नृत्य मे वाद्य-वादन कर रहा था। वहाँ उसने अपने जीवन का सबसे महान पाठ सीखा। 'देशी सगीत' के लिये आग्रह किया गया। उसके सगीतज्ञ उस समय मिन्स्ट्रिल शो मे काम करने के आदी नही थे जो तत्काल सगीत बदल कर उसे सुना दे। उनको छपे हुए 'नोट' (स्वरलिपि) के अनुसार ही वाद्य-वादन आता था। उन्होने एक पुरानी दक्षिणी ट्यून बजाई और एक मेलोडी प्रस्तुत की जो 'देशी' होने के बजाय काफी बदली हुई थी। लेकिन यह आग्रह हुआ कि क्या उनको इस बात पर आपत्ति तो न होगी यदि स्थानीय देशी बैण्ड नृत्य की कुछ धुने प्रस्तुत करे। इसके विपरीत उन्हे दूसरो की धुने सुनकर प्रसन्नता हुई। इनके बाद तीन लडके फटे-पुराने कपडे पहिनकर अपने वाद्य-यन्त्र लेकर वहाँ आ गये "उनके हाथ मे गिटार, मेण्डोलिन और पुराना वैस था। उनकी शक्ल को देखते हुये उनका सगीत बहुत अच्छा था। वे बार-बार ऐसी ट्यून बजा उठते कि जिनका न प्रारभ था और न अन्त था। बिना सीखे हुये वाद्य-यन्त्रो के बजाने से कष्टदायक ऊब पैदा होने लगी लेकिन वे अपने वाद्य बजाते ही रहे। वह ऐसा सगीत था जैसा दर्शक मेला की भीड-भाड का शोर हो। उनके पैर धरती पर थपाथप आवाज कर रहे थे। उनकी आँखे नाच रही थी। उनके कन्धे हिल रहे थे। इस प्रकार के सगीत ने बराबर कष्ट बढता ही गया। फिर भी इस सगीत के प्रति न तो क्रोध आया और न वह सगीत बुरा लगा। शायद वह सगीत मस्तिष्क मे बार-बार चक्कर काट रहा ("हॉटिंग कर रहा") था।

नर्तक अधिक उत्मत्त होकर नाचने लगे। उन देहाती लडको से हेण्डी ने ऐसा कुछ सीखा जिसे वह पुस्तको से नही सीख पाया था। उस समय उसे देशी सगीत के सौंदर्य का आभास हुआ और "उसी रात उसमे एक सगीतकार का जन्म हुआ।" वह घर पर उसी प्रकार के सगीत-रचना का कार्य करने लगा। उसे यह बात पहिले ही से महसूस होती थी कि अमरीकी लोगो को नृत्य-सगीत मे रिद्म और गति (मूवमेंट) की जरूरत है।

हैण्डी ने कुछ स्थानीय ट्यून को ओरकेस्ट्रा-बद्ध कर लिया और मिसीसिपी के डेल्टा में बने शानदार ऊँचे भवनो के लिये नृत्यो के अनुरूप ट्यूने प्रस्तुत की। उसने राजनीतिक समारोह के अवसर पर भी ओरकेस्ट्रा प्रस्तुत किया और इस प्रकार उसने इतना काफी धन कमाया जितना कि वह पहिले कभी भी न कमा पाया था।

वह १९०९ मे फिर मेम्फिस पहुँच गया, उसने मिस्टर क्रम्प के लिये एक गीत लिखा जिसे मिस्टर क्रम्प ने एक राजनीतिक सभा के समक्ष अपने बैण्ड पर प्रस्तुत किया। वह उस समय ३० वर्ष से अधिक हो चुका था। यह गीत **मेम्फिस ब्लूज** नामक शीर्षक से तीन वर्ष बाद प्रकाशित हुआ। यह कई 'ब्लूज' मे से पहिला प्रकाशित 'ब्लूज़' था और इसलिये इसे प्रमुख काम मानते है। उसने कई गीत लिखने शुरू कर दिये और वह प्राय ब्लूज़ तैयार करने लगे। हैण्डी मेम्फिस मे ही हेरी एच० पेस से मिला। हेरी एच० पेस नीग्रो बैंक का खजाची (केशियर) था और उसकी सगीत मे अभिरुचि थी। उसने कुछ गीत लिखे हैं और उन गीतो की गिरजाघर के कार्यक्रमो मे अधिक माँग रही है। दोनो आदमियो ने मिलकर गीतो मे साझा कर लिया और वे म्यूज़िक पब्लिशिग हाऊस मे भागीदार हो गये। उन्होने अपनी दूकान का नाम पेस एण्ड हैण्डी म्यूजिक कम्पनी रख लिया।

जब मिस्टर हैण्डी पैंतालीस वर्ष के हुये तो उनकी पब्लिशिग फर्म बील स्ट्रीट से ब्राडवे पहुँच गई। रैगटाइम सगीत को अब जाज़ कहा जाने लगा। "टिन पैन ऐली" से गीत फैल रहे थे। ब्लूज़ के लेखक को न जाने कितने समय तक कष्ट ही कष्ट सहने पडे थे और अब सुख-दुख के बाद रिकर्ड

बनाने वाली कम्पनियो से उन गीतो को वेचना शुरु कर दिया जिससे उसे बहुत आय होने लगी। विलियम हैण्डी को न्यूयार्क मे 'ब्लूज' के कार्यक्रम के सचालन के लिये आमत्रित किया गया। महायुद्ध के समाप्त होने के बाद जब जाज़ सगीत उभर रहा था उस समय हेण्डी के ब्लूज पेरिस मे अमरीकी नीग्रो बैण्ड पर बजाये जा रहे थे। अमरीकी गोरे सिपाहियो को इस सगीत को सुनकर स्फूर्ति आ जाती थी और वे इसे अपने देश का ही सगीत मानते थे। मिस्टर हैण्डी ने लिखा है कि 'ब्लूज' गीतो की रचना बडी सादगी से हुई और अन्तत उन्हे कसर्ट हाल मे प्रस्तुत किया गया। पाल ह्वाइटमेन ने उन गीतो की ट्यून बजाई और हेडी के **सेण्ट लुइस ब्लूज़** को ओरकेस्ट्रा मे इतना अधिक बजाया गया कि शायद ही अन्य गीतो को इतना बजाया गया होगा। न्यूयार्क मे हिपोड्राम कसर्ट का आयोजन हुआ, वहाँ व्हाइटमेन्स का बैण्ड बजाया गया और डीम्स टेलर ने जीवित सगीत की ध्वनियाँ (लिविग प्रोग्राम नोट) प्रस्तुत की। इगलेण्ड के किग एडवर्ड अष्टम के सम्मान मे हैण्डी के ब्लूज बजाये गये। इस विषय के एक विशेषज्ञ का विचार है कि **मेम्फिस** और **सेण्ट लुइस ब्लूज़** ने जाज सगीत को बहुत कुछ दिया जितना कि कोई सगीतकार व्यक्तिगत रूप से नही दे सकेगा। **सेन्ट लुइस ब्लूज़** १९१४ मे लिखे गये और वे इतने सफल हुये कि ब्यालीस वर्ष बाद अब भी उनसे २५००० डालर प्रतिवर्ष आय हो जाती है।

वह सत्तर वर्ष का हो गया और उसकी आँख की रोशनी कम हो गई फिर भी वह ब्रोडवे पर स्थित अपने ऑफिस प्रतिदिन जाता था। वह द्वितीय विश्वयुद्ध मे सिपाहियो और नौ सेना के जवानो का मनोविनोद कर सकता था। वह सत्तर वर्ष का हो चुका था और अधा भी हो चुका था। उसने वाटर-ब्वाय, मोची, कपास चुनने वाला, स्टील का काम करने वाला और सफल ब्लूज लेखक के रूप मे काम किया। वह वृद्ध हो गया था फिर भी 'दिली रोज डायमण्ड होर्स शू' के अवसर पर उम्दा ट्रम्पेट बजा सकता था। उनकी अठत्तरवी वर्षगांठ मनाने के लिये उसके सम्मान मे वाल्डोर्फ मे एक समाज आयोजित किया गया। जब वह अस्सी वर्ष का हुआ तो "ब्लूज़ के पिता"

के रूप मे उसने ब्रुकलिन के हाई स्कूल के कई सौ वच्चो को अपने वाद्य सुनाये। जब उसकी अधिक प्रशसा हुई तो उसने अपने ट्रम्पेट को थपथपाया और कहा, "जीवन इसी ट्रम्पेट के समान है। यदि आप इसमे कुछ भी नही कर सकेंगे, तो आपको इससे कुछ भी न मिल सकेगा।"

मिस्टर हैण्डी ने यह महसूस किया कि नेविन का गीत **माइटी लेक ए रोज** उसकी जाति के लिये सद्भावना पैदा करने वाला गीत है। उसने कई वर्षो तक **मेक गुर्फे फिफ्थ रीडर** के पाठ याद रखे क्योकि उसने बहुत कुछ कठोर परिश्रम के अनुभव से ही उन्हे सीखा था जैसा कि इस अध्याय के प्रारम्भ मे ही कहा गया है।

[विलियम क्रिस्टोफर हैण्डी १६ नवम्बर, १८७३ मे एलबामा के फ्लोरेस नगर मे हैण्डीज हिल पर पैदा हुये। उनका २८ मार्च, १९५८ मे न्ययार्क मे निधन हो गया।]

चार्ल्स एडवर्ड आइव्ज

"जो कुछ मैं जानता हूँ वह पा ने मुझे सिखाया है।"

"पा" डेनवेरी, कन्केटिक्ट मे बैण्ड मास्टर थे। वही चार्ल्स आइव्ज का जन्म १८७४ मे हुआ। अन्य लोग "पा" को जॉर्ज आइव्ज समझते थे और उसे ऐसा सगीतज्ञ मानते थे कि वह नगर की सभी सगीत के क्रिया-कलापो का लीडर था। वह बैण्ड मास्टर के अलावा क्वायर-लीडर और अध्यापक था और उसने कई व्यक्तियो को अच्छे सगीत की शिक्षा दी थी। वह ध्वनि की (साइस आफ साउण्ड) मे विशेष दिलचस्पी रखता था और उसने ध्वनिशास्त्र (एकाउस्टिक्स) को अध्ययन किया और ऐसे वाद्य-यत्र का आविष्कार किया जो क्वार्टर टोन पैदा कर सकता था।

जॉर्ज आइव्ज ने १६ वर्ष की आयु मे सिविल वार आर्मी बैण्ड सगठित किया। वह फर्स्ट कन्केटीक्ट हैवी आर्टिलरी आर्मी बैण्ड का लीडर बना और रिशमॉण्ड के चारो ओर घेरा डालते समय वह बैण्ड वजाया गया। उस समय प्रेसीडेंट लिकन ने कहा, "यह एक अच्छा बैण्ड है। जनरल ग्राण्ट ने उत्तर दिया कि उसने सुना है कि आर्मी मे यह सर्वोत्तम बैण्ड है लेकिन वह स्वयं उस बैण्ड की श्रेष्ठता आकने मे असमर्थ है क्योकि वह केवल **यांकी डूडल** की ट्यून ही पहिचान पाता है।

वाद मे न्यूयार्क मे जॉर्ज आइव्ज का स्टीफेन फॉस्टर से परिचय हो गया। जब उसका लडका चार्ल्स पॉच वर्ष का था तब उसने उसे सगीत के पाठ सिखाने प्रारभ कर दिये। उसने अपने वच्चो और नगर के अन्य कई वच्चों को वैश और स्टीफेन फॉस्टर का सगीत सिखाना प्रारभ कर दिया। वह सगीत की नई विधाओ को जानने के लिये केवल उत्सुक ही न था वल्कि उसने अपने लडके को सिखाया कि वह सगीत के सम्बन्ध मे परम्परा से हटकर प्रयोग करने मे न डरे। चार्ल्स दस वर्ष का हो पाया कि उसके पिता ने कहा कि वह **स्वानी**

रिवर गीत 'ई-फ्लेट की' पर गाये और उसके पिता ने 'सी' की पर वाद्य-वादन किया। उसने कहा कि इसका उद्देश्य यह है कि कानो को अभ्यस्त कराया जाय। किसी व्यक्ति के लिये केवल 'पिच' पर रहना बहुत कठिन है और इससे यह पता लगता है कि चार्ल्स को पिच का अच्छा ज्ञान होगा।

यदि मिस्टर जॉर्ज आइव्ज लगभग पचास वर्ष और जीवित रहते तो उन्हे यह देखकर कितनी प्रसन्नता होती कि उनका पुत्र चार्ल्स अमरीकी सगीतकारो मे सबसे अधिक मौलिक सगीतकार है और देश-विदेश के सगीतकारो तथा आलोचको ने उसकी सगीत की रचनाओ का सबसे अधिक आदर किया है।

जब चार्ल्स आठ वर्ष का था, एक दिन उसके पिता ने यह देखा कि उसका लडका बैण्ड के ड्रम की रिद्म से अधिक आकर्षित है, वह उसे गॉव मे एक नाई की दूकान पर ले गया जिसने आइव्ज सिविल वार बैण्ड मे ड्रम बजाये थे। उस नाई ने चार्ली को एक खाली टब के सामने बैठा लिया और उसको दो ड्रम-स्टिक दे दी तथा उसे सिखाना प्रारम्भ कर दिया और साथ-ही-साथ वह लोगो की दाढी बनाता रहा तथा बाल काटता रहा। उसने सिखाया कि एक साथ दो काम कैसे हो सकते है। जब चार्ल्स बारह वर्ष का हुआ तब वह अपने बैण्ड मे स्नेयर बैण्ड बजाने लगा।

जब वह तेरह वर्ष का था, उसे पर्याप्त सगीत आ गया था और वह डेनबरी की वेस्ट स्ट्रीट कांग्रेगेशनल चर्च मे ओरगेनिस्ट का काम करने लगा। उस वर्ष उसने **होली डे क्विक स्टेप** गीत लिखा। यह गीत बैण्ड के लिये उपयुक्त था लेकिन उसे इतना अधिक सकोच था कि वह उसे न बजा सका। उसके पिता ने डेकोरेशन डे परेड मे सर्वप्रथम उस गीत की ट्यून बैण्ड पर बजाई। जब बैण्ड स्ट्रीट मे मार्च करता हुआ आ रहा था और उसके घर के समीप होकर निकल रहा था तो आइव्ज उस ट्यून को सुनकर आश्चर्य-चकित हो गया और वह दरवाजे पर बेस-बाल मारकर उसे फिर पकडने लगा। लेकिन एक स्थानीय आलोचक ने उस नौजवान ओरगेनिस्ट और सगीतकार के उज्जवल भविष्य का पूर्वाभास किया।

चार्ल्स डेनबरी पब्लिक स्कूल गया और फिर हॉपकिन्स ग्रामर स्कूल

पहुंचा और वहाँ से उसने येल जाने की तैयारी की। येल मे उसने शिक्षा और सगीत का अध्ययन किया। उसने वहाँ डूडले वक के साथ ओरगन और होरेशो पार्कर के साथ सगीत-रचना का अध्ययन किया। उसने न्यू हेविन गिरजाघरो मे ओरगेन वजाया और वह १८९८ मे ग्रेजुएट हो गया। वह बेस बाल और फुटबाल खेलने का भी समय बचा लेता था।

चार्ल्स आइव्ज अपनी डिग्री प्राप्त करने से पूर्व अपने ओरगन के लिये सगीत-रचना किया करता था जिसमे वह जान-बूझकर कर्कश स्वर रखता था या वे ऐसे स्वर थे जिन्हे उस समय बधे स्वरो के साथ मिलाना सम्भव नही था। कुछ वर्षो बाद स्ट्राविन्सकी और शोनबर्ग ने विचारोत्तेजक लेख लिखकर सगीत की दुनिया मे तहलका मचा दिया। लेकिन आइव्ज चुपचाप और अकेले पहिले इयर-स्ट्रेचिग ध्वनियो के बारे मे प्रयोग कर रहा था। उसने स्ट्राविन्सकी और शोनबर्ग को अधिक नही सुना था। आइव्ज को अब इस बात का श्रेय है कि उसने पहिली बार पाली हार्मोनी (एक ही समय मे एक से अधिक 'की' का प्रयोग) का प्रयोग किया और एटोनेलिटी (की को किसी होम बेस के बनाये बिना स्वच्छद रूप से प्रयोग) को अपनाया।

होरेशियो पार्कर योरुप की उन्नीसवी शताब्दी के उम्दा सगीतज्ञ और अच्छा सगीतकार थे और वे अपने छात्रो को उनकी नव-निर्मित ध्वनियो के लिये प्रोत्साहन नही देते थे, उन्होने चार्ल्स से कहा कि वह "सभी 'की' को हाग कर ले। चार्ल्स अपने गुरु के समक्ष सभी रचनाएँ प्रस्तुत करने पर भी कही अधिक सगीत जानता था। कई लोगो ने उसके सगीत को सुनकर यह कहा कि उसका सगीत "देश का नही ह।" वह ऐसा सगीत नहीं ह कि लोग उसे सुखपूर्वक सुनकर अपने देश का सगीत कह सके। उसने असाधारण तार-विन्यास, विचित्र स्केल के पद्याश, विस्तृत सुरीले स्किप, रिद्म (लय) की मिश्रित रचना अपनाई जिनसे उसके अध्यापक परेशान थे क्योंकि वे योरुप के पारपरिक सगीत की शिक्षा देते थे। इन सगीत के विचारो मे से कुछ विचार ऐसे भी थे कि नये दिखने पर भी नये नहीं थे। ऐसा सगीत आदि-वासियो ने प्रयोग किया था और पुराने जमाने मे इनका चलन था लेकिन

रिवर गीत 'ई-फ्लेट की' पर गाये और उसके पिता ने 'सी' की पर वाद्य-वादन किया। उसने कहा कि इसका उद्देश्य यह है कि कानो को अभ्यस्त कराया जाय। किसी व्यक्ति के लिये केवल 'पिच' पर रहना बहुत कठिन है और इससे यह पता लगता है कि चार्ल्स को पिच का अच्छा ज्ञान होगा।

यदि मिस्टर जॉर्ज आइव्ज लगभग पचास वर्ष और जीवित रहते तो उन्हे यह देखकर कितनी प्रसन्नता होती कि उनका पुत्र चार्ल्स अमरीकी सगीतकारो मे सबसे अधिक मौलिक सगीतकार है और देश-विदेश के सगीतकारो तथा आलोचको ने उसकी सगीत की रचनाओ का सबसे अधिक आदर किया है।

जब चार्ल्स आठ वर्ष का था, एक दिन उसके पिता ने यह देखा कि उसका लडका बैण्ड के ड्रम की रिद्म से अधिक आकर्षित है, वह उसे गॉव मे एक नाई की दूकान पर ले गया जिसने आइव्ज सिविल वार बैण्ड मे ड्रम बजाये थे। उस नाई ने चार्ली को एक खाली टब के सामने बैठा लिया और उसको दो ड्रम-स्टिक दे दी तथा उसे सिखाना प्रारम्भ कर दिया और साथ-ही-साथ वह लोगो की दाढी बनाता रहा तथा बाल काटता रहा। उसने सिखाया कि एक साथ दो काम कैसे हो सकते है। जब चार्ल्स बारह वर्ष का हुआ तब वह अपने बैण्ड मे स्नेयर बैण्ड बजाने लगा।

जब वह तेरह वर्ष का था, उसे पर्याप्त सगीत आ गया था और वह डेनबरी की वेस्ट स्ट्रीट काग्रेगेशनल चर्च मे ओरगेनिस्ट का काम करने लगा। उस वर्ष उसने **होली डे क्विक स्टेप** गीत लिखा। यह गीत बैण्ड के लिये उपयुक्त था लेकिन उसे इतना अधिक सकोच था कि वह उसे न बजा सका। उसके पिता ने डेकोरेशन डे परेड मे सर्वप्रथम उस गीत की ट्यून बैण्ड पर बजाई। जब बैण्ड स्ट्रीट मे मार्च करता हुआ आ रहा था और उसके घर के समीप होकर निकल रहा था तो आइव्ज उस ट्यून को सुनकर आश्चर्य-चकित हो गया और वह दरवाजे पर बेस-बाल मारकर उसे फिर पकडने लगा। लेकिन एक स्थानीय आलोचक ने उस नौजवान ओरगेनिस्ट और सगीतकार के उज्जवल भविष्य का पूर्वाभास किया।

चार्ल्स डेनबरी पब्लिक स्कूल गया और फिर हॉपकिन्स ग्रामर स्कूल

पहुँचा और वहाँ से उसने येल जाने की तैयारी की। येल मे उसने शिक्षा और सगीत का अध्ययन किया। उसने वहाँ डूडले बक के साथ ओरगन और होरेशो पार्कर के साथ सगीत-रचना का अध्ययन किया। उसने न्यू हेविन गिरजाघरो मे ओरगेन बजाया और वह १८९८ मे ग्रेजुएट हो गया। वह बेस बाल और फुटबाल खेलने का भी समय बचा लेता था।

चार्ल्स आइव्ज अपनी डिग्री प्राप्त करने से पूर्व अपने ओरगन के लिये सगीत-रचना किया करता था जिसमे वह जान-बूझकर कर्कश स्वर रखता था या वे ऐसे स्वर थे जिन्हे उस समय बधे स्वरो के साथ मिलाना सम्भव नही था। कुछ वर्षो बाद स्ट्राविन्सकी और शोनबर्ग ने विचारोत्तेजक लेख लिखकर सगीत की दुनिया मे तहलका मचा दिया। लेकिन आइव्ज चुपचाप और अकेले पहिले इयर-स्ट्रेचिंग ध्वनियो के बारे मे प्रयोग कर रहा था। उसने स्ट्राविन्सकी और शोनबर्ग को अधिक नही सुना था। आइव्ज को अब इस बात का श्रेय है कि उसने पहिली बार पाली हार्मोनी (एक ही समय मे एक से अधिक 'की' का प्रयोग) का प्रयोग किया और एटोनेलिटी (की को किसी होम बेस के बनाये बिना स्वच्छद रूप से प्रयोग) को अपनाया।

आधुनिक अमरीकी और योरुपवासियो यहाँ तक कि स्वय सगीतकार के लिये यह सगीत नया था। फिर भी हमेशा कुछ ऐसे लोग होते हैं जो नई चीजो का स्वागत करते है। जिन सगीतज्ञो को प्रयोग करना अच्छा लगता था, उन्हे आइव्ज का सगीत अच्छा लगा।

उसने अपने कालेज के अध्ययन के वाद पार्ट-टाइम सगीतकार का काम किया और वह न्यू जर्जी और न्यूयार्क सिटी के गिरजाघरो मे कुछ वर्षो तक ओरगेनिस्ट और क्वायर डायरेक्टर रहा लेकिन वह सगीत क्षेत्र मे दिन भर काम नही करता था। उसने ग्रेजुएट होने के वाद यह तै किया कि वह बीमा का काम करेगा और वह म्यूच्युल लाइफ इन्श्योरेस कम्पनी मे एक क्लर्क हो गया। उसे बीमा का काम अच्छा लगा और वह अपना अधिक से अधिक समय निश्चित मन से विताना चाहता था जिससे वह अपने मन की पसन्द का सगीत तैयार कर सके। कुछ वर्षो वाद उसने आइव्ज एण्ड कम्पनी की स्थापना की ओर उसके कुछ वर्षो वाद वह और एक दूसरा क्लर्क दोनो मिलकर मैनेजर हो गये। उनकी आइव्ज एण्ड मेरिक नामक फर्म देश की सबसे बडी फर्म हो गई। चार्ल्स की सेहत गिर गई जिसके कारण उसे अनिवार्य रूप से अपने कार्य से मुक्त होना था। अत उस फर्म को इक्कीस वर्ष वाद समाप्त कर दिया गया।

उसका व्यवसाय-क्षेत्र मे अधिक आदर किया जाता था और वहाँ भी उसने उतना ही उत्साह दिखाया जितना कि उसने सगीत मे। वह बीमा के सम्वन्ध मे अपने कुछ नये विचार रखता था और उसने इक्कीस वर्ष मे अपनी फर्म के लिये ४५०,०००,००० डालर का व्यापार किया। उसने लिखा है, "मुझे व्यापार के अनुभव से जीवन के कई पक्षो के देखने का अवसर मिला है और यदि व्यापार मे न लगता तो मैं वह अनुभव प्राप्त नही कर पाता। व्यक्ति व्यापार मे दु खद घटना सज्जनता, कमीनापन, उच्च उद्देश्य, निम्नकोटि के विचार, उज्जवल आशाये, क्षीण आशाये, महान आदर्श और आदर्श शून्यता पाता है और व्यक्ति यह देखता है कि इन्ही सभी वातो से उसके भाग्य का निर्माण होता है।"

आइव्ज ने कालेज की पढाई समाप्त करने के दस वर्ष बाद एक लडकी से विवाह किया जिसका प्रथम नाम हार्मोनी था। उसने आइव्ज के जीवन मे अपना नाम सार्थक कर दिया। उसने इस बात की कभी चिन्ता नही की कि उसका पति दिन भर कार्यालय मे काम करता है और सध्या समय, सप्ताह के अन्त मे तथा छुट्टियो मे घर पर ही सगीत लिपिबद्ध करने मे अपना समय बिताता है। और उसने उससे कभी यह भी न कहा कि वह इतना 'अच्छा' लिखे जिसे लोग पसन्द करे, वह जानती थी कि उसे वही लिखना चाहिये जो उसके मन मे है। उसने बाद मे यह भी बताया कि वे दोनो कही नही गये और इसका उसे बुरा भी न लगा। आइव्ज ने भी अपने एक मित्र को बताया कि वह अपनी पत्नी के प्रति उतना ही ऋणी है जितना कि वह अपने पिता के प्रति ऋणी है। वह हार्टफोर्ड के एक प्रसिद्ध पादरी की बेटी थी। मार्क ट्वेन, व्हिटियर, हेरियट बीचर स्टो और कम्यूनिटी के अन्य साहित्यिक व्यक्तियो से उसके पिता परिचित थे। वास्तव मे वह 'एट्रैम्प एब्रोड' मे मार्क ट्वेन के साथ यात्री थे।

वर्ष बीतते गये और आइव्ज ने बहुत सी रचनाएँ एकत्र कर ली। १९२० मे उन्होने ११४ गीतो की पुस्तक निजी तौर पर छापी और बाँटी। अगली वर्ष पियानो के लिये उसका **कनकॉर्ड सोनेटा** छापा गया। सगीतज्ञ इससे अधिक प्रभावित हुये और विशेष रूप से नौजवान सगीतज्ञो को यह अधिक अच्छा लगा क्योकि वे नये सगीत मे अधिक रुचि रखते थे। सगीतज्ञो और आलोचकों ने उसकी सगीत रचनाओ की प्रशसा की, फिर भी कई वर्ष बाद आइव्ज को ख्याति मिल सकी। वह अपना सगीत लोगो पर लादना नही चाहता था, उसके वाद्य-सगीत का प्रदर्शन बहुत कठिन था, वह सगीत ऐसा नही था कि उसका तुरन्त ही प्रभाव पडे। वह न तो सुन्दर ही था और न उसका समझना सरल था—उसने स्वय कहा है कि वह सगीत "कठोर" सगीत ही था।

विद्वान पियानोवादक जान कर्क पेट्रिक के बाद आइव्ज ऐसा पियानोवादक हुआ जिसने **कॉकॉर्ड सोनाटा** का बारह वर्ष अध्ययन किया (प्रारभ मे वह उसे समझ भी न सका) और फिर उसने १९२९ मे न्यूयार्क मे उसे प्रस्तुत

किया। लोगो ने उसको बहुत सुना और उसने **थोरियो**-गति को दर्शको की माँग पर बार-बार बजाया। आलोचक इस सगीत को महत्व दे रहे थे। एक आलोचक ने यहाँ तक कह दिया कि इससे अच्छा सगीत अमरीका मे पहिले कभी नही बना है। कुछ सप्ताह बाद पियानोवादक ने इसे जनता की माँग पर फिर प्रस्तुत किया और उस दिन पूरे हाल मे केवल आइव्ज के ही सगीत का आयोजन था। पैंतीस वर्ष बाद आइव्ज ने अपनी तीसरी सिम्फनी समाप्त की, उसे १९४६ मे प्रथम बार प्रस्तुत किया गया और उसे पुलिटजर पुरस्कार मिला।

बहुत से सगीतकार यह महसूस करते है कि उन्होने जो कुछ लिखा है उसके प्रस्तुत करने मे कोई परिवर्तन न किया जाय। लेकिन हम ऐसे समय से निकल रहे है जबकि "व्यवस्थाओ" को प्रमुखता दी जाती है और मिस्टर आइव्ज ने तीस वर्ष पहिले अपने ११४ गीत प्रकाशित करते समय यह महसूस किया था कि जहाँ तक उसके सगीत का सम्बन्ध है, कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छानुसार प्रस्तुत करने मे उसका प्रयोग कर सकता है, वह उसकी नकल कर सकता है और उसके सुर बदल सकता है या अन्य वाद्य-यत्रो के लिये व्यवस्थित कर सकता है। उसने अपने प्रकाशक को सगीत पर कापी राइट रखने मे आपत्ति की क्योकि वह इस बात मे विश्वास करता था कि कोई भी व्यक्ति उन गीतो के सगीत को अपना सकता है। लेकिन आखिरकार पूर्ववत् विधि के अनुसार उसे प्रकाशक की ही शर्त स्वीकार करनी पडी। फिर भी उसने कहा कि यदि उसके सगीत से कोई आय होगी तो उसे नवयुवक सगीतकारो के सगीत के प्रकाशन मे काम मे लाया जायेगा। उसके अध्यापक जिस प्रकार 'की' को रखते थे उसी प्रकार वह भी 'की' को 'हॉग' कर लिया करता था लेकिन उसने अपने सगीत या अधिकारो के लिये कभी सकोच नही किया।

उसे बीमा के काम से जब भी समय मिलता, उस समय को वह सगीत-रचना के लिये उपयोग मे लाता था। उसने इस प्रकार कई वर्षो तक निष्ठाशील और दत्तचित्त होकर कार्य किया और उसके सगीत की रचनाओ को सख्या बहुत हो गई। उसने कई सिम्फनी, चेम्बर-कृतियाँ, कोरल-कृतियाँ, गीत

और पियानो की सगीत रचनाएँ लिखी। उनमे कुछ पद्याशो को अवर्णनीय ढग से सुन्दर ही बताया गया है और उसकी कृतियाँ उत्कृष्ट है, उनमे मे बहुत सी राष्ट्रीय हे जिन्हे वस्तुत सुनकर ऐसा लगता है कि उनका रचना अमरीकी ने ही की। उसके सगीत मे सगीतकार का अपने देश के प्रति प्रगाढ प्रेम, आदर्शवादिता, अपने देश के अतीत के गौरव का वर्णन है और साथ-ही-साथ सगीत-क्षेत्र मे उसके बचपन की मधुर स्मृतियो का उल्लेख है। उसने अपने सगीत मे इन सभी बातो की चर्चा की है उसके पिता ने उसे सगीत सिखाया, उस सगीत की स्मृति भी उसके साथ सुरक्षित थी। इसके अतिरिक्त उसने १८७० से लेकर लगभग बीस वर्षो तक कनेटिक्ट याकी का सगीत और पुराने बार्न-नृत्यो का सगीत भी याद रखा। वह सगीत के पुनोरुद्धार करने के लिये बैठको के आयोजन और मेमोरियल डे परेड, से भी परिचित रहा। उसने मिन्स्ट्रिल गीत, फसल कटाई के समय के गीत तथा स्लिप, स्लाइड और ऑफ पिच ट्यून करने वाले वृद्ध ग्रामीण फिडिल-वादक का सगीत, अपनी स्मृति का अविभाज्य अग बनाया। उसे टाउन बैंड के उच्च स्वरो का वादन याद रहा जिनमे यदि कलाकार स्वतत्र हो जाते या प्रेरित होते या कभी लापरवाह होते तो उनके स्वर बेतुके हो जाते और बैण्ड-वादन टाइम अथवा टोन के अनुसार न हो पाते थे। वह गिरजाघर के ओरगन या हारमोनियम की आवाज भी न भूल सका जिसमे ट्यून स्वर-सगत न हो पाती थी और उनके नोट कभी ऊँचा स्वर देते और कभी हल्का स्वर देते थे यदि धौकनी मे हवा भर जाती या निकल जाती। उसे किसी सगीत-समारोह मे गायको के गायन की आवाज भी याद रही जिसमे कुछ आवाजे खिच-खिच कर आगे बढती, कुछ आवाजे जल्दी-जल्दी धुन पूरी कर लेती, कुछ आवाजे तीव्र-स्वर की होती और कुछ आवाजे एक से स्वर की होती लेकिन सभी पूर्ण आश्वस्त होकर तीव्र स्वर मे गाते थे। इन सभी बातो और एअर-स्ट्रेचिग अभ्यास से चार्ल्स आइव्ज के सगीत पर विशेष प्रभाव हुआ। चार्ल्स आइव्ज अमरीका का सबसे अधिक मौलिक और महत्वपूर्ण राष्ट्रीय सगीतकार था।

[चार्ल्स एडवर्ड आइव्ज २० अक्तूबर १८७४ को कनेक्टीक्ट मे पैदा हुआ। वे १९ मई १९५४ को न्यूयार्क मे स्वर्गवासी हुये।]

चार्ल्स टामलिन्सन ग्रिफ्स

"अतिशीघ्र बिगड जाने वाला शिल्पकार अत्यधिक संशयशील कलाकार होता है।"

—लारेंस गिलमैन

विलबुर ग्रिफ्स एक व्यापारी था जो न्यूयार्क के एलमीरा मे रहता था। वह और उसकी पत्नी साहित्यिक रुचि रखती थी और उन्हे सगीत भी बहुत पसन्द था। उनके पाँच बच्चे थे जिन्होने सगीत के वाद्य-यन्त्र बजाना सीखा, और उनके तीसरे बच्चे का नाम चार्ल्स था जो सगीतकार हो गया।

एक बच्चे की विलक्षणता उतनी ही विरल है जितना कोई अद्वितीय प्रतिभावान होता है। इस पुस्तक मे जिन सगीतकारो की जीवन-कहानियाँ दी गई है, उनमे से कोई भी सगीतकार अपने बचपन से ही विलक्षण प्रतिभावान न था। लेकिन प्रतिभा रहित व्यक्ति भी अपने परिश्रम से ऐसे अमूल्य कार्य कर डालते है कि वे अपने जीवन के बाद भी याद किये जाते है। चार्ल्स ग्रिफ्स मे बचपन से ही विलक्षण प्रतिभा नही थी लेकिन वह बचपन से ही यह महसूस करता था कि वह साधारण स्थिति मे भी कुछ-न-कुछ करने के लिये है।

उसकी एक बहिन वायलिन बजा लेती थी, उससे बडी दूसरी बहिन पियानोवादक ही नही थी बल्कि पियानो सिखाने की अध्यापिका भी थी। जब वह बहुत छोटा था, तब इसी बहिन से उसने पियानो के प्रथम पाठ सीखे थे। उसमे सगीत की प्रवृत्ति थी जिसे निभाने के लिये उसे काम नही करना पडा जबकि उसके माता-पिता यह चाहते थे कि वह परिश्रम करे। अन्य कई कलाकारो को अपने बचपन मे ही अपने माता-पिता के विचारो के विपरीत अपनी प्रवृत्ति के अनुकूल काम करने के लिये कठोर परिश्रम करना पडा है। यह स्वाभाविक था कि चार्ल्स ऐसे परिवार मे था जहाँ उसे प्रोत्साहित किया जाता और उसे जल्दी ही पढने का शौक हो जाता।

उसे यात्रा साहित्य की पुस्तके अधिक अच्छी लगती थी। वह सुदूर स्थानों के बारे मे सोचा करता था। वह पूर्व के देशो का वर्णन पढकर अधिक लालायित हो जाता था। उसे कविता के पढने मे आनन्द आता था और वह कुछ समय के लिये अमरीकी कवि एडगर एलन पो को बहुत पसन्द करने लगा था। जब चार्ल्स बडा हो गया तब ये प्रवृत्तियाँ उसकी सगीत की रचनाओ मे उभर उठी।

वह ड्राइग और पानी के रगो से चित्रकारी करने मे दक्ष हो गया। हमे यह योग्यता अन्य कई सगीतकारो मे भी मिली है। जब चार्ल्स ग्रिफ्स बडा हो गया तब उसने तावे पर कुछ सुन्दर इंचिग (रेखाचित्र) तैयार की। कुछ लोगो ने उससे यह कहा कि वह चित्रकला को अपने जीवन का कार्य बना ले। वह पब्लिक स्कूल गया और उसने उसे पसन्द किया। वह खेलो मे भाग लेता था और उसे विशेषकर टेनिस का खेल पसन्द था। चार्ल्स ऐसे उदार हृदय का नही था कि वह अनायास सभी को स्वीकार कर लेता। वह मित्र होने पर भी रिजर्व रहना चाहता था। उसकी इच्छा थी कि उसके कुछ ही अतरग मित्र हो। उसने बचपन से ही गीत लिखे और पियानो की सगीत-रचना की और उन गीतो को एलमीरा मे प्रस्तुत किया गया।

चार्ल्स के दूसरे अध्यापक पियानो के अध्यापक थे और वे एक कुशल पियानो-वादक थे। उनका नाम मेरी एस०ब्राउटन था और उन्होने जर्मनी मे ट्रेनिग प्राप्त की थी। उसे महान कलाकारो का सर्वोत्तम सगीत सिखाया गया और इस प्रकार उसकी सगीत मे विशेष रुचि हो गई। उसे रोमाटिक कविता और गद्य पढने मे विशेष रुचि थी। उसको अपनी रचनाओ मे हल्कापन तथा रोमाटिक शैली थी। बाद में उसे रिचार्ड स्ट्रास, ह्यूगो वोल्फ और ब्रेह्मस के सगीत ने बहुत प्रभावित किया। जब वह हाई स्कूल मे था, चार्ल्स का पियानो-वादन वर्ष-प्रति-वर्ष अच्छा ही होता गया और उसके अध्यापक ने उसको यह सलाह दी कि वह वर्लिन जाकर सगीत की शिक्षा जारी रखे।

चार्ल्स अपनी उन्नीसवी वर्ष की आयु मे जर्मनी को इस विचार से चल दिया कि वह वहाँ कसर्ट के लिये पियानो-वादक बन सकेगा। उसने सगीत के

सिद्धान्त और रचना का अध्ययन भी किया। उसकी रचनाओ के लिये अध्यापको मे से एक का नाम हम्परडिंक था जो **हॅसेल** और **ग्रेटेल** का सगीतकार था। ग्रिफ्स उन दिनो जर्मनी मे था जब वेगनर के सगीत की धाक चारो ओर फैली हुई थी लेकिन वह स्पष्ट विचारो का व्यक्ति था। उसे वेगनर का सगीत पसन्द था लेकिन वह उससे अभिभूत होकर वह नही जाता था। जब वह बीस वर्ष का था, उसने बर्लिन मे सार्वजनिक रूप से वाद्य-वादन किया और अपने पियानो पर एक सोनाटा बजाया जिसे उसने स्वय लिखा था।

जब ग्रिफ्स जर्मनी मे था, उसकी महत्वाकाक्षा मे परिवर्तन हो गया। वह कसर्ट के पियानो वादक के बजाय सगीतकार होना चाहता था। उसने अन्य विदेशी भाषाओ का अध्ययन किया लेकिन उसे जर्मन सबसे अधिक आती थी। उसने पॉच जर्मन कविताओ को सगीत बद्ध किया और उसकी ये प्रथम प्रकाशित रचनाएँ थो। ये रचनाएँ उस समय प्रकाशित हुई जब वह पच्चीस वर्ष का था और इन रचनाओ का प्रकाशन उसके अपने देश लौट आने पर हुआ था। उसने जर्मनी मे चार वर्ष अध्ययन किया और वहॉ उसने अध्यापन कार्य किया।

जब वह घर लौटकर आया तब उसके लिये यह आवश्यक था कि वह कुछ काम खोजे क्योकि उस समय गभीर सगीतज्ञ के लिये यह सभव नही था कि केवल लिखने से ही गुजर हो सकती है। वह टेरी-टाउन मे लडको के हेक्ले स्कूल मे पियानो का अध्यापक और क्वायर मास्टर बन गया। वह अपने खाली समय मे सगीत का अध्ययन करता था और उसे लिपिबद्ध किया करता था। वह आधुनिक फ्रेंच और रशियन सीखा करता था और अपनी रचनाएँ किया करता था। वह अपना सारा समय अध्ययन और रचना मे लगाना चाहता था, इसलिये उसे अध्यापक का काम दु ख देने लगा और वह उसमे मन न लगा सका।

उसने तेरह वर्षो तक टेरीटाउन मे पढाया और ऐसी रचनाएँ की जिनके लिये वह आज भी याद किया जाता है। उसने पियानो के लिये **रोमन स्केचेज** नामक गीत लिखे जिनमे से **दी व्हाइट पीकाक** सबसे अधिक बजाया

जाता है। ग्रिफस स्वर संगीत का प्रेमी था, उसने एक बेले लिखा जिसका शीर्षक था **दी कैरन आफ कोरिडवेन** और उसे न्यूयार्क के नेबरहुड प्ले हाउस में प्रस्तुत किया गया। उसका **शोन्जो** नामक बेले जापान की पुरानी कथा पर आधारित है और उस बेले को न्यूयार्क, बोस्टन और अन्य नगरों में काफी लोकप्रियता मिली। वह अब भी ओरियण्ट विचारों के प्रति आकर्षित था उसने प्राचीन चीन और जापान की पांच कविताओं को संगीतबद्ध किया। ये गीत पांच-टोन या ह टोन स्केल पर लिखे गये।

वर्ष दुख मे बीते। उसे अपने जीवन मे ऐसा बहुत सा काम करना पडा जो उसकी रुचि के अनुकूल न था, उसका वहुत समय अध्यापन करने मे ही बीत गया। उसकी सेहत ठीक नही रहती थी और वह स्वस्थ होने के लिये बराबर डाक्टरो के पास जाया करता था।

जब वह लगभग छत्तीस वर्ष का था कि उसका देहान्त हो गया। यह वह समय था जब उसे सफलता मिलने लगी थी। डीम्स टेलर ने ग्रिफ्स के बारे मे लिखा है, "उसकी असामयिक मृत्यु मे इस देश के लिये सगीत को सबसे भारी क्षति पहुँची है।" मिस्टर टेलर ने सोचा था कि ग्रिफ्स ससार प्रसिद्ध सगीतज्ञ हो जायेगा और उसका सगीत ऐसा होगा कि यह कहा जायेगा कि अमरीका ने प्रथम कोटि के सगीतकार को जन्म दिया है।

ग्रिफ्स ने चालीस रचनाओ से कम रचनाएँ लिखी जिनका उल्लेख किया जाता है और कोरस तथा ओरेकेस्ट्रा के लिये भी लिखा-**दीज थिंग्स शैल बी** और वायलिन तथा ओरकेस्ट्रा के लिये भी तीन चीजे लिखी **दी लेमेण्ट ऑफ आयन द प्राउड, दाई डार्क आइज टू माइन,** और **द रोज आफ द नाइट** ये सभी रचनाएँ प्रमुख है और इन पर उनकी ख्याति निर्भर है। उसने एक **स्ट्रिंग क्वार्टेट** लिखा जिसमे उसने इण्डियन गीत का प्रयोग किया लेकिन उसने यह महसूस नही किया कि इण्डियन गीत ही पुन 'अमरीकी' गीत मे बदल गया है। उसकी कृतियाँ योरुप मे बजाई जाती है और शायद कभी कोई योरुप-वासी मिले जो अमरीकी सगीतकारो मे से चार्ल्स ग्रिफ्स को न जानता हो।

[चार्ल्स टामलिनसन ग्रिफ्स १७ दिसम्बर १८८४ को एलमीरा, न्यूयार्क मे पैदा हुए। उनका ८ अप्रैल, १९२० को न्यूयार्क मे निधन हो गया।]

जेरोम कर्न

"आपके लिये मेरे पास कुछ है"।

विक्टर हर्बर्ट न्यूयार्क जिस वर्ष पहुँचे, उसके एक वर्ष पूर्व उस नगर मे एक लडके ने जन्म लिया। बाद मे विक्टर हर्बर्ट ने उस नगर मे ओपरेटा—लेखक के रूप मे ख्याति पाई। उसी प्रकार वह लडका भी उन वयोवृद्ध सगीतकार के समान ही सगीत के क्षेत्र मे प्रसिद्ध हुआ। स्टीफेन फॉस्टर के पिता के समान हेनरी कर्न एक सौदागर थे। उनकी पत्नी को पियानो बजाना आता था और जब कर्न परिवार के तीन लडके बडे हो गये तो उनकी माता ने उन्हे पियानो बजाना सिखाया। कई भाई मिलकर कसर्ट मे 'ऐटहैण्ड अरेंजमेण्ट' मे वाद्य-वादन कर लेते थे।

जेरोम कर्न दस वर्ष का हो गया और तभी उसका परिवार नेवार्क चल दिया। उसने वहा हाई स्कूल मे शिक्षा पाई, सामूहिक सगीत कार्यक्रम मे ओरगेन बजाया, अपने स्कूल के सगीत के प्रदर्शन का सचालन किया और सत्रह वर्ष की आयु मे ग्रेजुएट हो गया। उसने अन्य अध्यापको के साथ पियानो का अध्ययन जारी रखा और न्यूयार्क कालेज ऑफ म्यूजिक मे भी पढता रहा। फिर उसने 'हार्मोनी' सीखनी शुरू की।

अभी तक मिस्टर कर्न सगीत के यत्रो का व्यापार नही करते थे लेकिन उनको पियानो सप्लाई करने के दो आर्डर मिले इसलिये उन्होने पियानो की सप्लाई करने की इच्छा की। उन्होने अपने पुत्र जेरोम को पियानो फैक्टरी देखने के लिये भेजा और कहा कि वह वहाँ से दो पियानो खरीद लाये। वह लडका स्कूल से निकला ही था कि उसे न्ययार्क मे व्यापार करने के लिये भेजा गया, उसे यह अनुभव प्राप्त करने मे आनन्द आया। पियानो फैक्टरी के मालिक वडे मिलनसार व्यक्ति थे। उन्होने उसका अधिक आदर सत्कार किया और अपने यहाँ भोजन के लिये आमन्त्रित किया। उनका व्यवहार और बात-चीत करने का ढग इतना आकर्षक था कि वह लच की टेबुल से उठने तक दो सौ पियानो खरीदने का आर्डर दे चुका था।

जब वह अपने पिता को दिन भर के काम की प्रगति बताने आया तब मिस्टर कर्न की यह हार्दिक इच्छा हुई कि अच्छा यही रहेगा कि वह जेरोम को सगीत के अध्ययन के लिये विदेश भेज दे। वह दो सौ पियानो खरीद लाया था और उन सभी पियानो का वह क्या करता? कई दिन तक चिन्ता और वाद-विवाद चलता रहा कि वह नये 'व्यापार' के अनुकूल बने फिर मिस्टर कर्न ने एक वेयर हाऊस किराये पर लिया और उसमे अपने शेष एक सो अठानवे पियानो स्टोर कर दिये। उसने उन पियानो को उधार पर बेचना शुरु किया और किस्तो मे उनकी कीमत वसूल की। उनकी असली कीमत मे कम कीमत ही मिल सकी लेकिन वह उन्हे कई वर्षो मे बेच सका। उसके कुछ समय बाद पियानो का बेचना एक प्रमुख व्यापार बना लेकिन अब जेरोम वहाँ काम नही कर रहा था। उसका पिता उसे सगीत सीखने के लिये बाहर भेजने मे प्रसन्न था।

उसी वर्ष वह सत्रह वर्ष का हो गया और वह जर्मनी चला गया और उसे उस वर्ष के बाद सगीत का पहिला काम मिला। कुछ समय तक उसने न्यूयार्क और लदन मे काम किया और फिर अध्ययन करने के लिये वह जर्मनी चला गया। जब रैगटाइम सगीत एक नया उद्योग और नवीन कार्य था तब

वह एक 'म्यूजिक पब्लिशिंग हाऊस' मे 'प्लगर' का काम करता था। नया नारा यह था "इसे अपने पियानो पर बजाकर देखे।"

दो सौ वर्षो से कुछ कम समय बीत गया जब न्यू इंग्लैण्ड मे पहिली बार 'गायन-स्कूलो' का विकास हुआ था और सिंगिग टीचर बनाना भी एक नया काम था। ये टीचर छात्रो को नोट पढाना सिखाते थे। उसके बाद ऐसा समय आया जब योरुप के कलाकार नव-विकसित देश की दौलत को देखकर उसे पाने के लिए लालायित हुये और वे इस देश मे आने लगे। उन्होने धन के बदले मे सगीत के ऊँचे स्टैंडर्ड की रुचि कायम की। नये देश के बसने और विकसित होने के बाद ही विनोद करने वाले सगीत पर जोर दिया जाने लगा। मनोविनोद करने वाला पहिला सगीत इतना बेतुका था जितना कि पहिला गंभीर सगीत। देश की दौलत और उद्योग ने सगीत के वाद्य-यत्रो को प्रमुखता दी। जेरोम कर्न देश मे उस समय लौटा जब वाद्य-वादन सगीत सारे देश मे फैल चुका था। उसने मनोविनोद करने वाले सगीत मे विशेष सौंदर्य लाने का प्रयत्न किया।

अठारह वर्ष की थी जब उसने लदन से लाये गये एक शो के लिये नये गीत लिखे।

अगले वर्ष भी उसने वैसा ही किया। वह अपने काम मे प्राय लन्दन जाया करता था; जब वह इस प्रकार के सगीत के कार्य को करता रहता, तब दर्शक यह देखते कि शो के प्रारभ मे ही सर्वोत्तम सगीत है और उस सगीत की रचना जेरोम कर्न ने की है।

जब वह पच्चीस वर्ष का हो गया तब उसने एक पूरा स्कोर लिखा। उस वर्ष पतभड के मौसम मे वह इग्लैण्ड मे था और वहाँ उसने एक अग्रेज लडकी से अपना विवाह कर लिया।

उसके एक वर्ष बाद उसकी प्रथम मौलिक सगीत सम्बन्धी कोमेडी प्रस्तुत की गई। उसका **द रेड पेटीकोट** नाम रखा गया। वह अब एक प्रसिद्ध सगीतकार था, उसकी ख्याति ब्रोडवे मे ही नही बल्कि पिकेडिली मे भी थी। इसके बाद वह वर्ष मे एक शो के लिये सगीत प्रस्तुत करता और कभी-कभी दो या तीन बार सगीत प्रस्तुत करता।। जेरोम कर्न के सगीत के शो न्यूयार्क, लदन और पेरिस मे एक साथ चला करते थे। उसके मन मे अनगिनत ट्यून आती थी, वह उन्हें लिखता रहता था। वह इस बात के लिये सचेत रहता था कि वह स्वय उनकी कापी नही कर रहा है।

आगामी दस वर्षो मे विश्व महायुद्ध चलता रहा। बीसवी शताब्दी के १९११ से १९१९ तक का समय था। उन वर्षो मे ओपेरा अपनी सफलता की चरम सीमा पर पहुँच चुका था। सगीतयुत खेल रोमाटिक और विदेशी होते थे। प्राय 'कहानिया' ऐतिहासिक होती थी। म्यूजिक मे ट्यून होती थी और उसकी रिद्म मस्ती भरी होती थी। चार सगीतकार इस प्रकार का सगीत देने के लिये प्रमुख बन गये थे। उनमे से पहिले विक्टर हर्बर्ट थे जो आइरिश-अमरीकी थे और उन्होने **बेबज इन टॉयलैण्ड** लिखा, दूसरे बवेरियन रुडोल्फ फ्रिम्ल थे जिन्होने **केटिका** लिखा, तीसरे हगरी निवासी सिगमण्ड रोमबर्ग थे जिन्होने **इन ब्लासम टाइम** लिखा और चौथे न्यूयार्क के जेरामे डेविड कर्न ही

थे जिसने **वेरी गुड एडी, हेव ए हार्ट, लीव इट टू जेन, दी बंच एण्ड जूडी, स्टेपिंग स्टोन्स** जैसी कुछ रचनाएँ की।

बहुत पहिले डैन एमिट के छोटे कार्यों से 'मिन्स्ट्रल शो' उदय हुये और तब "बिग फोर" दर्शको का मनोविनोद कर लेते थे फिर इन्ही शो मे बढते-बढते चालीस या साठ व्यक्ति भाग लेने लगे—यहाँ तक सगीत की कॉमेडी मे भाग लेने वाले कलाकार बढते ही गये कि वे अपने अधिक कलाकारो या व्यय की अधिकता से लगभग समाप्त ही हो गये। १९२१ से १९२९ तक प्रोडयूसरो मे आपस मे होड होने लगी और व्यर्थ तडक-भडक के साथ अधिक खर्चीले खेलो का प्रदर्शन होने लगा। अब खेलो पर पचास हजार डालर खर्च करना मामूली बात हो गई और उन खेलो की सख्या भी बढने लगी लेकिन उनकी गुणवत्ता (क्वालिटी) मे अतर न हो सका। अब बाक्स आफिस के लिये पचास लडकियो की अपेक्षा सौ लडकियो का कोरस सगीत आवश्यक था। अब दो कॉमेडियन के स्थान पर आठ कॉमेडियन काम करने लगे थे और एक नृत्य की टीम के स्थान पर नृत्य के लिये पूरा दल काम करने लगा था। लोकप्रिय सगीत के पटल पर परिवर्तन हो रहे थे।

लगभग सभी सगीतात्मक कॉमेडी की कहानियाँ या कथानक बहुत ही नगण्य और हीन हो चुके थे। 'नायक' परम्परा के साथ-साथ रोमाटिक कहानी भी समाप्त हो चुकी थी। अब चरित्र-चित्रण बिल्कुल नही होता था। सगीत किसी सगीत-शो के लिये नही लिखा जाता था, 'रगमच के जीवन' के दौरान मे सर्वोत्कृष्ट गीतो को छाट लिया जाता था और उन्ही गीतो को केन्द्र बनाकर जैसे भी कहानी और गीत सभव थे, वैसी कहानी और गीतो की रचना की जाती थी। जनता को यह बुरा भी न लगता था! यदि कोई खास कहानी भी नही होती तो भी वे इसपर विशेष ध्यान नही देते थे। उनके लिये यह पर्याप्त था कि कहानी का कुछ अश यहाँ से लिया गया और कुछ वहाँ से लिया गया। जहाँ तक वाद्य-यत्रो का प्रश्न था मुँह और थपकी से बजाये जाने वाले वाद्य-यत्रो ने तारो के ललित वाद्य-यत्रो का स्थान ले लिया था क्योकि जाज़ सगीत प्रारम्भ हो चुका था जिसके कारण कोलाहलपूर्ण रिद्म का प्रादुर्भाव हुआ। जो

भी मेलोडी बनती थी, वे शीघ्र बनाई जाती थी और टूटी-फूटी सी लगती थी। इनका ध्येय प्रमुख रूप से गायन की ओर न होकर नाच की ओर होता था। सबके मन मे बसी मेलोडी अब लोगो को प्रिय नही रह गई थी और वे इसे भूलने लगे थे। लेकिन जेरोम कर्न ने इसे नही भुलाया।

फोर्टिसिमो क्लेयर की ओर परिवर्तन के बीच वह गीतकार कभी 'सर्वोत्कृष्ट गीत' लिखने के विचार से नही बैठा लेकिन स्वान्त सुखाय ही गीत की रचना करना जिसका ध्येय था, उसने **ओल' मेन रिवर** के उन मधुर गीतो की रचना की जो उस वर्ष ही नही वरन कई वर्षों तक सर्व प्रिय गीत रहे।

मिस एडना फर्बर के **शो बोट** उपन्यास के प्रकाशन के बाद जब जेरोम कर्न ने उसका विज्ञापन एक अखबार मे देखा तो उसने उसकी एक प्रति खरीदी लेकिन वह उसे पढ नही सका। लेखिका उसकी यह दशा सुनकर सचमुच बेचैन हो गयी लेकिन जेरोम कर्न ने उनको बताया कि जैसे ही उसने उनके उपन्यास के पृष्ठ खोले, ट्यून के बाद ट्यून उसके दिमाग मे छाती गई और उसे पढना रोककर बार-बार पियानो पर बैठना पडा। उसने मिस फर्बर को बताया कि वह उस उपन्यास के आधार पर एक लाइट ओपेरा तैयार करेगा।

दोनो मे करार हुआ। ओस्कर हेमरस्टीन ने गीत लिखे, जिसके बारे मे मिस्टर कर्न ने कहा, "सगीत ने स्वय इसे अपने आप रचा हे।" दक्षिण के जीवन से अपरिचित होने के कारण उसने मार्क ट्वेन की लिखी **लाइफ आन दी मिसीसिपी** नामक प्रसिद्ध पुस्तक को पढा और उससे 'मिसीसिपी रिवर नीग्रो' की अत्यन्त करुण लय को पकडा। इसी को उसने **ओल मैन रिबर** मे रचा जो **शो बोट** का प्रसिद्ध सर्वोत्कृष्ट गीत हुआ। कुछ आलोचको का कहना था कि यह सच्चे शास्त्रीय अर्थों मे ओपेरा विधि पर बनी थी जो हर रूपो मे अमरीकी थी।

मिस्टर कर्न ने बिना कोरस बालिकाओ की सहायता से गीतात्मक नाट्य प्रस्तुत करने की योजना बनाई। बाद मे उसने यह समझा कि इनकी अब माँग नही है। उसे इस बात ने चिंतित किया कि जब वे न तो अच्छी तरह गा सकती थीं और न ही कहानी का उनसे विशेष सम्बन्ध होता था तो उनको

स्टेज पर फुदकने के लिये क्यो रखा जाय। **द कैट एण्ड द फिडिल** और **म्यूजिक इन द एअर** दोनो ही अत्यन्त सफल रहे यद्यपि इनमे से किसी मे एक भी कोरस वालिका न थी। **द कैट एण्ड द फिडेल** उन शहरो मे खेला गया जहाँ लोगो ने वर्षो से सगीतात्मक खेल के बारे मे सुना तक नही था।

जेरोम कर्न की हास्य और चरित्र-चित्रण की प्रतिभा तथा एक वास्तविक मेलोडी लिखने की क्षमता ने उसके खेलो को एक आदर का स्थान प्रदान किया। उसने प्रारभ मे जर्मनी मे सगीत-रचना की ट्रेनिग प्राप्त की। वह बदलते हुये युग की माँगो के अनुरूप लोकप्रिय सगीत देने के लिये परिवर्तन करते हुये भी अपनी शैली बनाये रहा। यह कहा जाता था कि कर्न मोजार्ट की तरह ही लिखना पसन्द करता था और वह ब्लूज भी रच सकता था। लोकप्रिय सगीत के कई रचियताओ के सामने इस प्रकार के आदर्श नही थे। उसे लोकप्रिय सगीत का पडित समझा जाता था। जब उसने पी० जी० वोडहाउस के साथ इग्लैण्ड मे गीतात्मक कामेडी लिखी तो ऐसा लगता था कि वे गिल्बर्ट और सुलवियन के सर्वोत्कृष्ट रचनाओ के समान है।

केवल सगीत की रचना कर लेने से मिस्टर कर्न का काम समाप्त नही हो जाता था, वह अत्यन्त परिश्रमी था और खेल के तमाम रिहर्सलो के दौरान छोटी-से-छोटी वातो को वह स्वय देखता था और जहाँ कही नई मेलोडी उसे मिलती थी, वह अभिनेता या इलेक्ट्रिशियन, जो कोई भी मिल पाता था, उसको बुला लेता और मुस्कराकर उससे कहता था, "मैने तुम्हारे लिये कुछ रचा है।"

उन दिनो जब सगीतकार न्यूयार्क के बाहर रहकर **दे डिडिंट बिलीव मी** और **यू आर हियर एण्ड आई एम हियर** ऐसी प्रसिद्ध मेलोडी तैयार कर रहा था, मिस्टर कर्न कहता था कि उसमे किसी सगीतकार या कलाकार की सनक नही है, वह तो केवल एक परिश्रमशील नगर निवासी है जो केवल अपनी पत्नी और बच्चो का ध्यान रखता है। उसने कहा था, "मैने बहुत से विचित्र कपडे कभी नही खरीदे।" लेकिन ऐसा होने पर भी जब वे **म्यूजिक इन द एअर** मे काम कर रहे थे तो रिहर्सल के लिये उन्होने कुछ बेवेरियन कपड़े खरीदे थे।

१९३१ से १९४० के बीच ध्वनि की प्रत्युत्पत्ति की विधा की उन्नति के बाद सुगम संगीत रचने वाले होलीवुड के अनुपम उद्योग की ओर खिंच रहे थे। उस समय मिस्टर कर्न केलीफोर्निया मे रहकर चल-चित्रो के लिये सरल ओपेरा और संगीतात्मक कामेडी रचकर हमे लगातार कुछ न कुछ देते ही जा रहे थे। उन्होने लिली पोन्स, इर्ने ड्यूने और ग्रेस मूर आदि विभिन्न सितारो के लिये संगीतात्मक रोल तैयार किये।

मिस्टर कर्न को टेनिस, गोल्फ या ताश आदि खेल कभी पसन्द नहीं थे लेकिन उनकी भी अपनी एक बडी हॉबी थी। वे किताबो के बड़े-बडे नीलामो मे जाकर दुर्लभ पुस्तको को एकत्रित करते थे। केवल एक अप्राप्य खण्ड के लिये कभी-कभी वे पन्द्रह से बीस हजार डालर तक खर्च कर देते थे। विशेष बात यह थी कि वे उसे पढते थे। १९२९ मे जब उनके वैभव के दिन समाप्त हुये, उन दिनो तक उन्होने एक बहुत बडा संग्रह तैयार कर लिया था। उन सभी को उन्होने नीलाम पर रखा। नीलाम कई दिनो तक चलता रहा, बहुत से ऐसे खरीदार नीलाम मे आये जो मिस्टर कर्न को एक भोला ग्राहक समझते थे जब कभी वे उनकी दूकान पर जाते थे। कदाचित उनकी राय पुस्तक खरीदने के बारे मे भी वैसी ही थी जैसी उसे पियानो फैक्टरी के मालिक और उनके पिता की राय थी जिसके यहाँ स्कूल से निकलने के बाद वे पियानो खरीदने गये थे। लेकिन जब नीलाम समाप्त हुआ तो संगीतकार को इससे लगभग दस लाख डालर का लाभ हुआ।

इसके अतिरिक्त उसे उन पुस्तको को इतने दिनो तक अपने पास रखने का सुख भी मिला। अपनी दुर्लभ पुस्तको की तरह उन्होने अपनी पसन्द का परिचय दिया।

[जेरोम डेविड कर्न २७ जनवरी, १८८५ को न्यूयार्क शहर मे पैदा हुये और ११ नवम्बर १९४५ को उनका वहीं निधन हुआ।]

जार्ज जर्शविन

"मै प्रायः शोर में भी संगीत सुनता हूँ।"

यह उस समय की बात है जब अमरीकी आविष्कार अमरीकी जीवन को गति प्रदान कर रहे थे, और लोग अपने सुदूर बैठे मित्रो से टेलीफोन द्वारा बात करने की आशा कर रहे थे, उस समय रूस के नगर सेण्ट पीटर्सबर्ग से एक लडकी आकर न्यूयार्क मे रहने लगी। उसका नाम रोज़ ब्रसकिन था। इसके कुछ समय वाद रूस के उसी शहर से एक युवक यहूदी जर्शविन भी न्यूयार्क मे पहुँचा जहाँ गैस की बजाय सडको की बत्तियाँ बिजली से आलोकित होने वाली थी। इन दोनो का विवाह हो गया। उस समय रोज़ की आयु सोलह वर्ष थी।

समय बीता और उनके चार बच्चे हुये। सबसे बडे लडके का नाम इसाडोर था जिसे इरा के नाम पुकारा जाता था। उसके दो वर्ष बाद एक दूसरा बच्चा हुआ जिसका नाम जेकोब था। इरा पूर्वी भाग मे पैदा हुआ था लेकिन जेकोब का जन्म ब्रुकलियन मे हुआ था। उसका नाम बाद मे जार्ज पड गया। ब्रुकलियन नदी के पार स्थित था। जर्शविन के पिता ने उन वर्षो मे कई काम शुरू किये और वह अपने परिवार के साथ कई बार इधर-उधर गये। वे न्यूयार्क मे फिर वापिस आ गये जबकि जार्ज कुछ ही वर्षो का था। लेकिन जहाँ कही भी वे सपरिवार रहे, न्यूयार्क के सडको के किनारे के पैदल-मार्ग उन भाइयो के लिये खेल के स्थान थे।

जार्ज परिवार के सदस्य जहाँ रहते थे, उस स्थान के पडोस मे जार्ज रोलर-स्केट का चेम्पियन हो गया। वह खिलाडी था और उसे खेल पसन्द थे। वह सदैव प्रसन्न चित्त रहता था। "शहर का बालक" होने पर भी वह यह कभी नही जान पाया कि अन्य व्यक्तियो की अवहेलना कैसे की जाय। वह अकेला नही चलता था और उसके साथ सदैव अन्य खिलाडी रहा करते थे। वह पब्लिक

स्कूल जाया करता था लेकिन उसके लिये अध्ययन करना एक जजाल था। उसने पढने की कभी चिन्ता नही की सिवाय इसके कि वह कभी-कभी परियो की कहानियाँ पढ लेता था। वह समझता था कि इरा पढने के लिये है और इरा को रोमाचकारी साहित्य अच्छा लगता था। जब तक सगीत मे कोई विशेष बात न हो तब तक सगीत का कोई अर्थ नही होता। उसके पिता ने सोचा कि जार्ज शायद आवारा बन जायेगा।

उन्होने पब्लिक स्कूल २० मे **ऐनी लारी** और **लाक लामण्ड** जैसे पुराने अच्छे गीत गाये। जार्ज को **लाक लामण्ड** और सर आर्थर सुलीवेन का **द लास्ट कॉर्ड** पसन्द आया लेकिन उसे सगीत का तनिक भी ज्ञान न था। उसने ट्रेनो के शोर को दबाने वाले बेतुके उच्च-स्वरो के गीत सुने थे जिन्हे हर्डी-गुर्डी (सारगी की भाति एक बाजे) पर गाया जाता था, उसने सडक पर गाने वाले या फिडिल बजाने वाले के गीत सुने थे जो रास्ते मे आने-जाने वाले लोगो के शोर को दबाकर गाते हे, उसने कोनी आइलैण्ड मे मेरीगो राउड से कृत्रिम सगीत सुना था और हकी टाक के रैगटाइम सुने थे। यदि कोई लडका पियानो या वायलिन सीखता तो जार्ज उसको "लिटिल मेगी" कहकर पुकार उठता। जार्ज ने सोचा कि 'सिसी' बनकर ही क्या लाभ है। उसके ऐसे मानने का कारण यह था कि वह सगीत से बिलकुल ही अपरिचित था और वह किसी भी सगीतज्ञ या किसी अन्य व्यक्ति से परिचित नही था जिससे कि वह उदार बन सके। यह याद रखना बहुत बडी बात है कि ऐसी भूलो के प्रति हम सदैव सतर्क रहे जो हमारे जीवन मे हो जाती है। लेकिन हम प्राय ऐसी बातो के प्रति सजग नही हो पाते जब तक कि हम बूढे न हो जायँ। जो जल्दी यह महसूस कर उठते हैं कि अधिक व्यक्तियो और चीजो मे रुचियाँ बढा लेने से जीवन मे विशेष आनन्द मिलता है, वे प्राय वही व्यक्ति होते है जिनको अपेक्षाकृत अधिक अवसर मिल जाते हैं। जार्ज जर्शविन बचपन मे कुछ भी न सीख सका लेकिन बाद मे उसने बहुत कुछ सीखा।

उन दिनो मे बहुत से लोगो को सगीत के बारे मे कुछ भी ज्ञान न हो पाया। लेकिन दूसरो को पियानो खरीदता हुआ देखकर वे एक पियानो जरूर

खरीदते थे। शायद आप भी यह जानते है कि कुछ लडके या लडकियाँ सगीत की शिक्षा इसलिये प्राप्त करते हे कि उनके मित्र जैक या नैन्सी ने सगीत की शिक्षा ली है, और इसलिये वे सगीत की शिक्षा से वचित नही होना चाहते। यह कितनी विचित्र वात है कि बहुत से व्यक्ति वैसा ही बनना चाहते है जैसे कि दूसरे व्यक्ति होते है। वास्तव मे कुछ ही लोग स्वतत्र विचार के होते हैं जो अपना अलग व्यक्तित्व बनाना चाहते हैं। जर्शविन परिवार के सदस्य भी अपने रिश्तेदारो की देखा-देखी एक पियानो खरीद लाये। यह तय हुआ कि इरा पियानो सीखेगा।

इरा ने पियानो सीखना शुरू किया लेकिन वह अधिक समय तक न सीख सका। इसके बजाय उसने पढना पसन्द किया। उसने धुलाई घर के पीछे ब्रूम स्ट्रीट मे एक सर्कुलेटिंग लाइब्रेरी (पुस्तकालय) ढूढली। उस पुस्तकालय से प्रति सप्ताह २५ सेट देकर साहसिक घटनाओ से सम्बन्धित उपन्यास मिल जाते थे। वह **लिबर्टी ब्वायज आफ '७६, प्लक एण्ड लक** और पश्चिमी जगलो की कहानियाँ पढने मे डूबा रहता था। कभी-कभी उसने एक सप्ताह मे दस या इससे अधिक भी हल्की-फुल्की रोमाचकारी कहानियो की पुस्तक पढी। उसने कई ऐसी पुस्तके पढी जिन्हे उसे नही पढना चाहिये थे। मना की गई पुस्तको को पढते समय अपने माता-पिता के आने की आहट को सुनने पर वह उन्हे कालीन के नीचे या दीवार पर टगी किसी पारिवारिक तसवीर के पीछे तुरन्त छिपाने की कला भी सीख चुका था। नये पियानो के हाथी दाँत की खूटियो के साथ खिलवाड करने की अपेक्षा उसे अपना यह अध्ययन कही अधिक उत्तेजक लगता था। जो कुछ भी हो, उसे यह जल्दी पता लग गया कि उसको पियानो बजाने के लिये बाध्य नही किया जायेगा क्योकि इसके लिये अब एक दूसरा आदमी आ गया था। लोग उसकी तरफ से बेपरवाह हो गये थे। अब पियानो बजाने के लिये बैठने वाला उसका भाई जार्ज था।

जार्ज को पियानो ने बहुत आकर्षित किया। वही बालक जो 'छोटा मैगी' नही बनना चाहता था, तेरह वर्ष की आयु मे पियानो सीखने के लिये एक अध्यापक की माँग करने लगा। वह अपने खोये समय को पूरा करने के लिये

ऐसा जुटकर पढाई करने लगा कि अपनी निर्देशिकाओ को चाट डालता था। स्कूल की एक घटना ने जार्ज को बिलकुल बदल दिया।

किसी उत्सव मे उसी स्कूल के एक रूमानियन बालक ने वायलिन बजाया। जार्ज ने हाल मे जाने की परवाह नही की। वह बाहर ही रहा। मैक्सी रोजेन्जविग जो अब वायलिनस्ट मैक्सरोजन के नाम से प्रसिद्ध है, जार्ज से एक साल छोटा था और बहुत अच्छा वायलिन बजा लेता था। ड्वोरक्स ह्यमरेस्क की स्वर लहरियाँ हाल से निकल कर सीढियो के नीचे तक पहुँच रही थी और अनायास जार्ज उस मधुर सगीत की ओर उसी तरह खिचा जा रहा था जैसे बत्तख पानी की ओर।

उसने बाद मे कहा, "वह एक सौदर्य की कोधती हुई झलक थी। मैंने निश्चय किया कि मै उन महोदय से परिचय करूँगा और मैं उनसे मिलने की आशा मे, दोपहर मे तीन से साढे चार बजे तक उनकी प्रतीक्षा करता रहा। मूलसाधार वर्षा हो रही थी और मै बुरी तरह भीग चुका था।"

वह युवक वायलनिस्ट नही दिखाई पडा और जब वह उससे मिलने के लिये स्कूल वापस गया तो वह जा चुका था। उसने मैक्स के घर का पता लगाया और पानी मे तरबतर वह उसके पीछे चल पडा। पर उसका दुर्भाग्य ही रहा कि उसे मैक्स घर पर नही मिला। लेकिन मैक्स के माता-पिता ने भीगे हुए जाज को उत्सुकता से आल्हादित हो, उन दोनो की मुलाकात करवाई और शीघ्र ही दोनो जिगरी दोस्त हो गये। हाथ मे हाथ डालकर वे साथ घूमने जाते थे। शनिवार और रविवार को एक दूसरे को पत्र लिखा करते थे।

जार्ज ने कहा 'मैक्स ने मेरे लिये सगीत-सृष्टि का घूघट खोला। जब हम ताश भी खेलते थे यानी जब हम कुश्ती नही लडते थे तो चर्चा चिरतन सगीत की ही होती थी।'

नये मित्र का विचार था कि जार्ज सगीत केरियर के लिये नही है और उसने जार्ज मे कहा, "तुम मेरा विश्वास करो, जार्ज, मै तुम्हे बताता हूँ कि तुम मे सगीत की प्रतिभा नही है।"

लेकिन अब जार्ज जर्शविन को सगीत का अर्थ विदित होने लगा और वह

सगीत को ही सब कुछ समझने लगा था। वह सगीत को प्रमुखता देने लगा अपनी सर्व शक्ति से उसने सगीत सीखना प्रारम्भ कर दिया। उसने थोड़े-थोड़े समय के लिये कई अध्यापक रखे, वह एक के बाद दूसरा अध्यापक बदलता रहा था और आखिरकार उसे एक उपयुक्त अध्यापक मिला। वह अध्यापक ऐसा था जिसने उसके जीवन को अधिक प्रभावित किया।

एक ही अध्यापक सभी के लिये उपयुक्त अध्यापक नहीं होता है। सभी छात्र एक से नहीं होते हैं। वैयक्तिक प्रवृत्तियों और योग्यताओं में भी अन्तर होता है। किसी छात्र को पढ़ाने के लिये क्या-क्या आवश्यकताएं होंगी, इस दृष्टि से ही केवल अन्तर नहीं होता है, बल्कि इस दृष्टि से भी अन्तर लगता है कि उसके साथ किस प्रकार के व्यवहार की आवश्यकता है। यही बात मित्रों के साथ भी है। टाम को जिक अच्छा लगता है और वह हेरी को भी पसन्द करता है लेकिन जिक और हेरी आपस में मित्र नहीं हो सकते।

जार्ज जर्शविन को चार्ल्स हैम्बिटजर में एक आदर्श अध्यापक मिले। हैम्बिट्जर भी जार्ज जर्शविन को अपने अनुकूल छात्र समझते थे। वह उसको प्रतिभावान मानते थे। उन्होंने कहा

को पियानो-वादक वनाना चाहते थे। वे एक ओरकेस्ट्रा मे पियानो-वादक थे। उनके प्रपितामह रूस के ज़ार वादशाह के दरवार मे वायलिन वादक थे। हेम्बिट्जर युवावस्था मे चल वसे, जार्ज ने यह महसूस किया कि उसे फिर कभी कोई ऐसा अध्यापक न मिल सकेगा जो उसके लिये इतना अच्छा हो। और उसे फिर वैसा अध्यापक न मिला। उसने वाद मे अन्य पियानो-वादको से भी पियानो वजाना सीखा और रूविन गोल्ड मार्क से 'हार्मोनी' का ज्ञान अर्जित किया। मिस्टर हेम्बिट्ज़र ने उसे जो कुछ ज्ञान दिया था, उसके अतिरिक्त उसने अपने परिश्रम और अभ्यास से ही सव कुछ सीखा। उसने न्यूयार्क के कई कसर्ट हॉल मे अपनी शिक्षा पूरी की।

उसने अपने बचपन मे इविंग वर्लिन और जेरोम कर्न को अपना आदर्श माना था। जव वह चौदह वर्ष का था, उसने पहिला गीत लिखा। वह टैगो गीत था और उसने उसका कोई नाम नही दिया। उसका प्रथम गीत **सिस आई फाउंड यू** था। उनमे से कोई भी प्रकाशित नही हुआ।

जव वह पन्द्रह वर्ष का हो गया तव वह यथासभव सभी कसर्ट मे जाने लगा। उसने लिखा है कि वह केवल अपने कानो से ही सगीत नही सुनता था वल्कि अपने तन, मन और हृदय से दत्त-चित्त होकर सुना करता था। वह सगीत से रस-सिक्त हो चुका था और जैसे स्पज पानी को सोख लेता है, उसी प्रकार वह सगीत को आत्मसात कर लेता था। उसके वाद उसने यह भी लिखा है, "मै अपने घर पर जाकर उस सगीत को अपनी स्मृति मे सुना करता था। मै पियानो पर बैठ जाता था और उन **मोटिफ** को वजाया करता था।"

जर्शविन ने अपने ग्रामर-स्कूल का डिप्लोमा प्राप्त किया और उसने हाई स्कूल ऑफ कामर्स मे अपना दाखिला कराया लेकिन उसकी उसमे रुचि न थी। उसने कभी पढना पसन्द नही किया और वह पढने मे आनन्द भी नही ले पाता था। जव वह वडा हो गया, जर्शविन ने अध्ययन करना प्रारभ कर दिया लेकिन यह अध्ययन कभी-कभी होता था। यदि उसे सगीत रचना के लिये कोई आर्डर मिलता और उसे उस विषय मे कुछ भी न आता तो वह उसे सीखने के लिये बहुत परिश्रम करता था।

जार्ज सोलह वर्ष का हो गया। वह काम करने लगा किन्तु उसका काम मे मन नही लगता था। यह जीवन उसके स्कूल के जीवन से भी बदतर था। लेकिन उसे एक सप्ताह मे पन्द्रह डालर मिलने लगे थे जिसके कारण वह अपने को महत्वपूर्ण समझ रहा था और यह महसूस करता था कि अब वह बडा हो गया है और जब वह 'रेमिक म्यूजिक पब्लिशिंग फर्म' मे 'प्लगर' के रूप मे काम करने लगा तब उसे महसूस होने लगा कि वह कुछ प्राप्त कर रहा है और आखिरकार टिन पॅन ऐली के जाज़ी मार्ग मे कुछ आगे बढ रहा है।

उसे महान सगीतकारो की जीवन-कहानियो के अध्ययन से यह विदित हुआ कि उन सगीतकारो के समय मे लोगो के लिये उनका सगीत नवीन और विचित्र था लेकिन कई वर्षो तक उसकी प्रशसा न की जा सकी, आपको यह विदित ही है कि महान सगीत केवल परिचित हो जाने पर ही स्वीकार किया जाता है। यदि आप सगीत को अधिक सुने तो आप उसे अधिक पसन्द करेगे। यदि आप सगीत के बारे मे कुछ भी जानते है तो आप गीत को गुनगुना उठेगे अथवा सीटी बजा उठेगे। यह शायद इसलिये है कि आपको वह सगीत पहिले से ही प्रिय है। कई महत्वपूर्ण रचनाएँ बनाने मे कठिन होती हैं क्योंकि तकनीकी ढग से उनकी अपनी कठिनाइयाँ हैं अथवा उनके अर्थ लगाने के अलग-अलग तरीके हैं या वाद्य-यत्रो की माँग बढती जाती है (यदि रचना ओरकेस्ट्रा के लिये हुई) इसलिये पहिले पहल उन रचनाओ को प्राय बजाना कठिन हो जाता है। आज रिकार्ड और रेडियो की सुविधाएँ है। ये सुविधाये हमारे पूर्वजो को नही थीं इसलिये हम नवीन सगीत से भली-भाँति परिचित हो जाते हैं। पुराने समय मे ऐसे सगीतकारो की कहानियाँ भी हैं जिनकी कृतियो को लोग बहुत कम जान पाते थे और जिन्हे आदर भी नही मिल पाता था और वे इस ससार से उठ जाते थे।'

यह बात समझने मे बहुत कठिन नही है क्योकि आज भी बहुत से व्यक्ति यह नही सोचना चाहते कि वे अपने मनोविनोद के लिये क्या करें। वे सिनेमा जाना पसन्द करेगे और सग्रहालय न जायेगे क्योकि सिनेमा मे उन्हें बिना कुछ सोचे-समझे अपने मनोरजन के साधन उपलब्ध है किन्तु सग्रहालय मे ऐसा नही

है। वे वहाँ आराम से बैठ सकते है, आराम कर सकते है और मनोरजन कर सकते है। सग्रहालय मे कला या विज्ञान की वस्तुएँ एकत्र की जाती हें और उन्हे देखकर बरबस विचार करना आवश्यक है।

लेकिन यह वात सोचने मे भी आनन्द प्रिय है कि रैगटाइम जैसा विनोदी सगीत और लोकप्रिय गीतो को वार-वार इसलिये दोहराया जाता था कि वे अधिक परिचित हो जाये। अब इस कार्य को रेडियो, सिनेमा या विज्ञापन करने वाली कम्पनियॉ पूरा करती है लेकिन जर्शविन के वचपन के दिनो मे केवल 'प्लगर' ही इस काम को करता था जो स्वय सगीत का विक्रेता होता था। टिन पैन एली मे सगीत प्रकाशको के कार्यालय के "व्यावसायिक वार्तालाप कक्ष" खूव सजाये जाते थे (ऐसे मामूली स्थानो के वर्णन के लिये 'सज्जित' शब्द का उपयोग किया गया है।) और उनके कक्षो की विशेष सजधज होती थी तथा उन्हे अधिक रोचक नाम दिये जाते थे। इन छोटे कक्षो मे मुश्किल से एक बडा, भद्दा पियानो रखा जा सकता था जिसे अधिक प्रयोग मे लाना कठिन सा था। उसमे अव्यवस्थित रूप से कई कमरे आसपास 'व्यावसायिक वार्तालाप कक्ष' के रूप मे बने हुये थे जिनमे हर एक मे एक पियानो था। और हर पियानो पर एक पियानो वजाने वाला दिन भर लगातार हर रोज फर्म के प्रकाशित गीतो को वजाया करता था। जर्शविन का यह काम था कि वह रेमिक प्रकाशनो के वारे मे जाने और बराबर बजाता रहे। बगल के कमरे मे भी पियानो बजाने वाला यही काम करता था और इस तरीके से सुबह से शाम तक शोरगुल मचा रहता था। गायक और अभिनेता अपने अभिनय के लिये नये गानो की तलाश मे ब्रोडवे से आते रहते थे। एक मसखरे को हँसी मजाक के गीत चाहिये, एक गायक को हृदय-स्पर्शी गीतो की तलाश होती थी, तो एक सुन्दरी को नये प्रेम गीत की खोज रहती थी। या एक छोटी सावली नर्तकी को नृत्य के साथ के गीत की आवश्यकता होती थी और गीत-फरोश को इन सभी गीतो की जानकारी रखनी पडती थी।

वहुत से व्यग गीतकार नोट तक नही पढ सकते थे और कई बार वायलिन वजाने वाले को वार-वार वही ध्वनि वजाकर सुनानी पडती थी जिससे वे

ध्वनियाँ उसके कानो मे बस जाय और वह बाहर जाकर उन गीतो को गा सके। दोनो अर्थों मे यह एक 'रेकिट' था।

लेकिन वाह री विचित्र शिक्षा! अनेक बार ग्राहक के लिये गीत का कोई टुकडा बहुत ऊँची या बहुत नीची स्वर की 'की' के अनुसार लिखा होता था और जार्ज उन्हे अलग-अलग की पर तुरन्त बजाने मे सिद्धहस्त हो गया था। चूँकि वह आठ दस घंटे रोज पियानो बजाता था इसलिये उसके हाथ कभी रुकते नही थे। और यही सब नही था। शाम होने पर पियानो बजाने वालो के ये दल न्यूयार्क के कैफे मे गीत और नृत्य के कलाकारो की सहायता के लिये भेजे जाते थे जो स्वय नई-नई ध्वनियाँ पियानो पर बजाकर जनता को सुनाते थे। जार्ज के मुख से अनायास नोट फूट पडते थे और ऐसा समा बन जाता था कि वह किसी नृत्य के अनुरूप बराबर वाद्य-रचना कर रहा हो।

जनता की रुचि का पता लगाना एक सुन्दर अध्ययन था। जार्ज को यह दिखलाई पडने लगा कि पुरानी प्रकाशित की हुई रूटीन ध्वनियो के अलावा नई ध्वनियाँ निकालना लोग खतरनाक सा समझते हैं। वे इस बात से डरते थे कि कही बिल्कुल नई चीज से नुकसान न हो जाय। इसलिये वे उन पुरानी ध्वनियों को उन्ही पुराने तरीके की मेलोडीज को उन्ही पुराने भावो के अनुसार दोहराते थे। जार्ज ने यह देखा कि जो लोग कैफे मे अपनी शाम बिताने आते हैं वे कुछ नई चीज चाहते हैं और वे सगीत मे डूबकर आनन्द उठाना चाहते हे। वास्तव मे 'पेप' शब्द उस समय प्रयोग मे आने लगा था। धीरे-धीरे जार्ज को प्लगर (पियानो बजाने वाले) के कैदी जैसे जीवन से असतोष होने लगा। ऐसी परिस्थितियो मे उसका विकास हुआ जिससे उसमे आत्म विश्वास आ गया और वह प्रत्येक अवसर का लाभ उठाने के लिये जागरूक हो गया। यह ऐसा स्थान नही था कि जहाँ वह सवेदनशील होकर काम छोड बैठता। टिन पैन ऐली मे परिश्रम के साथ काम करने से ही सफलता मिल सकती थी और उसकी महत्वाकाक्षा दृढ गई।

जब जार्ज ने अपनी कुछ नई ध्वनियाँ बनाई तो शुरू मे उसके मालिको ने इसके लिये आज्ञा नही दी। उसने उन्हें भविष्य के लिये रख छोडा।

कदाचित अचेतन अवस्था मे वायलिन वजाने वाला लडका जर्शविन अपने इस नीरस वातावरण के वीच ऐसे स्वच्छ और उन्मुक्त वातावरण की प्रतीक्षा मे था और उस ओर वढना चाहता था। उसने एक वहुत महत्वपूर्ण विवा का विकास किया, वह थी—अपने गीत की स्वय समालोचना करना। उसने अपने वनाये हुए गीतो को ही फेक दिया जिसे उसने अपनी पहिली वडी सफलता के लिये आवश्यक नही समझा। साथ ही उसने अपने प्रचलित सगीत को विकसित करने के लिये आलोचनात्मक प्रवृत्ति भी पैदा की।

ट्यून लिखने वाले धन कमा रहे थे, ऐसा ही वे भी कर रहे थे जो गीत लिखते थे। यद्यपि इसमे से कुछ ट्यून बनाने वाले इतने नौसिखिये थे कि वे पियानो को एक अगुली से वजाते थे और कुछ गीतकार ऐसे भी थे जो व्याकरण तक नही जानते थे। गीतो मे जगह-जगह पर 'एण्ट्स' और 'गोट्राज' घुले मिले रहते थे और उनमे ऐसी ही अन्य अरुचिकर बाते होती थी। लेकिन जर्शविन एक ऐसा सगीतकार था जो सदैव अधिक सीखने के लिये लालायित रहता था। उसकी इच्छा थी कि जो कुछ भी वह जानता था, उससे अधिक सीखे। 'टिन पेन ऐले' मे इस जगह पर वह औरो से आगे रहा उसने पहिले ही अच्छी तरह पियानो बजाना सीख लिया था। एक अगुली से पियानो बजाने वाली वात उसके साथ नही थी।

जव वह किसी होटल मे शादी मे शरीक था, उस समय जेरोम कर्न की **'आई एम हियर एण्ड यू आर हियर और दे विल नेवर बिलीव मी** आदि गीतो पर वाद्य-वादन हो रहा था। इन गीतो की मधुर ध्वनियो ने जार्ज को पूरी तरह से जीत लिया और वह उस दल के नायक के पास यह जानने के लिये भागा गया कि आखिर यह क्या है ? उसने यह निश्चय किया कि वह कर्न के गीतो को सीखेगा और उस तरह उन्हे रचने की कोशिश करेगा। तव कुछ समय तक जर्शविन का सगीत कर्न के सगीत के समान लगता था। वह अधेरे मे अपना रास्ता ढूँढ रहा था और आगे वढ रहा था।

अन्त मे जर्शविन की भेट उसके आदर्श गीतकार इर्विंग बर्लिन से हुई जव उसने **ऐलेक्जेंडर का "रैगटाइम बैण्ड"** सुना तो उसे लगा कि यह कुछ वैसा

ही है जैसा वह स्वय करना चाहता है। उसने अपने कुछ गीतो को मिस्टर बर्लिन के लिये रचकर सुनाया और उत्साह पाकर उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। एक अगुली से पियानो बजाने वाले सर्वोत्कृष्ट गीतकार ल्युस म्यूर ने भी उसके उत्साह को बढाया। उन्होने **'वेटिंग फार दि रावर्ट ई० ली'** और **'प्ले देट बारबर शाप कार्ड'** गीत लिखे थे।

पियानो पर गीत बजाने के अनुभव ने जर्शविन की आकाक्षाओ को बदल दिया। वह महज्ञ एक पियानो-वादक के स्थान पर गीतकार होने की तैयारी करने लगा। रेमिक के पास दो वर्ष रहकर वह चला गया। जब वह अठारह वर्ष का था तो उसका पहिला गीत—**व्हेन यू वाण्ट एम, यू काण्ट गेट एम, व्हेन यू हैव गोट एम, यू डू नाट वाण्ट एम**—शीर्षक से प्रकाशित हुआ। इन सबके लिये जर्शविन को कुल पाँच डालर मिले थे। जबकि जिस कलाकार ने उस गीत की रचना की, उसको अपने परिश्रम से अधिक लाभ हुआ था।

'मिस १९१७' के उत्सव के रिहर्सल के पियानो-वादक के रूप मे जार्ज ने काम किया। इसका सगीत विक्टर हर्बर्ट और जेरोम कर्न ने लिखा था। इसके बाद चौदहवी स्ट्रीट के व्यग नाटको के थियेटर मे उसने पियानो-वादक की जगह के लिये आवेदन पत्र दिया था।

यहाँ पर उसको एक अत्यन्त अजीब सा अनुभव हुआ। आलोचनात्मक व्यग नाट्य की प्रति मे एक अक मे विशेष सगीत की रचना की जिसकी शब्दावली से वह अपरिचित था। पहिले ही प्रदर्शन मे कई अक सफलता पूर्वक

किसने वताया कि तुम्हे पियानो वजाना आता है। तुम्हे तो ड्रम वजाना चाहिये।

कुछ समय के लिये वह एक गायक के साथ व्यग सगीत के प्रदर्शन के लिये वाहर गया। जव वह लौटा तो उसे एक मौका फिर मिला। 'हार्म्स म्यूजिक पब्लिशिंग हाउस' के अध्यक्ष मिस्टर ड्रेफ्स (जिन्होने जेरोम कर्न का पता लगाया था) ने जार्ज से कहा :

"मुझे लगता है कि तुम्हारे अन्दर कुछ अच्छे गुण है। ये गुण उभरेगे। यह भी हो सकता है कि इसमे महीनो लग जाये, एक वर्ष लगे। यह भी हो सकता है कि इसमे पॉच वर्ष बीत जायँ। लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि तुम्हारे अन्दर प्रतिभा है। मै तुम्हे वताऊँगा कि मैं क्या करना चाहता हूँ। मैं तुम्हारे ऊपर जुआ खेलूगा। मैं तुम्हे विना किसी निश्चित कार्य के ३५ डालर प्रति सप्ताह दूगा। केवल हर सुवह आने के लिये, मात्र हेलो कहने के लिये—वाकी धीरे-धीरे होता रहेगा।"

एक किशोर के लिये सफलता पाना आश्चर्यजनक था। वह किशोर जानता था कि कैसे काम किया जाय और किस प्रकार समय का उपयोग किया जाय। उसे केवल अपने विचारो को व्यक्त करने के लिये और लिखने के लिये समय की आवश्यकता थी। शीघ्र ही कुछ ऐसा हुआ कि वह प्रसिद्ध हो गया। प्रसिद्ध और धनी केवल एक रात मे। उसे बिल बोर्ड पर यह सूचना देखने का अवसर मिला कि एक खेल होने वाला है जिसका सगीत जार्ज जर्शविन ने दिया है। जव बोस्टन और न्यूयार्क मे **लाला ल्यूसीले** खेला गया तो लोगो ने प्रसन्नता से इसका स्वागत किया लेकिन यह वह अवसर नही था जिसने उसे यकायक प्रसिद्धि दी।

जर्शविन ने एक गीत-**स्वानी**-लिखा। यद्यपि उस गीत की अधिक चर्चा नही हुई फिर भी लोगो ने उसे गाया और कुछ महीनो वाद कलूटे विदूपक एल जोलसन ने जव उसे सुना तो उसने उसे पसन्द किया और अपने खेल **सिनबैड** मे गाया। जोलसन रूस मे पैदा हुआ था और उसने अपने गोरे रूप मे ही इस देश मे पहिले पहल अभिनय किया था और वाद मे जले हुए कार्क

से जब उसने चेहरे को काला कर लिया तो 'हब्शी गायक' और मजाकिया आदमी की तरह वह भी प्रसिद्ध हो गया। उसके बाद उसने सदैव अपना चेहरा काला रखकर ही अभिनय किया। जर्शविन का **स्वानी** गीत उसने गाया और इस गीत को जनता ने पसन्द किया। चारो ओर इस गीत की धूम हो गई। यह गीत लदन मे गाया गया। वहाँ भी उसकी धूम रही। जर्शविन को सिद्धि मिल गई।

फिर भी जार्ज पियानो के लिये सगीत-रचना के विचार से अभिभूत रहा। उसको हमेशा यह लगता था कि संगीत मे कुछ ऐसा है जिससे वह पूर्णतया अपरिचित है। उसके अन्दर वह इच्छा और शक्ति मौजूद है कि वह उसका पता लगा सके। अपनी पहिली सफलता के बाद वह लगातार अध्ययन करता रहा और बडे होने के बाद भी इतने अधिक अध्यापको से सीखा जैसे कि उसने पहिले बहुतेरे अध्यापको से सगीत की शिक्षा प्राप्त की थी। वह सदा प्रत्येक सभव अवसर को उपयोग करने के लिये तैयार रहता था और जब उसे पियानो पर रचना करने का निमत्रण मिला, तो वह तुरत अपने काम मे लग गया। गीत एक के बाद एक रचे जाते रहे। प्रदर्शनो मे 'जर्शविन द्वारा म्यूजिक' लोगो के लिये एक आकर्षण हो गया। उसने मेलोडिक भावनात्मक ट्यूने बनाई जिनमे से कुछ लिखने के वर्षो बाद तक प्रचलित नही हो पाई। लेकिन साथ ही **आई' ल बिल्ड ए स्टेयरवे टू पैराडाइज** जैसे प्रसिद्ध जाजी नृत्य-गीत भी लिखे इनके लिये उसे तीन हजार डालर मिला जबकि पहिले गीत के लिये कुछ वर्ष पहिले उसे पाच डालर ही मिले थे। यह प्रथम महायुद्ध की समाप्ति के आसपास की बात है जब रैगटाइम जाज मे परिवर्तित हो रहा था और जर्शविन अमरीका और लदन दोनो जगह अधिक-से-अधिक देखा जाता था और वह अनुमान करता था कि वह 'टिन पैन ऐले' से कुछ भिन्न है।

किसने बताया कि तुम्हे पियानो बजाना आता है। तुम्हे तो ड्रम बजाना चाहिये।

कुछ समय के लिये वह एक गायक के साथ व्यग सगीत के प्रदर्शन के लिये बाहर गया। जब वह लौटा तो उसे एक मौका फिर मिला। 'हार्म्स म्यूजिक पब्लिशिंग हाऊस' के अध्यक्ष मिस्टर ड्रेफ्स (जिन्होने जेरोम कर्न का पता लगाया था) ने जार्ज से कहा :

"मुझे लगता है कि तुम्हारे अन्दर कुछ अच्छे गुण है। ये गुण उभरेगे। यह भी हो सकता है कि इसमे महीनो लग जाये, एक वर्ष लगे। यह भी हो सकता है कि इसमे पॉच वर्ष बीत जायँ। लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि तुम्हारे अन्दर प्रतिभा है। मै तुम्हे बताऊँगा कि मैं क्या करना चाहता हूँ। मैं तुम्हारे ऊपर जुआ खेलूगा। मैं तुम्हे बिना किसी निश्चित कार्य के ३५ डालर प्रति सप्ताह दूगा। केवल हर सुबह आने के लिये, मात्र हेलो कहने के लिये—बाकी धीरे-धीरे होता रहेगा।"

एक किशोर के लिये सफलता पाना आश्चर्यजनक था। वह किशोर जानता था कि कैसे काम किया जाय और किस प्रकार समय का उपयोग किया जाय। उसे केवल अपने विचारो को व्यक्त करने के लिये और लिखने के लिये समय की आवश्यकता थी। शीघ्र ही कुछ ऐसा हुआ कि वह प्रसिद्ध हो गया। प्रसिद्ध और धनी केवल एक रात मे। उसे बिल बोर्ड पर यह सूचना देखने का अवसर मिला कि एक खेल होने वाला है जिसका सगीत जार्ज जर्शविन ने दिया है। जब बोस्टन और न्यूयार्क मे **लाला ल्यूसीले** खेला गया तो लोगो ने प्रसन्नता से इसका स्वागत किया लेकिन यह वह अवसर नही था जिसने उसे यकायक प्रसिद्धि दी।

जर्शविन ने एक गीत-**स्वानी**-लिखा। यद्यपि उस गीत की अधिक चर्चा नही हुई फिर भी लोगो ने उसे गाया और कुछ महीनो बाद कलूटे विदूषक एल जोलसन ने जब उसे सुना तो उसने उसे पसन्द किया और अपने खेल **सिनबैड** मे गाया। जोलसन रूस मे पैदा हुआ था और उसने अपने गोरे रूप मे ही इस देश मे पहिले पहल अभिनय किया था और बाद मे जले हुए कार्क

से जब उसने चेहरे को काला कर लिया तो 'हब्शी गायक' और मजाकिया आदमी की तरह वह भी प्रसिद्ध हो गया। उसके बाद उसने सदैव अपना चेहरा काला रखकर ही अभिनय किया। जर्शविन का **स्वानी** गीत उसने गाया और इस गीत को जनता ने पसन्द किया। चारो ओर इस गीत की धूम हो गई। यह गीत लदन मे गाया गया। वहाँ भी उसकी धूम रही। जर्शविन को सिद्धि मिल गई।

फिर भी जार्ज पियानो के लिये सगीत-रचना के विचार से अभिभूत रहा। उसको हमेशा यह लगता था कि संगीत मे कुछ ऐसा है जिसमे वह पूर्णतया अपरिचित है। उसके अन्दर वह इच्छा और शक्ति मौजूद है कि वह उसका पता लगा सके। अपनी पहिली सफलता के बाद वह लगातार अध्ययन करता रहा और बडे होने के बाद भी इतने अधिक अध्यापको से सीखा जैसे कि उसने पहिले बहुतेरे अध्यापको से सगीत की शिक्षा प्राप्त की थी। वह सदा प्रत्येक सभव अवसर को उपयोग करने के लिये तैयार रहता था और जब उसे पियानो पर रचना करने का निमत्रण मिला, तो वह तुरत अपने काम मे लग गया। गीत एक के बाद एक रचे जाते रहे। प्रदर्शनो मे 'जर्शविन द्वारा म्यूजिक' लोगो के लिये एक आकर्षण हो गया। उसने मेलोडिक भावनात्मक ट्यूने बनाई जिनमे से कुछ लिखने के वर्षो बाद तक प्रचलित नही हो पाई। लेकिन साथ ही **आई' ल बिल्ड ए स्टेयरवे टू पैराडाइज** जैसे प्रसिद्ध जाजी नृत्य-गीत भी लिखे इसके लिये उसे तीन हजार डालर मिला जबकि पहिले गीत के लिये कुछ वर्ष पहिले उसे पाच डालर ही मिले थे। यह प्रथम महायुद्ध की समाप्ति के आसपास की बात है जब रैगटाइम जाज मे परिवर्तित हो रहा था और जर्शविन अमरीका और लदन दोनो जगह अधिक-से-अधिक खेला जाता था और यह आभास देता था कि यह 'टिन पैन ऐले' से कुछ भिन्न है।

एक साधारण आदमी मे वह उत्सुकता और जानने की इच्छा नही होती जिसकी वजह से वह कभी यह देखने या समझने मे समर्थ नही हो पाता कि कौन सी चीज साधारण से भिन्न है। एक प्रतिभा
शक्ति से अपनी प्रतिभा को विकसित कर नई

लोग है जो नया रास्ता दिखाते है और साधारण आदमियो का ध्यान न केवल कला और सास्कृतिक विकास के कार्य की ओर आकर्षित करते है वरन् ध्यान देने लायक कुछ नई चीज भी सुझाते है।

जब जार्ज जर्शविन पच्चीस वर्ष का था तो एक सुन्दर गायिका और प्रतिभा-सम्पन्न कलाकार इवा गॉथियर ने एक आश्चर्यजनक कार्यक्रम 'एयोलियन हाल' मे प्रस्तुत किया। यह हॉल न्यूयार्क के कसर्ट हाल मे से एक था जहाँ सुन्दर-से-सुन्दर सगीत सुना जा सकता था। इस कलाकार का यह साहस था कि वह 'टिन पैन ऐली' के शास्त्रीय सगीत और योरुप के आधुनिक कलाकारो के गीतो के नमूने प्रस्तुत करे। यह कुछ इस प्रकार था कि सिण्ड्रेला को बाल (नृत्य) के लिये आमन्त्रित करना और प्रश्न कुछ ऐसे थे "उसने कैसा बर्ताव किया ? उसके साथ कैसा व्यवहार किया जाय ? मिस गॉथियर ने इर्विग बर्लिन और जेरोम कर्न के एक-एक गीत और जार्ज जर्शविन के तीन गीत गाये। इस अभूतपूर्व प्रोग्राम की घोषणा ने इस विशेष वर्ग के दर्शको का ध्यान आकर्षित किया। मध्यवर्ग के सगीत-प्रेमी नही आये। दर्शको मे उच्च और निम्न-कोटि के सगीत प्रेमी थे—एक ओर विचारक थे तो दूसरी ओर "घटिया सगीत-प्रेमी।"

किसी ने यह लिखा है कि सिन्ड्रेला ने बाल (नृत्य) मे बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। वह अपने व्यवहार मे सच्ची थी और ऐसा दिखावा नही करती थी कि वह जो कुछ नही है, वह है। उसने इतनी सुन्दरता से नृत्य किया जितनी भी उसकी क्षमता थी और उस शाम के अनुपम प्रदर्शन मे ऐसा मन लगाया कि प्रिंस उसके प्रति मोहित हो गया और प्रिन्स ने अपनी प्रसन्नता प्रगट करते हुए उसकी भूरि-भूरि प्रशसा की तथा उसे अपना प्रदर्शन देने के लिये फिर आमन्त्रित किया गया। मिस गॉथियर को इस बात का श्रेय प्राप्त है कि उन्होने रसोई-घर के सगीत को बाल रूम के सगीत मे बदल लिया। दर्शक गीतो की आत्मीयता, सच्चाई और व्यगात्मकता से आल्हादित थे। वे गीत अच्छे समय के साथी थे। इन गीतो की आकर्षक रिद्म इतनी उम्दा थी कि इन्हे गाने के लिये बार-बार माँग की गई। ऐली के उस वायलिन वादक को मिस गॉथियर

के जाज़ गीतो के साथ वाद्य-वादन के लिये आग्रह किया गया, क्योंकि लोगो का यह विचार था कि वह उस प्रकार के सगीत के साथ वाद्य-वादन कर सकता है। पुराने सगीत हाल के रगमच से **इनोसेन्ट इन्जीनिवे, बेबी** और **हू इट अगेन** जैसे गीतो की ट्यून वायलिन के तारो पर झंकृत होने लगे। इस भव्य प्रदर्शन से सच्चे सगीत प्रेमियो के हृदय प्रसन्नता से पुलकित हो गये। और इसमे भी सदेह नही कि इस सगीत ने अन्दर कुछ श्रोताओं को क्षुब्ध कर दिया, लेकिन इससे घटिया सगीतकारो को प्रोत्साहन मिला।

जाज सगीत के सम्राट पाल व्हाइटमैन ने लगभग तीन महीने बाद एक कसर्ट का आयोजन किया। उनकी यह इच्छा थी कि उसी सगीत के हाल मे महान सगीतज्ञो और सगीत-आलोचको के समक्ष अपने सगीत को जाज़ बैंड के साथ प्रस्तुत करे। वह उन लोगो की राय जानना चाहते थे कि उन्हे जाज़ सगीत कैसा लगता है, क्योकि वे स्वय जाज़ सगीत मे विश्वास करते थे। उनके लिये यह सगीत नवीन सगीत था। यदि डैमरोश, हीफेट्ज, क्रिसलर, रैशमेनीनॉफ और अन्य सगीत आलोचक टिन पैन ऐली के कमरो तक इस सगीत को जानने के लिये न पहुँच सके तो व्हाइटमैन उन सभी को आमत्रित करके जाज़ सगीत सुनाना चाहता था। इस कसर्ट के अवसर पर उसकी यह इच्छा थी कि दर्शको के समक्ष एक नई रचना प्रस्तुत की जाय। इस रचना के लिये किसे बुलाये। किस व्यक्ति से जाज़ सगीत की नवीनतम रचना मिल सकेगी? आखिर उसने जर्शविन से ही आग्रह किया।

जार्ज जर्शविन ने इस निवेदन को अस्वीकार कर दिया। वह उस समय बहुत व्यस्त था। मिस गॉथियर का कसर्ट होने वाला था और जार्ज का सारा समय उस कसर्ट मे लग रहा था। उसे यह याद ही नही रहा कि व्हाइटमैन ने उससे सगीत रचना के लिए आग्रह किया है। जनवरी का प्रारम्भ था। वह समाचार-पत्र पढ रहा था उसमे यह था कि व्हाइटमैन एक सिम्फनी पर काम कर रहा है। उसके लिये एक नई खबर थी। वह खुद किसी सिम्फनी पर काम नही कर रहा था लेकिन इस समाचार ने उसे यह याद दिलाया कि मिस्टर व्हाइटमैन ने उसको नवीन रचना के लिए आमत्रित किया था

और वह यह समाचार देखकर आश्चर्य चकित हो उठा। उसे महसूस होने लगा कि यह अच्छा होता कि वह व्हाइटमैन के आग्रह को न ठुकराता। शायद उसके जीवन के लिये यह अच्छा अवसर था। उसे आसानी से उस भव्य प्रदर्शन मे अपने छोटे नियमित सगीतमय ब्लूज़ के प्रदर्शन का भी अवसर मिल जाना।

उसने इस वारे मे जितना ही विचार किया, उतना ही वह विचार उसके मस्तिष्क मे स्पष्ट आकृति वनकर उभर उठा। उस समय जाज़ सगीत के वारे मे काफी चर्चा हुआ करती थी। लोग कहा करते थे कि जाज़ सगीत वहुत ही सीमित है और केवल नृत्य-रिद्म के लिये ही काम आ सकता है। उसे लगा कि शायद वह यह लिख सकता था कि यह वात निराधार है। उसने वाद मे इस वात को व्यक्त किया कि रेपसोडी एक उद्देश्य लेकर प्रारम्भ हुई है, उसका उद्भव किसी प्लान के रूप मे नही हुआ है।

जर्शविन को वोस्टन मे एक नाटक के उद्घाटन के लिये आमत्रित किया गया। उसने इस नाटक के सगीत की रचना की थी। वह जैसे ही जाने के लिये ट्रेन मे वैठा, उसके मन मे एक विचार आया कि एक महीने वाद एक कसर्ट का आयोजन है जिसके लिये उसने एक नोट भी नही लिखा है। वह इस पर गम्भीर विचार कर रहा था और उसके विचारो मे रेल के पहियो की अनवरत की धुन साथ दे रही थी। उसने वाद मे लिखा।

'मुझे प्राय शोरगुल मे सगीत सुनाई देता है और मुझे ट्रेन मे एकाएक सगीत सुनाई दिया, मैने उसे कागज पर लिखा हुआ तक देखा। मुझे ऐसा लगा कि उस जोशीले (रेपसोडी) गान की पूरी रचना प्रारभ से लेकर अन्त तक मेरे सामने प्रस्तुत है जिसे मैं अमरीका के विशाल सगीत के रगमच पर ध्यानपूर्वक सुन रहा हूँ। अमरीका का वह विशाल रगमच अपनी ऐसी सक्रान्त अवस्था मे है जिसपर राष्ट्रीय पेप, ब्लूज और ट्यून से पागल वना देने वाले गीतो का पारस्परिक आदान-प्रदान हो रहा है। जैसे ही मैं वोस्टन पहुँचा, मुझे उस गीत की निश्चित **रूप-रेखा** समझ मे आ गई और मेरे लिये वह गीत उस कल्पना से भिन्न था जो प्रारभ मे मुझे महसूस हुई थी।"

ज्यो-ज्यो उसने इसके वारे मे सोचा, त्यो-त्यो इस विचार ने उसको अधिक

प्रसन्न किया। उसने इस गीत की रचना के लिये कुछ नृत्य की रिद्म उपयोग मे लाई। चूँकि वह गीत जोश की भावना से ओत-प्रोत होता, इसलिये इस गीत के लिए समय और रूप मे बाँधना उपयुक्त न था। यह गीत उसी तरह का था जैसे कि एक मिन्योट, वाल्ज या रोन्डो होता है। उसने महसूस किया कि इस गीत के सहारे वह अपने मन की बात सिद्ध कर लेगा।

उसके पास अब अधिक समय नही था। सगीत के बडे पृष्ठ की पाडुलिपि कुछ ही क्षणो मे तैयार नही की जा सकती। जर्शविन ने दो पियानो पर **रेपसोडी इन ब्ल्यु** के सगीत की रचना समाप्त ही की कि उस कार्यक्रम के व्यवस्थापक फर्डीग्राफे ने ओर्केस्ट्रा का प्रवन्ध किया जिसका कन्सर्ट मे प्रदर्शन होने वाला था। अब इतना समय नही था कि पियानो के लिये पूरा का पूरा सगीत रचा जाय। विशेपकर कैडिन जाज्ञ के लिये इतनी शीघ्रता मे सगीत की रचना करना सम्भव न था और जार्ज स्वय ही उस कसर्ट मे पियानो-वादक था, इसलिये उसने इसकी अधिक चिन्ता भी नही की। उसने मिस्टर व्हाइटमेन को बार्स के नम्वर वता दिये और स्वय इतना स्वतत्र हो गया कि वह प्रदर्शन के अनुकूल पियानो-वाद्य प्रस्तुत करे। इस प्रकार के साहसिक कार्य से यह सिद्ध होता है कि जर्शविन मे ध्यान केन्द्रित करने की अद्भुत शक्ति थी। सम्भवत पियानो के स्टॉल पर वादक के रूप मे उसने शोरगुल मे सिर्फ मनन करना ही न सीखा था वल्कि पियानो वजाना भी सीखा था। इससे यह भी प्रगट होता है कि जब कभी वह पियानो के की बोर्ड पर बैठ जाता था तो सिद्ध वादक की तरह उसे कभी कोई घबराइहट न होती थी।

कई लोगो को यह भी नही मालून है कि एक कसर्ट के प्रस्तुत करने मे कितना परिश्रम करना पडता है। पियानो के छात्र प्राय यह सोचते है कि उन्हे रगमच पर पहुँचकर वाद्य-वादन करना है और उन्हे वह सब धन मिल जायेगा जो दर्शको को टिकट बेचकर इकट्ठा किया गया है। दुर्भाग्य से वस्तु-स्थिति इससे भिन्न है। कलाकार को अपने काम के अलावा, हाल का किराया देना पडता है और उसे हाल का प्रवन्ध करने वाले व्यक्तियो की फीस, रोशनी, टिकट और कार्यक्रम की छपाई तथा विज्ञापन के लिये व्यय करना पडता है।

इन सभी बातो पर बहुत खर्च होता है। मिस्टर व्हाइटमेन ने अपने कसर्ट मे सात हजार डालर व्यय किये। वह इसी कसर्ट पर अपनी सारी आशायें केन्द्रित किये हुए थे। सारा हाल खचाखच भर गया था लेकिन उन्होने सबसे अच्छी सीटे उन लोगो के लिये मुफ्त रक्खी जिन्हें वे इस प्रदर्शन को दिखाना ही चाहते थे और उन्हे यह नही मालूम था कि वे अपने प्रयास मे सफल होगे या असफल। लेकिन, उन्हे उस प्रदर्शन मे अभूतपूर्व सफलता मिली।

मिस्टर व्हाइटमेन इस प्रदर्शन के पूर्व अपने नये प्रयोग मे रुचि लेने लगे थे। उन्होने रिहर्सल के समय तीन सगीत आलोचको को आमन्त्रित किया। उन्होने उन आलोचको को यह समझाया कि वे जाज सगीत के कार्यक्रम मुझको शास्त्रीय सगीत मे बदलकर प्रस्तुत करने का प्रोग्राम बना रहे है। उन्होने उन आलोचको का जर्शविन से परिचय कराया। जर्शविन ने जाज कसर्ट के लिये ही सगीत रचना की थी और अब उसका प्रदर्शन करने के लिए लालायित थे। जैसे ही वे दोनो रगमच को ओर बढे कि दो आलोचको ने आपस मे काना-फूसी की।

यह जर्शविन कौन है जी हाँ, यह जर्शविन कौन है ?

तीसरा आलोचक ब्राडवे मे आयोजित कार्यक्रमो के बारे मे कुछ जानता था। ब्राडवे वहाँ से कुछ ब्लाक की दूरी पर था। उसने उन आलोचको से यह कहा कि जर्शविन सगीत के रिव्यु और कामेडी के लिए सबसे अधिक लोकप्रिय गीतो का रचयिता है। शायद उन दोनो आलोचको की स्मृति का ही कुछ दोष हो, नही तो यह सच है कि तीन महीने पहले उन्होने गॉथियर के गाये हुए गीतो को सुना अवश्य था। यह एक केवल उदाहरण की बात है कि पियानो के सुरो का आरोह-अवरोह स्थिर करने वाला व्यक्त भी कितना महत्वपूर्ण हो सकता है। फिर भी लोग उसे कितनी जल्दी भूल जाते है।

आलोचको के सामने जब रेपसोडी खेला गया तो उनमे से दो बिल्कुल खो से गये। तीसरे ने अधिक चिन्ता नही की लेकिन उसने सगीत से प्रभावित होकर यह स्वीकार किया कि उसमे निश्चय रूप से 'जिप और पच' है।

जब वह दिन आया जिसकी मिस्टर व्हाइटमैन ने इतनी योजना बनाई थी

तो उन्हे रगमच पर प्रदर्शन-सकोच होने लगा। यह इसलिये नही कि वे जाज़ बैण्ड का नेतृत्व कर रहे थे बल्कि उनके मन मे उस सगीत के सबध मे अनायास आशका हुई कि वह सगीत जिसे वह प्रस्तुत करने जा रहे है, सफल होगा या नही। वे दर्शकों से भयभीत हो उठे। वे ऐसे सगीत हाल मे वाद्य-वादन करने के अभ्यस्त नही थे। वे मच के सामने चारो ओर घूमकर आगन्तुक दर्शको को देखने लगे। यद्यपि वे लोग भीषण हिमपात के बावजूद झुण्ड-के-झुण्ड मे आ रहे थे फिर भी वह उत्साहित नही हुये। कला और शिक्षा के क्षेत्र मे सुसस्कृत लोग उस सगीत हाल को जाज़ की धुनो पर नाचते हुये देखने के लिये आये। क्या सचमुच वह प्रदर्शन इस योग्य था ? उसने विक्टर हर्बर्ट को भीड मे से आते हुये देखा।

जब वे लोग **रेपसोडी इन ब्लू** बजा रहे थे तो व्हाइटमैन ने बाद मे कहा —

"सगीत के बीच मे मै रोने लगा। जब मुझे होश आया तो मै ग्यारह पृष्ठो तक साथ-साथ था और मै आज तक यह नही बता सकता कि मैंने कैसे वह वाद्य-वादन पूरा किया। बाद मे जार्ज ने मुझे बताया कि उसने भी ऐसा ही अनुभव किया था। वह मेरे साथ बजा रहा था और वह भी वैसे ही रो उठा था।"

हर एक आदमी यह जानता है कि ग्लिसेण्डो क्लेयरनेट के प्रादुर्भाव के साथ यकायक **रेपसोडी** कितनी शीघ्र लोकप्रिय हो गयी यदि जर्शविन ख्याति चाहता था तो अब उसे वह मिल गई थी। यह धुन तमाम अमरीका और योरुप मे बजाई जाती थी। लदन निवासियो के लिये गीतात्मक कामेडी लिखने के लिये उसको फिर इग्लैण्ड बुलाया गया। उनके लिये बधाई स्वरूप उसने उनके प्रिय सर आर्थर सुलिवोन की परम्परा मे सगीत रचा। वह ऐसा सगीत था जैसा कि लुभाने वाला आल्हाद पूर्ण सगीत होता है।

दो साल के अन्दर जर्शविन ने चार कामेडी के लिये सगीत लिखे। डाक्टर वाल्टर डेमरोश के निमत्रण पर कार्नेगी हाल मे सिम्फनी ओरकेस्ट्रा के लिये भी उसने एक गीत रचा। जर्शविन एक ही समय मे दोनो कार्य कर रहा था।

देश मे 'टिन पैन ऐली, मे उसे पॉल्टिर हाल मे गभीर सगीत के लिये निमत्रित किया जाता था। समाज मे भी, पार्टियो मे उसे बुलाया जाता था और वह वहाँ भी काम करता था। लेकिन यह उसे पसन्द था। मेजबान महिलाओ के निरतर आग्रह पर उसने कभी आपत्ति नही की और सदा उसने सूखी नीरस पार्टियो को सजीव और सरस बनाने का प्रयत्न किया। यद्यपि उसकी माँ ने उससे एक बार कहा कि ऐसे अवसरो पर उसे इतना अधिक वाद्य-वादन नही करना चाहिये। उसने अपनी माँ को समझाया कि यदि वह इतना अधिक वाद्य-वादन न करे तो उसका समय ही ठीक से न बीत पाये जितना उसके सुनने वाले उत्सुकता से उसके वाद्य-वादन का आनन्द उठाते है, उतना ही वह स्वय भी आनन्द उठाता है।

जब फिलहार्मोनिक सिम्फनी ओरकेस्ट्रा के लिये एक जाज कसर्टो लिखने और खेलने के लिये उससे करार किया गया तो उसे इसका ज्ञान भी न था कि कसर्टो क्या होता है? सात कसर्ट मे अपना कसर्टो खेलने के लिये करार करने पर भी उसे यह पता नही था कि कसर्टो है क्या चीज? उसने बाहर जाकर सगीत विधाओ की एक पुस्तक खरीदी जिससे वह इस बात का पता लगा सके कि आखिर उसे लिखना क्या है? अपनी कुहनी के नीचे इस किताब को रखकर पियानो पर काम करने के लिये बैठ गया।

कुछ रूपो मे जर्शविन प्यूसिनी की याद दिलाता है। दोनो ही आदमियो से भरे हुये कमरे मे बैठकर लिख सकते थे। वे लोगो के बोलने, हँसने और लगातार आने-जाने से बिल्कुल घबडाते नही थे। कभी-कभी जार्ज जर्शविन कुनमुनाने लगता था कि वह थोडा एकान्त चाहता है और तब उसने एक होटल मे एक कमरा किराये पर लिया जहाँ वह अकेला रह सके और अपने उन दोस्तो से बच सके जो हमेशा ही आते रहते थे। लेकिन जब उन्होने उसे देखा तो वे फिर उसके पास मडराने लगे और वह उसी दशा मे काम करता रहा।

एक दूसरे रूप मे जर्शविन रिमस्की कोरसेकफ की याद दिलाता है। कोरसेकफ कभी फ्यूजी ओर काउटर पाइट का अध्ययन नही करता था जब

तक कि उसे यह विषय नही सिखाने होते थे। फिर अपने शिष्यो से अधिक जानने के लिये उसे पढना होता था। इस पर वह हँसकर कहता था कि उसके शिष्य ही उसे पढाते है। जैसा उसने बाद मे स्वीकार किया कि कभी-कभी तो उसने बिना विषय-वस्तु को ठीक से समझे हुए लिखा था। उसने ओरकेस्ट्रेशन हार्मोनी और काउटर प्वाइट पर पाठय पुस्तके लिखी। जब तक वह नेवी डिपार्टमेण्ट मे इन्स्पेक्टर आफ बैण्ड नियुक्त नही हो गया। उसने अध्ययन के लिये मुँह से बजाने वाले वाद्यो का सेट भी नही खरीदा। बाद मे उसने मुँह से बजाने वाले वाद्यो की तकनीकी के बारे मे एक पुस्तक भी लिखी।

जर्शविन की सीखने की उत्सुकता उसके नये क्षेत्र के कामो के साथ-साथ चलती थी। जब उसने **कंसर्टो** लिखा तो किसी और के द्वारा उसके ओरकेस्ट्रा बजाये जाने से सतुष्ट न होकर उसने स्वय ओरकेस्ट्रेशन का अध्ययन शुरु किया। उसको यह भी जानने की आवश्यकता पडी कि वाद्य-यन्त्रो के सगीत के सम्बन्ध मे कैसे लिखा जाय। इस समय उसने रूबेन गोल्ड मार्क के साथ अध्ययन किया। कसर्टो लिखने के बाद उसको सुनाने की भी आवश्यकता थी जिससे यह पता लग सके कि उसे कहाँ-कहाँ सुधारना है। इस काम को पूरा करने के लिये साठ सगीतज्ञो के एक ओरकेस्ट्रा को किराये पर बुलाया और एक दोपहर को एक थियेटर मे खुद पियानो पर बैठकर अपने दोस्तो के साथ उसने अपनी कृति का मूल्याकन किया। वह उसमे परिवर्तन और सशोधन करने मे समर्थ हुआ।

वह दिन आया जब जर्शविन ने पहिली बार सचमुच एक सिम्फनी ओरकेस्ट्रा के साथ वाद्य-वादन किया तो कार्नेगी हाल बिल्कुल भरा हुआ था। एक जाज कम्पोजर ओरकेस्ट्रा पर खेल रहा था और उसके अन्दर एक भी करुण सगीत पैदा करने वाला सेम्सोफोन नही था। तीन वर्ष बाद जब जर्शविन पेरिस मे था तो सम्मान मे उसके रेपसोडी और कसर्टो बजाये गये। योरुप के जिस केफे मे वह गया, उसी के सामने उसका सगीत प्रस्तुत किया गया। जब वह तीस साल का था तो उसका ओरकेस्ट्रल सगीत, **एन अमेरिकन इन पेरिस,** न्यूयार्क मे प्रस्तुत किया गया। इसकी परिकल्पना उसने पेरिस मे की थी।

उसने अपने वाद्य-यत्रो मे टेक्सी-हार्न इस्तेमाल किया। इनमे से एक विषय-वस्तु को उस शताब्दी की 'सेस्यिस्ट ओरकेस्ट्रल थीम' कहा गया।

इसके वाद हालीवुड और ओपेरा उसके जीवन मे आये। जर्शविन अकेला जाज लेखक था जो हर प्रकार के सगीत मे अपना हाथ रख सकता था। वह अपने ओपेरा **पोर्जी एण्ड बैस** के लिये सगीत लिखकर अत्यन्त आनन्दित हुआ। उसको अपना ओपेरा वडा प्रिय था और वह अपनी आँखे मूँदकर अपनी सगीत-रचना को वार-वार मत्र मुग्ध होकर वजाता था। जव यह ओपेरा प्रस्तुत किया गया तव उसकी आयु सैंतीस वर्ष की थी।

इस नवयुवक के जीवन मे दो और महत्वपूर्ण सफलताएँ थी जो उसके जीवन मे एक से एक अनोखे अनुभव के वाद आती गई। उसको एक ओरकेस्ट्रा स्वय सचालन करने का सतोष था। उसकी रचना को सुनने के लिये सत्रह हजार आदमी 'लिवीसोन स्टेडियम' मे एकत्र हुये थे जिसको सुनने मे उनकी पूरी शाम लग गई। चार हजार से अधिक आदमी उस अवसर पर वाहर से ही वापिस कर दिये गये। अगले दिन समाचार-पत्रो मे यह निकला कि जार्ज जर्शविन ने पिछली रात वैसी सफलता पाई जैसी केवल बीथॉवन और वेगनर को मिली थी। उसका सारा कार्यक्रम उसका अपना था।

वह जब छोटा था तब 'लिटिल मेगीज' को देखकर नाक-भौ सिकोडता था और स्कूल मे सगीत सुनने के लिये जाने को तैयार नही था। आश्चर्य होता है कि ऐसे आदमी को अब कौन सी सफलता प्राप्त करना शेष रह गया था। वह इस तेजी से उन्नत के शिखर पर चढता चला गया कि वह ओपेरा की चोटी तक पहुँच गया और यही पटाक्षेप भी था। क्योकि **पोर्जी और बैस** के लिखने के कुछ दिनो वाद वह हालीवुड मे बीमार पडा और कुछ सप्ताह के वाद काल कवलित हो गया।

किसी ने जर्शविन के बारे मे लिखा है कि उसने एक गीत गाया—नगर का गीत, सगीत हाल का गीत और यन्त्रिकी युग का गीत। स्टीफेन फॉस्टर ने भावपूर्ण गीत लिखे लेकिन वे दकियानूसी थे और जर्शविन ने जो सगीत की रचना की वह आडम्बरो को चतुरता से खण्डन करने वाली थी। यह उस

समय था जब लोग 'हपी' बनाने मे अधिक रुचि रखते थे और वे मूल भावनाओं की ओर ध्यान नही देते थे। लेकिन जो पुराना है और सुन्दर तथा सच्चा है, तो वह कभी समाप्त नही होता। फैशन बदलते हैं लेकिन रीति बनी रहती है। उसके दोस्त उसे एक हँसमुख मनोविनोदी के रूप मे याद करते है क्योकि जब वह पियानो पर बैठकर अपने दोस्तो के बीच गाता था तो उसे सबसे अधिक सुख महसूस होता था। कुछ गीत जो उन्हे सबसे अधिक पसन्द थे, वे कभी प्रकाशित तक न हुये और वे उसके अपने मनोरंजन के लिये थे। एक था—**मिशा या शा तोशा साशा**-जिसे उसने वायलिनिस्ट हीफेट्ज के घर की पार्टी के लिये तैयार किया था।

जर्शविन को जैसे अपने संगीत मे कुछ करने को था ही नही, उसने एक बार ड्राइंग और चित्रकला सीखी। वह कला मे अधिक रुचि रखने लगा, संग्रहालयो को देखता और चूंकि उसके पास काफी सम्पत्ति थी, सुन्दर चित्रो को खरीदकर सुख पाता। एक बार आदमी की अकेली प्रदर्शनी के रूप मे उसके चित्रो का प्रदर्शन न्यूयार्क की आर्ट-गैलरी मे किया गया।

जर्शविन एक खिलाडी था। उसे गोल्फ, टेनिस और कुश्ती पसन्द थी। उसके अपने घर मे एक जमनेज़ियम था जिसे उसने उस समय बनवाया था जब उसके लिये ऐसा करना संभव हो पाया था। उसे ताश के खेल पसन्द नही थे। 'बैकगेयन' से उसका बडा मनोरंजन होता था। उसकी सबसे प्रिय स्मारिका इंग्लैण्ड के प्रिंस से प्राप्त हस्ताक्षरशुदा फोटो था। जो बाद मे ड्यूक ऑफ केण्ट हो गये। उस आटोग्राफ मे लिखा था—जार्ज को जार्ज से।

स्टीफेन फॉस्टर के विपरीत जर्शविन स्वय अपने गीतो की रचना नही करते थे। 'टिन पैन एली' मे सदैव गीतो के शब्दकार के साथ-साथ ट्यून व्यवस्थापक और ट्यून बनाने वाले होते थे। जैसे-जैसे समय बीता, उनके भाई

करते थे। चूँकि वे एक दूसरे से वहुत भिन्न थे इसलिये लगातार एक दूसरे का मनोरजन कर खुश करते थे।

जर्शविन ने कभी किसी स्त्री को अपना हृदय नही दिया लेकिन एक वार उसने कुत्ते को प्यार किया था। नन्हा कुत्ता उसके साथ खेलने के लिये लालायित रहता था, वह कुछ भी क्यो न करता रहा हो, चाहे वह शीघ्र ही किसी गीत को रचकर पूरी करने की वात हो, वह अपने काम को रोककर उसकी ओर ध्यान देता था।

जार्ज जर्शविन के दोस्तो ने यह महसूस किया कि उसके चरित्र का यह गुण जो मदा उसकी सहायता करता रहा, वह था उसका अडिग आत्म-विश्वास। वह जो कुछ भी प्रयत्न करता था, उसके वारे मे उसे यह विश्वास था कि वह उसे कर सकेगा। फिर प्यूसिनी याद आते हैं जिन्होने यह कहा था—अपने मे विश्वास रखो और परिश्रम करो।

[जार्ज जर्शविन २६ सितम्वर, १८९८ मे न्यूयार्क के ब्रुकलिन मे पैदा हुआ। वे ११ जुलाई, १९३७ को हॉलीवुड मे स्वर्गवासी हुये।]

इर्विंग बर्लिन

"मैंने स्वयं अपने लिये ही संगीत की खोज की है।"

मेनहटन टापू के दक्षिणी सिरे पर बेटरी मे आकर जहाज रुका। इस टापू मे न्यूयार्क शहर का मुख्य भाग स्थित है। अभी तक मोटर-गाडियो का प्रयोग नही हो पाया था और सडको पर गिट्टी और रोडी बिछाई जाती थी। इन्ही गिट्टी-रोडी की सडक पर घोडा-गाडियाँ चलाई जाती थी। ऐसी ही गाडी मे हमारे देश मे एक नया परिवार आया। वे लोग रूस से आये थे। उस परिवार मे छ बच्चे थे, उनके माता-पिता थे और वे अपने साथ कपडे, फर्नीचर और रसोईघर के बर्तन लाये थे। वे अधिक समय तक अशान्त सागर पर जहाज मे यात्रा करते ऊब चुके थे इसलिये बच्चो को जमीन पर चलती गाडी मे यात्रा करने मे बहुत प्रसन्नता थी। उन्होने चारो ओर देखा और शहर की सडको के नये दृश्य देखे। उस शहर मे अब उनके लिये अपना घर बनाया जाना था। सबसे छोटे बच्चे का नाम इसराइल बेलाइन था, उसकी आयु चार वर्ष की थी। इसी लडके की कहानी मे हमारी रुचि है क्योंकि वह सिण्ड्रेला-लडका के समान बन गया। उसने परिश्रम किया और अपनी चतुरता से दीनता से उभरकर धनी बन गया। उसका जन्म साइबेरिया के सीमान्त प्रदेश मे हुआ था।

वह आठ भाई-बहिन मे सबसे छोटा था। सबसे बडा भाई रूस मे ही रह गया था और दूसरे लडके का पहिले ही विवाह हो गया था। इसराइल को 'इज्जी' कहते थे, वह कद मे छोटा था लेकिन उसकी डार्क-ब्राउन आँखें बडी-बडी थी और उसके काले तथा घुघराले बाल थे। उसके पिता यहूदी धर्म के अनुयायी थे और जब यहूदियो को सताया गया तो उसका परिवार वहाँ से भाग उठा। पहिले वह परिवार एक गाँव से दूसरे गाँव को गया लेकिन

उनके इधर-उधर भागने का कोई अन्त ही नही था और आखिरकार उन्होने अमरीका की गन्दी बस्तियो मे रहने के लिये समुद्र पार किया।

इसमे अधिक समय नही लगा कि पूरा बेलाइन परिवार आजीविका कमाने मे लग गया। चार लडकियो ने गुरिया पिरोने का काम किया। मझले लडके ने हलवाई का काम किया। यहूदी परिवार को एक सा काम न मिलकर अनियमित काम मिला और वे कसाई की दूकान (बूचर स्टोर) मे कोशर खाद्य के प्रमाणित करने वाले का काम करने लगे। यहूदियो की छुट्टियाँ आने पर उन्होने यहूदी उपासना-गृह मे क्वायर मास्टर का काम किया। जैसे ही कुछ आय होने लगी, वे अपने गोदाम से निकल कर चेरी स्ट्रीट के एक आवास-स्थान (फ्लेट) मे जाकर रहने लगे। वे अब भी छोटे घर मे थे लेकिन अब ऊपर की मजिल पर थे जहाँ ज्यादा हवा आती रहती थी। इज्जी बेलाइन दो वर्ष पब्लिक स्कूल न० १४७ मे पढने गया। वह ड्राइग के काम मे रुचि रखता था लेकिन उसे स्वाभाविक रूप से सगीत आता था। उसकी मधुर, करुण और सुरीली आवाज थी। उसका पिता उस समय गायक दल का नेता था। उसका पिता उससे हेब्रू शब्दो मे यहूदी सर्विस कराता था। गायको मे कई लोग यहूदी थे। वे सभी गा सकते थे।

बेलाइन पिता यह देखने के लिये जीवित नही रह पाया कि उसका पुत्र वास्तव मे अच्छा सगीतज्ञ होगा। जब इज्जी आठ वर्ष का था उसके पिता का देहान्त हो गया। अब उसके परिवार मे उसकी मा सबसे बड़ी थी इसलिये उन्हे परिवार का उत्तरदायित्व उठाना पडा। इज्जी अपने परिवार मे सबसे छोटा था, उससे यह आशा नही की जाती थी कि वह परिवार की सहायता के लिये कोई काम करे, लेकिन उसके मन मे यह विचार उठने लगा था कि वह आजीविका के लिये कुछ नही कर रहा है। वह शहर तेजी वढ रहा था और योरुप से प्रति सप्ताह नये आप्रवासियो की सामान से लदी नौकाएँ आ रही थी और वह भी अपनी आजीविका कमाने के लिये सघर्ष कर उठा। उसे जो कुछ भी मिल पाता, वह अपनी माँ को ले जाकर दे आता। उसके

मन में यह भी विचार रहता था कि परिवार का प्रत्येक सदस्य उससे अधिक धन कमा लेता है और यह विचार उसके मन को दुखी कर देता था।

ग्रीष्म ऋतु थी, एक दिन अधिक गर्मी और तपन थी और उसने उस दिन यह निश्चय किया कि वह स्वय अपना काम शुरु कर देगा। वह अपने घर से कुछ दूर ब्लाको मे पहुँचा और वहाँ उसने **ईवनिंग जर्नल्स** (शाम के अखबार और पत्रिकाएँ) लिये और शहर के गदे और नगे पैर वाले लडको मे रिक्रूट की तरह जाकर शामिल हो गया।

इर्वी बेलाइन ने अपने बचपन मे उस बडे शहर के शोरगुल मे कई मिली-जुली आवाजे सुनी कल-कल निनाद करती हुई सरिता कोलाहल भरे नौका-घाट को छूकर बह रही थी; किनारो पर जहाजो को कुहरे का सकेत करने के लिये हार्न और नौकाओ की सीटियो की आवाज इधर-उधर आने जाने वाले ऐसे लोगो की हलचल मे इस प्रकार मिल गई थी जैसे अनेक चीटियाँ इकट्ठी हो जाती हैं; ट्रेनो के चलने का शोर था; सडको पर कार दौड रही थी; फायर इजिनो की सीटियाँ बज रही थी; सडको पर आमदरफ्त बढ़ती जा रही थी; फल बेचने वाले और हाथ से गाडी चलाने वाले आवाजें लगा रहे थे, यहूदी उपासना-गृहो मे गीत हो रहे थे, समीप के चाइना टाउन से शोरगुल उठ रहा था, बावेरी सेलून मे कर्कश स्वर उठ रहे थे और इन सभी आवाजो मे कभी-कभी रिवालवर की ठाय-ठाय भी हो जाती थी। इन्ही आवाजो को इर्वी बेलाइन ने सुना था। वह अपनी जाति की दुर्दशा से आहत होकर दुखी हो चुका था इसलिये उसकी आवाज मे दर्द था। उसके पिता को अपने देश से भागना पडा था। यहूदियो की यह करुण कहानी बहुत पुरानी है क्योकि उन्हे शुरु से ही बहुत तग किया गया है। इस अन्याय और दुर्घटना से इर्वी बेलाइन का मन दुखी हुआ।

वास्तव मे न्यूयार्क अमरीकी शहर नही है। यह विश्व-नगर है जहाँ ससार के सभी भागो से सभी जातियो के लोग इकट्ठे हुये हैं। उसके निचले पूर्व भाग मे बावरी नाम का प्रसिद्ध क्वार्टर है जिसमे चाइना टाउन सम्मिलित है। नगर के उत्तर मे यहूदियों की बस्ती है, उस बस्ती का नाम घेटो है। यहूदियो

के परिवार अब भी वहाँ रह रहे है जब इजी बेलाइन एक लडका था लेकिन अब उन घरो की शक्ल बदल गई है। वे घर अब बहुत स्वच्छ है, अधिक व्यवस्थित हैं और मजबत बने है। अब उन घरो मे पुराने समय की अव्यवस्था समाप्त हो चुकी है। यह कौन सोच सकता था कि बावरी अमरीकी लोकप्रिय गीतो की नर्सरी हो जायेगी ?

सौ वर्ष से अधिक समय की बात है, जार्ज वाशिंगटन का समय था, और उस समय बावरी एक छोटा ग्राम था तथा न्यूयार्क के एक कोने पर बाहर की ओर अलग बसा था। इसमे सन्देह नही कि वाशिंगटन और उनके अफसरो ने बुल्स हेड टेवर्न मे कई बार टोडी लोगो की शुभ कामना करते हुये मनोरजन के कार्यक्रम बनाये। बुल्स रेड टेवर्न बावरी थियेटर के पास ही स्थित था। आज हम जिसे ऊँचा बसा हुआ नगर कहते है, वहाँ खेत और जगल थे। अभी तक वहाँ चाइना टाउन नही बना था।

बेलाइन परिवार के बच्चो के लिये कुछ-न-कुछ भोजन का प्रबन्ध रहता है, उनकी माँ यह प्रबध किया करती थी, लेकिन इज़ी को यह महसूस होने लगा कि वह कुछ भी नही कमा पाता जिससे उसके परिवार को सहायता मिले। यदि वह अधिक नही कमा सकता तो कम-से-कम उसे कुछ कमाना ही चाहिये। वह अपने घर के सामने बैठ गया, उसने अपने घुटनो को कसकर दबा लिया और सडक पर बराबर आने-जाने वाले लोगो को देखने लगा। उसने उदास, प्रसन्न, व्यस्त और सुस्त आदमी आते-जाते देखे। उन लोगो मे सभी प्रकार के लोग थे लेकिन धनी लोग नही थे। शहर के उस भाग मे धनी लोग नही रहते थे। यदि उस भाग मे कोई धनी व्यक्ति हुआ भी हो तो वह सेलून या केफे का मालिक होगा। ये ऐसे लोग होगे जो एक दिन धनी और दूसरे दिन कदाचित निर्धन होगे।

वह लडका अपने द्वार पर बैठा-बैठा यह महसूस करने लगा कि उसका जीवन निरर्थक है। वह अपने परिवार के लिये किसी प्रकार भी उपयोगी नही है। वह अनुपयुक्त है। उसके लिये यह अच्छा होगा यदि वह अपने घर से निकल जाय। वह घर से निकलकर अपनी आजीविका कमाये अथवा भूखे रहकर

किसी-न-किसी काम की चेष्टा करे। एक दिन शाम के भोजन के बाद बिना कुछ कहे इजी बिली घर से बाहर निकल गया और फिर लौटकर नही आया।

उन दिनो वहाँ पर ऐसी घटनाएँ प्राय हो जाया करती थी। इज्री बेलाइन केवल तेरह वर्ष का था जब उसने अपना घर छोड दिया। उसकी गरीब माँ उसकी प्रतीक्षा करती रही और उसने उसे चारो ओर खोजा। यदि पडोस का कोई बच्चा उसकी माँ को यह सूचना दे जाता कि उसने इजी को अमुक सड़क पर देखा है तो इज्री की मा दिन भर प्रतीक्षा करने के बाद शाम को अपने सिर पर शाल ओढकर घर से बाहर निकल जाती और भीड़ मे अपने बच्चे को खोजने के लिये इधर-उधर भटका करती। उसके साथ सदा ऐसा ही होता था और वह प्रतीक्षा करते-करते उसे न पाकर निराश रह जाती थी।

कई वर्ष बीत गये और इज्री अपनी माँ के पास लौटकर न आया। अन्त मे वह अपनी माँ के पास लौट ही आया। वह ऐसे समय लौटा जब वह अपने माता-पिता को बहुत आराम से रख सकता था क्योकि अब वह धनी हो गया था और अमरीका के लोग उसके गीतो को खरीद रहे थे। वृद्धा माँ ने नई भाषा नही सीखी थी और वह यह कभी नही समझ सकी कि उसका इज्री किस प्रकार ऐसे गीत लिख सका जिन्हे अमरीका चाहता था। उसे देखकर उसकी माँ को बहुत प्रसन्नता हुई। उसे कितनी अधिक चिन्ता रहती थी लेकिन उसने शिकायत मे इज्री से एक शब्द भी कभी नही कहा।

आप यह जानने के उत्सुक होगे कि जिस लडके को किसी दिन गीतकार बनना था, उसने उस शाम को क्या किया जब उसने अपना पहिली बार घर छोडा था। उसे सोने के लिये जगह की आवश्यकता थी और उसे यह जगह का पता था जहाँ कि उसे दस सेण्ट मे एक चारपाई और बिस्तर मिल सकता था। वह ऐसी जगह गया जहाँ अधिक रात हो जाने पर भी शोर होता था—वह स्थान बाबरी की ओर था। उस स्थान को निचली पूर्वी किनारे का 'गे व्हाइट वे' भी कहते थे। यह वह स्थान था जहाँ लडके अपना घर

छोडकर पहले-पहल अपनी आजीविका कमाने के साधन खोजते थे। वह मटर-गश्ती करता हुआ एक खुशनुमा सेलून मे जा घुसा और उसने वहाँ उस समय का लोकप्रिय भावना-प्रधान 'वैलेड' गाना शुरु कर दिया। वह स्थान दु खियो का आवास-स्थान '**(दी मेन्शन आफ ऐकिंग हार्ट्स)** कहलाता था।

इन दिनो मे घूमने फिरने वाले गायको को गीत गाने के लिये एक पेनी भी कठिनाई से मिल पाती थी जब तक लोगो को उस गीत को सुनकर आनन्द न आने लगे। परन्तु उस समय लोग ऐसे गीत सुनकर प्रसन्न हो जाते थे और अश्रु-प्रवाह से गीतो की प्रशसा प्रकट करते थे तथा उन गीतो को सुन्दर कहते थे। यह सदैव बदलती हुई फैशन का उदाहरण है। यह फैशन कपडो और सगीत दोनो मे ही अपनाया जाता है। उस साहसी गायक ने कुछ ही समय मे अपने रात के ठहरने के लिये धन कमा लिया।

वह बावरी 'वस्कर', (भावना प्रधान गीत गाने वाला) बन गया और सैलून, नृत्य तथा सगीत भवनो मे गीत गाने लगा। इन स्थानो को हकी-टाक कहते थे। इन स्थानो मे मल्लाह और पथिक कुछ समय आराम करने के लिये आ जाते थे। वे खाते-पीते थे और अपना मन बहलाते थे। नगर के ऊँचे भागो मे मनोरजन के लिये शराब-खाने थे। अब इन स्थानो को नाइट क्लब (रात्रि-क्लब) के नाम से पुकारते हैं। यह कोई नही कह सकता कि इर्ज़ी लोकप्रिय गीत गाते-गाते पुराने गीतो से ऊब गया हो लेकिन वह ट्यून के अनुसार अपने गीत देने मे कुशल हो गया था। वह श्रोताओ को समझने लगा था और यह जान गया था कि किस गीत से लाभ हो सकता है। वह यह सीख गया था कि दर्शको को क्या अच्छा लगता है और यह ऐसी सफलता थी जिससे वह आगे धनी भी हुआ। लेकिन उसे उस समय इस बात का पता नही था। वह गाया करता था और दिन भर के गीतो की पेरोडी बनाया करता था।

जब वह सत्लह वर्ष का हुआ उसे एक नियमित काम मिल गया। वह चाइना टाउन मे १२ पेल स्ट्रीट मे निगर माइक मे सिंगिंग वेटर हो गया।

वह वास्तव मे पेलहेम केफे थी लेकिन प्रत्येक व्यक्ति उसे निगर माइक्स

कहा करता था। निगर माइक एक गोरा व्यक्ति था। वह रूस का यहूदी था और उसका यह उपनाम पड गया था क्योकि उसका रग काला था। चाइना टाउन मे दृश्य देखने लोग जाया करते और उसके स्थान को भी देखने जाते थे।

एक बार योरुप से एक राजकुमार न्यूयार्क देखने आया, उसे अनेक स्थान दिखाये गये और उसे निगर माइक का स्थान भी दिखाया गया जिससे वह मानव-जीवन की एक नवीन झाकी देख सके। अतिथि के आने पर माइक को बहुत प्रसन्नता हुई और उसने दिल खोलकर यह घोषित किया कि उसके यहाँ पीने की दावत है। राजकुमार वहाँ से जाने से पूर्व सदभाव से वेटर को कुछ देने लगे। वेटर को कुछ घबराहट हुई, वह पीछे हट गया क्योकि उसके मन में यह विचार था कि यदि उसने टिप स्वीकार कर लिया तो उसके देश में आतिथ्य सत्कार की प्रतिष्ठा को धक्का लगेगा। यह वेटर इज्ज़ी था। रिपोर्टर हर्बर्ट स्वोप वेटर को टिप लेने से इन्कार करते देखकर आश्चर्य चकित हुआ और उसने अपने अखबार के लिये एक कहानी लिखी। यह पहिला अवसर था जब इज्ज़ी का नाम अखबार मे छपा। कई वर्ष बाद इज्ज़ी र्इविंग बर्लिन नाम से प्रसिद्ध सगीतकार हो गया, उसने कभी-कभी न्यूयार्क या लन्दन के रेस्ट्रा मे उस चेहरे को देखा जिसे उसने निगर माइक के यहाँ देखा था।

ग्राहक सारी रात आते और चले जाते। इज्ज़ी को रात मे काम करने की आदत पड गई और वह दिन मे सो लेता था। सुबह हो जाती और ग्राहक एक-एक करके चले जाते फिर वेटर सभी मेज और कुर्सियो को ठीक करते तथा दूसरे दिन रात के लिये रेस्ट्रा ठीक करते। रेस्ट्रा के पिछले कमरे मे एक बेटर्ड पियानो था और रात तथा दिन के बीच जब समय मिलता इज्ज़ी पियानो पर अभ्यास करता। वह एक अगुली से ट्यूने निकाला करता। वे ट्यून ऐसी थी जिन्हे उसने बाद मे चाइना टाउन मे सुना था।

मिस्टर बर्लिन का कहना है कि उसने अपना पहिला गीत स्पर्धा से लिखा है लेकिन वास्तव मे यह ठीक नही है क्योकि उसके मन मे ही सगीत भरा था और वही सगीत मुखरित हो गया। उसने जब यह सुना कि दूसरे कोने के केफे मे एक वेटर और पियानो-वादक ने एक गीत की रचना की है और वह

गीत छप चुका है फिर उसने और माइक के पियानोवादक निक ने यह सोचा कि वे भी गीत लिखेंगे। इज्ज़ी को गीत लिखना था और निक को ट्यून बनानी थी। उन्होने उस गीत का नाम **मेरी फ्रोम सनी इटली** रखा था। फिर उन्हे एक धक्का लगा। उनमे से किसी को नही मालूम था कि किस प्रकार लिखना चाहिये ? आखिर क्या किया जाय ? जब तक कागज पर कुछ लिखा न हो तो वे प्रकाशक को क्या दिखाये।

वे बाहर चले गये और उन्हे वहाँ फिडलर जॉन मिले। फिडलर बोवरी जूता बनाने का काम करते थे। वह हर शाम को वायलिन बजाया करते थे। परन्तु उन्हे यह नही मालूम था कि सगीत किस प्रकार लिखा जाता है। अन्त मे उन्हे एक नवयुवक पियानो-वादक मिला जो यह जानता था कि गीत कैसे लिखा जाय और तब गीत की रचना हो सकी। वह गीत टिन पैन एली मे पहुँच गया। उसे स्वीकार कर लिया गया और वह प्रकाशित कर दिया गया। इज्ज़ी बेलाइन को इससे तेतीस सेण्ट मिले। यह गीत उसके लिये बहुत महत्व-पूर्ण था। मिस्टर बर्लिन को यही महसूस हुआ और इससे उसे जीवन मे अच्छा अवसर मिल गया।

लेकिन अब उसे इज्ज़ी बेलाइन नही कहते थे। जब भी सगीत के आलेख पर उसका नाम लिखा जाता, वह अपने नाम को उसी प्रकार बेलाइन कहा करता था जैसा कि उसके पडोसी लोग उसे पुकारते थे और इस प्रकार उसे बर्लिन पुकारा जाने लगा। जहाँ तक उसका पहिला नाम था, वह इजराइल नाम नही चाहता था, उसे यह बात गभीर लगती थी और वह अपने नाम को इज्ज़ी कहकर भी नही पुकारता था क्योकि ऐसा नाम लेना मूर्खता था। वह स्वय इर्विग कहलाना चाहता था लेकिन उसको इस बात का डर था कि उसे निगर माइक मे इस नाम से पुकारने मे हँसी आ जायेगी। उन सगीत रचनाओ पर लिखा रहता था—"आई बर्लिन द्वारा लिखित और एम० निकलसन द्वारा सगीत।" वह गीतो के लिये शब्द चुना करता था और पियानो पर एक अगुली की सहायता से ट्यून निकाला करता था।

तीन वर्ष बाद एक सुबह उस पर विपत्ति आ गई। उसे छ बजे प्रात

काल दो घण्टे के लिये केफे का इन्चार्ज बना दिया गया। उस समय व्यापार मद्धिम था। उसे सिर्फ कमरा स्वच्छ करने के अतिरिक्त अन्य कोई काम नहीं था, सुबह से काम करने वाले के लिये केवल बियर निकालने का काम करना था और उसे तिजोरी का ध्यान रखना था जिसमे पच्चीस डालर थे। वह बार के सहारे खड़ा था, अपना सिर अपनी बाँह पर रखे हुये वह सो गया। उसे फिर यही पता लगा कि सिगर माइक उसकी बाँह हिला रहा है। उसने आँख खोली, सूरज चढ़ आया था और माइक कह रहा था कि उसने तिजोरी में रखे हुये पच्चीस डालर चुरा लिये है। माइक ने उसको बाहर निकलने के लिये कहा और फिर लौटने के लिये नहीं कहा। वह चला गया। बाद में उसे यह पता लगा कि स्वयं माइक ने तिजोरी से वह धन निकाल लिया था। माइक ने उसके साथ ऐसा व्यवहार इसलिये किया था कि वह अपने काम के दौरान कभी नहीं सोये।

अब उसकी आयु उन्नीस वर्ष की थी। वह बावरी आवास स्थान में एक आवारा व्यक्ति की भांति सो जाने में डरने लगा था। वह शहर में घूमने लगा और उसे गायक वेटर का काम फिर मिल गया। उसे वह काम यूनियन स्क्वैर के जिमी केली स्थान पर मिला। वह उत्तर में गया और चौदहवीं सड़क पर पहुँचा।

गीत छप चुका है फिर उसने और माइक के पियानोवादक निक ने यह सोचा कि वे भी गीत लिखेंगे। इज्ज़ी को गीत लिखना था और निक को ट्यून बनानी थी। उन्होने उस गीत का नाम **मेरी फ्रोम सनी इटली** रखा था। फिर उन्हे एक धक्का लगा। उनमे से किसी को नही मालूम था कि किस प्रकार लिखना चाहिये ? आखिर क्या किया जाय ? जब तक कागज पर कुछ लिखा न हो तो वे प्रकाशक को क्या दिखाये।

वे बाहर चले गये और उन्हे वहाँ फिडलर जॉन मिले। फिडलर बोवरी जूता बनाने का काम करते थे। वह हर शाम को वायलिन बजाया करते थे। परन्तु उन्हे यह नही मालूम था कि सगीत किस प्रकार लिखा जाता है। अन्त मे उन्हे एक नवयुवक पियानो-वादक मिला जो यह जानता था कि गीत कैसे लिखा जाय और तब गीत की रचना हो सकी। वह गीत टिन पैन एली मे पहुँच गया। उसे स्वीकार कर लिया गया और वह प्रकाशित कर दिया गया। इज्ज़ी बेलाइन को इससे तेतीस सेण्ट मिले। यह गीत उसके लिये बहुत महत्व-पूर्ण था। मिस्टर बर्लिन को यही महसूस हुआ और इससे उसे जीवन मे अच्छा अवसर मिल गया।

लेकिन अब उसे इज्ज़ी बेलाइन नही कहते थे। जब भी सगीत के आलेख पर उसका नाम लिखा जाता, वह अपने नाम को उसी प्रकार बेलाइन कहा करता था जैसा कि उसके पडोसी लोग उसे पुकारते थे और इस प्रकार उसे बर्लिन पुकारा जाने लगा। जहाँ तक उसका पहिला नाम था, वह इजराइल नाम नही चाहता था, उसे यह बात गभीर लगती थी और वह अपने नाम को इज्ज़ी कहकर भी नही पुकारता था क्योकि ऐसा नाम लेना मूर्खता था। वह स्वय इर्विग कहलाना चाहता था लेकिन उसको इस बात का डर था कि उसे निगर माइक मे इस नाम से पुकारने मे हँसी आ जायेगी। उन सगीत रचनाओ पर लिखा रहता था—"आई बर्लिन द्वारा लिखित और एम० निकलसन द्वारा सगीत।" वह गीतो के लिये शब्द चुना करता था और पियानो पर एक अगुली की सहायता से ट्यून निकाला करता था।

तीन वर्ष बाद एक सुबह उस पर विपत्ति आ गई। उसे छ बजे प्रात.

काल दो घण्टे के लिये केफे का इचार्ज बना दिया गया। उस समय व्यापार मद्धिम था। उसे सिर्फ कमरा स्वच्छ करने के अतिरिक्त अन्य कोई काम नही था, सुवह से काम करने वाले के लिये केवल वियर निकालने का काम करना था और उसे तिजोरी का ध्यान रखना था जिसमे पच्चीस डालर थे। वह वार के सहारे खडा था, अपना सिर अपनी वॉह पर रखे हुये वह सो गया। उसे फिर यही पता लगा कि निगर माइक उसकी वॉह हिला रहा है। उसने ऑख खोली, सूरज चढ आया था और माइक कह रहा था कि उसने तिजोरी मे रखे हुये पच्चीस डालर चुरा लिये हैं। माइक ने उसको वाहर निकलने के लिये कहा और फिर लौटने के लिये नही कहा। वह चला गया। वाद मे उसे यह पता लगा कि स्वय माइक ने तिजोरी से वह धन निकाल लिया था। माइक ने उसके साथ ऐसा व्यवहार इसलिये किया था कि वह अपने काम के दौरान कभी नही सोये।

अव उसकी आयु उन्नीस वर्ष की थी। वह वावरी आवास स्थान मे एक आवारा व्यक्ति की भॉति सो जाने मे डरने लगा था। वह शहर मे घूमने लगा और उसे गायक वेटर का काम फिर मिल गया। उसे यह काम यूनियन स्क्वैर के जिमी केली स्थान पर मिला। वह उत्तर मे गया और चौदहवी सड़क पर पहुँचा। केली मे आने वाले लोग चाइना टाउन के माइक के यहाँ आने वाले लोगो से भिन्न थे। थियेटर सेक्शन मे आने वाले वहुत से लोग व्यावसायिक मनोविनोद करन वाले थे—वे वाडेविले मे कोमेडियन, जादूगर, गीत और नृत्य-कलाकार थे।

केली मे पियानोवादक के साथ र्वलिन ने कुछ अधिक गीत लिखे। उस समय तक इस वात की अधिक चर्चा थी कि डोरेडो नाम का इटली का मेराथान रनर इण्डियन रनर लोगवोट के साथ दौड कर रहा था। यह ैड मेडीसन स्क्वैर गार्डन मे हुई। इसमे इण्डियन जीत गया। उसी समय र्वलिन के पास एक कोमोडिन आया और उससे कुछ कविताएँ लिखने के लिये निवेदन करने लगा। वह चाहता था कि "वेलेड" लिखा जाय जिसे वह इटली की वोली मे सुना सकता था जवकि समीपवर्ती वाउडेविले थियेटर के एक ऐक्ट और

दूसरे ऐक्ट के बीच मे समय हुआ करता था। वर्लिन-दौड मे नाइयो के तौर तरीके, हब्शियो की गुमटियो और इटली के उन फल वेचने वालो को देखकर प्रसन्न हो जाता था जो उस वडे दिन डोरेण्डो मे वाजी लगाकर धन प्राप्त करने की आशा किया करते थे। इसी समय उसने अपनी कहानी को कवितावद्ध किया और उस समय कोमेडियन ने वायदा के अनुसार उसे दस डालर देने से इन्कार कर दिया। अत वर्लिन टिन पैन ऐली जिले के ब्रोडवे मे गया और वहाँ उसने यह कोशिश की कि क्या वह उस कविता को वेच सकता है। एक म्यूजिक पब्लिशिग फर्म के कार्यालय मे मैनेजर ने वर्लिन-कविता का कुछ अश सुना और उन्होने उससे कहा कि वह उसे कुछ गाकर सुनाये तथा उसे एक छोटे कमरे मे जाने के लिये कहा जिससे अरेंजर उसकी ट्यून को सीख सके।

इसमे कुछ भी नही करना था वल्कि उस ट्यून को दुहराना था। अरेंजर अपनी पेसिल और म्यूजिक पेपर लेकर बैठ गया और वह सगीत लिखने के लिये तैयार था। यह कैसा सगीत है ? वर्लिन ने फिर शव्दो को दुहराया और जैसे-जैसे वह शब्द दुहराता गया, वैसे-वैसे कुछ गुनगुनाता गया। वह एक नया गीत बन गया और उसे उसके लिये पच्चीस डालर मिल गये। उसे वैसे ही गीत के लिये पहिले तैतीस सेण्ट ही मिलते थे। उसके वहुत से गीत अधिक लोकप्रिय हो गये जिनमे **माई वाईफ्स गोन टू दी कण्ट्री** गीत भी शामिल है।

इसमे अधिक समय नही हुआ कि वह इस फर्म के लिये गीतकार वन गया। प्रकाशक उसकी प्रति कापी के विकने पर रायल्टी दे देते थे और जिन दिनो मे वह गीत लिखने का विचार करता था, उसे पच्चीस डालर मिला करते थे। उसकी आयु अव भी उन्नीस वर्ष की थी और अव उसने गायक वेटर का काम करना छोड दिया और टिन-पैन ऐली मे आकर काम करने लगा। कई वर्षो के कठोर परिश्रम और असफलताओ के वाद उसे अच्छा अवसर मिला।

कण्ट्री मे कभी नही गया था और वह शहर मे रहकर ही वडा हुआ अत उसे शहर के शोरगुल का ही पता था। उसने रोलिकिग गीत ही लिखा

ओह, हाऊ आई विश अगेन
आई वाज इन मिशीगन,
डाउन आन दी फार्म।

स्टीफेन फॉस्टर ने स्वानी नदी देखी तक न थी। वह दो स्वरों के शब्दों को ही सीख सका था और मानचित्र में उसने देखा था कि दक्षिण में एक नदी है जिसका नाम उसके गीत के लिये आवश्यक है।

उसने अपने जीवन में कभी भी संगीत का पाठ नहीं पढ़ा और उसके पास अपना पियानो भी नहीं था लेकिन उसके हृदय में संगीत सीखने की उत्कट अभिलाषा थी। वह आधी रात उठ बैठता और अपने आफिस चला जाता। वहाँ चारों ओर सुनसान रहता था और वह रेटल-टीन्टैग पियानो बजाने का प्रातःकाल तक अभ्यास किया करता था। आखिरकार उसने पियानो बजाना सीख लिया और वह पियानो दसों अंगुलियों से बजाने लगा लेकिन वह एक की से अधिक की पर बजाना न सीख सका। उसके लिये यह आसान था कि वह ब्लैक की का प्रयोग करे क्योंकि वह अपनी अंगुलियों को फ्लैट रखता था और किसी ने उसकी अंगुलियाँ टेढ़ी करते हुये नहीं देखा। इसलिये उसने सदैव एफ शार्प और जी० फ्लैट की से पियानो बजाया लेकिन इसके लिये आप कुछ भी सोच सकते हैं। बाद में जब उसे धन की प्राप्ति हो गई, उसके पास लीवर से बना एक पियानो था जिसे धक्का देकर वह की बोर्ड हटा देता था और यान्त्रिक रूप से उसे दूसरी की मिल जाया करती थी।

वाद यह बात सच निकली और उसने न्यूयार्क मे ही गीत नही गाये बल्कि लदन मे भी अपने गीत प्रस्तुत किये।

इस समय से बहुत पूर्व वह अपनी माँ के पास घर लौट आया उसने अपने लडके का वहुत स्वागत किया और उसे इस वात पर तनिक भी न झिडका कि वह क्यो भाग गया था। परन्तु उसकी माँ को यह सदैव रहस्य ही लगता रहा कि वह छोटा इजी गीतकार कैसे वन गया। जव वह वहुत धनी हो गया और अपनी माँ के लिये सुन्दर और महगे उपहार लाया तो उसकी माँ को बहुत प्रसन्नता हुई लेकिन उसकी समझ मे नही आया कि उसका बेटा गीतकार कैसे वन गया। उन उपहार की वस्तुओ मे रोकिंग चेयर भी थी जिसे पाने के लिये उसकी माँ की उत्कट इच्छा थी। उसने सवसे पहिले रोकिंग चेयर ही अपनी माँ को लाकर दी। वह उस कुर्सी को कभी नही छोड सकी जवकि उसके स्थान पर अच्छी और नई कुर्सी भी आ सकती थी।

वह तेईस वर्ष का हो गया। वह बहुत प्रसन्न रहता था। आखिरकार वह इर्विंग वर्लिन ही वन गया। वह अपने घर से तेरह वर्ष की आयु मे भाग गया था, उस समय वह हृदय से वहुत दुखी और निराश था, वह वावरी मे निर्धन घूमा करता था और किसी प्रकाशक को ट्यून सुनाता तो उसकी हँसी उड़ाई जाती थी। वही लडका दस वर्ष बाद टिन पैन एली मे गीतकार बन गया। टिन पैन ऐली ब्रोडवे के थियेटरो के लिये प्रसिद्ध हो चुका था। वह 'दी फ्राइस' क्लव मे एक्टर चुन लिया गया।

अव हकी-टाक के पियानोवादक पुरानी परम्परा से हटकर अलग मेलोडी निकाल रहे थे जिससे रिद्म मे कभी-कभी हिचकी जैसे स्वर आ जाते थे और उस रिद्म को कभी कभी इतना तेज कर दिया जाता था कि वह रिद्म नीग्रो नर्तको को कधे हिलाते समय और शरीर मे वल खाते समय मेल खा सके। यह नई रिदम रैगटाइम थी और इसकी धूम सारे ससार मे मच गई तथा इसे अमरीका की नवीन कृति समझा गया।

एक दिन फ्रायर्स एक वडी पार्टी देने जा रहे थे जिसे वे अपना फ्रोलिक कहा करते थे। उन्होने अपने नये सदस्य को यह नई वात पूरी करने के लिये

कहा। उसने उन्हे अपनी नई रचना सुनाई। उसने अपने कधे हिलाये, पैर थपथपाये, गीत गाया और ऐसे मुस्करा उठा कि वह सभी को आमन्त्रित कर रहा है

कम ऑन एण्ड हियर,
कम ऑन एण्ड हियर
एलेग्जेडर्स रेगटाइम वैण्ड।

वह एक हिट था। प्रत्येक व्यक्ति ने उस गीत को गया। वह गीत सारे ससार मे फैल गया। कुछ ही समय मे उस रचना की डेढ लाख प्रतियाँ विक गई। शायद इससे भी अधिक प्रतियाँ ही विकी हो। सयुक्त राज्य अमरीका मे शायद ही कोई ऐसा घर हो जिसमे पियानो न हो और उस पियानो पर **एलेग्जेण्डर्स रैगटाइम बैण्ड** की धुने न बजी हो।

अव वर्लिन को जीवन मिल गया। उसे अव चिन्ता करने की आवश्यकता न थी। वह अच्छे कमरो मे रह सकता था और अव उसे अपने सोने के लिये फायर-एस्केप जैसे कुछ स्थानो को खोजने की आवश्यकता न थी। उसके कठोर दिन वीत चुके थे। वह सड़क पर घूमने-फिरने वाला छोटा लडका अपनी आयु के बीस वर्षों के बाद ससार का सवसे अधिक लोकप्रिय गीतकार हो गया। उसे अपने परिश्रम से ही यह सफलता मिली थी। उसका ऐसा कोई धनी चाचा नही था जो उसकी सहायता करता। उसका कोई भी सहायक न धा। वह अपने आप ही कठोर जीवन से उभर कर आगे आया था।

उसने अपने वचपन के दिन और रात केवेरेट्स और म्यूजिक हाल मे विताये और वहाँ उसने ऐसा सगीत सुना जिसे लोग अपने मनो-विनोद के लिये सुना करते थे। वह प्रत्येक वस्तु देखने मे कुशल था। वह वस्तुओ को देखा करता और अपने से पूछा करता कि कुछ ट्यून ही क्यो लोकप्रिय है। इस प्रकार वह ऐसी ट्यून को समझने का आदी हो गया जिन्हे अधिक पसन्द किया जाता था और वाद मे वह सगीत का प्रकाशक भी वन गया। वह इस प्रकार की भावनाओ को जान गया था जिससे भीड को अपनी ओर आकर्षित किया

जाय, चाहे गीत हास्य पूर्ण या कामिक का हो, प्यार का हो अथवा ऐसा गीत हो जिसे सुनकर आँखो से आँसू वह उठे।

वह निगर माइक के यहाँ सिंगिंग-वेटर रहा था और अव दस वर्ष वाद वह इग्लैण्ड आया। वह लदन के थियेटर और सगीत के सर्किल का सदस्य ही नही वना वल्कि 'स्मार्ट सोसाइटी' ने भी उसे अपना लिया। जब वह लदन मे था तो एक दिन चार वजे वह उठा और **दी इण्टरनेशनल रैग** नामक गीत की रचना करने लगा। उसी दिन दोपहर के वाद वह थियेटर मे नई ट्यून गा रहा था।

कई लोगो ने उसे ववाई दी, र्बालिन की वहुत प्रशसा की गई लेकिन उसे उस वच्चे द्वारा की गई प्रशसा सवसे अधिक अच्छी लगी जिसे इस वात का पता भी न था कि वह उसकी प्रशसा कर रहा है। लदन की पहिली यात्रा पर अखवार वेचने वाले लडके ने उसकी गाडी का दरवाजा इस आशा मे खोला कि शायद उसे यहाँ से एक पेनी मिल जाय। वह यह कभी नही जान सका कि अमरीकी महाशय इतने मुक्त हाथो से उसे पाँच डालर के लगभग क्यो दे रहे हैं। कारण था—उस लडके का **ऐलेग्जण्डर रैगटाइम वैण्ड** की धुन का गुनगुनाना।

मिस्टर र्बालिन ने कभी नोट के साथ गीत का पाठ करना नही सीखा। सगीत उसके दिमाग पर छाया रहता था। वह उसे अपने कानो से सुनकर समझ लेता था। वह जिस गीत की रचना कर लेता था, उसकी धुन बना लेता था और उसे किसी अरेंजर को लिखने के लिये दे देता था। उसे यह पता था कि वह कहाँ तक सगीत मे काम कर सकता है और कहाँ उसकी असमर्थता है। इसीलिये वह सगीतकार के रूप मे अपने मार्ग मे नही भटका वल्कि एक गीतकार ही वना रहा, लेकिन उसने ब्रोडवे मे ही नही अपितु सारे ससार मे सवसे अधिक गीतो की और लोकप्रिय गीतो की रचना की।

किसी संगीत अध्यापक ने उसे कभी 'की' नही बताई। उसे यह कभी भी पता नही था कि सगीत मे एक की से दूसरी की मे परिवर्तन हो सकता

है। उसे यह एक दिन तब पता लगा जब वह स्वय चिन्तन कर रहा था। उसने कहा

"मैंने इसे अपने लिये खोजा है और मुझे यह इतना प्रिय है कि मुझे जहाँ अवसर मिलता है, मैं इसका प्रयोग करता हूँ और मैंने हजारो डालर इसके द्वारा कमाये हैं।"

जब वह बीस वर्ष से ऊपर हो गया, उसे अपने जीवन के कदाचित सबसे मधुर क्षण मिले और आप अनुमान लगाये कि उसे न जाने कितनी बार सुखद क्षण मिले होंगे।

सूर्य डूबने के बाद एक सध्या को वह टेक्सी मे बैठकर अपनी माँ से मिलने उसकी फ्लेट पर गया। वहाँ वह उस समय भी एक कमरे के घर मे रह रही थी। उसे यकायक अपनी माँ से संकोच और लज्जा लगी क्योकि वह एक बडी बात करने जा रहा था। उसने अपनी माँ को धीरे से बताया कि वह दूसरे बहिन और भाइयो को लेकर उसके साथ गाडी मे बैठकर चले। माँ ने आपत्ति की कि उसे रात का भोजन तैयार करना है और टेक्सी मे घूमना अत्यन्त महगा होता है। और वह ऐसी व्यर्थ की बातो को सोच भी नही सकती। लेकिन उसने इतनी अधिक जिद की कि माँ को मानना पटा और सारा परिवार कैब मे बैठ गया। वे कोलाहल पूर्ण सडको पर एक ब्लाक से दूसरे ब्लाक को पार करते हुये शहर की ओर बढे। अत मे वे एक सुन्दर रोशनी से जगमगाने नये मकान के सामने रुके। वे अन्दर गये और सब सजे-सजाये एक सुन्दर हाल मे होकर एक सुन्दर खाने के कमरे मे पहुँचे। यहाँ पर खाने का सारा प्रबन्ध हो चुका था और एक महिला प्रतीक्षा कर रही थी।

बेचारे इवी ने भाषण देना चाहा। उसने इसके लिये तैयारी की थी कि उसे कुछ कहना है लेकिन वह कुछ कह नहीं सका। वह भावनाओं से इतना विभोर हो चुका था कि उसका गला भर आया। वह केवल माँ के लिये कुर्सी खीच सका जिससे उसका परिवार यह जान सके कि यह नया घर उनका अपना है जो उसने एक गीत लिखकर खरीदा था। उसने उस दिन की याद

दिलाई जब उसकी माँ ने रात का खाना नही बनाया था और वह अपने घर से भाग गया था। वह अपना टोप पहिने सडको पर सारी रात आवारा घूमता रहा जब तक सूर्य उदय न हुआ। उसे उस दिन रात का भोजन न मिला, उसके मन मे उस कठोर जीवन की याद बार-बार आ रही थी कि उसने कैसे सडको पर इधर-उधर भटक कर अपना समय बिताया है और केवल गीत का सहारा लेकर वह जिन्दगी मे आगे बढ सका और खुश रहा।

जिस वर्ष **एलेक्जेण्डर रैगटाइम** का बैण्ड ससार मे अपना स्थान बना रहा था, उसी वर्ष इर्विन बर्लिन एक लडकी के प्रेम मे फस गया और उसकी सगाई हो गई। वह और उसकी पत्नी बहुत कम आयु की थी, उनकी प्रसन्नता के लिये सभी कुछ आदर्शपूर्ण था। दुलहन सुहागरात के दिन बहुत बीमार हो गई और उसी बीमारी के कारण कुछ दिन बाद वह परलोक सिधार गई। अब गीतकार दुखी था और उसके गीत भी दुख से भरे थे। उसने अपने दुख को भुलाने के लिये योरुप की यात्रा की, अब वह लोकप्रिय गीतो की रचना नही कर पाता था और एक ऐसा दिन आया कि उसने अपनी उदासी को अभिव्यक्त करके एक गीत लिखा तथा उसे अपने प्रकाशक को दे आया। गीत की पक्ति थी—**व्हेन आई लॉस्ट यू**। कुछ ही समय मे वह गीत सभी के मन को अच्छा लगने लगा। उस गीत की दस लाख प्रतियाँ बिकी। उस गीत से उसको पर्याप्त धन मिला लेकिन सबसे अधिक महत्व की बात यह थी कि उसे अपने दुख से मुक्ति मिल गई। इसके बाद वह फिर गीत लिखने लगा। कई वर्ष बाद उसने फिर विवाह कर लिया।

कुछ वर्ष बाद विश्व-महायुद्ध मे बर्लिन की फौज मे भरती हो गया। उसे अपना सुखदायक घर छोडना पडा। उस घर मे उसके पास एक रसोइया, वेलेट और शॉफर था और यॉपहैंक के केम्प अपटोन मे डफ बाय के समान 'पील पोटेटोज' भी थे। वह विदेश जाना चाहता था तथा सैनिको के लिये गीत गाना चाहता था और उनका उसी प्रकार मनोरजन करना चाहता था जैसा कि कुछ अभिनेताओ और अभिनेत्रियो ने उनका मनोविनोद किया हो लेकिन ऐसा करने की अनुमति नही दी गई। उसने बचपन से ही कठिनाइयो

का सामना किया था और वह प्रयत्न करके धनी वना था लेकिन धन से वह विगडा नही था। वह युवक ऐसी दुखद घटना से अपना जीवन नष्ट नही करना चाहता था। जब उसे इस बात का पता लगा कि जनरल को अपने सैनिको और अतिथियो के लिये अधिक सुखद कैम्प बनाने के लिये प्रचुर धन की आवश्यकता है तो इर्विंग बर्लिन ने नये खेल **यिप-यिप-याफांक** के लिये गीत लिखे और वह खेल न्यूयार्क मे खेला गया। बर्लिन के गीत अधिक लोकप्रिय हुए। उसकी माँ ने यह आग्रह किया कि वह अपने लडको को वर्दी मे देखे। वर्लिन विशाल रगमच पर आया, उस समय वह अकेला, था, वह खाकी वर्दी पहिने था और 'पेल' के सहारे झुका हुआ था। उसने अपने को अकिंचन अदना वताया और गीत गाया। उस गीत मे सैनिक के जीवन की कठिनाइयो का वर्णन किया है। उसके गीत से हाल के सभी दर्शक मुग्ध हो गये। उस शो से अस्सी हजार डालर मिले और उसने अपने गीत के लिये एक सेण्ट भी नही लिया।

उसी शो मे एक अन्य गीत लोकप्रिय वन गया—**ओह, हाऊ आई हेट टू गेट अप इन दी मोर्निंग**। इसमे आश्चर्य की वात नही है क्योकि उस गीत का प्रभाव कैम्प के प्रत्येक वच्चे पर हुआ। वे सभी सुवह नही उठना चाहते थे। लेकिन वर्लिन के गीत से विचित्र ही प्रभाव पडा। वह जब निगर माइक के यहाँ काम करता था तभी से सारी-सारी रात काम करने का अभ्यासी हो गया था और काम करते-करते सुवह कर देता था।

जव उसने पहिली वार **दी बेगर्स ओपेरा** देखा तो उसे देखकर वह वहुत प्रसन्न हुआ और स्वय शो के लिये सगीत रचना के लिये लालायित हो उठा। उसका एक मित्र था जिसका नाम सेम हेरिस था। वह खेल दिखाने का व्यवसाय किया करता था। सेम हेरिस ने अपने थियेटर का नाम म्यूज़िक बॉक्स रखा था। वह वचपन से थियेटर का यही नाम रखना चाहता था। उसने 'म्यूजिक वाक्स' के लिये एक के वाद दूसरे 'रिव्यू' की रचना की और वह वरावर गीत लिखता रहा। वह कभी भागा नही। वह अव भी गीत

लिख रहा है और यदि आप न्यूयार्क जाय तो आप यही सुनेंगे कि खेल का सगीत इर्विंग वर्लिन ने तैयार किया है।

उसके गीत उसके समकालीन गीतकारो की अपेक्षा वहुत विके। लेकिन उसने वहुत परिश्रम किया था। मिस्टर वर्लिन ने अपनी गीत-रचना विधि के वारे मे यह वताया है कि उसके मस्तिष्क मे एक विचार आता है और तभी वह उसके शीर्षक के वारे मे विचार करता है। वह शीर्षक को वहुत महत्व देता है। उसके वाद वह मुख्य सगीत का विचार करता है और उसके लिये शब्द चुनता है कभी-कभी वह एक गीत के लिये सप्ताहो तक काम करता है और उसके वाद कुछ लिखता है। उसकी अद्भुत स्मरण शक्ति केवल सगीत तक ही सीमित नही है।

गीतकार की कोई हॉवी नही थी, वह कहता है कि उसकी हॉवी ही उसका काम है। वह गाने और गीत-रचना का समस्त श्रेय अपने पिता को देता है। वह जेरोम कर्न के सगीत का महान प्रशसक है। उसका प्रथम आदर्श सगीतकार तथा नर्तक जार्ज एम० कोहन था। अव यदि उसे कोई यह पूछे कि उसे कौन से अपने गीत सवसे अधिक प्रभावित करते हैं तो वह यह उत्तर देता है **"गाड ब्लेस अमेरिका।"**

सगीतकार जॉन एलडन कारपेंटर ने एक वार कहा, "मुझे पूर्ण विश्वास है कि वर्ष २००० मे सगीत का ऐतिहासकार एक ही दिन अमरीका के सगीत और इर्विंग वर्लिन का जन्म दिन समझेगा।" जेरोम कर्न ने कहा, "इर्विंग वर्लिन का अमरीकी सगीत के क्षेत्र मे स्थान नही है, वह स्वय अमरीकी सगीत है।" कर्न ने ही **एनी गेट योर गन** के लिये सगीत की रचना की थी। लेकिन उसका निधन हो गया और फिर **ओकलाहोमा के** ख्याति प्राप्त एजर्स और हेयरस्टीन ने वर्लिन से सगीत-रचना के लिये कहा। वर्लिन ने कहा कि वह उस प्रकार के सगीत की रचना नही कर सका, वह सगीत कठिन ही था। शायद वह यह भूल गया था कि उसने भी पहिली वार उसी प्रकार के सगीत की रचना की थी। उन्होंने शुक्रवार को वात की, राजर्स ने वर्लिन के पास पुस्तक छोड दी और उससे कहा कि सोमवार को वह उसके साथ दोपहर का भोजन करे

और उसे यह आशा है कि उस समय तक उसके मन मे वैसे सगीत की रचना का विचार आ जायेगा। सोमवार तक र्बलिन ने उस पुस्तक को केवल पढा ही नही बल्कि यह लिखा, "वह पुस्तक वस्तुत सुन्दर है।" और यू काण्ट गेट ए मैन व्हिद ए गन का एक भाग है। बाद मे वह इस सगीत-शो को अपने जीवन का सबसे अधिक व्यावसायिक कार्य समझने लगा।

र्बलिन ने 'गाड ब्लेस अमेरिका' फण्ड की स्थापना की और उसमे अपने इस गीत की आय जमा करा दी। इस फण्ड का मुख्य उद्देश्य यही था कि अमरीका के स्काउटों और गर्ल गाइडों को लाभ मिले। लाखो डालर वितरित कर दिये गये। उसने प्रथम विश्व महायुद्ध मे इस उद्देश्य के लिये गीत लिखा था लेकिन उसे यह महसूस हुआ कि जनता का मन सहानुभूतिपूर्ण नही है अत उसने १९३८ तक इस गीत को प्रकाशित नही किया। उसने उस गीत को पूर्णतया समयबद्ध कर लिया था।

उसके जीवन मे एक अन्य गौरवपूर्ण अवसर आया। अंकल साम ने उसके **दिस इज द आर्मी** गीत को प्रस्तुत किया। र्बलिन ने आर्मी इमर्जेंसी रिलीफ फण्ड के लिये सगीत-शो का विचार किया था और इससे जो आय हुई वह उसी फण्ड में जमा कर दी गई। गीतकार ने उस खेल के साथ अपने देश और विदेश मे तीन वर्ष विताये वह फिर १९१७ मे डफ व्वाय यूनीफार्म मे रगमच पर आया और उसने बीस वर्ष पुराना लोकप्रिय गीत **यिप यिप याफांक** गाया। दर्शको को प्रसन्नता हुई और उन्होने उसे मन से चाहा। रोजर्स और हेमर्स्टीन ने १९४८ मे उसकी षष्ठी जन्म-दिवस तथा सगीतकार के चालीसवें वर्ष के मनाने के उपलक्ष मे जूलियर्ड स्कूल ऑफ म्यूजिक मे इर्विन र्बलिन छात्र-वृत्ति की घोषणा की। उसके गीतों को उसके देशवासी सदा गाने के इच्छुक रहते थे।

[इर्विग र्बलिन ११ मई, १८८८ मे रूस मे पैदा हुआ। जब वह चार वर्ष का था, अमरीका आया और १९५८ से न्यूयार्क मे रह रहा है।]

लिख रहा है और यदि आप न्यूयार्क जाय तो आप यही सुनेगे कि खेल का सगीत इर्विग र्बलिन ने तैयार किया है।

उसके गीत उसके समकालीन गीतकारो की अपेक्षा वहुत विके। लेकिन उसने वहुत परिश्रम किया था। मिस्टर र्बलिन ने अपनी गीत-रचना विधि के वारे मे यह वताया है कि उसके मस्तिष्क मे एक विचार आता है और तभी वह उसके शीर्षक के वारे मे विचार करता है। वह शीर्षक को वहुत महत्व देता है। उसके वाद वह मुख्य सगीत का विचार करता है और उसके लिये शब्द चुनता है कभी-कभी वह एक गीत के लिये सप्ताहो तक काम करता है और उसके वाद कुछ लिखता है। उसकी अद्‌भुत स्मरण शक्ति केवल सगीत तक ही सीमित नही है।

गीतकार की कोई हॉवी नही थी, वह कहता है कि उसकी हॉवी ही उसका काम है। वह गाने और गीत-रचना का समस्त श्रेय अपने पिता को देता है। वह जेरोम कर्न के सगीत का महान प्रशसक है। उसका प्रथम आदर्श सगीतकार तथा नर्तक जार्ज एम० कोहन था। अब यदि उसे कोई यह पूछे कि उसे कौन से अपने गीत सवसे अधिक प्रभावित करते हैं तो वह यह उत्तर देता है **"गाड ब्लेस अमेरिका।"**

सगीतकार जॉन एलडन कारपेंटर ने एक वार कहा, "मुझे पूर्ण विश्वास है कि वर्ष २००० मे सगीत का ऐतिहासकार एक ही दिन अमरीका के सगीत और इर्विग र्बलिन का जन्म दिन समझेगा।" जेरोम कर्न ने कहा, "इर्विग र्बलिन का अमरीकी सगीत के क्षेत्र मे स्थान नही है, वह स्वय अमरीकी सगीत है।" कर्न ने ही **एनी गेट योर गन** के लिये सगीत की रचना की थी। लेकिन उसका निधन हो गया और फिर **ओकलाहोमा के** ख्याति प्राप्त एजर्स और हेयरस्टीन ने र्बलिन से सगीत-रचना के लिये कहा। र्बलिन ने कहा कि वह उस प्रकार के सगीत की रचना नही कर सका, वह सगीत कठिन ही था। शायद वह यह भूल गया था कि उसने भी पहिली वार उसी प्रकार के सगीत की रचना की थी। उन्होंने शुक्रवार को वात की, राजर्स ने र्बलिन के पास पुस्तक छोड दी और उससे कहा कि सोमवार को वह उसके साथ दोपहर का भोजन करे

और उसे यह् आशा है कि उस समय तक उसके मन मे वैसे संगीत की रचना का विचार आ जायेगा। सोमवार तक र्वालन ने उस पुस्तक को केवल पढा ही नही वल्कि यह लिखा, "वह पुस्तक वस्तुत. सुन्दर है।" और यू काण्ट गेट ए मैन व्हिद ए गन का एक भाग है। वाद मे वह इस सगीत-शो को अपने जीवन का सवसे अविक व्यावमायिक कार्य समझने लगा।

वर्लिन ने 'गाड व्लेस अमेरिका' फण्ड की स्थापना की और उसमे अपने इस गीत की आय जमा करा दी। इस फण्ड का मुख्य उद्देश्य यही था कि अमरीका के स्काउटो और गर्ल गाइडों को लाभ मिले। लाखो डालर वितरित कर दिये गये। उसने प्रथम विश्व महायुद्ध मे इस उद्देश्‍य के लिये गीत लिखा था लेकिन उसे यह महसूस हुआ कि जनता का मन सहानुभूतिपूर्ण नही है अत उसने १९३८ तक इस गीत को प्रकाशित नही किया। उसने उस गीत को पूर्णतया समयवद्ध कर लिया था।

उसके जीवन मे एक अन्य गौरवपूर्ण अवसर आया। अकल साम ने उसके **दिस इज़ द आर्मी** गीत को प्रस्तुत किया। वर्लिन ने आर्मी इमर्जेंसी रिलीफ फण्ड के लिये सगीत-शो का विचार किया था और इमसे जो आय हुई वह उसी फण्ड में जमा कर दी गई। गीतकार ने उस खेल के साथ अपने देश और विदेश मे तीन वर्ष विताये वह फिर १९१७ मे डफ व्वाय यर्नाफार्म मे रगमच पर आया और उसने वीस वर्ष पुराना लोकप्रिय गीत **यिप यिप यार्फाक** गाया। दर्शको को प्रसन्नता हुई और उन्होने उसे मन से चाहा। रोजर्स और हेमर्स्टीन ने १९४८ मे उसकी षष्ठी जन्म-दिवस तथा सगीतकार के चालीसवें वर्ष के मनाने के उपलक्ष मे जूलियर्ड स्कूल ऑफ म्यूजिक मे ईविन वर्लिन छात्र-वृत्ति की घोषणा की। उसके गीतो को उसके देशवासी सदा गाने के इच्छुक रहते थे।

[इर्विग वर्लिन ११ मई, १८८८ मे रूस मे पैदा हुआ। जव वह चार वर्ष का था, अमरीका आया और १९५८ से न्यूयार्क मे रह रहा है।]

रॉय हेरिस

"हमारी संगीत की पसन्द सुनने से बढ़ती है...विवेक से नहीं।"

गत शताव्दी के अन्त मे सयुक्त राज्य अमरीका के सीमान्त प्रदेश का जीवन समाप्त हो रहा था। तीन सौ वर्षो से भी कम अवधि मे हमारा महान देश मूल निवासियो के अदन के वाग जैसे प्राकृतिक वनो के जीवन से उभरकर सभ्यता के विविध कार्यों मे लगा हुआ था। इस शताव्दी के प्रारम होने के कुछ समय पूर्व सीमान्त प्रदेश मे अन्तिम वार काफी लोग आये। उसी समय सबसे पहिले हेरिस भी अपनी पत्नी के साथ वैलो की गाडी मे वैठकर ओक-लाहोमा पहुँचा। वे लिंकन काउटी मे शेंडली के समीप आकर वस गये। उस दम्पत्ति के पास वैग और गाडी के अलावा कुल्हाडी, कुछ आटा और शक्कर थी। उन्होने कुल्हाडी से पेड काटे और लट्ठे वनाये। फिर उन्होने अपनी केविन तैयार की। वे वन्दूक से शिकार करके अपना भोजन जुटाने लगे। उन्होंने सरकारी घर को स्वीकार नही किया बल्कि सिमेरन सीमान्त प्रदेश मे अपने फार्म पर खेती करने के लिये कुछ वर्षो के लिये बस गये।

पहिले वर्ष उस केबिन मे उनके पुत्र का जन्म हुआ। वाप-दादे स्काटलैण्ड और आयरलैण्ड के थे। उन्होंने अपने पुत्र का नाम रॉय रखा। लट्ठे की केबिन में किसी सगीतकार का जन्म स्थान होना इतनी आश्चर्यजनक बात है जितना कि ऐसी ही केविन मे प्रेसीडेंट का जन्म होना। रॉय हेरिस उसी दिन पैदा हुआ था जिस दिन लिंकन का जन्म हुआ। आखिरकार वह एक सगीतकार हो गया।

कुछ वर्षो मे हेरिस परिवार को यह लगा कि उन्हे कही अन्यत्र जाना पडेगा क्योकि वहाँ की जलवायु रॉय की माँ के अनुकूल न थी। जब वह वालक पॉच वर्ष का हो गया, उसके पिता ने अपना सारा सामान बाँध लिया और परिवार के साथ वेगन से केलीफोर्निया को चल दिये। वहाँ रॉय बडा हुआ।

उन्ही दिनो मे उसके चारो ओर देश की प्रगति हुई। उसने छोटी-छोटी बस्तियो को एक बडे शहर मे बदलते हुये देखा और बडे-बडे हरे-भरे खेत छोटे-छोटे फार्मो मे बदले जाने लगे। सेन गेब्रील वेली मे सतरो और वालनट के बाग बन गये।

रॉय की माँ सिर्फ सुनकर भी पियानो बजा सकती थी। उन्होने अपने लडके को बहुत कम आयु मे पियानो बजाना सिखाया। जब वह दस वर्ष का हुआ तो वह पियानो इतना अच्छा बजा लेता था कि उसे उस प्रदेश के स्थानीय मनोरजक-कार्यक्रमो मे प्रमुख वादक के रूप मे भाग लेने के अवसर मिलने लगे। उसने पब्लिक स्कूल जाना शुरू किया। उस स्कूल के लडकों को सगीत नही आता था। उन्होने रॉय की सफलताओ की मजाक बनाई क्योकि सगीत को 'सिसियश' माना जाता था। अनभिज्ञ व्यक्तियो के लिये यह आम बात है। चाहे युवक हो या वृद्ध, लोग उन सभी बातो की मजाक बनाते हैं जिन्हे वे नही जानते है। जब किसी लडके की माँ कोई बात कहती है और स्कूल के अन्य सभी लडके उससे उल्टी बात करते हैं तो यह स्वाभाविक है कि लडका अन्य लडको की बताई बात को सही माने। इस बात के पता लगाने मे लडके को प्राय कुछ एक वर्ष लग जाते हैं कि माता की कही हुई बाते ही सही थी। खैर उस भावी सगीतकार ने सगीत छोड दिया और उसकी जगह पर वह बेस-बाल और टेनिस खेलने मे लगा। सही मानो मे पुरुष होने की ख्याति उसने अर्जित की। यह तब हो पाया जब उसकी नाक, बायाँ हाथ और दाहिने हाथ की तर्जनी टूट गई।

जब हाई स्कूल के प्रथम वर्ष मे उसके 'सिसी' कहकर चिढाये जाने की सभावना नही रही तो उसने क्लेयरनेट सीखना शुरू किया। कुछ ही समय मे वह बैण्ड भी बजाने लगा और उसे सिम्फनी ओरकेस्ट्रा मे स्थान मिलने लगा। अठारह वर्ष की आयु मे उसने अपना फार्म खोल लिया जिसमे वह बेरियाँ और आलू बोता था।

इस अग्रणी ग्राम-बालक के असाधारण चरित्र की विशेषता यह थी कि वह अनोखे विषयो को पढने के लिये उत्सुक रहता था। उसका मस्तिष्क बड़ा

जिज्ञासु था और वह स्वय इतना परिश्रमी था कि वह चीजो की खोज कर सके। जव वह फार्म पर काम करता था तो वह उस समय ग्रीक दर्शन भी अध्ययन करता था और साथ ही क्लेयरनेट भी वजाता था।

प्रथम महायुद्ध मे रॉय हेरिस ने निजी सेवक के रूप मे कार्य किया। एक वर्ष वाद केलीफोर्निया मे लौट आने पर मक्खन और अडे को प्रतिदिन वितरण करने के लिये वह एक ट्रक का ड्राइवर हो गया। इस समय तक यह निश्चित कर लेने के वाद कि वह सगीत के वारे मे अधिक जानने को इच्छुक है, उसने रात मे हारमोनी का अध्ययन करना शुरू किया और केलीफोर्निया यूनिवर्सिटी की दक्षिण शाखा के सायकाल कक्षा मे भी जाने लगा। उसने हिन्दू नीति-शास्त्र भी पढा।

कुछ दिनो तक **लास एन्जिल्स इलेस्ट्रटेड डेली न्यूज** मे हेरिस ने सगीत की समालोचनाए लिखी लेकिन अपना समय रचना के लिये देने के हेतु उसने समालोचना करना छोड दिया। उसने वाद मे यह कहा था कि एक प्रथम श्रेणी का आलोचनात्मक दृष्टिकोण उतना ही दुर्लभ है और उतना ही प्रशिक्षण चाहता है जितना कि प्रथम श्रेणी के सृजनात्मक प्रतिभा को।

सेन्स फ्रान्सिस्को सिम्फनी ओरकेस्ट्रा के चालक एलवर्ट हट्र्ज ने जब रॉय हेरिस का सिम्फोनिक कार्य देखा जो उसने उस समय रचा था जव उसने उसके बारे मे कोई अध्ययन भी नही किया था तो एलवर्ट हट्र्ज ने उस किसान को यह सलाह दी कि वह शेष सारे कार्यों को छोडकर एक रचियता वन जाय। मिस्टर हेरिस उस समय तक बीस वर्ष की आयु से अधिक हो चुके थे जव उन्होने सगीत को अपना व्यवसाय वनाने का निश्चय किया। हर्ष का विपय है कि उसको आर्थर फारविल के रूप मे एक योग्य अध्यापक मिल गये जिन्होने उसे दो वर्ष तक गीत-रचना करना सिखाया और जो यह महसूस करते थे कि हेरिस के रूप मे उन्हे एक ऐसा शिष्य मिला है जो एक दिन सारे ससार को चुनौती देगा। इस अध्यापक के साथ रॉय हेरिस ने अत्यन्त आश्चर्यजनक प्रगति की। स्ट्रिंग क्वार्टेट के लिये उसने एक **सूट** की रचना की और ओर-केस्ट्रा के लिये एक **एन्डैन्टे** रचा जो न्यूयार्क के फिलार्मोनिक सिम्फनी ओरकेस्ट्रा

के स्टेडियम कसर्ट मे न्यूयार्क मे बजाये जाने वाले कार्यक्रमों मे चुना गया था। रचिग्रता की आयु उस समय अट्ठाईस वर्ष थी। वह अपनी रचनाओ को सुनने के लिये भागता हुआ देश के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँचा।

पश्चिमी देश के नवीन सगीत ने देश के लोगो का ध्यान आकर्षित किया और एक दयालु सज्जन ने हेरिस को अध्ययन के लिये विदेश जाने मे सहायता की। एक वर्ष बाद स्ट्रिग क्वार्टेट के लिये उसके **कंसर्टो** पियानो और क्लेरि-नियेट का वाद्य-वादन पेरिस मे हुआ। कुछ ही दिन बाद उसका **पियानो सोनेटा** भी बजाया। ये रचनाएँ निश्चित रूप से उसकी पहिली रचनाओ से अधिक श्रेष्ठ और उन्नत थी। इन्ही के कारण उसे दो वर्षों के लिये गोगिनहेम फलोशिप मिली। उसने नाडिया बोलगर के साथ भी अध्ययन किया जो अनेक आधुनिक रचियताओ की अध्यापिका रह चुकी थी।

उसकी आयु ३१ वर्ष की हो गई। विदेश मे वह अपने अन्तिम वर्ष रह रहा था कि उसकी रीढ की हड्डी टूट गई जिसके कारण उसे अस्पताल में ६ महीने रहना पडा। निदान उसका योरुप मे अध्ययन कार्य समाप्त हो गया। वह आपरेशन के लिये अपने देश लौट आया और वहाँ स्वस्थ होने के लिये बहुत दिन तक घर ही रहा। उसने इन दिनो मे **स्ट्रिंग क्वार्टेट** के लिये रचनाएँ की।

उसके जीवन मे यह पहला अवसर था जबकि उसने प्यानो की सहायता से रचनाएँ की थी। इसके पूर्व वह रचनाओ को लिख लिया करता था। और उन्हे फिर भी बोर्ड पर सेट किया करता था। अब उसे अपनी इच्छा-नुसार लिखने के लिये समय मिल गया था जब वह अच्छा हो गया उसने नेपसेक लेकर जगलो मे विचरण किया। वे जगल बहुत खामोश थे जहाँ वह अपने संगीत की रचना कर सकता था। इसके अतिरिक्त वह पहिले की अपेक्षा दस गुनी तेजी से लिख सकता था। उसके लिखने की टेक्नीक मंज चुकी थी। उसकी शैली मे लय की अपेक्षा अधिक प्रभाव था। सगीतकार को यह महसूस हुआ कि उसके जीवन मे उस दुर्घटना से अनायास दस वर्ष की कलात्मक अभिरुचि और पैदा हो गई है।

एक सगीत के लेखक और सगीतकारो* ने एक वार यह लिखा कि स्ट्रिग क्वार्टेट, पियानो और क्लेरेनेट (जिसे सगीतकार सरलता से **सेस्टेट** कहा करता था) के लिये **कन्सर्टो** तैयार करते समय मधुर लय इतनी स्वाभाविक प्रतीत होती थी कि कोई काउव्वाय स्वाभाविक रूप से लड़खड़ाता हुआ चल रहा हो। यह ऐसा कन्सर्टो था जो कुछ वर्षो वाद ब्राडकास्ट किया जाने लगा जिसको सुनने के वाद रेडियो अधिकारियो के पास अनेक प्रशसात्मक पत्र पहुँचे। हैरिस ने अपनी सगीत की रुचि को आगे बढाने मे कभी साहस नहीं खोया और कोलम्विया फोनोग्राफ कम्पनी के पास उसकी प्रशसा मे अनेक पत्र आये जिनमे अधिकतर यही लिखा होता था कि उन्होने हैरिस के सवसे अधिक लोक-प्रिय गीत की प्रतिलिपि तैयार कर ली है। उन्हे इस वात को जानकर प्रसन्नता होती थी कि जितने भी रिकर्ड तैयार किये जाते थे वे सभी रिकर्ड तीन महीने मे ही बिक जाया करते थे।

हैरिस प्रथम अमरीकी सगीतकार था जिसे विशेषकर रिकार्डिग के लिये आमन्त्रित किया जाता था। जव आर० सी० ए० विक्टर कम्पनी ने उसे एक आर्डर दिया तो यह शर्त ठहराई कि जब तक उसका रिकर्ड तैयार होकर विकने न लगे तब तक वह उस गीत को किसी अन्य ओरकेस्ट्रा मे नही गा सकता लेकिन उसे यह भी अनुमति दी गई कि वह शर्मर प्रकाशन हाउस को अपनी रचनाएँ वेच सकता था। इस प्रकार उसने **अमेरिकन ओवरचर** की रचना की जिनकी मुख्य टेक यह थी—व्हेन जानी कम्स मार्चिग होम। हैरिस अपने **ओवरचर** को 'माई जानी' कहा करता था। वह यह वताया करता था कि यह ओवरचर एक ऐसी ट्यून है जिसे मेरे पिता बहुत पसन्द करते थे। जब कभी मेरे पिता खेत पर काम करने जाते तो इस ट्यून को सीटी वजाकर निकाला करते थे और शाम को जव थककर घर लौटते तो अपने घोडो को हांकते हुए यही ट्यून सीटी से वजाया करते थे।

*पाल रोजन फील्ड एन ऑवर विद्‌ह अमेरिकन म्युजिक, जे० बी० लिपिनकाट कम्पनी १९२९

सगीतकार पाँच वर्ष तक प्रिसटन के वेस्ट मिन्स्टिर क्वायर स्कूल मे थियोरी और कम्पोजीशन का अध्यापक रहा और उसने क्वायर के लिये **सिम्फनी फार वॉयसेज** लिखी। उसी क्वायर ने **सांग फॉर आक्यूपेशन्स** लिखा जिसे लीग ऑफ कम्पोजर्स ने माग लिया।

हेरिस ने छात्रवृत्तियो, पुरस्कारो और अनुरोधो से उत्साहित होकर बराबर रचनाएँ की और उसकी रचनाएँ बडी-बडी होती थी। कौसेविट्जकी इस बात के इच्छुक थे कि बोस्टन सिम्फनी ओरकेस्ट्रा अपने उद्घाटन मे हेरिस की **थर्ड सिम्फनी** प्रस्तुत करे क्योकि उन्होने कहा, "अमरीका मे सबसे पहले यह एक महान सिम्फोनिक कार्य है।" टोस्केनिनी ने अमरीकी सगीतकारो की बहुत कम रचनाएँ वाद्य-यन्त्रो पर प्रस्तुत की हैं फिर भी उन्होने हेरिस की थर्ड सिम्फोनी को नेशनल ब्राड-कास्टिंग ओरकेस्ट्रा और आर० सी० ए० विक्टर मे रिकार्ड कराया। उस समय सगीत के आलोचको ने कहा कि अग्रणी अमरीका की स्वाभाविकता और शक्ति इस नई सिम्फनी मे आ गई है और उस पर उसी प्रकार योरुप का प्रभाव नही है जैसा कि प्रेरी के घास के मैदानो का अपना ही प्रातःकाल होता है। हेरिस ने डोर्सी के जाज ओरकेस्ट्रा के लिये **फोर्थ सिम्फोनी** लिखी, कोरस और ओरकेस्ट्रा के लिये **एक फेयरवेल टू पायनियर्स** और **एक फोक-सांग सिम्फनी** लिखे और फिल्म के सगीत के अतिरिक्त अन्य रचनाए की।

हेरिस के मन मे दूसरे सेलो के लिये पाचवी सिम्फनी और कसर्टो गूज उठा लेकिन हेरिस का अपना अधिक समय देश मे यात्रा करने और अपने सगीत को सुनने मे लग जाता था। किसी सगीतकार के अपने जीवन मे ही इतनी ख्याति मिले, यह अपना जैसा ही अनुभव है और दो दिन तक केवल उसी का सगीत सुनाया जाय। डेट्राइट नगर मे दो दिन तक हेरिस-फेस्टिवल आयोजित किया गया और ओकलाहोमा मे तीन राज्यो के बैण्ड की प्रतियोगिता की गई जिसमे उसकी सिमेरोन नाम की टोन पोइम बजाई गई।

सगीतकार की पत्नी जोहना हेरिस पियानो बजाना जानती थी। उसने

अपने पियानो पर अपने पति के गीतो के रिकर्ड तैयार किये। दोनो मिलकर अपने कार्यक्रम आयोजित करते थे, हेरिस भाषण देता था उसकी पत्नी उदाहरण देते समय उसके गीतो की ट्यून पियानो पर बजाया करती थी। वे कुछ समय न्यूयार्क के ज्यूलियार्ड स्कूल आफ म्यूजिक की फैकल्टी मे काम करते रहे और १९४९ से नेशविले के अध्यापको को पढाने के लिये जार्ज पी वाडी कालेज मे काम करने लगे। ओकलाहामा के सगीतकार का कद लम्बा, तड़गा और स्वस्थ था तथा बोलने मे ऐसा लगता था जैसे कोई दक्षिण पश्चिम का व्यक्ति हो उसमें मनोविनोद करने की अद्‌भुत क्षमता थी और वह अत्यन्त ध्यान से सुनने का आदी था। उसे टेनिस और शतरज के खेलो मे बहुत रुचि थी।

उसने मध्यकालीन सगीत का विशेष अध्ययन किया था। उसने एक बार कहा था, बीथॉवन के बाद सगीत की अवनति ही होती गई। वैगनर, बेरलिओज, लिज और रिचर्ड स्ट्रास उसे पसन्द नही थे लेकिन उसे भावी सगीत की शास्त्रीयता मे विश्वास था। इन सगीतकार के मतानुसार, "आधुनिक सगीत सिस्टम और यत्रो द्वारा हम एक बार सगीत को अवश्य अच्छी तरह विकसित करेंगे यदि हम अपने स्केल्स और वाद्य-यत्रों मे परिवर्तन भी न करे।

प्रारम्भिक अमरीकी समाज मे चर्च मे गाये जाने वाले हिम ट्यून से विषय-वस्तु को विकसित किया। उसे ऐसा महसूस होता था कि आरम्भ के प्रोटेस्टेन्ट चर्च की सगीत का हमारे बैलेड और नृत्य सगीत पर बडा प्रभाव था।

वह एक पाइनियर का पुत्र था, इसलिये पाइनियर जीवन के सम्बन्ध मे उसने जो लिखा है वह पढना रुचिकर होगा

"जिन दिनो लोग अमेरिका मे आकर बस रहे थे, सीमा प्रदेश के लोगो की सामाजिक अभिरुचियो और क्रियाकलापो का केन्द्र चर्च था। चर्च मे लोग मिलकर गाते-बजाते और प्रार्थना करते थे। उनके गाने और प्रार्थना मे सच्चाई और सादगी थी। ग्रीष्म के निर्मम आकाश के नीचे जब उनकी फसल झुलसने लगती थीं तो वे वर्षा के लिये प्रार्थना करते थे। जाडे की नीरव शान्ति मे भोजन और आवास के लिये भी वे धन्यवाद देते थे। वे बर्फ की

गाडी मे या घोडो पर सवार होकर दूर-दूर से आते थे और एक स्थान पर एकत्रित होते थे। लम्बे एकान्तवास के कारण वे अजीब सा सकोच महसूस करते थे और गानो मे उनके हृदय की दबी हुई भावनाएँ मुखरित हो उठती थी। जब कठोर भूमि पर वे काम करते थे तो साथ गाते हुए हिम की याद मन मे ताजा हो उठती थी। **ओल्ड ब्लैक जो, स्वानी रिवर, आई हैव बीन वर्किंग आन दी रेले रोड, देयर इज ए लॉंग लॉंग ट्रेन** माने हुए प्रसिद्ध गीत है। इससे यह लगता है कि अमरीकियो के हृदय मे अमरीकी हिम की भावना जैसे बस गई हो। और आज भी उत्सवो के अन्त मे इन गीतो को सामूहिक रूप से गाने मे भी यही भावना परिलक्षित होती है। एरन कोपलैंड का कथन है कि हेरिस का प्रादुर्भाव अपने निज की शैली के साथ हुआ था। जब हम हेरिस और कोपर्लंड की सगीत रचना की ओर देखते है तो हमे यह ज्ञात होता है कि अमरीकी सगीत मे वे गुण प्रकट होने लगे हैं जिनका मैक्डोवेल ने अनुमान किया था।

नैशविले के सगीत क्षेत्र मे मि० हेरिस बड़ा क्रियाशील रहा है। वह केवल सगीत-सिखाने मे ही नही रहा। रेडियो मे काम करने, अखबारो मे सगीत पर लेखादि लिखने, और लोगो को यह समझाने मे कि उसका सगीत वे कैसे सुने इनमे भी वह लगा रहा। उसकी छटी सिम्फनी पहले-पहल सन् १९४४ मे प्रस्तुत की गई। यह कहा गया है कि उसका सगीत किसी-न-किसी भावना को सदा व्यक्त करता है, उदाहरणार्थ उनकी टोन को व्यक्त करने वाली मायक्लिन, लोगो के विकास को, उसका सगीत ऐसा चक्षु सगीत है कि वह मात्र सौंदर्य की अनुभूति के लिए नहीं वरन्, चतुरतापूर्वक गुत्थियो से ऐसा रचा होता है कि उसके स्कोर का अत्यधिक प्रशिक्षित सगीतज्ञ ही मनन के उपरान्त सह सकते हैं। अस्तु जनसाधारण के लिए उसका सुनना और समझना भी मुश्किल है। हो सकता है, बिना 'की बोर्ड' की सहायता से रचने का यह स्वाभाविक प्रतिफल हो, यद्यपि एक 'बीथोवन' भी बज्र बहरा होने के बाद सुन्दरतम सगीत का सृजन कर सका।

[राय हेरिस ओकलाहामा के लिंकन काउन्टी मे १२ फरवरी १८९८ को पैदा हुआ।]

एरन कोपलैंड

"ध्यानपूर्वक, मन लगाकर अच्छी तरह समझते हुए सुनना उस कला को विकसित करने के लिए कम से कम योगदान है जो मानव जाति के गौरवों मे से एक है।

—एरन कोपलैंड **व्हाट टु लिसेन फॉर इन म्युजिक**

रूसी वर्णमाला अग्रेजी वर्णमाला से भिन्न होती है। कभी-कभी उन वर्णो की ध्वनियो को अग्रेजी अक्षरो मे बिल्कुल सही-सही व्यक्त करने मे कठिनाई होती है। एक बार एक रूसी यहूदी इग्लैण्ड आया। उसने आवास अधिकारी को अपना नाम बताया। उन्होने उसका कोपलैंड हिज्जे किया यद्यपि वह उस रूसी नाम की तरह था जिसे प्राय हम अग्रेजी मे 'केपलेन' लिखते हैं। जब १९ वी शताब्दी शुरू हो रही थी, वह आदमी न्यूयार्क के ब्रुकलियन मे सपत्नीक रह रहा था। वही उसके बालक एरन का जन्म हुआ जो आगे चलकर सगीतकार हुआ।

जब एरन कोपलैंड का जन्म हुआ, उस समय जार्ज जर्शविन और रॉय हेरिस दो साल के थे। इरविंग बर्लिन बारह वर्ष का था और स्कूल की साधारण पढाई-लिखाई के साथ अखबार बेचता था और चिट्ठियाँ लगाता था। जेरोम कर्न और डीम्स टेलर पन्द्रह वर्ष के थे और उन्हे यह पता नही था कि वे सगीतकार होगे।

एरन पब्लिक स्कूल मे अध्ययन के लिए गया। जब वह तेरह वर्ष का हो गया तो उसने पियानो सीखना शुरू किया। लेकिन जल्दी ही उसकी यह जानने की इच्छा होने लगी कि सगीत कैसे रचा जाता है। ब्वायज हाई स्कूल से पास होकर निकलने के एक वर्ष बाद उसने हारमोनी और काउन्टर-पाइन्ट का अध्ययन करना शुरू कर दिया था। उसने रियुबिन गोल्डमार्क से

शिक्षा पाई जिसके पास हारमोनी और ओरकेस्ट्रेशन सीखने के लिए जर्गविन कई साल वाद पहुँचा था। जिस वर्ष 'जाज' का फैशन' शुरु हुआ था उसी वर्ष एरन कोपलैंड ने हारमोनी सीखना आरम्भ किया।

चार वर्ष वाद, अमरीकी संगीत के विद्यार्थियो का दल फ्रास फाउटिनेब्लो मे अमरीकी कन्जरवेटरी मे भाग लेने के लिये गया उनमे एरन भी था। उनके वाद उसने नाडिया बौउ लगर के साथ अध्ययन किया। उनके थोडे ही वर्षो वाद रॉय हेरिस भी उसके पास अध्ययन के लिये गया था।

जव मिस्टर कोपलैण्ड ने अपनी पढाई फ्रास मे आरम्भ की उस समय तक वह पियानो के लिये **शेरजो ह्यूमरिस्टिक** की रचना कर चुका था जिसका नाम **दी कैट एण्ड द माउस था**। यह गीत फ्रास मे प्रकाशित हुआ था और फाउटेने ब्लो मे वजाया गया था।

यह युवक संगीतज्ञ तीन साल तक फ्रास मे रहा और वास्तव मे वडी प्रगति की। क्योकि अध्ययन समाप्त करने तक वह एक विशद योजना के वारे मे सोचने लगा था। उसके दिमाग मे **सिम्फनी फॉर आरगन एण्ड ओरकेस्ट्रा** से कम की चीज नहीं थी। जून के महीने मे जव वह चौवीस साल का था,

था जिनके पीछे ओरगेन बजाने वालो की एक लाइन दिखाई पडती थी। कोसे विट्जकी उसका सचालन कर रहा था। मेडम बोलगर ओरगेन वाद्य-यंत्र का नियत्रण कर रही थी। दर्शको ने कार्यक्रम मे यह पढकर कि एक अमरीकी युवक सगीतज्ञ भी इसमे है, सादर ध्यानपूर्वक नवीन सगीत को सुनने को उत्सुक थे। यकायक एक अविस्मरणीय घटना घटित हुई। ओरगन का टोन धीमा होने को ही नही आता था। जब अन्य सगीत हार्मोनी के साथ हो रहा था तो वह धीरे-धीरे अधिक तीव्र होता जाता था और तमाम हाल में गूज रहा था। इसके बाद सब यकायक रुक गया और उस टोन या ध्वनि के अलावा कोई भी बाजा नही बज रहा था। मेडम बोलगर ने कोसे विट्जगी को इशारा किया। क्या किया जाय ? कुछ-न-कुछ अवश्य और शीघ्र करना है। इस ध्वनि का धीरे-धीरे असर हो रहा था, स्पष्ट रूप से या प्रकट रूप से उस पाइप के यत्र मे कोई-न-कोई गडबडी हो गई थी। कोसे विट्जगी शान से मच पर खडे रहे। मेडम बोलगर बेंच से उठकर मच से धीरे से खिसक गई और कुछ क्षण उपरान्त वह टोन या ध्वनि बन्द हो गई तथा उस ध्वनि की तीव्रता के समान यकायक चारो ओर अधिक शान्ति छा गई। मेडम बोलगर मच पर लौटी और ओरगन वाद्य-यत्र को बजाने लगी। यह तुमुलवाद का अवसर था। सिम्फनी फिर शुरू हुई। कोई नही जानता कि उस क्षण सगीतकार के हृदय मे कैसी उथल-पुथल हो रही थी। लेकिन जब सिम्फनी समाप्त हुई तो उसे बडा यश मिला।

अधिक समय नही बीता जब उसे और अधिक ख्याति प्राप्त हुई। वह पहिला सगीतकार था जिसे दो साल के लिये गोगेनहेम फेलोशिप प्रदान की गई थी, उसके बाद गीत-रचना के अनेक कार्य उसे मिले और वह एक के बाद एक उन्हे रचता गया।

उसके सगीत पर जाज का प्रभाव दिखाई पडने लगा था। वीमेन्स युनिवर्सिटी ग्ली क्लब से एक कमीशन ने दो कोरल रचनाओ को प्रस्तुत किया जिनमे से एक कोपलैंड के प्रथम ख्याति-जाज की रचना थी। उसी वर्ष ग्रीष्म ऋतु मे वह योरुप से लौटा था और उस समय वह न्यु हेमरशायर के पीटर

बोठो नगर मे मेकडोवेल कालोनी मे रहने लगा। वहाँ उसने **म्युजिक फॉर द थियेटर** नाम से छोटे-छोटे आर्केस्ट्रा के लिए रचनाएँ की। यह काम उसे लीग ऑफ कम्पोजर से मिला था। इसके कुछ समय वाद उसने पियानो के लिये **जाज कन्सर्टो** की रचनाएँ की जिन्हें वोस्टन सिम्फनी आर्केस्ट्रा ने प्रस्तुत किया और इन रचनाओं के साथ सगीतकार ने स्वय पियानो वजाया।

इन रचनाओ से कोपलैंड की ख्याति चारो ओर फैल गई। संगीत के क्रिया-कलापो के सम्वन्ध मे लिखने वाले उत्साही लोगो ने यह कहा कि कोपलैंड ही सच्चा अमरीकी है। एक आलोचक ने तो यहाँ तक महसूस किया कि कोपलैंड का अमरीका मे वही स्थान है जैसा कि रूस मे स्ट्राविन्सकी ने नौसेज लोक-गीतो की रचना करके अपना स्थान वनाया था, मजरुका के साथ चॉपिन प्रसिद्ध हो गया और गेवोटीज के लिए वैश की ख्याति हो गई और कोपलैंड का नाम भी ऐसे फैल गया जैसे कि उन दिनो मे मिनुएट की चारो ओर चर्चा होती थी। उसने जाज सगीत को उच्च स्तर पर ला दिया।

आर० सी० ए० विक्टर कम्पनी ने उसकी सिम्फनी रचनाओ के लिये २५००० डालर का पुरस्कार घोषित किया जिससे अनेको अमरीकी सगीतकारो को अनवरत परिश्रम करने की प्रेरणा मिली। आरो कोपलैंड ने अपनी **सिम्फानिक ओड** की रचना मे यह महसूस किया कि वह अपनी रचना को ऐसे नहीं सेट कर पाता कि प्रतियोगिता की अवधि मे वे रचनाएँ समाप्त हो जायें। इसके अलावा भी उसकी कुछ रचनाएँ ऐसी थी जिन्हें उसने वाहर रहकर तैयार किया था और इन रचनाओ को इस प्रकार व्यवस्थित किया था कि वह उन्हे **डान्स सिम्फनी** करने लगा। इसके लिये उसे पुरस्कार का पाँचवाँ भाग मिला जबकि अन्य चार पुरस्कार अर्नेस्ट ब्लाव, लुई ग्रुन वर्ग, रसल वेनेट को मिले जिनमे से अन्तिम दो सगीतकारो को पुरस्कार का $\frac{१}{५}$ भाग मिला। लेकिन वह **सिम्फोनिक ओड** की रचना वहुत वाद मे पूरी की गई और उसे सबसे पहले वोस्टन सिम्फनी आर्केस्ट्रा ने प्रस्तुत किया था। सगीतकार को इस रचना को पूरा करने मे दो वर्ष लग गये। उसने इस रचना का कार्य वर्लिन, स्यु मेक्सिको, फ्रान्स, मेकडोवेल कॉलोनी और न्यूयार्क शहर मे रहकर पूरा

किया था। उसने बताया कि पियानो और वायलिन के लिये **नोक्टन ही श्रोड** के सगीत का कारण है।

मेक्सिको की यात्रा से **एल सेलों मेक्सिको** के लिखने की प्रेरणा मिली। लोकप्रिय खेल-कूद मे नर्तको को देखकर और गायको को सुनकर यात्रियो को जैसा मेक्सिको लगता है, उसकी छाप उसके सगीत मे अभिव्यक्त हुई। उसने अपनी स्केचबुक मे कोई विषय वस्तु को दर्ज नही किया क्योकि उसने बतलाया "जो संगीत उसने सुना था, उससे वह आकर्षित नही हुआ था बल्कि उसकी आत्मा ने उसे प्रभावित किया था।"

यह सोचकर कि यदि कोई सगीतकार युवकों को अच्छे लगने वाले गीत लिखे तो उसका भविष्य सुरक्षित है। एस० कोपलेण्ड ने **दी सेकेण्ड हरीकेन** नामक ओपेरेटा के सगीत की रचना बच्चो के लिये की। यह विशेष रूप से स्कूल मे गाने वाले आठ से उन्नीस वर्ष के बच्चों द्वारा खेले जाने के लिये थी और पहिले पहल न्यूयार्क मे सफलतापूर्वक प्रदर्शित की गई।

एरन कोपलेण्ड उन सगीतकारो मे से था जिन्होने अधिक शक्ति और समय अपने साथी सगीतकारो के सगीत खेले जाने मे उनके उत्साह को बढाने के लिये लगाया। एक सगीतकार अत्यन्त सुन्दर सगीत की रचना उस समय तक कर सकता है, जब तक उस पर मौत की काली घटाएँ नही छाती। लेकिन इसका उसके लिये क्या लाभ यदि वे कभी नही खेली गई और किसी कान मे उनकी ध्वनि नहीं पडी। एक दूसरे सगीतकार रोजर सेशन्स के साथ मिस्टर कोपलैण्ड ने कसर्ट प्रस्तुत करने का नया कार्यक्रम बनाया जिससे लोग उन सगीतकारों को सुन सकें जो गभीर सगीत की रचना कर रहे हैं।

आजकल सबसे अधिक सुनने वाले रेडियो और म्वी के दर्शक है। मिस्टर कोपलैण्ड की **एल सेलों मेक्सिको** पहिले-पहल एन० बी० सी० ओरकेस्ट्रा के साथ रेडियो पर सुनी गई। यह वही ओरकेस्ट्रा था जिसने सगीतकार के पहिले बेलेट सगीत **बिली, दी किड** के कसर्ट को रेडियो से ब्राडकास्ट किया था। उसने **द सिटी, अवर टाउन** और **ऑफ माइस एण्ड मैन** फिलमो की सगीत रचना की थी।

ऐसा लगता है कि रेडियो और फिल्म व्यावसाय हमारे देश के सगीतज्ञो को वह सरक्षण दे रहे हैं जिमकी कमी विक्टर हर्बर्ट (जैसा कि सगीत ऐतिहासकारो) ने अनुभव किया था जो उनके विचार से सगीत के विकास की शिथिलता का कारण था।

कोसे विट्जकी ने १९४६ मे जव एरन कोपलैण्ड की **थर्ड सिम्फनी** का प्रथम संचालन किया तो उसने कहा, "इसमे कोई सदेह नही है कि यह अमरीका की सवसे अच्छी सिम्फनी है।" एक अन्य अमरीकी सगीतकार वॉजिल टॉमसन ने इसको महान सगीत बताया। लेकिन यह बात सत्य सिद्ध न हुई। कोसे विट्जकी ने पहली वार कोपलैण्ड के **जाज कंसर्टो** का सचालन किया। उस समय बहुत से लोगो ने सीटी बजाई। कुछ लोगो ने सचालक का यह कहकर अपमान किया कि उन्हे व्यर्थ ही ऐसे स्वर सुनाने के लिये बुलाया गया। कोपलैण्ड ने स्वयं यह महसूस किया कि नई हार्मोनी या सभवत डिसोनेन्सेज श्रोताओ को विचित्र ही लगे है। उनके लिये यह स्वाभाविक हो लेकिन समय के बीतने के साथ ऐसे स्वर भी अच्छे लगने लगते हैं। मोजर्ट पर इन स्वरो का गहरा प्रभाव हुआ। इन नवीन और डिस्कोर्डेण्ट स्वरो ने हमारे लोकप्रिय सगीत को अधिक लोकप्रिय और गभीर बना दिया।

मिस्टर कोपलैण्ड को अपने वैलेट सगीत **एपेलेशियन स्प्रिग** के लिये पुलिट्जर पुरस्कार प्राप्त हुआ। उसका वच्चो का गीत **द रेड पोनी**—हॉलीवुड मे एक फिल्म की प्रेरणा वन गया।

जब वह छोटा था और उसे शिक्षा दी जानी थी, उसकी माँ इसके लिये धन व्यय करना नही चाहती थी क्योकि उससे वडे चार वच्चो ने सगीत क्षेत्र मे कुछ भी नही किया था। यही कारण था कि एरन तेरह वर्ष की आयु से पहिले सगीत न सीख सका और वाद मे वह सगीत का अध्ययन कर सका। परन्तु कई वर्ष वाद उसकी माँ ने यह देखा कि उसने अपने सवसे छोटे वच्चे के लिये सगीत-शिक्षा पर जो धन व्यय किया है, वह व्यर्थ नही गया है।

[एरन कोपलैण्ड १४ नवम्वर १९०० मे व्रुकलिन, न्यूयार्क मे पैदा हुआ।]

अन्य संगीतकार

जॉन एल्डन कारपेण्टर

जॉन एल्डन कारपेन्टर का जन्म सन् १८७६ मे इलीन्योस के पार्क रिज मे हुआ था। वह एक व्यापारी था। इस शताब्दी के आरम्भ के तीस वर्ष मे जब उसकी रचनाये प्रस्तुत की जा रही थी उस समय उसको अमेरिका का अग्रणी सगीतज्ञ कहा जाता था। प्रथम जान एल्डन नवम्बर सन् १६२० मे किसी दिन प्लीमथ पहुँचे थे। यह उनका उत्तराधिकारी था। इसने सगीत का प्रेम अपनी माँ से पाया। उसी ने इसको सगीत की प्रारम्भिक शिक्षा दी। सगीत रचना का अध्ययन आरम्भ करने के पूर्व वह बडे प्रयास के बाद मुश्किल से किसी प्रकार सगीत रच पाता था।

जब उसकी अवस्था बढ रही थी और वह स्कूल जाने लगा तो उसे सगीत के कुशल अध्यापक मिले और उसने १७ वर्ष की आयु मे हार्वर्ड कालेज का सारा पाठ्यक्रम सीखना शुरू कर दिया। वहाँ पर उसने जान नोल्स पेन अध्यापक सगीतकार से सगीत रचना सीखी फिर सगीत मे सर्वोच्च आनर्स के साथ सगीत की डिग्री प्राप्त की और घर लौट आया। वह घर पर आकर अपने पिता के साथ व्यापार मे लग गया। जार्ज बी० कारपेण्टर कम्पनी एक ऐसी फर्म थी जो मिल, रेलवे और जहाजो की सप्लाई का काम करती थी।

यद्यपि कारपेण्टर अपने व्यापार मे सफलतापूर्वक काम कर रहा था लेकिन वह सदा सगीत का अध्ययन और सगीत रचना भी साथ-साथ करता रहा। उसको दोनो ही कार्यो के लिये समय मिल जाता था। एक बार जब वह रोम गया, वहाँ उसे अग्रेजी सगीतकार सर एडवर्ड एलगर मिले। वे भी वही थे। उनसे मिलकर कारपेण्टर को बडी खुशी हुई। वह सदा एलगर के सगीत का बडा प्रशसक रहा। उसने एलगर को इस बात के लिये राजी कर लिया कि

वह उसे शिक्षा दे और सुझाव दे यद्यपि सर एडवर्ड यह खुद नही सोचते थे कि वे एक अध्यापक है। जब कारपेटर ३२ वर्ष का हुआ, उसकी भेट बर्नहार्ड जीन से हुई। जोन एक अध्यापक और हारमोनी तथा सगीतशास्त्र के लेखक थे। उसने अब तक जिन-जिन लोगो से जो कुछ सीखा था, उससे कही अधिक जीन महोदय से सीखा और उनसे प्रेरणा प्राप्त की।

कारपेटर को पहिली सफलता उस समय मिली जब उसकी शुरू की रचनाओ की ओर जी० शिरमर के सगीत प्रकाशन-गृह का ध्यान कर्ट शिडलर वायलिन वादक और सगीत सम्पादक द्वारा आकर्षित किया गया। उस समय उसके छ सगीत जो भारत के कवि रवीन्द्र टैगोर की **गीतांजलि** की कविताओ पर बनाये गये थे, प्रकाशित हुये और लोगो ने उन्हें बहुत पसन्द किया। दूसरे वर्ष उसका पहला और सबसे अच्छा ओरकेस्ट्रा सगीत प्रस्तुत हुआ। **एडवेन्चर्स इन पेरम्बुलेटर** के हास्य से हर एक आल्हादित हुआ। यह सगीत का ऐसा कार्यक्रम था जिसमे एक ऐसे बेबी की ध्वनियो और सवेगो को दिखाया गया था जो अपनी नर्स द्वारा शहर के पार्क मे चारो ओर गाडी पर बैठकर घुमाई जा रही थी। इसके बाद उसने बडी-बडी रचनाएँ की और अनेक गीत लिखे।

टिन पैन ऐली से जाज सगीत प्रारभ हो चुका था, यद्यपि कारपेण्टर रैगटाइम का लिखने वाला नही था लेकिन इस शक्तिशाली और सही माने मे अमरीकी सगीत ने उस पर भी अपनी छाप लगा दी थी जैसा कि वास्तव मे अन्य सगीतकार भी इस सगीत से प्रभावित हुये थे।

ल्यूपोल्ड स्टोकोविस्की, सचालक ने कारपेण्टर को **मेफ्लोर** जहाज की तीसरी शती मनाने के उपलक्ष मे एक गीत रचने के लिये आमन्त्रित किया और १९२० मे फिलेडलफिया सिम्फनी ओरकेस्ट्रा ने **ए पिलग्रिम विजन** प्रस्तुत किया।

बेलेट सगीत के रचने मे अभिरुचि हो जाने पर कारपेटर ने हास्य-अखबारो को दूसरे बैलेट की विषय-वस्तु ढूंढने के लिये पढा। फलस्वरूप **क्रेजी केट** की रचना की गई जो अत्यन्त सफल हुई। यह बैलेट उस समय प्रस्तुत किया

गर्यैग्रर्व कई रूसी नर्तक और कलाकार उस देश मे १९१७ के वोलशिविस्ट क्रान्ति के कारण भाग कर आये थे। सुन्दर वैलटो के रूसी निर्माता डायागिलेफ 'क्रेजी' के नृत्य से जिसे एडोल्प वाम ने किया था, अत्यन्त प्रभावित हुए। इसके वाद उन्होंने सगीतकार से अपने लिये एक वैलेट लिखने को कहा जिसमे वह अमरीकी जीवन के 'शोरगुल और हलचल' को फैशनेवल लोकप्रिय सगीत के रूप मे दिखला सके। 'शोरगुल और हलचल' जो उसके दिमाग मे था, वह न्यूयार्क के वारे मे था, न कि अमरीका के, और दो साल वाद कारपेटर ने जव उस वैलेट **स्काई स्क्रेपर्स** को समाप्त किया तो वह योरुप और अमरीका दोनो स्थानो मे वडी सफलता के साथ प्रदर्शित किया गया।

कारपेटर के सगीत मे "अमरीकियो की असीम शक्ति" परिलक्षित होती थी जो एडवर्ड मेक्डोवेल के अनुमान से अमरीकी सगीत का गुण था। कारपेण्टर का कथन था, "मुझे यह पूर्ण विश्वास हे कि हमारा समकालीन सगीत (कृपया ध्यान दे, उसने इसे 'जाज' नही कहा) अत्यन्त सहज, निजी, विशेप प्रकार का है। इन्ही गुणो के कारण अमरीका मे सगीत ने यह अत्यन्त महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति प्राप्त की।

मिस्टर कारपेन्टर पच्चहत्तर वर्ष की आयु पर १९५१ मे मर गये। उनका सगीत अव अक्सर नही प्रस्तुत किया जाता है लेकिन उनके समय मे वह सगीत बहुत महत्वपूर्ण था। तमाम सगीत के इतिहास मे सक्रान्ति कारा दिखलाई पडते हैं जव अमर शैलियाँ एक से दूसरे मे परिवर्तित होती रही। यदि इस काल के सगीत की रचनाओ को अन्तिम रूप मे लाइब्रेरी मे ही सजाना है तो भी इसका यह अर्थ नही कि उनका कोई मूल्य ही नही या उन्होने अपने समय के सगीत मे अपना कोई योगदान नही दिया।

कारपेन्टर ने अपने मरने के कुछ वर्ष पूर्व यह कहा था, "अमरीकी सगीत अव अपने पैरो पर खडा हो रहा है और अव ऐसे कोई चिन्ह नही दिखाई पडते कि वह विदेशी या शरणार्थियो द्वारा प्रभावित होगा।"

डीम्स टेलर

मिस्टर टेलर एक ऐसा सगीतकार है जिसने सगीत-रचना के साथ अन्य कार्यों को सम्मिलित किया है। वह न्यूयार्क मे पैदा हुआ और वही बडा हुआ। उसने अपने कालेज जीवन मे ही चार कोमिक ओपरा के लिये सगीत रचना की थी जबकि उसने हारमोनी और सगीत रचना का अध्ययन भी नही किया था। उस समय तक उसने केवल थोडा पियानो बजाना सीखा था। वह एक पत्रकार हो गया और ओरकेस्ट्रेशन तथा सगीत रचना का स्वय अध्ययन करने लगा। उसकी सगीत शिक्षा कुल दस महीने की थी जिसमे उसने हारमोनी और काउटर प्वाइट सीखा। दो साल बाद वह कालेज से बाहर निकल आया। चार वर्ष बाद एक सिम्फोनिक कविता **द साइरिन सांग** ने उन्हे जनता मे ख्याति दिला दी।

जिस समय देशी सगीतज्ञ यह अनुभव कर रहे थे कि उनके सगीत को सुने जाने का अवसर नही मिल पाता क्योकि ओरकेस्ट्रा के सचालक विदेशी सगीत को देना अधिक पसन्द करते थे और नये अमरीकी सगीत को प्रस्तुत करने का जोखिम उठाने को तैयार नही थे। टेलर अपने नये सगीत को सफलता पूर्वक प्रस्तुत करने मे सफल हो सका। ओरकेस्ट्रा के सचालक ही इसमे पूर्ण-रूपेण दोषी नही थे क्योकि अमरीकी दर्शक भी विदेशी सगीत पसन्द करते थे। इसका अशत कारण यह था कि हमारा सगीत थोरोवियन सगीत से आया था और हमे अपने कलात्मक काम के ऊपर विश्वास भी कम था। प्रथम दो शताब्दी तक अमरीकी लोग प्रमुख रूप से एक ऐसे बडे देश को ऊँचे पैमाने पर बनाने मे सलग्न थे जिसकी तुलना दुनिया मे न हो सकी। यह स्वाभाविक था कि वहाँ के लोगो ने शुरू-शुरू मे कला ऐसे सास्कृतिक कार्यक्रम मे अपनी अभिरुचि पर पूरा विश्वास नही किया। विशेषरूप से इसलिये कि हमे सदैव इस बात का ध्यान रहता था कि अभी हमारा बहुत कम समय

का इतिहास है। लेकिन बीसवीं शती मे एक नया जागरण हुआ। अमरीकियो को यह ज्ञात हुआ कि उनके सगीतज्ञ, कलाकार और लेखक भी बहुत कुछ दे सकने मे समर्थ हे। उन्नीसवी शताब्दी मे बहुत से अमरीकी लेखको ने ख्याति प्राप्त की और फिर इस शताब्दी मे बराबर प्रगति होती गई और अमरीकी सगीत कलाकारो का महत्व बढता गया।

टेलर ने **थ्रू दि लुकिंग ग्लास** आरकेस्ट्रल सूट तैयार किया। यह सूट सिम्फनी आर्केस्ट्रा के लिये उपयुक्त रहा और लदन तथा पेरिस मे प्रस्तुत किया गया। उसने थियेटर, फिल्म और बडे-बडे ओपेरा के लिये सगीत तैयार किया। १९२७ मे न्यूयार्क मे मैट्रोपोलिटन ओपेरा हाउस मे '**दि किंग्स हेंचमैन** प्रस्तुत किया गया। यह वर्ष का सबसे अच्छा कार्यक्रम था। टेलर ने इस ओपेरा को उस समय लिखा जब अमरीकी अपने सगीत के बारे मे सजग हो रहे थे और जनता अमरीकी ओपेरा की माँग कर रही थी। मेट्रोपोलिटन बोर्ड के डाइरेक्टरो ने ट्रेलर को ओपरा तैयार करने के लिये चुना। सगीतकार ने हमारी गीतकार स्वर्गीय ऐडना सेन्ट विन्सेन्ट से भेंट की और उनसे विचार विमर्श किया। उन्होंने 'लिब्रेटो' दिया जो मध्यकाल की एक कथा पर आधारित था।

मिस्टर टेलर पत्रिकाओ के सम्पादक थे। अखबारो मे सगीत आलोचक थे। रेडियो कमन्टेटर थे। वह गद्य और पद्य के अनुवादक थ और साथ ही-साथ संगीतकार थे। "मैं समझता हूँ कि यह देश कुछ घटिया सगीतकार बनायेगा लेकिन कुछ सगीतकार बहुत ही महान होगे। घटिया सगीतकारो का होना इसलिये है कि यहाँ संगीतकार आसानी से लोकप्रिय हो जाता है। आप एक स्तर प्राप्त करके कई लोगो को प्रसन्न कर सकते हैं और यह स्तर कुछ ही बातो से मिल जाया करता है।

अमरीकी संगीत-कला और साहित्यिक कार्यो की रुचि मे अभी बहुत सुधार होना है।

वाल्टर पिस्टन

वाल्टर १८९४ मे मेन के राकलैण्ड मे पैदा हुआ और जब वह ११ वर्ष का हुआ तो उसे बोस्टन ले गये। वहाँ वह स्कूल गया और उसने मैकेनिकल विषयों का अध्ययन किया। हाई स्कूल के बाद उसकी कला की ओर जितनी अधिक रुचि थी संगीत की ओर उतनी नहीं थी। उसने १९१६ मे मेसाच्यु-सेट्स नार्मल आर्ट स्कूल मे ड्राइंग और चित्रकला मे ग्रेजुएट की उपाधि ली। उसने अपने बचपन मे संगीत के अध्ययन की शिक्षा नहीं ली थी। लेकिन उसे पियानो और वायलिन इतना अच्छा बजाना आता था कि वह रेस्ट्रां और नृत्य-भवनो मे इन वाद्य-यन्त्रो को बजाकर अपनी आजीविका कमा सकता है। इसके बाद उसने इन दोनो वाद्य-यन्त्रो का सीखना शुरू किया। प्रथम महायुद्ध मे उसने नौ सेना मे काम किया और बैंड के साथ सेक्साफोन बजाया। युद्ध के बाद उसने यह चाहा कि वह संगीत मे पारंगत हो जाय। वह हारवर्ड गया और उसने १९२४ मे संगीत के सुम्मा कम लौड के साथ ग्रेजुएशन किया।

वस्तु नही है क्योकि उन गीतो की विषय वस्तु योरोपीय स्रोतो से ग्रहण की गई है लेकिन उसकी कृतियाँ सगीत के ज्ञान से भरपूर है और यह ज्ञान शुद्ध अमरीकी वातावरण पर आधारित है तथा जाज से प्रभावित है।

रिचर्ड रोजर्स

रिचर्ड रोजर्स का जन्म न्यूयार्क मे सन् १९०२ मे हुआ था। उसके पिता एक डाक्टर थे और माता पियानोवादिका। जब वह चार वर्ष का शिशु था, उसी समय मे उसके सगीत-प्रेम और प्रतिभा का आभास मिलने लगा था। सगीत के प्रति प्रेम और प्रतिभा उसने अपनी माता से प्राप्त की थी। उस छोटी सी आयु मे ही वह सुनकर ही गीत गा सकता था। जब वह ठीक से बातचीत भी नही कर सकता था, उस समय उसने छोटी-छोटी नई धुने बनाई जो बहुधा सगीतात्मक होती थी। उसकी माता ने उसको पियानो सिखाना शुरू किया जिसे उसने रुचि लेकर सीखा। चौदह वर्ष की आयु मे उसने अपना पहला गीत लिखा।

यह युवक गीतकार दो वर्षो के लिए कोलम्बिया यूनिवर्सिटी गया। वहाँ कोलम्बिया यूनिवर्सिटी मे होने वाले एक शो के लिए उस ने और उसके मित्र लोरेज हार्ट ने गीत और सगीत रचे। होटल एस्टर के ग्रैंडबाल मे यह खेल बडी सफलता के साथ दिखाया गया। जीवन पूरा करने के बाद रिचर्ड ने कुछ गीत लिखे और उन्हे टिन पैन एली मे बेचना चाहा पर उसे वहाँ निराशा ही मिली।

सगीत कला के सस्थान मे दाखिल होकर उसने फ्रैंक डेमरोश, एच० ई० क्रेहबियल और जार्ज वेज से शिक्षा पाई। ये लोग उन दिनो न्यूयार्क के सगीत जगत के जाने-माने सगीतज्ञ थे। उसने टेक्नीक और हारमोनी को सीखा और साथ-ही-साथ आत्म विश्वास को भी समझा। सस्थान के वार्षिक प्रदर्शन के लिये सगीत लिखने के लिये उससे कहा गया क्योकि वह प्रतिभाशाली विद्यार्थी था। उसने एक एकाकी ओपेरा, बैलेट स्कोर और सिम्फोनिक टोन कविता भी लिखी। वह अपने हृदय मे समझता था कि उसका सगीत कसर्ट हाल के

उपयुक्त नही है वल्कि ब्रोडवे के थियेटरो के लिये है। तीन वर्ष बाद उसने लोकप्रिय गीत लिखना फिर शुरू कर दिया और हार्ट के साथ एमेच्युर (शॉकीनी) खेलो को प्रस्तुत किया। वह उनके गीत लिखा करता था।

न्यू गिल्ड थियेटर के लिये धन एकत्र करना था अत. उससे यह आग्रह किया गया कि वह एक छोटा रेव्यू प्रस्तुत कर दे। निदान उसने और हार्ट ने सिर्फ रविवार की रात को प्रदर्शित करने के लिये **गेरिक गेटीज** की रचना की। उन्हे इस कार्य के लिये कोई पारिश्रमिक नही मिला। उन्होने केवल लोगो का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिये यह खेल लिखा था। और इसमे उन्हे सफलता मिली। लोगो ने इसे इतना पसन्द किया कि यह अगले रविवार को फिर प्रस्तुत करना पडा और उसके बाद भी रविवार को इसे प्रस्तुत करना पडा। स्पेशल मैटिनी शो आयोजित किये गये जिनमे समालोचको को भी वुलाया गया। समालोचको ने जब इसकी मुक्तकठ से प्रशसा की तो **गैरिक गेटीस** देखने के लिये हडवडी मच गई। यह खेल डेढ वर्ष तक वरावर चलता रहा। यह उनका भाग्योदय था।

उनके पास जल्दी-जल्दी काफी काम आने लगा। सन् १९२६ मे एक ही समय मे राजर्स और हार्ट के तीन खेल शहर की प्रमुख नाट्य-शालाओ मे खेले गये। अगले साल लदन मे भी कई खेल दिखाये गये। राजर्स और हार्ट का खेल हमेशा निश्चित रूप से लोकप्रिय होता रहा है। १९३० ई० मे राजर्स ने हालीवुड के लिये सगीत रचना शुरू कर दी। सन् १९४३ मे गीतकार ने ऑस्कर हैमरस्टीन द्वितीय के लिखे **ओकला होमा** के गीतो के लिये सगीत रचा क्योकि हार्ट का उस समय तक निधन हो चुका था। इन मनोहर सगीत-खेल के कारण इसके रचियता को विशेष पुलिटज़र पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह खेल अन्य खेलो की अपेक्षा अधिक दिन तक चलता रहा। हर्ष की वात है कि ब्राडवे मे कोई-न-कोई खेल ऐसा चलता रहता है जिसका सगीत रिचर्ड रोजर्स का रचा होता है और जो विल्कुल अमरीकी होता है।

सेम्युल बारबर

सेम्युल वारबर के पिता डॉक्टर और माता पियानो-वादिका थी। वह सगीत-कार वन गया। लेकिन उसने एक अलग प्रकार के सगीत की रचना की। पिनसिलवेनिया के पश्चिमी चेस्टर मे सेम्युल वारबर का जन्म सन १९१० मे हुआ। उसकी चाची लुइस होमर अपने समय की एक अच्छी गायिका थी जो मेट्रोपोलिटन ओपेरा हाउस मे केरुसो, सेम्ब्रिक, स्कोटी आदि जगत प्रसिद्ध गायको के साथ गाती थी। ६ वर्ष की आयु मे ही सेम्युल पियानो सीखने लगा और उसने ७ वर्ष की अवस्था से ही सगीत रचना प्रारभ कर दी। बारह वर्ष की आयु मे ही सेम्युल चर्च मे ओरगेनिस्ट हो गया। वह तेरह वर्ष की अवस्था मे वर्टिस इन्स्टीट्यूट मे दाखिल हुआ और वह वहाँ पियानो और स्वर-ताल का अधिक अध्ययन करने लगा तथा इसके साथ ही उसने वहा सगीत-रचना और अन्य उन सभी चीजो को सीखना शुरू कर दिया जो एक सगीतज्ञ के लिये आवश्यक होती हे। वह ग्रेजुएट हो गया और उसके बाद उसने परिश्रम से इतना अधिक काम किया कि उसे १९३५ मे 'प्रिक्स डी रोम' पुरस्कार मिला, और वह अधिक अध्ययन के लिये विदेश गया। उसको उस वर्ष और अगले वर्ष भी 'पुलिटजर पुरस्कार' मिला। पहली बार एक सगीतकार को पुरस्कार मिला था। वारबर उस समय लगभग २५ वर्षो का था। उसने आर्केस्ट्रा, पियानो, चैम्बर सगीत, बैलेट सूट और गानो के लिये सगीत-रचनाएँ की। युद्ध के पूर्व सैल्जबर्ग मे आयोजित उत्सव (सैल्जबर्ग फेस्टिवल) मे प्रस्तुत की जाने वाली उसकी प्रथम अमरीकी रचना **सिम्फनी इन वन मूवमेन्ट** थी।

उसे बत्तीस वर्ष की आयु मे फौज मे नौकरी के लिये बुला लिया गया। फोर्ट वर्थ, टेक्साज, आर्मी एयरफोर्स मे काम करते हुए कारपोरल वारबर ने अपनी **सेकन्ड सिम्फनी** की रचना आरम्भ कर दी थी। अपनी इस वृत्ति को उसने आर्मी एयर कोर को समर्पित किया। जब यह सन् १९४४ मे खेला गया

तो लोगो ने इसे बहुत पसन्द किया। बारबर को अनेक पुरस्कार और पारितोषक मिले। उसे सगीत रचना के बहुत से नये काम मिले।

मि० बारबर स्वय गाता भी है और अपनी चीजो को ही प्रस्तुत भी करना पसन्द करता है। उसने कसर्ट और रेडियो पर भी गाया है। उसने इग्लैड मे अपनी सगीत-रचनाओ का स्वय सचालन किया। **एडेगियो फॉर स्ट्रिंग्स** की वहाँ बडी माग थी। उसको यह जानकर आश्चर्य हुआ कि पेरिस रेडियो सुगधि के बारे मे बतलाते समय उसके सगीत का उपयोग करता है।

एक बार यह जानकर कि घटिकाओ से मधुर ध्वनियाँ पैदा हो सकती है उसकी रुचि उस ओर हुई। इसके लिये फ्लोरिडा मे बर्ड सेक्चुअरी नामक स्थान पर उसने एन्टोन ब्रीस के यहाँ कैरिलोन का अध्ययन किया। उसने लियेडर गायक के रूप मे वियना मे सबसे पहिले ख्याति प्राप्त की। उसने कर्टिस इन्स्टीट्यूट मे भी सिखाया। यह उसका सौभाग्य था कि बाइस वे बत्तीस वर्ष की आयु मे युवक को जीवित दिग्गजो से इतनी ख्याति और प्रतिष्ठा मिली जितनी किसी सगीतज्ञ को सारे जीवन मे नही मिल पाती है।

जनवरी १९५८ मे न्यूयार्क के मेट्रोपोलिटन ओपेरा हाउस मे मिस्टर बारबर का ओपेरा "**वेनिस्सा**" पहली बार प्रदर्शित किया गया।

विलियम्स श्युमैन

एक और लडका जो सन १९१० मे पैदा हुआ था यह भी सगीतज्ञ बना। उसका सगीत मे प्रवेश करने का मार्ग बिल्कुल भिन्न था। विलियम श्युमैन न्यूयार्क मे पैदा हुआ पर उसकी पृष्ठ-भूमि मिस्टर बारबर की तरह सगीत की नही थी। जब वह ग्यारह वर्ष का था तभी उसने वायलिन सीखना चाहा। उसने वायलिन इसलिये सीखना चाहा कि उसकी इच्छा थी कि वह स्कूल आर्केस्ट्रा के साथ बिथॉवन की **मिनुयेट इन जी** बजाने मे भाग ले सके। हाई स्कूल मे उसने जाज बैड का आयोजन किया। यद्यपि उसे हारमोनी का ज्ञान नही था फिर भी उसने लोकप्रिय गीत रचने का प्रयास किया। पन्द्रह वर्ष की आयु के लगभग वह एक व्यावसायिक बाल प्लेयर बनने की बात सोचने लगा

लेकिन हाई स्कूल मे जब उसने अपना पहला कसर्ट सुना तो उस अनुभव के कारण सब कुछ बदल गया। वहाँ उसने एक नई दुनिया देखी। उसने सभी कसर्टो मे जाना शुरू कर दिया जिनमे उसका भाग लेना सम्भव था। छोटे-मोटे काम करते हुये वह शेष समय मे हारमोनी सीखने का सदा ध्यान रखता रहा। रॉय हेरिस के साथ काउन्टर प्वाइन्ट का अध्ययन करते समय उसे इस बात का बोध हुआ कि उसका मार्ग कोन-सा है।

श्युमैन इसके बाद अध्यापक बनने के लिये कोलम्बिया विश्वविद्यालय मे दाखिल हुआ। १९३५ मे वह सेल्जबर्ग के एक सगीत उत्सव मे भाग लेने के लिये गया। उसे मोजार्टियम के लिये एक स्कालरशिप प्राप्त हुआ। जहाँ उसने अपनी पहली सिम्फनी लिखनी शुरु की। अपनी रचनाओ के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण रखने के कारण उसने अपने अनेक सगीत रचनाओ को इसलिये निकाल लिया जिससे वे तब तक प्रदर्शित न किये जा सके जब तक वह उन्हे सतोषजनक रूप से सुधार न ले। जब १९४१ मे कोसे विट्जकी ने उसकी **तीसरी सिम्फनी** को प्रस्तुत किया तो सगीत जगत मे उसकी ख्याति बढने लगी। उस समय से उसे कई पुरस्कार और इनाम प्राप्त हो चुके है। १९४५ मे वह न्यूयार्क के सगीत के जूलियर्ड स्कूल का सभापति निर्वाचित किया गया।

प्रतिनिधि रिकर्ड

रिकर्डों की यह सूची इस तात्पर्य से तैयार की गई है कि इस पुस्तक में दिये गये प्रत्येक सगीतकार के सगीत के नमूने की ओर सकेत किया जा सके। अलवत्ता इस सूची मे उस सारे सगीत का उल्लेख नही हो सका है जो पुस्तक मे दिया गया है। इस पुस्तक के १९४१, १९५३ और १९५८ के सस्करणो मे रिकर्डों की जो सूची दी गई थी, उस सूची के अधिकाश रिकर्ड अव उपलव्ध नही है और यह वताना सभव नही है कि सूची मे दिये गये सभी रिकर्ड कव तक प्राप्त होगे। सभी कलाओ मे जो कुछ भी सवसे शीघ्र लोकप्रिय होता है, वही सवसे पहिले विस्मृत होता है। एथेलवर्ट नेविन के निधन के वाद दो दशाब्दियो मे देश के लगभग प्रत्येक पियानो पर उसके कुछेक गीत जरूर वजाये जाते थे। और उन दिनो मे जव लोग केवल वटन घुमा कर सगीत नही सुन पाते थे, अच्छे माता-पिता के लिये यही उपयुक्त था कि वे अपने वच्चो को सगीत के पाठ सीखने के अवसर प्रदान करे और उन दिनो मे अध्यापक घर पर आकर सगीत सिखाया करते थे। प्रत्येक घर मे एक पियानो होता था यदि माता-पिता की सामर्थ्य होती कि वे अपने वच्चो के लिये एक पियानो खरीद सके। शाम के समय सभी युवक लोग पियानो के पास इकट्ठे हो जाते थे और गाते थे तथा सगीत की रचना करते थे।

आजकल छोटे-छोटे घरो मे वडे-वडे परिवार रहने लगे है। पियानो पहले से छोटे कर दिये गये है और वहुत से घरो मे पियानो रखा ही नही जाता। इसके वजाय नौजवान लोग स्कूल मे वैन्ड के कुछ वाद्य-यन्त्र वजाना सीखते है। अत वदलती हुई रीति-रिवाज और रुचि के साथ-साथ जो गीत कभी सवसे अधिक लोकप्रिय था वह केवल अतीत की स्मृति मात्र रह जाता है। नेविन का नाम अव रिकर्ड की किताबो मे नही मिलता है और न डब्ल्यू० सी० हैन्डी का नाम उन किताबो मे मिल पाता है, जवकि वह सव सिर्फ चार

वर्ष पूर्व ही स्वर्गवासी हुये। तथाकथित लोकप्रिय संगीत गम्भीर संगीत की अपेक्षा अधिक शीघ्रता से नई शैलियो को जन्म देता है लेकिन हैन्डी के "ब्लूज़" का उस समय स्थान था जब नीग्रो रिद्म, मैलोडी और इन्टरप्रेटेशन को अमरीकी रैगटाईम मे स्थान मिलने लगा था।

इस सूची के सभी रिकर्ड डब्लू० श्वैन, इन्कोपोरेटेड, वास्टन, मेसाचुसेट्स द्वारा **लांग प्लेइंग रिकर्ड केटोलौग,** वाल्यूम १३, न० ८ मे प्रकाशित हुये हैं। ये केटोलाग मासिक प्रकाशित होते हैं और इन्हें किसी भी रिकर्ड-स्टोर में देखा जा सकता है।

न्यू हैविन के लूमिस टेम्पिल ऑफ म्यूजिक की मिस थेलमा रीशवेगन ने इस सूची के चैक करने मे सहायता दी है। उनके प्रति आभार प्रकट करने मे प्रसन्नता है।

प्रारंभिक अमरीकी संगीत और प्यूरिटन के गिरजाघर की सामोडी के नमूनो के रिकर्ड उपलब्ध नही हैं। इस समय भी जबकि यह पुस्तक लिखी जा रही है, रिकर्ड किया गया सभी संगीत की पूरी क्रमानुसार सूची किसी भी स्टोर मे नही मिल सकती। इसलिये उदाहरण स्वरूप यदि हमारे प्रथम अमरीकी संगीतकार फ्रांसिस हापकिन्स के गीत **माई डेज़ हैव बीन सो वंडरस फ्री** का प्रतिदिन विकने वाले रिकर्डों मे एक रिकर्ड हो, फिर भी वह क्रमानुसार सूची मे सम्मिलित नही किया गया है।

अमरीकी लोक संगीत

सी-शैंटीज।

सांग्स आफ द सी। नार्मन लुब्राफ क्वायर। **शैनैनडोह, रियो ग्रेंडे, ब्लो दि मैन डाउन लो लैण्ड्स, दी डार्क-आईड सेलर और** अन्य गीत सम्मिलित हैं।

सी० एल०—९४८

वाटर ब्याय का रिकर्ड है जिसे गार्डन मेकरे ने लिखा है, **इन कंसर्ट** मे मुख्यतया अमरीकी संगीत-कामेडी के संगीतकारो की गीतो का संकलन है।

आल मैन रिवर, बिगिन दि बिग्वायन, सो इन लव, समर टाइम्स, और अन्य गीत सम्मिलित हैं। स्टेरियो, एस टी—९८०;
केप-टी-९८०

काऊ ब्वाय सांग्स। सांग्स आफ द पाइनियर्स। साण्टे फि ट्रेल, लास्ट राउंड-अप, स्वीट बेट्सी फ्रोम पाइक, द यलो रोज आफ टेक्साज सम्मिलित किये गये हैं। विक एल पी एम—११३०

सांग्स आफ दि काऊ ब्वाय।

नार्मन लुबॉफ क्वायर द्वारा गाये गये।

द काऊ ब्वाय प्रेयर, लास्ट राउंड-अप और अन्य गीत सम्मिलित किये गये हैं। काल, सी एल ११८७;
स्टेरिओ सी एस—८२७८

दक्षिण पश्चिम के अमरीकी इण्डियनों का संगीत।
फोक (लोकप्रिय सगीत)—४४२०

गास्पेल हिम्स

गास्पेल हिम्स। सालवेशन आर्मी। **जस्ट एज आई एम, ब्लेसेड एश्योरेंस, व्हाट ए फ्रेण्ड वी हैव इन जीसस, गाड बी विद यू, 'टिल वी मीट अगेन,** सम्मिलित किये गये हैं। ल० ५३९१

बिली ग्रेहम्स क्रूसेड। विक० एल पी एम—१४०६

ग्रेस गास्पेल सिंगर्स। स्टीरियो। रॉन०—लेट ११५

नीग्रो स्प्रिच्युअल्स। ग्रेहम जैक्सन क्वायर द्वारा गाये गये। स्टीरियो। वेस्ट —१५०२९

नीग्रो स्प्रिच्युअल्स। टस्केगी इन्स्टीट्यूट क्वायर द्वारा गाये गये। स्टीरियो। वेस्ट—१८०८०

सेम्युल बारबर

कमाण्डो मार्च। इस रिकर्ड मे वाल्टर पिस्टन, विलियम श्युमैन और रावर्ट रसेल बेनेट का **सूट आफ ओल्ड अमेरिकन डांसेज** है।
मर०—५००७९

इर्विंग बर्लिन

म्यूजिक ऑफ इर्विंग बर्लिन। कोस्टेलेज और ओरकेस्ट्रा। आलवेज़, टाप हैट, ह्वाइट टाई एण्ड टेल्स, दिस इज द आर्मी, गॉड ब्लेस अमेरिका और अन्य गीत सम्मिलित है। कोल० सी एल—७६८

जान एल्डन कार्पेन्टर

एडवेंचर्स इन ए-पेरम्बुलेटर।

ईस्टमैन—रोशेस्टर सिम्फनी ओरकेस्ट्रा।

मर० ५०१। ३६; स्टीरियो ९०१३६

एरन कापलैण्ड

एपालशियन स्प्रिंग और बेलेट सूट **बिली दि किड**।

आरमेण्डी द्वारा सचालित फिलडेलफिया सिम्फनी ओरकेस्ट्रा द्वारा बजाया गया। कोल० एम-एल—५१५७

स्टीफेन कालिन्स फॉस्टर

साग्स आफ स्टीफेन फॉस्टर। शा कोरेल कोरस द्वारा गाये गये।

विक० एल एम—२२९५,

स्टीरियो—एल एस सी—२२९५

जार्ज जर्शविन

एन अमेरिकन इन पेरिस और **रेपसोडी इन ब्लू।** लियोनार्ड बर्नस्टीन और न्यूयार्क फिलहार्मोनिक ओरकेस्टा। कोल० एम-एल—५४१३,

स्टीरियो एम एस—६०९

पोर्जी एण्ड बेस (उद्धरण)। मूल रचना

दिस० ९०२४, स्टीरियो—७९०२४

चार्ल्स ग्रिफ्स

प्लेजर डेम, क्लाउड्स; बेकेनेल । रिकर्ड की एल्टी और उसके पियानो पर बजी धुन' **'द व्हाइट पीकाक'** है । हैनसन ने ईस्ट मैन-रोशेस्टर सिम्फनी ओरकेस्ट्रा सचालन किया । मर०—५००८५

विक्टर हर्बर्ट

म्यूजिक आफ हर्बर्ट । कास्टेलेनेट्ज और ओरकेस्ट्रा द्वारा बजाया गया । **आह ! स्वीट मिस्ट्री आफ लाइफ, मार्च आँफ दि ट्वाइज , व्हेन यू आर अवे, आई एम फालिंग इन लव विद् सम वन** सम्मिलित है ।

कोल० सी एल० ७६५

चार्ल्स आइब्ज

थ्री प्लेसेज इन न्यू इंग्लैण्ड और **सिम्फनी नं० ३** हैन्सन ईस्टमैन—रोशेस्टर सिम्फनी ओरकेस्ट्रा का सचालन करते हुये ।

मर०—५०१४९; स्टीरियो—९०१४९

जेरोम कर्न

एलवम आफ जेरोम कर्न । पाल वेस्टन । दो रिकर्ड ।

कोल० सी २ एल, स्टीरियो, सी० एस—८०४९ और ८०५०

कोस्टेलेनेट्स और ओरकेस्ट्रा द्वारा बजाया गया **कर्न का संगीत ।**

कोल० सी एल०—७७६

एडवर्ड मेक्डोवेल

वुडलैण्ड स्केचेज,पियानो सोनेटा नं० ४ "केल्टिक"। सेकेण्ड पियानो कंसर्टो । पियानो वादक मार्जोरी मिचेल के साथ अमेरिकन आर्ट्स ओरकेस्ट्रा । **टू ए वाइल्ड रोज, टू ए वाटर लिली** को सम्मिलित करते हुये ।

वेगार्ड वी आर एस—१०११

वाल्टर पिस्टन

इन्क्रेडिवल **फ्लूटिस्ट,** एक वैले सूट। रिकर्ड के उल्टी और डगलेस मूर का **पेजेण्ट ऑव फी० टी० वारनम।** हैन्सन ईस्टमैन-ऐंचेस्टर, सिम्फनी ओरकेस्ट्रा का सचालन करते हुये। मर० ५०२०६; स्टीरियो ९०२०६

रिचर्ड रोजर्स

म्यूजिक ऑफ रिचर्ड रोजर्स—कोस्टेलेनेट्ज और ओरकेस्ट्रा। **माई हार्ट स्टुड स्टिल, इट माइट एज वेल वी स्प्रिंग, इफ आई लव्ड यू** और अन्य गीत सम्मिलित हैं। कोल०, सी एल०—७८४

विलियन श्युमैन

सिम्फनी नं० ६। पिस्टन **सिम्फनी न० ४** के साथ (रिकर्ड के उल्टी ओर)। फिलेडलफिया सिम्फनी ओरकेस्ट्रा द्वारा बजाया गया और इस ओरकेस्ट्रा का सचालन ओरमेण्डी ने किया।

कोल० एम एल० ४९९२

जान फिलिप सूजा

मार्चेज। ग्रेनेडियर गार्डस वैण्ड द्वारा बजाया गया।

लदन एल एल—१२२९, स्टीरियो १३९